क्ष्माम्यान्त्रम्यायम् नियान्त्रम्यान्त्रम्याः विद्यान्त्रम्याः विद्यान्तिः विद्यान्यः विद्यान्तिः विद्या



अर्थेशक्ष्येन्य निम्ने मास्त्र क्ष्या क्षेत्र क्ष्या क्ष्

प्रमान के ब्रिट नेश प्रमान के किन्न के प्रमान हैया Publication of Drepung Loseling Educational Society

Losel Literature Series Volume XXXXIX First Print Febuary, Year 2000 1000 Copies

072399 0**72399**

Short akshita Library

Price: 90/-

Compiled & Published by

Drepung Loseling Educational Society PO Tibetan Colony -581411 Distt Karwai, Karnataka State INDIA

Printed at: Photo Offset Printers
Drepung Loseling Printing Press
PO Tibetan Colony - 581411
Distt Karwar Karnataka State
INDIA

र्हेब.ग्रट.।

०भविषाचीयःविष्यक्ष.१८.भविषात्राम् १८.५५८.५भिर.५५भाषीः भियाक्षेत्रम् विष्या क्षेट.ग्रू.पर्देश.त.क्ष.वी.वपु.भथ.टये.विर.तर.२४ थु.रश.त.४भग.ग्री.क्ष्येश.पुट. क्षेचात्रम्यान्त्रित्तर्भावश्चित्रह्नामान्त्री येनामायन्तर्त्रायन्त्रियः स्वार्श्वेर्यः सुमार्श्वेरः सुमार्श्वे क्रुवाबाताक्वीराची अभावपुर्वावास्त्रियाचीरचे न्यार्टर स्थाश्चर सुचावपुर पा अस्यारा श हिंगमान्द्रे नव् अन्यम्भवान्त्रे विद्रक्ष्याय्रद्रियासा अद् ह्यायान्त्री व्याद स्था नवर'य'श्चे 'पॅर'र्वेर'पर्डर्स'ग्रेस'त्रस्य 'येद'य'र्'स्ये ख्राम्य 'वेव'ग्रेक'र्नेद'र्' वसर्वेटिन्नमवास्त्रम्दिनादिमादिसादिरम्मिनम्भानदे स्नित्रम्पद्रम्भानस्ति । चारुचा.पे.पर्नितरात्तर्मूच । क्ष्रिशःक्षर्मी.चार्यरः हुत्युक्ष्या.चा.वची.वचीवा.चीरा. गुर व्रुग्रयम् क्रियमद्र्वित्यक्त्रम् स्रुत्रम् द्रित्यहेषाद्रये देवले वकुत्यावदेः विव नात्व विवेचका नु द्युव या चुटा देव विदेवे मा विमा स्रवका है है ट र् रेमिका क्रिंर अह्र सावब से ब्रेंट खुव अह्रेंट सेवस र्वे तर उद्दार भूर सेव स्वर्ध होया जाक्षेर्र्र्र्र्युवावयाद्येष्याहेल्याविवायित्। निर्म्त्त्रुम्य्यापुर्वेर् क्यान्यम्य चिषातविषा. जर्माराष्ट्रायाच्याच्यात्वात्त्रच्यात्त्राच्चेत्त्रच्चेत्रात्त्राच्चेत्राच्या । हि.स्. २००० ज्ञाळेषा १ ळेषा ११ हेनाया

क्रिय.हीय.ता

,	`			

5गार कवा	
ष्ट्रा क्रिंग कें	ব্ৰাশ্ৰন্থান্থা
वान्याव्यायञ्चित्रहेवायावियाणीः सहात्रायोवः इसाधरा	9
न्ययाग्रहायायनुषायदेःपश्चेन् देशायम्नायायानुग	
१२ स्वाप्यामे देव से अळव देव	3
१ दे हैं नम देश की मेर दि पश्चेर देश हैं मार्टी मार्ट के सक्या	9
१ माट दु प्रमुद यदे मान मा गी सक्त हिना	પ
८) हे द्वर ब्रुव यदे अर्दे क हैं गर्य की इस मानवा या पति।	
गरे रट्युं हैं रच यं महिषा	પ
क्षी रे श्रम्य ह्रें वाका ग्री हैं र प्वतः प्यवा प्यवा प्रमा	ч
षारे सर्वे हेवाबर्टेबर्म्ययम्	99
रट.मूर्र वकु.घ.कुरा.स्रीर.ववित्र.चवु.सवा.ववित्र.घचर.ता	७ ५
व्हिषामारे वरार्ट्राय्ट्रसाश्चराविराववाद्वरावविरावविर	Z 22
वासीभाता र क्रि.य.क्रिया श्रीय.विष्य प्रविष्य प्रविष्य प्रविष्य विष्य	44
चबुन्ता रे दे.वर्र.चतु.स्रुनासुस्रात्यर वर्द्दरस्याग्री क्रूबाग्रीसः	A .
ह्यायर प्रदेश तपुर हिर र्या भारत रे में तपूर्	900
षिरे र्ग्रीवाविंद्र क्वां अर्क्षेष	906
चार्र जद्म केवा सकूच	997
८रे पश्चिर देशकी रश्चामाना कराया कराया है त्या है स्टर से साथा हो र स्टुर	ען איז
५२ दे.जायस्यमायमायस्त्रेत्रित्राम्बर्म्यत्रास्त्र्	176

८) शवर द्विष ष्रार्ट्स यीय श्रीय राष्ट्र देश यावन 279 176 १ कुर हिर ग्री इस मानम नर् वर्षायवे के पहें १ र्वेट्यायम्य मुग्ने रेयाया 134 ५) तलवाता. सूर वार्टर तार्था 134 ५) देवे अइ रगर्चे र र वश्चर छ्वा 134 ५) ग्रम्भरायात्रेम्याके प्रस्थापिक र्रम् वसः है वः हैवः हैवा 136 व्यक्षाया मुःचनाः पुःवर्षायवः वसावायस्य स्वायः व्यवायायावे। गरि देशचंद्रश्यीः क्रेन्यरन्तुः च 136 मिरे क्रेंन्पुर-व्याप्त्राक्षेत्राप्त-प्राचाप्तर-ग्रुप्ता म् म्निस्यक्रम्निरःर्द्ध्यायन्वायरः द्विष्यव्यव्यव्यक्षिरः वः क्षेत्रायावास्य १) रेअपिकेशरेर्निन्दर्गेरेअ। クタヤ न रेअपिक्षाः क्षेत्राः क्ष्यायापिक्षा クラコ व्यवेशता ह्वायानुशासुरास्वा クライ १ रेमानिकायार्चन्याय्वेन्याये हुन्यते। र्र वर्षेत्रात्तव्यवस्य दिन्तर वर्ष्ट्य स्वापानिका

१) गिति दिसार्य मानसा सुयादरा	990
१ वस पर्वे र पद रेस प्राया हैं वस रेस से सास स्थाप वस्ता	
१ हेन्य रेस मी मरिंदि से से महिस मी देव सर्म पक्ष पा	200
३ रे.च्रिसर्ट्रें किस.तर.तर्भर.त.च्रिश	
गारे वरे हैंद दु इर से द 'ग्री 'से 'के 'व नद 'या	264
पि चेत्र पहिषाद्ये र से द ग्री खे से चम्द या	264
म रे निक्केर पास्याया के असे त्याया या मन र र प्रायक्षित	
न्वेबायर पहुन्य यर्वे	949
৽৴ৢ৳'য়ঀ'ঢ়ৢ'য়ৄৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢঀয়ৼয়য়৸ঀৢয়৸	
गारे भवःरगःयायस्यःभागुर्हेर् खुवास्रह्यः हुगायायम्	946
पि व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	946
म्रे क्षियः देश दर्श चन्द्र या मृश्या	
१२ हिन्यान्यसम्बद्धाः	944
नर् में देशद्र मूर्य रेषा	नुष्
१२ क्षेप्यसँसँदैर्मन याम्बिमा	
गोर् निवंत्रमध्यानी हिंदा दे त्यह्रें वा पञ्च पञ्च वा स्वाप	and the second s
विर् यदेव या विषय की हिरा दे यह वाया स्वया स्वया की	hangestepten; van abes
गरे रवेब नस्मा की हिर रे पहेंब या व स्वय स्वय या न सुमा या	ingen van de verste van de ver
न्दर्भा युषान्चेन सुद्दे हेवे निर्दे पद्देन या नस्न न स्वा	ત ત્ર

,	महिकाय। तमान्त्रेक मशुराई हेवे हितारे वहें क पश्चय सुंवा	ŋĿĿ
	गसुसाय। सेससार्वेदाधुगसार्दे हेवे हिटावहेदाया वस्ता	909
	वर् वर्षायाविषाणुः हेवाषात्रसायावस्य स्वायाविषा	
	न्दार्या चनेत्रायानित्रवार्थीर्थार्थेते हेन्नवाने स्थान्दा	
	निहें संस्था परे के निहें संस्था के किया में स्था	
-	रटार्चा परेब यामहिषाग्री हेनिषारे अपापश्चय स्वयायामहिषा	
M. M. Tanana and A. A.	रटार्ग गुर्नाह्यकुः अवे हिन्न वान्त्रभा	704
ACCORDINATION OF THE PERSONS ASSESSMENT	महिकाया देन दशर्वे मामवाची हें माम देना	777
NAME OF TAXABLE PARTY OF TAXABLE PARTY.	महिकामा यनेक महिकान हो र खेन 'ग्री हैं माक रे आ	77 <i>(</i>
Transmission of the Colombia	नमुमाया पदेव निवेश याचेन माय दीव नी सपका ही दाया	734
Witness Accession	यवे.ता जभ्रत्रमुभ्रत्यश्चर्यस्य.वे.भट्ट्य.वे.वे.वे.व्यंजा	790
	क क्रुम् देव क्रिया मर समान निम्या	301
TOTAL STREET,	० श्रुम के न न न न न न न न न न न न न न न न न न	
SAME STATES OF THE SAME STATES	क वक्क वित्र यन यवि वित्र समान समान वित्र समान के वित्र मि	
DESCRIPTION	बेश मिय प्रतिभागी	340
AND REPORT OF THE PERSONS	थकें 'मृब 'ब्रम्थ'र्नुट'वीश'सहँ <u>न</u> ्	
Carate Contractor Inc.	क तर.विट.शुक्राक्रव	741
HE CHARLES AND A STREET		
Total Control		

श्री प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र

का । जनक कुष सुना चर कुष केष थु ता दर रूट अक्श श से व दें ता रेश थे सित. द्रवाबालवार्म्युक्टागुवार्वावार्व्युम्। लुक्षास्रक्टें स्वरामहेबाग्री स्वरास् रवार्चेरावरीयात्राक्षाक्षीत्रा १५०० क्वावावविद्या रेगेराक्वाक्षात्र्यात्रा पश्चर दर पहें अ के किया निवास के निवास के किया निया निवास के किया निवास किया निवास के किया निवास के किया निवास के गर, चर्चे तथा वर्षिट, कुष, चर्याव, तूर, किंद्र, वर्षा श्रृहिट, श्रह्रे । श्रोवश, वीच, श्रद्धा क्रियाया नेवाग्री द्वार द्वार प्रमास्य में या महिता स्था स्था महत्व क्रिया महत्व क्षा क्षा महत्व क्षा महत्व क्ष न्गुर कें पर्दु पर्दे वा केंद्र केंद्र प्राप्त केंद्र केंद र्चिना अप्रक्रिक द्रास्त्र के साथ द्रिया में अर्ज के त्र के के के कि विकास मिल्या में कि विकास मिल्या में कि व न्गुर चे हेर पन्त वा के श मा ना र श र के साय देव मी हिर पत्न ना न गुर चे संश्राद्भेत्र भ्रेत्र प्राचा नेश क्षेत्र तृत्र देश्वे प्राच वित्र खेत्र व शत्रे व देत्र तृत्र हित्र क्षेत्र वर्तिवार्श्चेष् वाषाक्ष्य श्राक्ष्याकार्केष श्रूवा वार्ट्रेटा । व्हिर्याकार्येष वार्या वार्या विदास स्व र्टान्द्रेष्यरायर्थयायावेद्या र्चेट्यूक्राचेष्यावेषास्ट्रियास्युवेषा कितातात्र्यं भियाकी अक्ट्रात क्षेत्र हिवाबाग्री ह्यातावावरा रवीर ज्ञातवाव पर्वे त्यूर चर्याश्चा कुन्या क्रान्या क्रम्या स्टर्ग स्था सहित। न्युम्ये विष्ये विषय क्रिया निया न्यां क्वित्व व्यक्ति स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया स्ट्रिया वित्य दिन स्ट्रिया स्ट्रिय

र्चेट.क्.ट.चक्रेट.क्.शूचे.रंशच.रंतेट.कुष.वेट.केच.पे.उत्रेट.पश.रुष.सीटश.कुष. क्वान्याहे हे दि किट्याक्रियायर पर्वे द्वेषायाय वन खेत्याय स्र रेट हा वद्या कु.वर.क्रवश्वश्वश्वरायव्यव्यक्त्र्यंत्वर्त्त्वरात्वेश देव.श्रेवश्व्या.र्श्वा.म् द्वायम्य प्रस्थायम् स्थानिया वित्राम्य स्थानिया स्या स्थानिया स्या स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया स्थानिया रशक्ति विषय विषय विषय विषय देश विषय देश विषय देश विषय विषय देश विषय विषय देश विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय र्देब निहेश या में सिप ह्रव पदेव केंबा कुया में बार्चे र प्रस्त देवे से विगायर र याकुवार्यायम् प्रमा नग्राचित्रं स्थार्यम् नवेत्र प्रमान्य । वित्राचित्र प्रमान्य । कु.सं.इ.विव.के.ब्रिथ्वाबर प्रध्नेत्वा श्राप्तरीय विद्यान्या. विश्वः द्वार्ये देवो प्रदुव देर विरेश्व वश्व प्रदुष्य वश्व विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व वित्र-१८ नावन थर-१रेश के दुर्ग में दुर्ग में प्रवार दर्ग मा के दर्ग में हिन था वर्गेर्न्व के पर्व मृत्र मृत्र अर मिय इस सम्माय सह र पास वर्ग वास के र मि की वसार् श्रम्भार्टियार्रेयार्रेये श्रे स्वामी सकेर प्रयानिया मिता सर् स्वामा ग्री केया गुनिर्द्रात्रम् सम्बद्धारा प्रमान स्त्रीत्र केट के त्या वा निर्मान के निर्मा प्रमान स्त्रीत के निर्मा प्रमान स नार्व सावना वायाव देव के वाना सहर र्नीट क्रमें देवा के स्वा ही क्र १००१ र्येवायमा नेषायदे अळव अप्टायठकामा नुवा मुना वहें व उव स्थाय केंवा वा व सूवा ववे क्षेत्र रे विवाद के र अया नाव कर प्रान्त्र।

०प्रक्रिक्रक्र हें प्रवर केंश गु क्या अक्ष में का अहं रा

्रा | ब.मू.यी.प्र.मह.कू.मि.ला क्री. वश्य १८८. ती.के जातू दिवता योशट ता उर्देश. तत्रत्रभेर्द्रश्चिष्ठात्रभावन्द्रद्धायुवायुक्ति। क्रास्ट्रिव्याच्यास्य क्राप्ति क्रियायदे वित्र वे गुरु के मही । विवायन मा क्रियाय के प्राप्त । । निर्वेर से न श्चः अदे विषय प्रतृत्वमा विषय पदे वेषा या प्रतृत्व मु अर्केष विदेश हे व ग्युअ मुःद्रवःक्रवःग्रेम । द्रययः स्वायद्वायद्वायः यद्वायः यो। द्रियः यद्वायः स्वायन् यम्द्रा दि'वायदेर'द्यवाम्बद्ययद्ब्रायदेग्रिक्षेत्रेर्रस्यम्द्र्यवादुम् । श्रुवः तार्त्राहेब.की.शक्ब.केटी टेबार्ह्र्चश्चरशकी.क्ट्रिट.टे.पश्चेट.दुश.सूश्चरत्त्रकी. सक्या गट्रेन श्री नत्त्रम्बर्गि सक्य हिना हे सर श्री नत्त्र सहय हिना श गु.रश्रामांचेच । रे.ज.पश्चितश्रातश्रापश्चिर.रुश्राश्चर.होर.ततु.क्र्रा श्वर.होर. वशन्दिशः गुपः श्रुपः पवे द्वानावना प्रमदः पवे । दिन्ये दे हे प्रमेट पायशा सूच याल्य नियान स्वापा वियान स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा म्राज्ञेद्राशी वामानुमाना वामान्या वामाय वामाय वामान्या वामान्या वामान्या वामान्या वामान्या वामान्या वामान्या वामान्या व वेषाद्वायवायम्तु ५५ छेट् स्यायायम् गुषा हिना दुर्गायवायम् यान्वया हैनायादवायाह्मकायर श्रद्या विद्वादी मिक्यायाद्या विकेत्याद्वी वक्रमाश्चरमा विस्रमान्त्र मस्त्रमान्त्र मिर्ने पर्वे मिर्ने प्रमान्त्र मिर्मे । गुन् नु पर्वे न न पर

न्गाल्या दि वास्त्रम्य स्वरं विकाल्या विकाल व निर्मायाक्ष्य । क्रिन्द्रान्द्राच्याया स्वार्वेत्र खेत्र ५८। र्रेट्रप्तिश्याप्त्वरावित्रस्याप्राप्तिवायाकेवाप्तिशाते। रेटे ब्रेट.च.जथा व्रिच.अर.क्रुंच.अ.बाट.चु.क्रा व्रि.डंच.लट.टच.टचट.चक्रेर.था हिंचाश. यवे देश यवे इवा वर्डे र वा दि थे के व हैं र र व व र वि र वि र व र व र व र व गुरार्वेदाया अन्या अन्या कुर्ये कुर्ये के स्वाप्ता अन्या अन्य अन्या अन्य तत्रु। श्रिप्तवर्रियाम्कुबर्त्ररव्यू। विद्यामश्रद्धायत् स्त्री व विद्या यवे। दे स्र र्वा हिव वश्यारा द्वर र्षा स्वापश स्र सं प्रेर स्य केवार्र र्हेंग्रामक्वापतिव र्प्त्र प्रमुद्दाय केवा प्रवेषाते। प्राक्विव प्रमुख्यामायाय प्रमुद्रा वसन्त्रायानिक्षः विभाषायादि उद्यायवद् गुरायकिनानि दरिस गुरादिव या शे शेत् क्रवा.ह्नेर.तर.वर्ट्स्या ।हुर.वे.विश्व.तवु.क्ये.जश्ची ।व्यूर.ज्य.ज्याया.ह्या इश्रम्भी । लट्रस्या श्रव ह्या त्रव क्रूयश्रम्भीशा विर्योग्न तर वर्षेत्र क्रूयांचे थे . श्रेवा विषानासुरसायवे दुरा दे सर्द्र द्रशक्ति द्रशायर द्रणाया वा विषाय देश द्रभागदेशः मुराद्यते कृतं पुर्ने अयदिशा मुरास्याप्य प्याप्त प्याप्त प्राप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स् गुःसवयक्त्रायरमाहन्याययेवसान्तिसान्। गुःहरागुःनगयायम्यासुना सेरः न वशा श्रिम् अर वाश्रिमा अर अर अर्थिया स्वर प्रवर प्रवास अर्थ । विदेश प्रवास इवार्त्तेर्ज्ञर्क्षर्क्षरावर्त्तेर्व्यवाववर्त्र्र्त्याव्यवर्त्र्र्ष्याव्यविष्ठ्रा र् क्षेत्र व्याप्तकात्री क्षेत्रकारी जुने क्वा जात्राचित्र प्रिया देश वृक्ष विकास । बु.ज्ब.त.ब.जू.प्रश्न.ट्ब.क्व.टे.चश्चत.तप्र.चे.व.लुब.धे। प्रश्न.जबा वश्चेट.

ततु.प्रथाताज्ञेचकाचेवराचेटा। हि्चकात्रतु.प्रथातात्र्री क्ष्मकाता । विचकात्री. ह्यायातपुरमार्थाक्याक्रियाक्ष्या । स्रेयाक्षाक्ष्यायाक्ष्याच्या । वियाना हिन पर्देश.जश.पेट.। चट.ची.कु.शटश.केश.प्री.मुचा.ततु.चशश.त.ज.जूचश.तर.वीर. यादेव के होना याना सरायाद्वायान हेना यवे हिट हे त्यहें व त्याच स्वया है। विश्व स्विन स वन्नमन् स्वामानीसामक्षेत्रक्षाम् केष्टामी स्वाप्ति वर्षाः विष्यान् वर्षाः वर्षा स्पार्ट्सियायर मुप्ताधित है। इन्हिर खेतु पदु महिषायर। द्वित या केत्र येति या र्धेन्यास्य । व्यक्ति वन्यान् स्वाया ग्रीया वक्ता । दे दि न्वे व पदे सार्धेन्या स्था रिट्याचीत्रवश्वत्रद्रातर्वेशत्त्रत्वेच । क्याचीर्यत्यत्त्रत्या श्रद्रत्वेशत् दे स्र रावन प्रवे श्वेरा अ ।विषया यावि। दर पेवे श्वेरावा द्रीया विषय क्रियाम्बर्धा विद्यास्त्रक्रिया विद्युद्दिर्भ्याम् । विद्युद्दिर्भयाम् । विद्युद्दिर्भयाम् । विद्युद्दिर्भयाम् म्बियायर हो द व्हें वा वेषि । द द र्या वा विषा अर्दे व हे वा षा शु ही र व वे प्यव । ववा द द । सर्वर्ध्वाशन्द्रवाश्च व । निर्मायानाश्चर्या विवासर हासर विपवित्रसम्प शरीय के प्रति त्रीय तर्त हिम क्रिया विद्या कर्ष दे कर हिंदा पर क्रिया वर्ष वा वर्ष वा क्रियान्त्रीयायवे क्रियान्ये प्रतिया विकासी विकासी विकासी दिया है या दिया है हिन कि प्राप्त प्रति होते हिन कि प्राप्त के प्रति हिन प्रति विकार के प्रति विकार पर्यात्मेरि.प्रि.भक्ट्रात्मेरिक्कित्विकात्मिता हु.ह.क्षत्रकारेत्व.सूत्रात्मकानेर. क्यांक्। १८८.तृ.व। ४८.४८.७.ई८.६.ई.ई४.० में ८.४४.ई४.ट्रेज.वेथ.क्यांतरा तातार्मुश्रातालूर्त्री शैंचावचश्राश्चेशतवृत्त्वाश्चाश्चारावंद्वारावंद्वाश्चारावंद्वारा मिन्द्रान्यान्यान् केवाद्वीयायानेयायरानु प्रतिकेदाये केदाये क्षेत्र रावे क्षेत्र रावे क्षेत्र

र्रे हे 'युरा वरुष सु क्षेत्र या है 'सुवा कुदे 'त्या केवा वाषवा वरे वषाय 'त्रा है र 'देवा विष्विषायर्द्धवायात्रे दे हे दरदेवायेदाद्याक्ष्यायाय्यायदेवषायाय्येवात्री दिरः ट्रेवाचित्रचित्रचित्रपाक्षणावा वसरसाधुरसावभ्रेत्रत्वाचित्रपाक्षणावा शक्त्र द्व दव तत्र क्रिक क्षेत्र में विकायक्ष्य प्राचिक प्राचि र्शिवशानी व्यवसायित विद्या वर्द्र के हैं साल्य विक्री दिश्व वर्द्र प्रमुक विव विवायक्षण विवादित हैया देवे दिन देवा वर्षेत्र विवाद माने प्राप्त के विवाद कर्ण र्देन गरेन । विक्रिमार्देर देवा हे स्यान हमी देर देवा दर्ग हे र्ग्याय ध्रिवे देर गाःश्रुष्ट्र होर रेतृत्र ह्र देवालव यद् हेरा रट लेवब हूर हेवा वा है वा वहिर रेन्या में क्या ने का यक ने ने ने ने का की में में में का निर्मा कर की माने का में का में का में का में का में र्हर देवा नहिषा चेदा है है वाद है जा है नहिनाया है नासुसाया है स्या है र्गेता अ.क्र्यंश्रह्रहेत्रक्षत्राश्रित्री इ.क्र्यहितात्रवंश्रत्यीत्रवंतरत्याह्र्यंटर बर्टरश्रातवुक्किश्रात्व्यत्ते मित्रवृद्धः हिन्दर्। हे नाया क्षात्रात्रावे नावुक्षः मध्यासी स्ट्रायाह है जवट है स्यायाह है। या मध्यापाह सामा है या महिया सी तार ३८. के बे के में में हे बे के बे के अहार से विषा ताय में है के बोरी भारा मुर्च था लाय. वी डिवार् व रहे वा वे मेशकार है है के अधार सरे है वास रहा रवत सेते. इवानुन्दा देववेदानिनाश्चादाद्वानुन्द्रवानुःद्रवानुःद्ववानुःव्यानु द्वानुःवानुन्दा मुक्ट्रिंग्नामुद्रश्चामुद्रकृत्यपद्रम् छटा द्रम्थामु चायाम् विवेशमुन्ता छेटा व.चारुका.ग्री.ट४.२.इ.इ.छ.ज्रेट.पका.चर्सूर.वर्षा रेतव.ट्रेका.थ.२.व.२.छेर.ग्री.क्रेथ. श्रद्रायाध्या देत्विव विविधायदेत्रियानुः वाक्षास्य स्वार्ष्य वाक्षास्य स्वार्ष्य

वर पति खेर केटा वस्रक कर के स्पार्य का मानु एक रेसाया पति के प्रति र खें। रेव रेंग्के। यहा रयानेव में दाया पर्मेर प्राथ के विषय वर्षे देवा वा देव विषय न्यळिषाची देर देव दर्भ यो केश की देर देव पहिष्य वा नर ये छ स्यान्ता महिषायाकेरन्त्रायायाचेरार्दे । यदावर्द्रमाद्रियायार्द्धाव केर्स्समिक्षायावषा र्ह्नेट वी पर पेर दे। यावद दर्शे के अक्ट वा हे द्या हे से वाह वा पर दर। हि स्क्रिक्राम्बर्भायान्द्रवा निःस्रमायार्भेन्यान्द्रवानुःक्षे क्रिक्राक्षेम्यम् न्त्रम् विषा ग्राष्ट्रमायवे क्षेत्रा वित्र हे हे दर देवा प्रमासक्षित यत्र प्राप्त के हे हे हे प्राप्त के ना लट्रीब्र्ट्रिट्रें ट्रिट्रें द्रा श्रेट्रा श्रेट्रा श्रेट्रा श्रेट्र विष्य हेर्ट्रे विष्य हेर् म्रामान्यत्त्रा द्वार्त्र स्थान्या स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य पक्रिं, ग्रीश्वत्तव्यवात्रात्त्रातक्रिं, ग्री.प्रट. प्रध्येष विषयात्रात्र्येष अष्रवाद्यत्यक्रेर. सर्भ्यते । मसुत्रा द्व्यासुर्द्धयायर दूर सर्द् द्व्या । नर दुः ये मुद् र्द्रम्भूर्तियात्रक्षा । र सम्मान्यत्र संस्थान्त्र संस्थान्त्र संस्थान्त्र । क्रमार्श्वाबादरा रिविधारी सैवधार्यारीश हीर वा वित्वेष मंद्रिशायर वि ष्राचित्राचत्रित् वित्र विवान् स्थान्यावराव्या हे स्वान् तिनानी प्रवानी प्रवानी प्रवानी वक्र मुक्त क्षेत्र प्रकार के प्रकार र्ड्रिवावर वर्षे वर्षा रवेशकी क्विरायन वर्षा विश्वरूप्त निर्वेद ग्री नवमा वेम नम् स्यापि स्रीमा न्यूना न्यूना मुक्त स्ट केन हिन स्व मार्थ.

वयश्यवंशर्थाती विश्व श्रीश्यदे याक्षेत्र येथा स्था संस्था थे संस्था थे साम् यन्तेरक्षेत्रक्षेत्रम्भेत्रप्ति वर्त्त्रक्ष्यस्य स्टूर्म् रे.मेर.हैब.श्यु.क्श.तर.चर.च.बु.मेब.रच.ग्री.बज.बीब.शकूबी तथे.ज.चेबत. यदे थि वो पकु र ग्रीका पुरा पति र र दे र कु व सार्के वाका पति सर्के व या पिव दे । दि स्र व दे हे श व व श दे हे शे अशर्प प्य र द । दे व पुरा मेश र व दे हे पुरे द शे पुरा र्वट र्विया आश्राष्ट्रच। हूर द्वासंब क्षेत्र विर प्रश्नाम हिर प्रव वाग पर्वे स्व मु.ज्राटशःभी अक्ट्रेश द्वतातेतु सेश ज्राटशःभी शाई इ.म्या ततु क्ट्र्या मी व्यूटर ज्या किय. श्चित्यम् क्षेत्रपद्यात्रम् अस्ति हि दिन्दिण गुरुषि पदि हिन्दि स्थित गुरुषे भेषा १८। दे.वड्रेब.व्रेट.क्री.बचका.चेका.विर.तत्र.व्रथ्म.क्ष्य.क्ष्य.लट.क्रूट.ड्री हे.ह्या. वयश्रम्यायार्याद्रदर्देवाबरायवेर्द्रहेर्यहेश्यायास्त्रहेत्। द्वियायुग्रामेश्वर्यास्त्री क् न्द्रित इना महिषामा अस्ति। हे हिव हिप्याप्या गुरेहिव हु हिव हु निव्याप्या है'य'तुर'वकुन्'नु र्येन्'यस'र्देर'युवेन्युस'ग्रीक्षवन्यवकुन्यवेक्ष'विर'सक्षेत्र। इवानुवे क्षेत्रायुम् कु हु देवा अर स्यामव वर्गे गर्दर रहा देवा क्षेत्र तक्र र् जिर्प्यस्थान्यस्य वर्षे अप्यापक्षर् प्रक्रिया के दे हे के मार्थित्य प्रक्रिया १८। इजानुःकुःध्वायायकुर्द्राचकुर्द्राचकुर्द्राच्यार्ग्यवाययास्यायायायेवार्द्राहेर्द्र्रान्या स्वाक्त्रकृतिक्षराङ्गावरवेदायवेद्वराष्ट्रकृरास्यायदाक्रिस्यक्त्रत्वर्गा न.लुब.तु.हुर.है। बही.परा वेबब.बु.चक्रेर.टी.वुब्रेर.तर.वी विश्व.तु.वर. क्रि.भर क्षेत्र द्वातियत्र वट्ता स्वीमारा कर क्षेत्र स्वारा से के प्रमेर छट र मिया पर हित् रिकिर्णेखेरावडेयकर्पक्रियास्त्रेत्यास्त्रेव्यविदिवाद्वेत्रात्र्वे स्ट्रान् इ.इ.व.ड्र.व.लट.क.वक्रेर.तत्। डिबाब.ग्रे.ड्र.बाट.रे.वतिर.व.रे.ब्र.शवव.वर्ग्यार्टर.

शक्र्ये तत् विषाविष्टिषात्त् हिर् हितातिष्ठः हेट. टे.हे.हे.हेट तथाशक्ष्ये तथा वे प्यय पुरा हैं सर्ग प्रमाय पर्वा पर देवा दें में देवा बन खुन दुव देवा वि चिषानम्बु स्त्रान्त्राम् मुद्रे स्रायम् निष्यास्त्र स्या क्रिया वर्षे साम्या वैं प्रवेर प्रमर प्रह्मा मेर् पायक्षी देवे के मानुसार्ये के प्रमान के दे हैं है रहा ट्रेवानुदेशिम् न्त्रमुश्रास्त्रम् मृत्सर्स्य वित्रम् निदेशम् निद्यास्य वित्रम् वे सन्तर्व की मार्स्का विक्र के दुवा की सन्दर्भ के दि है न दिया मुक्त महस्य सर्कें विर खेरित विषय महेत्र येव खुन्य विष्य स्वा विषय विषय माने प्राप्त माने प्राप्त के प्राप् वे दे हिव हे पर्ट देव प्रेंच हेवे हुव हुर पक्ष ग्री बार्क है। बहु तरा वर वे ल. नेबार दीवा वी विश्वश्वर हीं बुट हीर तत्। विश्व वीशेर बात हीर। हे. संत्य स्व के में वार्त कर हैं वार्त्य प्राप्त के वार्त के वार्य के वार्त के वार के वार्त के व जराक्षित्रात्राश्रक्षेत्र है। है है श्रोवद द्यू जर्मा देवें त्यी विवास वा निवास । कर्रान्ना छेर्प्यकुर्णी नवमा वेमानस्य स्थायदे छेरा नवमायरा हे हेम विश्वासु सेन् प्यते त्ये मेश भ्रम् भ्रम् । वया दर सम्बर्ध सेवा श्राम् साम्य प्रस्ति प्रति देवा त्यायुषान्दा हिंदिहेद क्रियाये देवाये देवाये क्षेषाम्य रामके वर्षे । सर्देरावादे चलिया,बार्ट्य,टियातपुरिटाक्या,बियाक्षेत्राक्षाक्षा,बिराट्यूया,श्रुवातकार्ट्र, इं.चिवित्रा,टिवेयाक्ष क्षेत्रप्रतेष्वत्वाक्षेत्रपुष्ट्रम्मिक्षिति स्व क्षेत्र दिहे नुवाब प्रत्देवा नु नुप्त रेव.मे.चेबेट.हू.। जिब्र.चेबेटबातव.हैमा ट्रे.केम.चर्न.च.कुरातूव.ला.चेबा देशर्द्वाचीर्देहेर्द्रा हिंद्विर्देश्वराद्यानेश्वर्यादेश्वराद्यादेशर्द्वाचीद्वियानुष्येवावेदा

देशर्देव कु देन देवा बद के देन देवा अर्केंब कु देन के देन देवा बसम देव ग्डेग् दिशर्देव के दूर देव पदे हिंद दिय र हैं द दिय र हैं द दिय र हैं या पदे हैं व प्याप्त हैं व प्य र्। वि. ह्रें र. तथा हे हे ह्रें तव हेर र तथा हि हे अध्यय र वे पर त ही या हिंहिर्वीयातवृत्रकातवृत्र्राटा हिंहिर्प्रधातवृत्रकातवृत्र्या शिवातहि चुते हुंब सूर्याता । क्यानेश स्र प्राचित्र हिंग वाल्या प्राचित्र प ये। दिर्यत् स्विषा दे हिन्य मा हि है स्वियाय स्वयं कर या हि है यद ग कुरानर्स्य ताल्या वेराचरीररातवात्रिमा येरान्यम्यस्वार्ट्यात्रम्याणी स्वारा रटाक्रम्यायर्ग्न इस्यादी सञ्चात्र राज्याम्यायायायायायायायाया इन्यश्रित्याम् निवानुष्य देव विवासिन्य विवासिन्य विवासिन्य विवासिन्य म्वेचकार्रे है नविषयार्श्वास्त्र सम्बद्धा लायाली पर्वेचात्र स्त्र म्यूरा है या साल्या विवा कर विव पश्चित्वा विवा पु व्यूर पश्च मुन्त श्रुप स्ति व श्री विवास की है है वा सुरा द विरा श्रेष्ट्रेन्यस्रिक्रेन्यायेन्यवेष्ट्रिम्। स्रिक्रेन्नेन्निन्न्यवेष्ट्रीन्नवस्रित्वयायन्यन्यन्ति यहूर्तत्वायीर त्रमूर्वेष्वा रत्ता में कुर्ति त्राज्ये त्रम् कुर्त्त त्राज्ये स्वाका विका पर्हेर्याधिक है। कुर्रेहें हे हे के या बिंके के निमाधिक पर पर्हेर्। अर्केन र्ट्रें र हेर र्घणर्ट्यापया । झेय पत्र द स्थायर्ट् हे र द्वार्ट्य । न दर न्या मेशर्द्र विराधितहर निवास के महिर् केश महिर् भारत है र सर् निया पर है दे प्रविद्या नेवाय प्राध्यय हरा सहित्र युपाया पह है है है। बायात्रात्रेर्याञ्चन विष्टेश्वार्थ्यत्रात्रेयदेशम् अभिक्षेष्ट्रात्रात्रेश्वेर्यात्रात्रेयत्वा मुक्र.चर्न्य ही। द्वे.कंक्य.मुक्ष.कं.रटा द्वे.चर्षश्च.मी.चर्रटा विवायाही. रें हे न बुक्ष र हे र के खेर पा कर्कें वा सत है रें कर ने न बवा पर हे र पार्टी वा करें

त्रे.ह्या.त.उर्द्रश्रश.त.रटा रेग्रे.च.उत्रत्य.च.श्रुग्रश.चेरे.तश.रटा देश तश्रर्भे स्था वहेन्याक्षा केन्द्राच्या युन्ते वेयाने केण्ये पहेना हिनाया सम्मान विद्या इना पर्या सम्बद्धा वर्षे अस्त प्रमानिक । क्षेत्र मान्य स्त्र मान्य । ग्नेग्रथयात्रम्भरूप्रत्ये गुन्यप्रदेष्ट्रिये द्रम्भर्मेग्यदे प्रदेष्य प्रमानुद्रप्रस्कृ दे गर ले ना है हे से असर पर्य र दावे व र भे स हिय य दा कि र सु मा सु र हिया स र्वेरक्षानिर्यायदेत्वक्षेत्रातुत्वानेत्राद्वी विद्यात्वी दिवायीवह्रत्रात्वी क्षाय् र्देव यद प्रविता मु र्यो पर दे वह इह दें। वेष पर्य पर इह दें वे दें हे दे या पु हे क्रमान्यमान्द्राचे हित्यक्रयाये दिन्द्रहेन मान्य निमान्य देना निवान्य देना है वा निवान्य देना है वा धिव या अळेव देव दे दव परि क्षेत्र व रा देव प्राप्त हिंदा प्रदेर्गुः म्रुप्तान्य प्रत्राप्त प्रत्या प्रत्या क्षेत्र । द्वीषा व्यापिक स्त्रा स्वापिक स्त्रा स्व ता.श्रक्त्यं.ब्रिटा शक्त्यं.ट्र्यं.ट्रयं.त्यं.स्रुं.यंशात्तयं.कुत्तां.वर्ह्ट्रताशातीटा हैता.वर्ह्तता कु पठमा नर्डिन पा लेव है। हैं हे के बेंग्यमा ले में हैं के के पहेंगा हिना पर्वतायक्रमान्तर्द्रभगामरानुन। ।गनुगामार्थनामागुमान्यन् नुन्दरा । ब्रेन यदे विषय या गर्डि प्यर हेरा । दें वे अर्क्डिग दुः इव प्यर हा विषय प्रमुद्द्या देवे. हेश.शेर्ड्र देवाची अळेब देवायदे हिंदादिय अंति के के के का प्रत्केत के के र्रे.इ.मुश्रम् देतद्वास्य मार्यः मद्या क्रियः सम्मान्य स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स मिट यहूर वश्रे श्रीर वट वर वेता हिंह वार्शर वत देवा शरा हे हुन या वा श्राम ठव के स्थाय व्यवाय था। वेश सेन्स में वे ना मुक्त मुक्त विते देव देव देव देव है। देश र्नेन की रे हे निर हिंद निर्दे र केर की प्राप्त की में कर की मार्थ र निर्देश र किर जा

ब्रिट.त.धु.श्रद्धाताक्षेत्रचटात्ताल्यक्षेत्र इत्राथाक्षेत्रक्षाताक्षात्रवाता वचेन.चर.वेश.तपु.सु.षश.व्राट्य.चपु.स्या.वर्षा.चर्ना.वर्षा.चर.वर.चर.चर.वर्येर. उर् ग्री रे विन्द हिर हैवाबायद खेरा देशन वहिबा सु सेर पद थे मेबान प्या दे हे दिना दे अक्टन यदे हैं हे के नदिन पर का प्रमान के माने के अक्टन निर यासनायादेवाध्या देवसाई हे छट सुन्यास्नायास्नियाचकु द्वार्यास्य र्नु मासुस्य दर्भ मासुस्य वर्षेत्र प्रायम के मासुस्य वर्षा वी क्रिक्स मिन्य प्यत्र निवानिया देश मधित्य प्रत्य क्षेत्र । द्वानीय मिन्य मिन्य मिन्य यव र्द्य निर्देश के प्राप्त क्रिया के निर्मा स्थानी सामित के निर्मा स्थानी स्थान करें विर्यायकार्मेवायराष्ट्रेदायां सहिता देवायु दर्गिवायके दिवाय देवा विराय दिवाय क्रियह्र इक्षर हिन्द्र वेश सेवाश ग्रीस यह वा वदेव देव प्रमालवा दुर्थि हो। वे स्र प्ववेषा पह वे हैं है हो देश हैं दे प के द या के व प प्यव हो हे के जा वा ष्यंबिर हिर में विर हिर सेरा विश्वेग मुखेर केर पर्के पुरे मेरा विवा मुखेर क्रिंगिरेशास्त्रेरा क्रिंट्सेर्ट्रेड्रेड्रेस्ट्रेराय्ट्रेट्रियराची वेशायस्त्रायवे स्त्रीरा ह्या वे क्या र हे में वे क्या सरहे में वे रच में के में वे रच है में वे रच है में वे रच है में वे रच है में वे ग्रेन मुन्द्रम् वार्म सक्ता द्वार मिन्द्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् विष्ट्रम् वार्षाना सहर्यात्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रात्रीत्रात्रा व द्वानी वीत्री य.थु.४८.तधुवा वह.सर्थे.थु.हु.हु.श्रश्चरतिता हु.८.ल.थु.बीबाशा श्रव्हे.पे.थु. गुन मु देशे सामा दें नासुस दूर में नासुस दूर में दे से साम निवा सर्दे र प सु ना हुट.प.धेर.कु.म.मूर्य ।४०.पे.मूर्य ।र्रीय.पे.४०.पे.मूर्यातमामरमाम्माक्रा

वसश्चर् वर्णे पर हेर् पर्वे विर्वेशका विश्वर वर्णे सर्वे हैं द्वे द्वे हैं रट.त्विव.बीब.श्री रिवृश्यत.कुत्.बीर.वी हु.ह.श्रुश्य रेत्तु.बीबाब.टिबीश.तर. गु'नवे क्षेत्र'नुवे ।ने लट मेशरन ग्री सर्देव मु क्षेत्र पवे रद नवित क्षेट य हैन गुःसुःरवःदन्निरःवःसःग्वसुस्रःगुर्सःहेःवसुस्रःर्नुरःसदःहेःस्स्रसःद्वदेख्नासः शर्थेश.तर.विश्व.तश्राश्वश्वश्व.रच.यत्त्रेट.घ.श.चश्वा.व्यूर.चयु.र्ईच.चर्डावा.वश्व. म्वायर नेप्रिष्य पर वर्षेर हो । दे क्षर मैंच नवश्यी म्वायर हर हेवा नेव मुस्य वस्य या वा के सारुवा दर्ग सार्य दिन सके वा में दिन देव हैं राहे वा मुस्य त्तृतिमा वर्ष्यत्त्वर्थ्यक्र्र्येषुव्येष्यव्यव्यायायास्य वर्षर्वा मुद्रित् या द्वेब क्रीय प्रकृत या दिया द्वेब क्रीय प्रकृत या परि दिवा या प्रकृत परि । दिन र्ये दे विनासर वर सकेर प्रस्तायाया द्वीश पार्टी दे वर सकेर ग्री प्रसूप मिले कट सिन्या वायनेना समावसावसा सुया याचे वायन मिले हिंदी हैं सा खेर यस दे सेवा ववःक्रेन्न्वयावे धुरा ने यदाविष्या अवर छेन् ग्री ख्वाब ग्रीबाव बाद निष्य है। चम्रेयश्राध्य में दे. दे. सेचश्रावर्ट्र त्यश्र मी. कें. लुव त्यंत्र हिरा क्या श्रावहर्ट. पविक्तिन्द्रीम्बायायिन्यामेन्यवे स्वित्रस्यायारायेन्ते। स्टाबे स्टाई हेराम्बया वदः विवासन्यान्त्र विक्तित्वे विवास सहर हो न कि कि विवास निवा मुख्य हो। वर शक्ट्रिया में विकाल विकास का विकास के व लुब्रायु हिरा वहिषाया है। विक्राप्त है स्वर हिरा है विक्रा है स्वर हिरा ववः खुवायर विन दे। वने हिर न हेर केर हो यो यो ने बने मुं ह कुवे ह्या ब देव यो व तथायर अष्ट्रर कि. प्रस्ति विश्वाया वर्षे हिंद र विश्वा कि. क्रिया विश्वा कि. क्रिया विश्वा कि. क्रिया विश्वा व

वासवानी सूर विवासुर पाये स्वीमा नामुसाया वि परे सूर र हो र से र जी । ८८.जश्र.ज्.इ.ज्रेश.जश्र.च्यूट.श्रुव.ट्यूज.ट्यूचर.च्यूड्य.च्यूट्य.च्यूड्य.च्यूड्य.च्यूड्य.च्यूच्य.च्यूच्य.च्यूच यायान्विषायायेन्ने। वर्त्रक्षेष्ट्विम्हिव्याष्ट्रम्यास्याचेन्यायाकेष्ट्रम्यायाकेष्ट्रम्यायाकेष्ट्रम्यायाकेष्ट हिराने। कुर् हि सायमा हर र्रा देव देव देव विष्या मेरा देवा विष्या मेरिया परि ध्रेरा थैं रे नहिषा हैं नहिषा ग्री पर दु स्व दिया दिया दिया निष्ठ में भी से निष् व्हिश्राई हे या क्षत्र या वा दर्वी या या पेंद्रादे । दुं यहि यह या दे वा हे या हे या है या च.त्रकूर्यत्रात्राक्ष्यान्त्र्यान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान्त्रयान मर मु मदे के न पेव पदे भेर न देवे हिर नु के पाश है वाहा की समेंदि ही न दा गा बुका श्चिर्यवे कु सक्र र्येर दे। दे ग्रह्म या च स्या ची दूर दिव श्चिर या व श हे हे ग्रह्म या स्था न्द्रेरक्षेष्ट्रेन्यवेष्ये नेषणीयन्गर्वन्तु र्वेषय्यर द्वयवे केन्यवे खेरा नेवे यक्षेत्र अर्द्धेव प्रमा क्षेत्र केत्र केषा मार्थ यो मेक्ष ग्री मार्श्व सम्मानित स्थापन न्राचर श्रेशायवे के दावे खेरा देवे वर दुः खुः वशायइ द्राप्ते चे वत् वामिश्यात्रक्षेत्राचम्रिट्रायराचे प्राचालिक हो। क्रिंट्रिश्रावाश स्वेश्वराचेंट्रायदे पर्देश रे.ल.ट्र्य.थे.पर्ह्युश्चरत्र.वी विश्वविश्वरात्त्र.हिरा इश्वर्थश्चर. यवैन्दर्दु वहिन्यवै कु अळव र्थेद्दी विद्यवै न्नद्दि गायु वाले या पदि व क्रिंद्रियायायह्रम्याद्रा विद्यवे क्षेत्रम्यायस्य स्यावे व्यवस्य स्याद्रम्य द्रार्थस्य वसायदे वाकेन या अकेन दे वाहे सामें दावाहिया वाक दावाहित हिंद दे हे र से द गुःणे नेषा अळेव प्यश्र वा इषा इष्र वा या दे हिंद द ग्रें र खेद ग्री को की में कि र खेद प्यर मेश्रयवे के न्येव प्यश्चित्र देव वर्त् प्यश्चिश्यश्यक्ष प्रकृत्याय देव श्वर प्रवित्र

ट्री लैंडस.ब्रे.त.श्रट्रत.त.श्रक्त्यी तर्थश.यट्र.त.क्ष्य.त्रुव.ल.प्रंथ.श्रक्त्य.तथ.तर्थ.लेंडर्ट. वरुषायावरे हेंदर्वे रहेर् प्रवेर केर्णी लेषा की मेंद्र हेर् में मान की विका मान न्त्रा पर्वत्यरम्यत्वत्यस्य क्षित्रया हेत्रत्वु वाष्ट्रश्यस्य स्याम् हेत्रया वार्षेत्रया वार्षेत्रया वार्षेत्रय वास्त्रित्रे। द्वावसावविरावदाहराद्याहरास्यात्राक्षात्रीत्रित्र्ये हरावश्चरावदाक्रेत् लव्याव द्वेरा देवशाम स्टार्ट्य दे दे स्टार्स्य विषय विषय विषय स्टार्ट्य स्टार्ट्स विष्टे याथित है। येतु पर्दु दुवायायमा ब्राट सेंदे न दिर है थी नि केंत्र दवा है पत्र व नि.धूटा । क्षेत्रम्भावात्रे दिवात्र दि। दि.क्षेत्र निमाय मार्थिया विमा न'स्'न्र-प्रनु के स् ब्रुप'यायार्यः र देन 'ग्रीक विर का ब्रिन कि स्वक्षा वा न प्रवापन र चेर्यर्था स्रम्या स्रम ट्रसायम् मी क्वित्रमानम् वाययेवसायाया क्वि क्वित्रमायमा वर्षे द्वित्रमायमा है सूर पत्रया दि पत्रित्र पय में स्थाप प्राथम विष्य देश पर पत्र पत्र है। हा शवानिश्वीक्षानात्री दिशासिक्षश्वीट्राच्यी कि.प्रश्वितक्षानिष्या यथा । पर्ने दे के कि के पर प्रमा । विर र र र र प्रविक प्रमेग पर्रा । विर वर.चे.रट.वर्चे वस.बेट.जा विवास.की.जैस.सी.रच.ब्रैंर.वसा विटेट.कु.सं.ब्रे. ववत्तर्यः वी वेशवीर्यः वटा हे हे उहेर व वश्युर प्याप्तर मृत्रे र वर्षे र्चेत्रम्बादह्व ब्रियः वयबायविव द्वापायय प्रमुद्धायये विकाय विव द्वापायय विकाय क्षेत्रिन्दर्यानियाक्षेत्रसम्बद्धार्याक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्यक्षेत्रसम्बद्धार्थक्षेत्रसम्बद्धार्थक्षेत्रसम्बद्धार्थके यास्यरायराय्यावानात्वेवायार्यायहेवायायवाते। हे हे खेरायायवा दे प्रविव देव र्या प्राची विश्व विश्व राष्ट्र हिरा पर्टे हे कि जा ही वे कूट रे र्गे चिन निमासक्त पर मेर् प्रेन प्रेन कि मेरिक सक्त पर्य पर्त के ने । रि.च.

त्वारित्ववात्तरती वृश्वाबीरशत्तरतिती हे. संर विश्वात्तात्तर्वूशतात्त्र्र दे। द्यात्रक्षावव्दानवे नर्त्र के अट र्ये स्वर विट होवा नवे के द विव पवे हिर। मःसःन्द्रद्वात्र्वित्रस्याया श्चिरःह्रयःवद्वार्यःन्द्रद्वायःन्द्वरः वर्गेर्यार्टा मास्रानुबर्दा सुन्बर्वर वर्गेर्व बरावर्र्द्र हे सार्व्यर सक्सरायित्रायित्यार्टा पर्टे द्वास्तिकार्टा विषयायित्रायाप्ति स्थासः स्निन्युराष्ट्रास्यस्यस्यविरावर्षेत्रास्यस्य स्वर्धाःवर्षेत्रास्यस्य नुरायाध्य है। श्रेपबादर्रम् इबायर्ग्ये में त्रे व्यापिताया स्त्राप्ते में स्त्रे में त्रे विकाया स्वाप्त स्त्र चल्र रक्ति या प्रमानी अक्समा चल्र रक्ति या मेर ने मार्थ से मा निर्माय वै। यह नश्च हु द स्वाय ग्री युन्य द द । नस्य य वि यदे यह स्वर्म स्वाय ग्री युन्य । येव वि । मः सः ५८ प्रत्र देश सं यो मेगावाया स्वे वा व्यव प्रत्रे प्रत्र देश देश है थियो दे द्वा वीशासळ द यर दुषाया वा केंग्रा ठवा द्वी वाया वेदि दे। इत्राय दुर्ये ने यो ने श स्वे पन् वा के ने वा श मुद्दा वि र ख्र र या र यो ने श स्वे पन वा के न वा श र वि श म् विमानेमानर निविद्य केर लोग निविद्य में से वर्ष हैया में से वर्ष हैये हमा में वर्ष निविद्य हैये कि. भक्ष . जूरे. ट्री ट्रे. कि. बैट. धूर्य स. बर्य तथा विषा वथा बैरा तर्गा पर या थिए। जूरमार्श्वेट हर क्षेत्रात्त्र के.जातेजानमा ट्रमातीन श्रेम टे.जर्गीय शात्र क्षेत्र श यी.र्ज्याचीयायायायर देरात्म मुर्थास विद्यापहर पर्व हेरा हे. क् स्वाय संस्था पर पर्ने दे द्वार संपर्द्य प्रायत के शक्य प्रार्ट् । दे सि बिर ह्वारा इर मंस्या देश वं शास्ति या त्राप्ति वर्षे के कि शासि होते हिर हिर स्वा प्रते स्वा स्व वसा वक्के सेन देन वहें नी नहें सम्मुदास्ट्र र प्रमुदाया मारे दूर वावन परिष्ठ

तपु.होर। यथु.त.ज.लट.हिट.हू.चश.हर.चश्याजशा ८८.तु.हो ८.८च.वा. क्रेट्वीयर सूट यहे अदे र्योवाविर के हेट रु दे जिना वहा है सार दे हैं रागर वैट.प.थ्री वित्र.बैट.ज.वेषश.पश्चश.तत्र.वी ष्रिश.वेश्वेरश.तवु.ह्वेरी टु.ह्रर. पश्चिमायात्वाक्रमान्य द्वामायात्वरादे। इसाइस्रमाग्रीपाद्वादे रूपेशायत् श्चिम ब्रिट.चतु.कुर.लुब.ततु.हुर। हैं.चुबार्ट.क्ष.चेतु.वेबाततु.श्रुव.ब्रेट्ट.वेबाता.लट.लुब. है। हैं दे ख्राबर हे हे दे ब के किया हिन कर हैं है पदे हैं द द छे र के द की र के मेशन्। अन्गायते इत्वे क्षेत्रित्वे विष्यं विषया अर्के गानु शुराये थिरा ने लट है.जश वैर ततु हु ह र यर तु ह कि.या है या जा है वीश शक्य तो दे जश तुर. वर्तेषा ब्रुट्गपर्यायाक्षेत्रा हिन्द्राये वट्गिह्या इस्रमानु विद्राविया परि वटः र्वत्रा द्वामान्यम् उर्मेष्टमा मेवास्त्रार्वायरावस्यायराष्ट्रावायवाते हे क्षेत्रायमा स्रम्प्रदर्भे विवस्त्रेयायात्मा । स्रम्प्रम् स्राप्ता वेकायात्मा देवेः क्रियानम् र्री हे हि यह अध्या श्रिया विषय प्राप्त है र क्रिया पर है। मेवार्ट्रामक्रिमायर बेट्रिय करा वेबावबिर बातव हिरा वहिषात है। देव. त्वारिक्ष्वानारान्तेराक्तात्तरात्री तथात्रीर्टात्रात्रात्वेत्वात्रात्वेत्वात्रात्ते व्यात्रेरात्वर ववेर्द्रभीशायानेश्राभी वर्द्रकेर्द्रद्रम्माश्रामा है हिरावर हेराया के प्राप्त हैरा है। वर्षियाद्वर देवाद्वर केया वर्षर है। विश्वर के सम्बद्ध सम्या वर्षा विश्वरायदानुदा खुरा खुरवायदुद्दिर हिन्दिन्याय हो हुर विदेशक्तर कुराक्षत्र विदेश ग्रह्राहे दिन न्यम सेन की सार्वे मार देन । मास्र हे हे देन न्यम सेन ने पके

श्रेन्द्वियन्त्रिक्षायद्वयक्ष्यावदेःक्षाय्यस्य द्वार्षित्रयाविष्यदे द्वित्। वास्या त्रुंद्रिक्षः व्ररावर हिट्छ्यार्थर दे। क्रियान ने देर वर्ष स्याप्त स्वापार्थ स्व वर्षेत्रः दे विषय मेनेवास्य वस्य स्टर्गी ले नेस्र ग्री वर्षे दे वर्गीव वस्य से से तास शर.तूर.सर.धुर.झेवा.घर.घशश.तर.चे.च.लुथ.तपु.हुर.धे। र्स्च्यश्वश्वश्वरायीय. कुः भे में भी विद्वेस्य वर्षे सम्बन्द । विष्ट्रा विष्ट्रा देवे कुष प्रमान्त्र र्वेग्यायकुवे पहेगा हेव विस्वायस्य स्थाया । । स्टेंब्र क सर्वेग नीय इत्यावस्य ने पर्टे कु.इ.२.त्रच.४थ.विटा विचव.चयु.ब्रैंट.चथ.चचव.चट.वे। प्रेश.चेशेटथ.तपु. ब्रेमा अर्णियानीयायर् राष्ट्रियार यें महास्त्रा हियाये के अक्ष्या यें रो अर र्वायवे वा श्वामा सुर्वे में से स्ट्रिंस अस्ट्रिय प्रायमा दे सुरापत्र वा वा प्रवे स्वापत्र सुरा अर्दे र व यानी मार्थेश विश्वात मुद्दि हिंदी हे हिंदे विश्वात मार्थेश श्रिया विश्वात हिंदि तह मुन्या मिर्ह्रे नया सर नविष्य हेर र्म्या है। किर है सा वया लगा नविष्य या स्व जमान भेरि है। यावर रे ने बु त्यीत कु त्यीर कु त्यीर विद्या लट्। बट्रश्रक्ट्रेन्द्रेब्रन्थ्यःद्रब्र्ह्व्यश्चरश्चात्रयःद्रव्यापट्रात्र्रः र्। मैं.श्रे.देव.र्ज्याश.क्ष्य.रेय.रेटा श्रम.लट.यासेश.रे.वर्व्यातस.यट.वी.क्रिय. ह्र-प्रमण्डा हेर्ड नार्वर्टियार्वर्यात्र्रियार स्ट्रिय्यार्यायाया हेर. केन दे हिमाय इस्ति पार्टा वित्तर हो यो या यहिया की या वित्तर वित्तर वित्र कुसर्दे,हैव,बट.रे.हेर.लवाजी.हेट.बेबाबाहे.बिधेश.कू.ववर.व.रटा अ.टेकुवा बुर्ने निया स्था की जीयार वा कार्य वा सीयार र र से या प्राया में साथ से या प्राया सीया र प्राया में साथ र

शुन्ता हिन्यस्त्रेस्यावित्वित्वेत्त्राम्ययान्ता मास्निन्तान्तुन्द्वेत्स्यानुन् वह्नानी निम्मा की द्वार विद्वार के कि के निम्मा कि के निम्मा कि कि निम्मा कि कि निम्मा हिस.ग्री.ल.म्। योश्वम.ग्रीश.पर्वाम.प्रेय,सैयश.ग्री.सै.वशिम.लट.श्र्म्य.त.लय.त्रुप्त. नि.त.थ्री बट.शकूर.विब.बीशावश्चितशाता.वा.क्रुश.कथ्री देश्याता.तूर.ट्री स.श. र्रःस्पायवे स्थात्रेशयर ग्रुपार्दा स्वायार्थे र्रायाये राम्यवे प्राक्षेत्र यद्रा वर्द्रक्षेत्रवात् श्रुवायावाद्गेवर अविवद्रा द्वावशाव्युर विवाधिक्र गहिर सेग्र भी व मी सप्त वाराया वर सके र मिस् प्र मिर भी र पा व स सके र र् नु प्रवे केर विव प्रवे हिर है। हु प हैं द्व ही या वे सु स र वरे वेन य प्राप्त मनेवायागुन्दस्यायरखेवायरछेता ठेषात्रा घराष्ट्रायया देहेबायाने. चारीया र्व्याया मुख्य संचित्र वार्याय द्या स्था । स्थ्र र इया स्थया वा पर्यात्विर में विषामश्री वार्य हिरा मिल्या में हें वर्ग मिर्टर या में प्र उत्तर्भव च.लच.स्था.प्रिंग.र्ट्र्य.स्था.भीर्था.पीट्रा.पिट्र.प्री.सं.श.सं.श्रास्था.प्री. स्वा जेन र जिर पा हर से रेवा बाही विद्वार यह अक्ट पार पा यी पा केन अक्ट. मुकाग्रीकाग्री हराइटा व्यावीनकावहेनाका छेदावा हिंदा वर्षी निहराम छेदायर वनदा ्रद्रा भावतःवम् मे शक्तुःवाशाबुटःश्रुटःवार् हूच विम् वर्ष्ट्र-शानुदेशारः वर्षिरशः मन्तर्वित दिर्वावी देवाकाम हुर दुर्दिय देवा नर वर्षेया वर वर्षेया ब्रे.श्रेयश्वर्दरासुंगश्रश्चराधेवाया दे.जालराववासुंगश्चरायाद्वादादरा द्यार स्विषायापानवादाये स्विषा सुराविषायया वर्तर वे से सामविषा । निपर्या जासूर्याथातातु स्विताश्चीर अथाराजा हु हि अकुष क सूर्या साग्नी श्रार मुझ पहरे तातु की. शक्त स्त्री दे केशकाता हिंद हिंद ता है है तकर नेश देवर पश्चर प्राणि नामर.

अक्ष्ये.मी.मी.यथायाहूरे.पालये.तपु.हीरा हैंग्या.मीट.यथा.बीय.पट्ट्यं.क्या.रेटा त्रीयशास्त्रभार्थात्व्रीटास्वारटा श्रीयर्वात्वारास्वार्थात्वाराह्यः वयश्रीयोशेटश्राताक्षराचित्रात्राक्षराचित्रा देखराच्यात्राच्यात्राच्या ब्रुट.क्षश्चारट.द्रवाश.वी.क्षर.ब्रेटि.त.टट.। व्यवातव.क्षेत्र.वेचव.ख्वा.वे.ब्रेट.ब्र्व. महिषायमा वर्दर हे है सास्र है या भी मार्थ है। वर्ष मार्थ है मेमार वासार राजका त्तुःश्चरःश्चिरःतान्त्रयःत्रुद्धरा हिवाशःश्चिरः स्थाशःचरेःश्चरः नियः स्तरः नियः स्तरः विया र्ने पर्वेतात्रकार्र्मे हे तकर्रे प्रमेश्वर प्राचार्वेकायाय र्रो हिंग्या मेरि इसमाया । भवानी सर वेत मिर पर दर्भ हे स्थाय वायव निवाय पर में पर कर कर कर निवाय है ब्रेमा देणदक्षपतिकेम्ब्रिंदर्भवार्श्वेदर्भवार्श्वेदर्भवार्थ्याविषावषावर्ष्यः मुग्रायक्वपार्वरा। वर्षेत्रायाबरायक्वराक्षरामुन्याम्यायक्वरायायावा हिन्द्रा क्रियदे तिवादा है। के मार दे अथाता व्राट्या हैंदे ततु हूं ये दे विश्व के साथ से मार्थर म्न.ज.चेषश्व.त.८८.म्रे.चक्षेष.थषा.शह्र.त.लुष.ब्री ।क्कि.चष्व.वर्वेज.चर्च.क्रियास.ट्रेंब. यवगापुराधेरादे। विनासवद्धीष्मुःदुंगम्बस्यादे हे वास्त्राम् । विनासवद्धीष्मुः वे नेषारवाणी यारेवार हैवाया अस्ति। या वे रावा स्रावी अस्ति। बरागार बु.चक्रेब.चग्रेर.च। लक्क्ष्य.श्रक्त्या.त्त्या त्र्वेक्क्ष्य.राष्ट्राचा सेर्वे.ट्वेबका वर्वे र तत्र्रेव लव पत्रिम नहिर सावविवा स्वार्टिस वार्र र मिन्स स्वापि मिन क्रियंश्वर्षायरीयात्र्रात् हें हे विश्वराति है विश्वरायरीयात्रार्था हे हे विश्वर. ड्रेकान्द्रज्ञिकान्त्रम् क्रिमान्त्रन् क्रिमान्त्रम् क्रिकान्त्रम् क्रिकान्त्रम् वाश्यावा वर्रात्रे में स्त्राचित्रा क्रिक्षा विश्वा क्रिक्षा में स्त्रा में स्त्रा में स्त्रा में स्त्रा में स पर्वे.ला बुधातायका वत्रात्रावद्गावस्यात्री लूटकासी श्रवर विवार्त्य विद्यार्त्य.

चर मुका सुनिषा पर्दे देश चिषा मुका मुका पर्देश पर्द हुँ दे पर्दे दे भी पर्देश में विभाग वस्रवास्त्र देव दस्याप्र प्रदायविष क्रिया वीषा वीषा प्रवास हित्या पर्य हित्या क्री प्रदेश क्रिया क्रिया क्रिया प्रविष्टित्रिया वाक्षर्रित्या व्यक्षर्विष्ट्रियाव्या गुप्ताये हे व किराय वेषा प्राय वाद्यारी वर्षेत्र। रेबावविषा भेवात वर्षा वात्र से मूर्य वर्ष्ट्र रेट वर्षा याया वेशयवेष्टर मुक्षमहिर अर्मेव देशप बुदा के हिंग द्वा द्वा वेशय वया वे पर विर्या हुँ र वया वेषायवे पर कुषा विहेर सावव्या पर दिषा पह्नवा यन्वावीन्त्रीवावार्वर हेर व्यु वर केंकि। वेशयाव्या इयायर वहवायर शहूर। कुश्रातद्वाचरात्री श्रियावयश्चर्यायाष्ट्रीयात्रात्र्यायायायायायायायायायायाया वर्ति.वर.क्रु.क्री वेश.त.वंशी वर्शेर.वर.शह्रे.दे.वेश्वती है.सेटी वंश.तव. पर मुक् भू वा मानक पर्देश माने क्षेत्र पादे समुद्र मुद्र प्रा मानव पर मुद्र स्त्र प श्चित्राय्येश्व मुन् मिर्क्य क्षेर्याये प्रत्य प्रत्य प्रविष विषय क्षेत्र स्वर् याणिवादी त्यार् हे हे हेट पर वाहर हिना का श्रीकाव व्यापर पन द पार्ट विवाय क्षित्र श्री अव अर दी वहनाय परे पवे क्षेत्र निर्म हन शर्म मेर मुर पु पक्षित्र प लव्याव द्वेरा देशव द्वापासुद्ध क्षेत्र पाने सार्सेन साम्री केन सामर दा इससाला मे नश्रम्भी प्रमान् सेवाय वाद्रमें स्पार्यित दे। सकेत् प्रवेष्ट्रमें सुक्षार्य दे हैं है नासुका की पद्र ना केद उन की पदे हिंद दिन केद की दि केद ने का की का ने का त्र मि नवु क्रूर लुब नवु हिरा बेर्से बु हर नवुब है। दिव हब से लट के नहिष. र्रासिक्षियविवायविक्षास्त्रम् विवायति क्षासिक्षासि । लट्रिंबानेट्रेट्र्यु.इ.सेट्रिंट्र्यू.इ.सेट्रिंचर्डेच्रेच्याश्रह्रंत्तालय.तप्रहेर् ट्रेच्या.

बुद्धान सकूर तथा शकूर। लाची तक ता प्रथा कूर था ता प्रकृत पर पास्य ब्रमानीनामासुनास्याचार्याचार्या नावबाद्यसम्बे में स्वित्। सक्टिन्यये स्वामा शत्रात्रे स्ट्रार हे वित्र द्राय रहाया प्रकेष के के किया सह मार्थ हर प्रमा वि पशर्ने व सुन् व सुन् व र देव पर् व देव पर व कि के कि पर व कि प श्रूरावन्धानेश्वापाने वर्गा हैं यर्गा हैं या श्रीवाशायवर दे प्वनेत्र हैं है र दे विवा निव.सूराताकातम्बाराग्रीत्रप्रकर्तम्ब्रातार्टा शर्वेषाग्रेष्रस्य श्रेशक्र्याश्चारा मैं त.तर् तत्त्रे वर्षा वर्ष्ट्य वर्ष कर्ते के प्रवेश वर्ष प्रवेश वा सक्र र्वेद व्यव वाक् सर निवायिय विश्व के हिना वाव हैन है द के हिन । वर्ग मुंबावाबवारी सर.धावाडे स्वावित है कियाद एड्रायमेंबावाबबार्य देश वादरा गर्नरमा द्रवाक्षात्वाद्रमान्याव विष्य च विष्य विषय विषय विषय विषय र्गूबाही रिनेट वंबर जमा गुलु बुर जगीन व कु में ने प्र प्रमानमा कि. बर क्रेस यु प्वतु र पर्वे के व पर्वे । दि बे प्वस गुर क्रेस बिर ग्रे र ग्रु र ग्रु र हो । दे चन्न पुरा के सके मार्ग मियर वर्ग्या । अर्हेन वर्ष के अर्हेन केर प्रोर्प या । रूट मियानसः स्रम्या हेन् नया युर्वा या यहा । दिस्रा न स्वया प्राया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया मुर्चामान्त्रीत्वाद्दामान्याय्यायम् मुर्चा विवाय्येवायमान्त्राच्यायमा मा निर्वात्रम् मित्रविवात्तर् द्वात्रम् विद्रम् विद्रम् निर्वात्त्रम् वा विर्देर कवा बाक्ष लेट र स्वानिक विषय वहंवा विषय के वा सेर विकास विषय वर्गम्यान्त्रेर्द्रा हित्यम्कित्वरक्षित्यां वे स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स

क्र.च.च.द्रेच.तकर.वर्चेच.वर्चेर.हे। रिश्रम.२८.वर्चे.भैंच.२च.त्रम.वर्चेचम.तर. न्त्रा दित्विव देः अलेख वे स्वाप्ति प्रमेग्या दि वे दे त्यस्य के व स्थाय पर्मा प्यान्त्रक्वार्याम्बेद्दान्त्र्रेत्राचार्यस्य । द्विस्वित्त्र्यन्त्रम् । विस्वित्त्रम् । वर्चेत्र । विश्वाविश्वरत्त्रक्तेत्र । देशव्यवार ब्रैट. क्रंत्र क्षंत्र विश्वरा संख्या चैर्त्यव हूर्ता लर्था चेर के. क. च. इश्वा क्रीर तालु ब बुर्त अकूर इश्वा के. खुःयश्यम्भुद्रायायाद्वीश्यायार्थिद्रादे। खुःदेरदेशादेव सेवादह्व नेवापु सामायश रटावन्नरान्नायवे क्रिन् इस्रास्क्रिन्याने स्रास्क्रिक्य या मेसायवे क्रेन् प्येक् यवे क्रिन् नेव बर्द्र-इ.स.इस्.इस्.इस्.अस्.क्रेन्याया क्रेन्ड्वायायाया क्रुंत्युवायायाया लेश्वरामें में मान्त्र हैं निया है स्वामित के स्वामित हैं विया में निया है निया मान्त्र हैं हैं क्या क्रीयार रात्रा क्रियवाय विवान रात्रा मान्या विवास क्रिया तात्वश्रमेशत्त्रः व्यानाश्यानाश्वर्षायात्वश्रा वर्द्रमः द्वे सास्त्रमः द्वातात्वराद्वाता दे क्षेत्रपश्चित्यायाक्क्यारुवा न्यूयायायूर्ट्री शक्चर्ड्रह्यास्थ्याश्चर्येटाययेवाया र्ण्ट्र द्रमानु मेषायर मु नवे के द व्यव प्ये प्रेरा के द कु द न न न मार्थ्य द स्यामी सर्हेर्ड्यरेर्नार्ड्याउवा विर्ध्यरम्ब्याच्वर्र्वर्वेयप्यरव्याच्या विवे विन्यमानि हिंदान् के मेर हेर् हैं मेर के मेर क वास्विधानदास्त्रक्रिं इसास्रास्त्रस्य स्थापर मारामा हेरावशामित्रपर सर्मेन इस्रमाग्रीन्वराये दुवासीसेवे हुँद् प्युवाद् अवायासेद यवे यदे याष्ट्र यार उद हुँद त्रु विर्तार रेट विश्वर पर पश्चिमा प्राय किया है में है के किया पर पर्देश रेट्र विषार्थेन्याश्चिषाद्विषाच्यायायवाया देन्द्वरायेन्यायुग्द्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्य

इस.म्.मूप्रुय.श्रट.र्ड्याश.झेत.च.ता.क्र्या.कथी टेव्या.त.लूट.ट्री शक्ट्र. इस.प्रथा. र्रेहे नश्रुम की प्यत्व हित दु की कायक्ष प्राये के द प्राये की प्र मेश्रादेश्चाद्देम् वास्त्रम् श्रायदे इसायर म्यायर स्थायर मुरायर मुरायर स्थायर मुरायर स्थायर मुरायर स्थायर स्थार स्थायर स्याय स्थायर स्थाय स्थायर स्थायर स्थायर स्थायर स्थायर स्थायर स्थायर स्थाय स् र् अर्क्र इस के व के प्रायक्षण व किया के व व व किया व किया के विकास के वितास के विकास व्वित्रचितः संस्ति । यस्ति साम्यान्य । व्याप्ति । व्याप्ति त्र द्वितः श्रीका वर्दे दि । व्याप्ति । बु रदावध्य नेयात्र मुख्यात्रा मुद्दा मुद्दा मुद्दा मान्या मान्या मुख्या मुद्दा मान्या मुन्द्रमा मान्या वार्या प्रत्या प्रत्या वित्र स्वर्ष वित्र प्रत्य वित्र प्रत्य केत् येव यदे हिर है। अर्गेव यदे अर्दर मुबायबा वर्दे पा स्वे वे प्यास वा न्यवास्याम् विष्यादे । विषयादे में में में स्थाय में में स्थाय में में स्थाय में में स्थाय में स वश्चिट क्विव मुर्ग नाम है। विश्व मुर्ग मुर्ग मुर्ग है में स्था मुर्ग है में से स मुरानम्बर्भान्यायाक्ष्याच्या द्वायायाक्ष्याच्या मुरान्यान्त्रीया तत्रवरम् त्वावामुद्राक्षयायद्रा ह्वा सूर्वा विवायवायक्रि केर द्वा स्था क्षेत्रा क्षेत्र प्रति स्वया अक्रम मुन्य प्रति मा क्षेत्र प्रति मा क्षेत्र प्रति मा क्षेत्र प्रति मा क्षेत्र प सरकाक्रिकार्गेथ्,में से देवाती निर्देश्यार मित्र विकासिया निर्दे हैं. ट्रेवानु कुन श्रुवायये। हिंहे बेसवाद्यय वेगवादिस्य विवास निता । विवास कुप क्रु.च.त्रचेषा हि.से.क.ध.५.५.प्रम्या विट.स्येषा विष्यः विषा प्रस्ता विष्यः विष्यः वम्तान् रे. दे. यु. यु. युषा । वीय प्रायक्ता इस्र मा क्री मान्य रामा । विष स्र स्था स्त्रे हिर्तर है। वित्रास्त्रा है वास्त्र हैर है। दियायर निवाय वित्र वित्र हैर वर्गेर् । बुबानिश्चरवात्रक्तिर । सुराक्ष्त्रेयात्रे सैंचाववबावबावविदावास्त्राज्यः

वा लु.म्.मकु.तव.र्ष्यश्रद्भावा क्रु.धु.सु.हुव.ब.मूच.लुव.बुटा शक्त्रद्रेथ. वे हर प्ववा पर् सन्वे दे हे से समा प्यापा मात्रा मात्र है व । सामु प्यापा ला बे हे बा खे केंद्रिया नह, बारे हे हु, ना बे हू है अशबार नव हरे की बाड़े नरा है है. विजावसायर अहिन। देई विज्वहवाया के विज्वान । इन्धे विदेश रेवि रहा यविव दु अर्देन। सु हि सि इ अ वे यन् ग या मेव हु न शे साय र र यविव दु अर्देन। षानु रस् के इ स ने पद्मा या हे श शुक्रम् श पदि र द पदि न द से दि । शुर्य है के इन्द्रवेन्द्रवायानेवन्तुन्वेषयवेन्द्रप्तवेवन्तुःस्ट्रियायकेन्द्रियाया चीच.वश्व.वट्च.वट्च.ज.कैज.ऐ.चेब्रुजा बच.पाश.बी.व.व्र.श.च्र.चट्च.ज.ज.वश.वश्व. ठर क्रुयनु मर्बेया दि हैं मु येश्गु नु दे के सम्म गी नियय नु सहें न नियय ने हैं है यु ने न कु ने मुन्य में हिये या रेज प्राप्त के प्राप्त इना अत ने पर्टेश इन पर्श बन न मुना ने ने प्रवेत माने गया प्रस्थ कर मी वह वे हे है। या ये वे वद्या । यु इ वे या वर्दे र हे न । वह इस वे हे हे रह रह मुःर्ट्यवेदा अनुःसःअःणःसन्तेन्यःक्षेताःस्यस्यःचयःकेदःया खुःदेःवसुटः येदे ये नेषा सकेदा यत श्रीषाय दे हिंद द्वेर सेद यदे यो नेषा वाषवाय र द्वेद छेट। देव-श्रामविष-तिवाब-वर्ष्ट्रमधायर-विदारी स्त-वि-वर्ष्ट्रमधानिदासी विवाब रटायक्षातायह्राबात्रम् भेरी द्रवाचार्यस्य प्रत्मे दे हे स्वाया रत्तुः क्ष्यात्र म्यात्र माने वार्षित्र माने वार्षित्य प्रति वार्षित्य क्षित्य क्षात्र विषय क्षत्र प्रति विषय शं.त्मृ.ध्रा.श्राधातम्भेर तथाहेष.मी.र्ह्ताशा स्थापम्थान्त्रात्राचेषात्रेषात्राचेष मुं हुँ न्यवे हूं नशा अर्दे नहें न सम्बद्धा महार साम न माने के के में सहित साम

लुका जुकाक्रुविकाग्रीकाक्ष्मान्य सेव वहीव पत्र क्रूंचका रहूका बी वहाब वका हेका. तालका बिर कूर्या ततु कूर्यका सैयका जात क्षेत्र तालव ततु हीर । यह बाता प्रवित क्षेत्र । पर्हेष.तपु.होरा क्र्यावाधुट.अक्ट्र्ट.हुट.हूंश.त.श्यावा.पर्वेट.प्युवी ह्रीर.त.क्र्यावा. वास्त्राचा द्वारा विवासम्बर्धे रामार्ट्सा सामा वास्त्राचा स्टर्ग निवा स्टर् स्रामानी में याचयमा में याचे रात्रेर ये याच्या माम्रेर यो याच्या माम्रेर यो में याच्या माम्रेया में याच्या माम्रेया में याच्या माम्रेया मा र्यः प्रदान्ति । या प्रतान्ति । विकासी वाक्रिशक्ष द्वीयायार्ष्य दी सराधेष हेवायव स्मित्रासी केवाया सक्रि यव. वियः नशुम्रायदेव सेन् ग्री है सं वेद द्विषायायवित नु। वदि राषदासकेन यवे वियः नश्राचेन्दरेक्ट्रिट्रिट्र केट्र केट् च पव के र विव पव खेरा अ इ व यार र र । इ ज मेरे व इ व व य य इ र र के अव हेट रु दे विवादगार ये वर्डे अयर वन् गुटा वर्दर दे विवार्डे अयर विवार् श्रे पर्केरिता कृष त्राप्त स्थान तर्मित क्षेत्र विषा सहर तत्र स्थित विषा धुन यदेन यामनगानु र्येन दे। रहानी क्षेटानिय स्वत्यामकुन नहां भेना यानार न्सर सकेन यदे यक्क न्दर्भ सावायान कायदे मेन मुख्य पदे क्रा के सक्ष कर्म में निवास श्रेन्'नु मन्साया सर्द्धन यदे र्द्रुं क्रेन् यदे र्द्र्ने ने र द्वर्ग सायुदे दस्याय उन क्रिया हुन वड्रेब.त.लुब.तुर्कुरा वर्ट्र.रेट.तूर्वा.पे.स्कूरे.त.क.सूर्यश्चायात्त्रं सैवश्वासीवीया. गिवे र्दुं धिवा वाब रिंद् चेर दर अर्के द स् र्याव श र् वे वि र दे द वा सर पर हिर वि र दे लुवा.ज.वर्ड. ट्रेब्र्स.हे। इ.क्ट. जन्ना वर्ड्ट वर्स.इ.ड्र.क्ट्री.व.थे। ड्रिवास.वर्स.प्रव.

प्रमान्य विश्वमान्य विश्वमान्य विश्व दिन्त विश्व वार्षिय वार्षिय विश्व व तात्रिकात्त्रवात्त्रिक्तात्त्रिक्तात्त्रिक्तात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्या गसुमान्तेन पर्यादेन वो इन्द्रीन ने न एक प्रमान कर ने प्रमान कर के न पर्यादे हिया ने वश्रासूच न्ह्र्यत्र त्र्यात्वर ज्यापश्चर वा स्थाप स्थाप हित्त मानित हिता विकास स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स वडेव द्वार्था हो होना य वहैर व्याय सेंद्र व समा की विद्वार केंद्र यर न सुद्या तत्रहेर वास्त्रवास्त्रहेव वित्रहेव स्वापार स्ति दी वारायवार महेर सक्वा मी ह्या स्वरम गर्द्रगर्देर यश्वा अयन स्वित्र श्री न्या हिन्द्र सेट नेदि हिदे हेट व पत्ना श्राप्ते शुन पदेन पदे क्यानेगा दिगाय छे । ग्री देर सेगाय ग्री श्रुवा सवसा सुना है मैंवे देवाबायन्वाची खुंचानु हुव पडेवायन्ता विस्तिन्त हा की निर्मा पर हुव पडेवा त्तु.क्वानाश्वाता वर्दरक्षे.श्वाह्मरचि.व.लुव.त्तुरी चट.वशःश्वेष.वर्द्रव. वा रद्यविव मी मवश्व श्रम्भव पदेव विदा वदे या यद केश भ्रायदे या केव त्राजयान्त्रेतायान्त्रेत्रश्चायर श्चित्रवर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र स्थायर. श्चित्र वहेन प्यापित्र स्ति है। सहन पहिं पार्था हून प्रीय प्राप्त प्राप्त विश वाशिरशात्तु हिरा द्वा श्रुथ स्वाश्व श्रुव श्रुव श्रुव श्रुव त्रुव त्रुव वाष्ट्र वाष्ट्र स्वा हि नेवा त्र श्रुव हिंद वडेब य पीव की । दे न्हर श्विव ड र मा व मा श्विम अर्के द सेंग मा श्वेद प्राय के वड्राचार् अर्थेद्रागुद्रा वद्देराञ्चयवाग्री विषेवायाद्रवा वश्वव्दुद्रावाङ्गराअर्टेद्र त.झे.विर.तर.क.र्बं देश रे.वे.र्यूश.स्टा वर्षेतायव.र्ह्यश्च र्ड्रा हे.हे.हे.तर.वाशायसर. यास्तरारी । ह्यायार्द्वा वित्रायम् वेता यतान्या यतान्या

याम्बर्धारुन्। मुक्तेने अर्मेन प्याह्मेन स्थाद्र ने साम्बर्धन साम्याद्र ने म सर्के श्र-राष्ट्राचा सामायान्याळेग मियोपविवानु पविषा खुः १८ दुं वे गुः ये दिन नी यक्टिन या कु यक्टिव क्षेत्र पर्वे पान्य क्रिना पतित नु पति साले साया है स्वना श.र्श्वश्वत्वतरानु क्षेत्र.चेश.तत्र.वेत् । व्यवश्वत्र्र्ट्रि.ततु.कु.रश्चवश्वतात्वर.ता मेन्यविः स्वायिन्दे विष्वियायहेन्यान्त्र्यायात्रयानु रत्यो द्वित्यावयास्त्र इसन्निन्दन्ने द्वायदे द्वायदे द्वार्ये द्वार्यन्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स् बिटाइसमाग्रीमुगमाकुरायाज्ञनायास्रारायदेग्वरे क्रियापरायम् अ विदा दुं विश्व पर्हेद यद्दा हैं है पहुं परे धुवा कु पकेद विदाह से समा हिद येतु र्दे क्रिया वा च र्रेश त्र प्रश्राम ता क्षेत्र ता विष्य ता से या ता विष्य ता ता विष्य ता विषय ता विष्य ता विषय ता विष्य ता व वनाः क्रूंन यावा क्रूंन क्रियावश्यम्न पदी नद्विन नहिन्दार दि क्रूंन यावी र्रे.ह.तकर.२८.झरश.र्र्चश.लूटश.शे.र्र्चथात्रप्तर.वट.धुर.। श्रेच.चहेश.झरश. त्तु अयः बोबवा बोबेबा बी की हो त्यु त्यो की की हो हो के के या के वे व्यक्ति त्यू के स्वर प्राप्त के न्नाधिक यदे हिरा ने न्ना गुरन् ने का नहन कर र व्यक्त ने का यहा ड्रेन्द्रस्यायर मेस्य पङ्गिस्ट र्चे स्ट्रस्य यर न्वायवे ने प्रवेत विवास यर देवास हा क्रेश्रक्टर देवाक्षातर रेवात हे है या करिया विषय है देव शिवा स्वित न्वरायाद्वनाम्भायरान्वायासाम्भारा स्वादिता म्याम्भारा वहवानेमान्वरा त्व । श्रेय सेवा चेशवत्त के ये बार्टा वाकि मार्टा वाकि वाकि वाकि वाका

इस्यायर द्वाया इस्य द्वर की रेवाय क्वित हे क्वित द्वा ने द्वित दु वियय ८.कैवाक्षात्रप्रदेशात्र्यानुष्रप्रवाश्वाक्षात्रवाश्वाच्यान्त्रात्रवाश्वाच्यान्त्रात्रवाश्वाच्यान्त्रवाश्वाच्या गुै केंब दर पर काय इस पर द्वाय देंद द्यवा से द गु रेवा ब द समित द द इ.र्ट्रें .वीच.ग्री.प्रवाश.ग्री.चवावाश.श्री र.केशश्री हि.केशश्रे हि.उकट.रेट. वर्ष्यत्र कुष्यक्षत्र हेन्द्र याया देवायवे हेन्द्र यायम् वृद्य स्वाप्त देवाया वेषा स्यामानामानमा वर्तवेर्द्रम्भा वर्षमानवर्त्तर्त्तीवार्वादर्ग्यावर्ग्नर्म्यानिमा त्रक्षात्व। वैट.क्य.गु.म्रामार्ट्र, हे.हे.ह.तकट. २८.झटमार्ट्रचातात्यः वालावार् देवायाक्षेत्रवाकुर्दरअवस्य क्षेत्राचर क्षेत्राचित्रविक क्षेत्राचित्रविक स्वाप्तित्रविक स्वाप्तित्रविक चतु.की.भक्ष्य.कीश.क्ष्यात्रव्य.क्ष्याता.सी.क्ष्यावातात्रभवात्यत्र त्याता.सेवात्रभवात्यत्य सेवात्यत्य सेवात्यत्य मीर्वादावात्रमधासासुर्हेरावदार्द्रसायदास्यार्च्यार्चात्रम्भानवदास्यान्चात्रम् सेससर्हे हे दर्व दर्ग प्रमान के स्वरं हिया द्रीय वित्र या वर्षे द्र हु व स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स त्रेयातक्वाक्वाक्र्याक्ष्यायाया ईरार्टा देशक्राम्यायान्त्रीटाक्षाक्ष्यायायान्त्रीयावक्वाक्वा यूर्री ईर्रट्राष्ट्रभात्रभावरूर्रे किवार्टा रेचवार्ट्य क्षात्रभार्ये वी कूर्य र्टा इम्राया बेम्यायम हिनम र्या के मिन्य में विमायमा क् वयाक् क्रियं क्षित्व क्षाया प्रत्ये क्षाया क्षिया या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया ती. खेश. तथा त वसा ती. शवर किंचे. ता. है. शूर विषया त. र ८ ८ ४ ८ विषये अप्टेंट शास्त्र. चिर्वे. १५ ४. व्यूप्र. मूर्या श्री ४. च. प्रथा ता. ती चा. वक्षता च. ताव. ती प्राच श्री प्राच श्री व हेशर्चन्यक्रियावेशयश्राद्याचार्याद्वियाविश्वाद्यान्यावेशक्रियाद्याय्याद्याय्याद्विया पर्वेष हैं। क्रिट्यर्टर ले र्बर पर्टर क्याय क्रिय पर्टे हें है। वेश स्वाय ग्रीया हि.

र्ने स्वास्त्र त्वाची देवा सर्वा वर्षेत्र प्राचित्र हो। क्रेंट्य प्राचे स्वास्त्र स्वा ब्रूट द्रा वे ब्रूट वेश पश हेट देंग में हिं चे महिश के महिट पद्रा वर्दे किनश वेषायमान्युनार्ट्वारुवार्ट्वारुवार्ट्वार्यार्थितात्रमा श्रीयायात्रेवार्यकार्यकार्यकार्यकार् वर्चर-रटा हु. इ. इ. विषात्तरा क्रूंचरा मु. कु. देव वीच मी. द्रवारा के देव ता त्रव तर् ही र वर्रेन्वाने कुन् कुर्यो प्रवेषयम् इर्रे यम्य वन् यः स्र भिन्ने । वासुम्रायम् वन् व र्वेगाम्बेद्याम्बद्धाः देणद्राञ्चन्याय्यद्रद्राद्यान्याय्याय्याः गर्भरमाग्रीरा वहमाईरामी श्रीवाचवमावमावचिरावाहराम्या विद्रा हा हा सर र्गान क्रिंट र्गाम सुम्राम युमायदेगान हैंग नीम गान नम महत्य है प्रमाम प्रदे र्र.प्र.व.थ.श.म्.व.१५८.५८४.त.४४४। लेज.वीचेश.म्.कुथ.गू.रेट.र्जंथ.तप्र. म्याप्टर्न्यीवाविष्ट्राचेवाञ्च स्वाधानुभुवाञ्चर्म स्यापारे रे स्यायाये । तर.ट्र.ट्रे.ट्रेच.ब्रु.वश्वश्व.व्रट्र.ल्रेट्र.लेय.ट्रेश.वश्वा क्वेत.क्वेत.क्य.वश्व.क्ट्र. नायबेबर्र्नेहेंपशयबेळ्टाबेटाय्यिराम्बुखायदेवाखेर्र्न्हेंन्यशयदेवेकार्याये मेखार्या व्रथात्रास्त्रिवयामनायायरम् प्रायाणेव यदे हिरा वर्षे याणे रदाद दिया स्वर जग्रुक्षेत्र,या ह्र्यम्भरमरम् क्रियान्त्र, विद्यान्त्रम् विद्यान्त्रम् विद्यान्त्रम् विद्यान्त्रम् वस्त्राम् । अव रटायस्त्राम् । वस्त्राम् यायाम् वात्राम् । क्रेंदेगान क्रियन्ने प्यान्य अह्र प्याने न्याग्रान व्यायर न्या यर न्यायर व्यायर व्यायर व्यायर व्यायर व्यायर व्य

पृत्वे अप्रश्रास्य स्वाप्त्र प्रमानित्र विश्वाप्त दे । दे रहर प्रसाय प्रमानित स्वाप्त प्रमानित स्वाप्त स्वाप्त बर्पिय विवस्था सक्ति। मृत्युर विराधिय। स्वापा श्रुवस्य विष्य श्रीवस्य विषय विषय । विषय । विषय । लर्.मी.र्यातार्टे.श्रर . ब. तर्या पश्चित्या विद्यार्थ्याया मृत्या गान्यस्य पुर्वा र् .शरश् केश्व.ता श्रेपश् शं त्यू .पद .पद् वा त्र ने पदे वा मेवाश इसश् ता र् शह्मा. में जश्र क्षेत्र पार्त्र प्रशास्त्र स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा स्वर्धा प्रशास स्वर्धा प्रशास स्वर्धा प्रशास स्वर् यदे पर वामेग्राय इस्राष्ट्र पर है सु यु दि स्वाले वा यदे वामेग्रा इस्रा क्ष्याच्या विराधरात्र्यं श्रीयाक्र्यायात्रात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र स् हिट देर हेवा सम्प्रते चिर भी रेवा पवस पर्मार या विश्व सूट वी दे सामेर या है। यद्रयद्रयर मेरिक् शर्मेर्द्र विषयप्रयम् वश्चिष्ययर वश्चिष्यये प्रविषक्ष स्त्रेत् ग्री यो विषद्र। क्षेट. इ. र. श. त. र. र. विष्युत्ता श. शहर . तथा तय विषय अश्वर अश्वर . विषय प्रायय विषय र्वे विषय भी भागी पूर्व प्रथ प्रवास मही वाता विषय १ देश विषय है वा से प्रवास करें क्रिव्युत्रातकर्तात्राचेवरात्राचिरातात्वीरात्राचिरात्राचिरात्राचिरात्राचिरात्राचिरा वाश्चित्रासंत्रम् प्रत्ये प्रत्यास्ति हो। यहेश इत्योहेग्या या साम्या विषा पार्या सामा सामा सामा सामा सामा सामा हैन्यानी भेत्र निवास्त्र सुका केन्या पान्य या उत्तर प्रमृत्य प्रविष्य अवस्तानिना भे नेशायमानदेशन्ता क्रियान्त्र द्वाक्षण्यायदे न्द्रियामा व्यवस्थन्त्र व्यवस्थान्य गुःदर-तुःर्रेषिठेषायवै केंबाहित्रेर्वेषाहित्र विवासिक हित्र गुःर्दे हित्र वर्षेषायवै यदेव यर है। ट्रे.सं.चेंद्र,रश्रात्तृ.क्ष्याट्र.रीयास्चा.में.क्वा.वीर्यावतावटवात्तृ.स्वेष वाश्चितवात्रीत्वा. वःश्वेत्रायदेःश्वेत्रा द्वोत्वर्व्वायाः श्वेत्रम् स्वाद्वीत्वदेः स्वायदेन स्वायदेन स्वायदेन र्स् स्वाकी तक्षराचार्यात्र वाषा यह द्वारा में वारा में व

श्रास्त्रयम्भुव्यये मुद्दास्त्रम् मुर्गे स्वर्थामु द्रव्ययम् द्रवास्त्रम् द्रवास्य श्चाशानवु शाना रचा में त्वधीशानवु हैं बिश होगान कुब नुवु निर्वे ना बिगाश रुष हो. श्रुभेषु निर्माश्रमा तथारे चर्ना श्रम्भा मिन स्त्र कुर्या संस्था तथा सै चरा तत्र मिन स श्रीमश्राचित्रात्रात्रात्रुं मुख्याभ्रीयशासीत्र्यायात्र्यात्रुष्टित्र। द्वापास्राध्यात्रुष्टिता न्द्राच्याक्षीत्रेवानी व्यव विषया विषया द्राया विषया द्राया श्रीव पार्व कुराया विश्वास्त्राम् स्त्रामानिक्षातिरः। वर्षद्भिव्ये श्रीवात्त्रापुष् श्रमात्रु स्त्रात्ते स्त्रात्ते तिरः क्वान्यायायान्येन्यायान्यान्येन्यायान्येन्यायान्येन्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्याया त्र-श्रूब्रत्वक्षक्ष्यत्र-प्रकृष्यप्रकृष्ट्विष्ठक्षःश्रुष्ठाक्ष्यव्यक्षक्षक्ष्यः भूते वि केश. ह्यानर वित् क्षेत्रात्त्रायक्षत्रायां श्रीव तत् क्षेत्रका श्रीट दटा देव क्षातर श्रीव. त्तुत्वस्तर्भेत्र्रम् स्थायर्र्न्यायर् वीरायश्चीयायागुर्वे वीयनाकन्यसण्यर्भा त्र वर्षेत्र वेशाय वर्षा पर्व अश्रम क्षेत्र वार्ष्य प्रमान क्षेत्र प्रमान क्षेत्र प्रमान क्षेत्र प्रमान क्षेत्र वायहेब क्वार्य दे। यदे निवाश श्रम्भ यह शास्त्र शामित वर्षेत्र प्रवासित वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्य युःचेना केंद्र मी व्ययं मी नानु र मेरा ह्विद र्यन्य स र्रेवा पु द्विद य दुन मी द्वया वेद १८। रगर रेवि वस वस पर्वे के मह नी स्वाधिस स व कर र में यह से यह स त्रत्वमुद्र् क्षेत्र.रे.रेश्वरक्षत्त्वत्त्रत्वरेत्रत्वत्त्रीत्र वेष्वरक्षेत्रत्तरः त्रेष्ट्रेष्वत्त वश्विद्रायर वस्त्रवार्ते। अवश्वद्रर वश्चर्यं शास्त्रात्र म्यू के द्वा वी क्राया जुष्रातीकात्राह्मिकात्रपु सरकाकिकार्यात्त्री स्तूराश्रूकात्ते वचेशाची जाता होरे. गुः विश्वायञ्च प्राप्त प्रमु प्राप्त स्थित। यदे द्वा वि क्षुत विषय ग्राव प्रवाद की विशेषा लब जन हुंब त व बटब के ब टेट के च लुश्य र प्रव जीवा वे ब हुन मा मा नि

यहवायाद्राचित्रविवादुरविता देवायहेवावशाद्वासाद्वार्याद्विर चतु.कं.कूर्वाश्राश्रधात्र में टे.ततु.सैंच.ततु.शकूर्.तर.वर्चेर.चश.कूर्वाश्राव्येर. र् ह्रेन्य रायर वियान क्रिया क्रिया दि स्थार ह्रिया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क् त.त्रुं देथ. में विट. चर्च विष. पर्य. देश. पर्या श्रम् व. त. वा श्रम. में श्र चैट.क्वांश्रश्नर्द्धतायाया विश्वास्त्रवायायायायाचा विद्या हिवायाह्यायहे साव हेन दुः सूर पवे शेयव क्रेंद स्वय हेन पाया दे सर दुवा मुख्य वर्मेन पे इयवा विषासिवायाम् वियापाविवा सुरा देवायास्य सिर्सिकेट साळवा ५८ स्ट्रिस सावहें व स्वा वातिवार्था रट.तू.क्ष्मश्रह्मट.त्री.प्रवार्थाती,रेशक्रवी,रट.र्ह्मश्रतावह्रवे.क्वा.ह्रेच. याया क्यानिस्रात्री के पश्चित्राचार दा वेश स्वीय में या गामिक मुद्दा देव वे। बर्बाक्यास्वावर्त्तेरास्यान्नरानेरान्यान्त्रीत्याक्रमान्दर्देयापावह्यापतः क्वार्यिन दे। विवासिन दिन हिन सिन्य मिन क्षा मिन देव.रेग्रे.व.क्र्य.र्द्धेर.ग्रिक्व.विश्वा देव.मुश्यम.२४.द्रेथ.वेट.ग्री.क्व.विश्वा विश्वा वास्त्रयायाञ्चित्रसास्य वर्षे वायस्य अवद्वत्य द्वे द्वा द्वे वायस्य वास्य वास् शक्ष्र तथ तथ तथिश है देश दें वा दें हिंदा तर का देश तक वा बेट विश्व तुष पर क्षेत्र की श वहवामध्यवादित्र। हेहिक्षामुन्यदेन्याक्षित्राक्षित्राचित्रदेव यव द्वार हें के या था है है वे देशका क्रिका के के प्राणी वे का क्षेत्र के वी जा महिना इत्। देवनी श्रेम्ब्रिन्यवे रेग्राम्भीन्यक्षिण्यान्तर्ह्यायवह्यायवे द्वायवि

दे। केवायव में बेब मार्ट या केव राव ला नेवाद में बेब राव है में केवा है रहे में मवि क्षित्र मा का कर न न मा न मा वि के न मा वि क्षा मा हिंद हिन्दिन सार्थ केसार वामस्याव स्वाद देवा चु खेता वा दे दत्र पार्व हिन्द सारक कर्त १८ क्षेत्र ततु देवाये वह्र ता वहाश्चातर्वत्य हेवायेव रेशक्या रेटा। श्चित्य प्रा ४८.धेर हु हु अभग्रट्रतत सूर्या ब केंद्र श्री तिया के कुथ तूर त्यूश्राश है . जा चुंश श्री तिया. क्रि.र.तिर्ततात्वश्चिरात्वात्र्यहेर्ह्स् ब्रि.र.वशः ब्रुशायात्वश्चश्चात्वराष्ट्रितास्व रशक्रमान्द्र। रदायान्वदायमुत्रायश्चर्ष्वयावे हे हे सेवान्येव मी सुराद्या लर् नश्रमः इना यदे इदे सुनाश्रम् सुनाश्रम् सुनाश्रम् निवाश की प्यत्ना हिन् नु प्यक्ष के प्यत्ने प्राप्त प्राप्त बिर्म्यर्केन् मुप्यहेव्यायायायायीय द्वारायायीय द्वारायायीय किन्या हिन्या केन्या द्वारायायीय म्रेट्रे त्रिकं तार्व चार्विश्वाश्वाश्व राष्ट्रे निर्धार्ट्ड निर्धार्थित स्थाप्त क्रियाम स्थाप्त वायकवार्ष्ट्र विश्वाचेत्र यदे स्वाचीश पहेत्र याणेत्र यदे स्वेर देत्र विष्टि वी देवा स्वाची प्रमासेवा र्राष्ट्रियायायदिव स्वापिक्षियाया देव केवादिन कार्याया हेवा केवा किया मित्यायि इता देववी देव वहुत में देव करी द्वार के नादत हैं अप वहें वह वर्ष वर्ष देते। बर.बुर.मु.बुब.ता कुरा.मु.बुब.ता चेशवात.क्र्र.मुर.बुश.त.क्षे.चे.चेशवात्त. हुवाया यहरार्श्वेयशळ्दायेदार्श्वेयायाक्षायायायात्रीयशामुवराणीहुवायाक्षेत्रया क्रवायिवे ये दे दुषादुवा पु क्रेद या व्यवस्था वदवया देव वद्दर वी देव वर्णे द्वारा क्रिया लुब्जा ट्रे.ब्रथ्य,क्षेत्र,जब्जा मधियाशक्रव,त्वच नांबीया.टे.पश्चिट,त्रप्र,टे.क्रथ.टे.ल. र्श्रायकवानिरावशायेषायवेष्ट्रवानीशान्तरायराष्ट्रायायेष्ट्रेरा देन्द्रमन अन्भी देवाका भी न्याकेवा न र क्रियाया वहें व क्रिया क्रियाया में द क्रियाकेव में व्यक्ष विराया लेखास्यामारायायने वृत्या देवाद्यायास्य केरिका केरिका केरिका

क्रियान्दर्भस्यायावहेब क्यायदास्त्री दे दे दे हैं दे के क्यायावहेब क्यायदास्या वर्चेर दर्। इवावर्चेर व्यक्षर श्रीकुर्या क्षा क्षा श्री विवास। रह क्या श्री विषाया सर्रेवानु क्षेत्रयविवेषायाक्षेत्रवेषायाष्ठ्रस्था सर्रेरत् कुरक्षेत्रवे नर इचाराचिश्राक्तियाचेश्वराद्यक्तिम्बर्धास्य स्वर्धाः द्वान्तियाच्याः स्वर्धाः विवर्षाः विवर्षाः विवर्षाः विवर्षाः य देन न्यमा सेन ग्री देन का ग्री न्या केन प्या ने स्राय नुवा नुवि न प्राय लार्यायकवानिरावसाचेत्राचेत्राचित्राचीसावातुरावराष्ट्राचाचेत्राचित्रा देत्राच्या गु रिवास गु र साळवा र र हिंदा या यह व खुंवा हिंदा या वा यस गु रिवास सळेवा छेसा स्वासामरायावि वृता देव वे। देव वाया के रेवास के प्राप्त के वार र हिंसाया वहेव क्वार्ज्य दे। विश्व मुंद्राय बेट व्यायश श्री च य के हो दे र व बेट पर्य. इस्राच्चर द्रवादित द्राया सेत् की प्रमानिक द्राया प्रमानिक करिया से स्राचित्र कर दुगानु वहें व या वक्ष के वदव या दर्ग इस प्रदर्भ वी व विकास वि स्व व से वर न्यर्यान्ते किंत्र हिन् श्री अर्केन्यन् यानुयानु विद्याया व्ययः से वन्याने सुवारीः देनामाग्री द्याक्ष्मा दरार्ह्म्यायायी द्याक्षमा द्याक्षमा दरार्ह्म्यायादे निर्वे माहे माहे माहे माहे माहे माहे ग्रुयायळव व्यव प्रयापुरा पुर्व प्रयापुर्व द्वार प्रयापुर्व द्वार प्रयाप्य विकाय विका यव ख्यामी बावह्र या प्रवाद दीरा ह्रिय हु बाहे रेवा वा स्वाह हा व केंद्र प्रवाद र वा क्रवादर हैं याय यह व केंवा है व या वा छर क्वा बेय बेय वे ख के दी के ब खेव थ मर्यायवे वृत्। देव वे। रेणश्र स्वाव स्वर्भर प्रदेश स्वाप द्वा ततुः क्वार्त्यर् हो। श्रमधान्य विषयान्तर् हिन्द्र निषद् श्रम् किषान्तर हिन्द्र श्रमः नु सेस्रयम् क्रीन देव क्रिन्नु अन्य सेन्यव क्रिन्स क्रिन्य मेन्य क्रिन्य निर्मा नि.श्री.रेट.श्रा.श्रुव.रेश.क्रुच.रेट.र्हुश त.हेब.जब.च.बेश.शक्ष्व.जब.चर्यासेश.टे.चर्डेट.

चर वरीत् क्षेत्रार् जार्था वक्ष्य विद्यायका विद्यायक प्रति क्षेत्र मुक्ष प्रदेष प्राप्ति प्रति क्षेत्र र्व्यक्षार्र्म् या निवास क्षाया मा निवास क्षेत्र प्राची साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या साम्या वाक्ष्यश्रिक्षास्त्रीयान्त्रान्तिविद्याः द्वात्री विवाधार्म्याच्यान्तान्त्रात्त्रवाद्यात् वि.चतु.क्वालूर्त्री क्रायातात्र्य्वायात्र्य्येत्र्यात्र्यः श्रीत्यायत्रः श्रीयायायायात्रः विष् व.क्ष्रश्न.टु.जश्नवज्ञैत.च.२८.। ४४.४८.ट्वा.चट्ट्रश्न.त.ज.सूर्यश.त.प्रश.ज्ञैच.जश. श.मूजानाक्ष्रशादे जाशाद्मूजानाद्मा ईवानह्यामुशाद्वेवासामामुकाराद्वेदारादार्थ. शूर्वासेश.मी.श्रेशका.२४.४शका.र्वेच.चर्चत.तथा.रेवेचश.उर्वेर.च.रेट.। शर्रूर. ब्राधेयश्रक्षः व्यवस्त्रक्षः व्यवस्त्रम् व्यवस्त्रम् व्यवस्त्रम् व्यवस्त्रम् श्रह्मान् क्रम्यावित् हे स्र म् उपवे ख्याय्र दे। मत्यवित हेत्य दे प्र मुह्मा व्यक्षेत्र्याययम् व्यवस्य प्रत्य विविधियात् विविधियात् विविधियात् । रटान्वसासुनिवासायवे सुवानसुमाचमा वर्दर द्वे साहर द्वे रायो स्याप हिर.ऐ। ब्रैज.श्रेर.क्ष्मातर.ब्रैब.२८स.त.रे.२व.क.चतु.जूटस.श्रेर्यवधस.से.वाचेवास. यर प्रसम्भाया प्रति द्वीरा क्रिन्या बेट सकेंद्र या वा केंबा उद्या देने बार पर्येद ट्री श्रियः स्वयं दर्शानि श्रियः यदे अध्य के वर्षे द्रायं के स्वयं के स्वयं के स्वयं के स्वयं के स्वयं के स्वयं में हूर्याशासर में यदा छुट लाव यदा हीर। वाश्वेशास तवावा में व तक्ति यदा हीर पश्चेर. वित्र क्षेत्र पाने विश्व विश्व विश्व विश्व क्षेत्र क्ष ने द्वरात्राची सामा में सामा में सामा देश में के सामा में साम में सामा में साम में सामा में साम में साम में साम में सामा में साम में सामा में सामा में सामा ग्रीश.सुरातानुषात्तवः द्वात्री वाववार्स्ट्रेन स्थात्वेतास्ट्रियात्वात्त्रेतात्त्रात्त्रात्त्रेतात्तात्तात्त्र श्चेष.ब्रें..चतु.ब्रें.र्डूट.क्षेट.ब्रुंश.तालुब.जा वर्बेट.व्यूप्र.ब्रुंश.तवु.र्ड्.पूज.ट्.

ईट्, १८. मुंश.त.थु.पशैट.तपूर.वा.घ.शव.वी.कैट.पुथ.शैटश.थश.ट्रे.पट्टे.केंट.रेवेर. मु.शर.त्.क्रेवश्ववरीत.सुश्रात.श्रावंचर.दे। ट्रे.क्रंट.क्.क्रंट्रेट.वत्तवाश तालव. म्यानीयाविरावधार्ट्यासामा वर्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्रायम्यम्पन्यदेश्वेत् देन्द्रायम् गुन्नम्भास्य प्रदेश्वेत्रार्वेन् । द्वियमः वर्दे.ट्रे.ट्वेश.क्श.तर.वर्ह्मशा वृद्य.वर्षेटश.तवु.ह्वेरा लट.वि.कुव विवृद्य.त्. ववि'सळस्यस्य से 'ते त्र प्रेम | बे क 'र्स्नुक से द 'दे 'वि के 'से वार्ष 'बे द वि के 'वे वि के ' वर किर है। श्रायका वनद पद हैर है। श्राया पर दिस्था पर दिस्य विका चार्थरश्राततु हुर। देश व नर्बेर विष्ट हुश ततु हुंब दे ल है ती या रश चार्थरश र्च्चाबान्ह्र्यं द्वरा व्यावार्ष्य देव देव तात् सुविषाक्ष्या स्थाय ग्री द्वा क्या वाया ग्री या रट्मी शक्ष के देरे में का चीय तथा कूट का ततु कूट ता हेरे दे क्षिया ता तथा हो र । को इ.स.व.र्च्याकार्ट्यालट.लूट्टी लू.च्रे.चपट.त्रुचा बी.र्चे.स.पहिकाच्रे.पट.त्रुच. न्त्रिया निर्देश्न्त्रियात्रे त्रात्तात्रिया शयः स्थः त्रु निर्देशः त्रात्तात्र्या यवै के शामस्य कर्ता अद्भागित के निर्मा के निर्मा सर्भे निर्मा सर्भे निर्मा सर्भे निर्मा सर्भे निर्मा सर्भे निर्मा यन्दर्देष्यम् प्रस्ति स्थापदे ट्रे.ट्रुविश्वायात्र्येत्रपद्धिम् हिंदायदेष्टरावश्यायात्वश्च ह्याश्वायद्भात्त्रप् श्रेश्वरेष्ट्रेट.रे.हैं.जश.व्रिट.ज्यु.हर.ग्रु.बालश.श्रूर.रे.अग्रुबाह्यतर.व्यूर.व.हेवहा पर्नु हे य द्रापठ रापव हेपरा में हेर रे किंच पर्व हैं या पर्व है। कुर के या पर्व

गीय येश श्रम तपुर प्रिम हिनस पर्दे ने नियस समाय प्रमुखा डिनस गीय जारे हिन्द्र पर्वे । ला प्रयापन वा स्ट्रिय पर्वे जाया है दा । विवृत्ता पर्वे हें हे पर्वे या वे.बुटा शिक्ट्या.में.शह्यात्रात्मावर्त्वेच.त्रर.वी हि.इ.उत्पर.ततु.बुंब.बुंबातमा श्चाम्याचार्त्राम्याच्या वेषाम्यस्यायवेष्ट्रीय विवर्षेत्राचित्र शर्टेट.शु.चोर्रक.श्रहेच.ब्रूट.त.क्र.चेतु.ब्रैर.शक्शशाचेश.ब्रेचिश.शक्शश.ग्री.क्रेटश. इसकार वाजी क्राचिका पास पुरे दिविष का उत् दि सिका क्राचिका से परे सुपका तर हैट शहर दूर तर बुटा हिंह श्रेशकर तत के जारा छ। विद्या सीट्स. यवे हिरा हिरा में विक्व हिर्दे तकर नगर में विवाय की मुना यहिरा या नन इरलटलाई लेगारमान्तर्या देरा है या विकास है। या काम के शर्रे श्रे वाशा वार्कु रार्ट है वकर वाला नेश हैं व शर्र है दे ते र र र वह व वा शर्था तत्र क्यामुकाक्षेत्र प्रायकुष्व काले स्टार्स हर पश्चर पर पन् प्राय क्षेत्र। वार्क म् लेशायकश्रेरेरातालयम् । ह्रियावातालया सिराम् विवादी पात्र हिंशवातार विवाधानकात्मर्त्वाचरावरीकायराम्द्राच्या विद्याम् विद्यास्यकावास्यावरीका वेर्यरावन्द्राविष्ठ्र। युक्षदेहिर्वेर्वाकुर्वराष्ट्रवाक्षराव्याविषा यमर्या रे.लट.श्रुं.बर्तार्यार.त्र.पश्चिंशतर.वे.ब्रटा हु.ह.तकट.श्रें.बर्ता. र्यार्तार्वे इंटर्स्ट्रिय पश्चिर पान । लियार्या सिंह अर पश्चिर द्वारा होन माश्रवाता अरशःकेशतवर प्रवृत्त्र दर्भाताश्रम वेशमान्त्रे पर्वास्त्रे र् रट.वर्ट.वृत् बुकानाक्रेटकारायु.होरा वर्बेट.व्रिट.की.हु.हु.वक्रट.टु.कुशकार्टवय.

है या वया विष्या हैं नित्र नित्र प्राप्त निया हिया प्रिया परिया है स्वर्ग देश नाश्रीर भारा वर्ते भारा हेन पराणेन हो। देना यवे क्रिया पुरे हे उन ने हे हे वकर जेन त.व.वूटश.ब्रैंट.चधु.टट.र्डंब.तर.चचंट.ततु.ब्रेरं। चबेंट.व्यूट.क्रे.ब्रेड्ट्र्ड्र्ड. वकर वित्रा सु सु अर्देग नगर धेर वर्से अर्थाय वाद विश्व या विद दे। विद दु सु र्वे.स्व.र्व्याकारूच.संर.र्वेट.ध्रेट.ब्रुश.स्व्याताक्र्या.सेवु.जन्नातवित्र.टटा सेचना.वर्दर. मूर्या श्री श्री शर्र्या रेपार प्रया श्रीयात मुर्गा श्रीय ताया तिया हिर पर । त्या मि श्री पर्शित त्तय्र्वावश्वावे स्ट्र्ट्र्र्ट्र्र्य् श्चेर्या श्चेत्र सुद्र व्याया वित्र पुर् मु.द्रवादर्ट्र मार्थाकर सी.वार्षेत्रामी.वारात्विर मेरेरात्र कथरी.वर्षेर प्रवाहर मे लुब्र पर्व हीरा वर्ष्ट्र में हिं के हिंच ही वर्ष वायाय हैन हिंक इससाय सन्याव हैन हेर्यक्षेत्वर्दे। रेक्ष्र हेर्यायसम्बद्धायायन्त्रुषातीम्बुद्धायायन् तत्रिम् विषाचेरावाद्यातवरादे। यहूराविषाजशाम्त्रिम्वर्थे,व्राञ्चीतरावी विषा मिन् क्रमामान्यान् प्रमुन् क्रमामान्यान्यामान्यान्या भिरासुरा हेरासुराहे मिन् यम् छिरा द्विर्र्यर वीया द्वारा भीर या स्थार वा में यदे देव सास्य यदे से या वार विक्रित्र देशका वाक्रिया में क्रिया हिंदि । विक्रिया क्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिया बे इट नव्यायमा क्रिया वेय दटा अर्ट्र छ्यायमा है याय नव्या दै या र्युटा । निर्णेद निर्मेद सारा धाना देश निर्मा देश हिंदि देश स्था निर्मे देश रामा निर्मेद वस्त्रेस्तरहेटर्नियाम् निक्षाम् स्वर्मित्राम् स्वर्मित्राम् स्वर्मित्राम् गुःसह्रायासह्राव्याहे देवसह्रायाम्ब्रुवाक्षेत्रे विष्ट्राहे हराम्ब्रुरायाया विषया

ल्ट्री वर्ष्ट्र.ब्री.ब्रिक्ट्रश्रश्चावावावार्त्त्वावाट्टा ट्या.त्रुव.वश्चे.वर.वर्श्चिव. र् द्रायामना कु के किया ग्री सहर पाया सहर परि कु सक्व प्यट परि दे कि कि इसमाग्री सहर याने निष्या सेना सामित वहिन पहिससामा प्रमान विना वि म् अश्यान्त्र याचर्रात् व्यादेव वित्ता मुस्य द्राया अस्त या या स्था प्रति स्था प्रति स्था प्रति स्था ले.केंट.हे.इ.अश्रकारतत्सीश्राचड्डेबाकाग्री.ट.केवा.वा.बाधकाथकात्वा.वा.बा.बाह्य. वायक्षतामा देशक्षिवात्रुत्वाक्ष्रेयात्रेश्वर्तात्रुवातादे वेट्याक्षामा देशक्षामा देशक्षाम देशक्षामा देशक्ष क्रे.चगाव.बूर्.ता.वा क्रू.बिक्री.ब्राक्स क्रियाच्याव.वर्स्च.ता.क्षेत्र.हो रू.हे.हिर.त. वसा चन्त्रामानाम् इस्यायर महिनायवे द्वेरा निर्देर सहस्यायाव क्षेत्र सुर पुरा ग्रा । वि.श्रवेषु अवि.वै। व्र.थ ते त्यात्र त्यात्र त्री ले व तर् हे ने त्य प्रदेश हैं तथा कुमानसरमा । इतामार्च है। खूरी प्रचर व्रथा मही विश्वास्याप्रत्यप्राची द्वे श्रिक्षेत्रे देशायर आयुष्यापर विद्यापा देशाये दे सहसायार्चर्या । दुंदिर्देशरे वासवायर छेर यार्टा मा दिन्द में दिन देश त्रु बेट्रा बेट्रा खेर्रा के पट्य त्रुट्र शह्र मुख्य प्र में मार्थे वर्ष प्र मित्र न्त्रयुष्णवीन्त्रयुष्पत्रे वह्त्रनुक्तियदह्त्रनुक्तिक्षयक्षे नट्त्रविर्द्ध्या ग्राट्यहेन नुक्षायहेन नुक्षाक्ष्यायन्ता दुनिन्दिन न्यायस्याय्या । खु ब्यान् इना सब दी के पर्ट्या स्वापन विवादिना देवा पर्टी विक् देवा पर्ट. क्रियामिकामार्थर अहं का त्या निवास विकार विकार विवास के मार्श्वर परि हिर हिर हिर लट्न सेवान्त्र । शर्र र देशास्त्र वर्तवान हेशास्त्र शावेशान वर्तवान वेशा विश्वाती के विश्वाति के विश्वाति के वात्री के वात्री विश्वाति के वात्री विश्वाति विष्याति विश्वाति विश्वाति विष्याति विष्याति विष्याति विष्याति विष

वया गर्बर हेर वह्मान बेरम बेरम वहूर वस्त्र गर वहूर है की वहूर है. क्ना हेश पर्वा दि सर प्राय पर्ते शाया नार्ते सहा ग्री सन अस्त है है दे हैं. क्रियाच ब्रिटा अग्रेव या वसाववा वा यह वा के प्राची वा वह के प्राची विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास व पर प्रथम प्राप्त के अर्दर मुखायका हिन्दि महिन अरुव वर्द येव है। विमेनका गुःचन्नार्यन्त्रन्यगुनान्वमा विन्दर्यन्यवे ब्रिन्य प्रमा किन्यायने न नुस्र चैनायरिया कुनायमिरमात्तरान्त्रेया चर्यायात्तराच्यायास्मान्त्राच्यक्रिया र्रेवार् विवायायवाताविर वी दशाया ठवा दशका हा पर्वाय रायका या प्रवादि है। क्षर वर्गार्य दशक्रम हे हिंबायमर ततु क्षेत्र वर्गामा ततु यमेगाबा स्थाय ग्री है स्र म्नियाचयमानम् यास्यास्य प्राचीयाद्याय स्त्राचीयाय स्त्राचीयाय स्त्राच्यायम् स्त्राच्यायम् स्त्राच्यायम् स्त्राचयम् स्त्राचयम्यस्त्राचयम् स्त्राचयम् स्त्रा इ.चर्रे.इ.केवार्ग्र.क्री लिखेतार्ड्स तुत्रत्वरचाशवाश्चर्य विचयात्वियात्र तत्र्रिं क्ष्या हिंहे ख्राप्त क्षया विषाम ख्राप्य प्रेरा ख्राप्त ब्रेन्द्वादी प्रत्यी स्रावाह्य विवास ब्रिन्स क्रिं स्रम् या विवास क्रिं स्रम् क्रिन्यर वर्देन ग्राम् रहा स्वाम शहर में प्वर्त रहे विषयम शह्य वर्ष प्वर्त प्वर्त रहेन हैं विवायम्बिसमाने स्त्रास्म सुम्यूरमा वसा हिन्दि विक्य व विवाय वा हे या सत् कर्म्यर्राहर्मान्यायवेर्द्रवेषश्चन्त्रीयुरानुष्ट्राणुराद्रशासुनास्त्रीरावेषर १८.प्रथात्तर्भात्र्यम् विमानमान्यभाताल्यम्। १.६४.६.५ भ्रम्भारत्त्र्यम् घष्यावार्याचीर्यात्राचीरा अर्चेर वार्याचिरा श्रार्थ्ववातयर प्यत्र प्राया सिवारा वर्षेत्रन्तीवावित्रः निवायराष्ठ्र। वेशामश्रुद्धायवे स्त्रेत्र देवशाम्बेद्धा गुःसियाःशक्तर्रम् इ.स्वर्यासाग्रीः दे हु हु हा राष्ट्रा प्रयापे तयप्रत्य ग्रीप्रवर्षा ययोगासा

क्षाराग्री है सूत्र तेर ते हू तथ पर्टर बुटा हु ह तर ये जा के के खुश सूर्य साग्रीस वर्गाय वर्षे वर मु वर्षे के हैं है शेशकार वर्ष सुव ववका यथा दे क्या गर्वे र शह्रा के जात्र जार बार बार बिया बार हुर हुर सिन में ह्या वार पर राज बारा ना ने हुर वेशनश्रीरशासदानुरा स्वाशर्न्व वे श्रीप्यन् वेवा साम्बे व सामिता से पार्थे । मिन । डिकायर्थे । यत्यम् हे देव दे नक्षयायर हे दाये । ग्री याणामहिका हे स्र पुःर्वित या श्री त्वा वा नर मी श्रा नेवा पर्वे । श्रवः नृपः वे देवा पर्वः नश्र श्रा पर्वे । वस्थान्त्र विश्वास्य वहं गुर्वायाय है है सुर पुरवाय विद्या विद्याह र स्था है वा स्पत्ते हैं है पकर वी पग्रदेश्व ग्रेन पर्वे । बन प्रमुक्त प्रमेग्राम स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स त्वायित्वाश्वराङ्गी वर्षावाशास्त्रसास्त्र ग्री खेशास्या येत्वाश्वरावाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्षाया यर मुझ नेन पर्वे । दुं दुं दुं यत यत दे म्बिंद पर्वे देव दु खर पर प्र सुवापर्वे शर्र्य व नार्श्य होर हे हे स्र्य प्रावेश र्यश्य वशा हे हे पकर मी प्राप्त रहें व वा स रेट्श याङ्गायदे प्रसम्भाया उत्राह्मसम् उत् ग्री खुमारमा व्यत् मासुमासुन पुरा हिंदा वा मार्थे वर्गीताश्रद्राचराम्बीशावाकुशश्चान्त्रात्र् ।दे.क्षरावर्गमश्चश्चराम्।मेरा सहवानी पर दे सेर नेश प्रियायश्चा वीशारवा कर वाश्वरावित विवास राम पर क्रूट्रिन् छेर छेर् गुर्रेद्र ग्रम्थय र पर्यापर प्रमायर प्रमायर छ प्राप्त था दे सर प्रमायम् यायाद्वीसायायिद्दी वर्षेष्रास्त्रस्यसायाद्यास्त्रस्य विस्त्रुद्धारायद्दा दे ५८। अववान मृतृर्वेद यवे हुवाद्या दे महिषामा सेद या वर्तु साय दर्भा वर्ते

व के जिन् के स्थाय व मृत् के न यदे समय के न न न न व मिन के मिन स्था मिन स श्रेन्डिश मुल्य वर्षे अवश्यावन नुवर मेश यर मुल्य । श्रूर अदि मिर्चे रट.सेर.ये.जश्र.हे.इंद्र.श्र.द्र.रच.से.वचर.च.स्विश्वत्र.वह्रंश्वतश्र.व्यूचर.की. चन्नेन्रान्त्रन्त्राच्याः क्रवाः क्रवाः व्यान्यः सवः क्रवः नुष्यः प्रस्तरः च्यायः प्रस्तरः च्यायः प्रवः तर प्रथम वृष्णविष्ट्यापरे द्वेर देव्या द्वित क्ष्य में द्वेर देवर देहे देवर ग्रामाने स्वाया द्वीया देविया है। यद्राच्या व्याया द्विन्या चरुर पुर पुर प्राप्त वश्रु। क्रिट्यूनालट्रन्विन्चिन्चिम् क्रियावह्ना द्रमान्युन्ध्यायवेर क्वापर पेर दे। त्री र्इंड बेश पहेर वश विके असरी है रेवार अवश्या है इ.र्ड्य त्र.कु.च.क्रथम.ग्री.पूर्यं शरावश्वरावश्वर हे.हे.क्टर.चतु.देवासं प्रचाग्री.चर. सक्स्रसाम्यान्यसायवाद्वत्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् देवाद्वान्त्रम् श्राप्तानु विवादा स्थापित स्थाप स्था भूर.र.विवायवाश्रवाराम देवास्त्रार्यात्रवार्यवार्यात्रवास्त्रायस्याया म्न १८ प्रकारा श्रुव र प्राप्त र प्रधिष तर त्यू पव म्निया र प्रधिष तर स्था प्रसिया पर र्रे. इ. श्रम्मार्यात् श्रीय व्यवस्थात्मात्त्र त्यात् हिर् द्वा स्वीमाती प्राप्त हिर्दे हिय. गुर्यक्रिन्देव द्वारी गर्मी त्यार पद हैर रे हिंदे हारी द्वायि है वस र्रे. हेत. या नीवी हैत. हैन या अक्य या नियम अर २ २ १ हे हे हे हे . हे . य दे अया पड़वा है र द्वासुनाबासक्सबाधमान्यवास्त्राच्यास्य स्त्राचीनास्य विवाधितास्य स्त्राचीनास्य स्त्राची

नेश.मी.मा.मे.प्याप्तात्मित्याच्यात्मित्याच्यात्मान्यस्थात्मान्यस्थात्मान्यस्थात्मान्यस्था मिन्दियस्त्रे यदे सक्ता मिन्स्य स्यामिन्स्य स्यामिन्स्य प्रत्य विष्य स्थानित्र लय ता क्रेर्तर श्री क्ररेल क्रेर्य ला हैत त्या श्रेय व्या क्रिंट रिग्री वा वा सेवा. यव पर दर्। वी तात्र हैर छ दश तव वह वा हेव वश विवा वा शर मी शर विवा चर्चर तथा ४८.जीवश मैंच.त.तूश ई. २श ईंचश त.र ८ अर्चेथ तर सूश त.लूब. म् हिंहुद्र-नु-र्श्वमश्रियावे नव्यान्युन्तन्त्र-तिन्त् इत्यायाः भी नव्याः नश्यानु भो ने मश्यामी के कर्वे द या दे श्रुवाया च र दे दे ते भी ख्या द न भी द न श्रुवा ल.चंबानदुः भें.चंबीटा विवाबार टार्ट्स्ट्र्स्ट्रेने ने प्राप्ता निवास निवास निवास निवास निवास निवास निवास निवास है। इ.इ.श्रम्भरतपुः श्रैयः वयमा वामा लामा यो प्रामी स्थानी स्थान विमान में रमा तत्त्रीय वर्षेट्रवृद्ध्य के हुंबर् हुंह्र हुंह्र हुंहर हुंहर हुंह्य न हुंहर हु व्यूर्ट्श्यावीत् श्रुवायागाव ह्यायव प्रश्रुप्य विष्य वा दे सर श्रुप्य वा व्यूर् नाषु हुमानत् हूमान् नब्दान् नहूमाना वास्त्र प्रमान क्षेत्र । निवास क्षेत्र । निवास क्षेत्र । निवास क्षेत्र । लुब्र.तवु.बुर.हे। इ.क्र्र.जुवे.चब्र.वाश्याताता वश्यावीध्य.तश.वीट्र.व्या. यरुषायया विवयम्यर दुवे प्यर द्वा हुन्। विययम्ब विवर्षे राव दरे प्यया है। न्यक्षात्रम्याक्षात्रम्याक्षात्रम्या । देशान्यस्यायात्रस्यायः स्व निष्ठियायः शर्र्यक्र्यंत्रान्त्र्याचन्त्रचन्त्राचन्त्रचन् वा वरार्ट्र.जूटशाश्चर.विर.वव्र.क्षण.वर्ट्ट्रर.वन्द्रता श्चे.व.श्चर.विर. चवुःइवार्व्हेर्यम्द्रा देवद्यवे श्रुवाषुराषट वर्द्र कवाषा गुक्ता गुरावहित

पर पर्श्व पर्य क्षेत्र रेगा अप्वर् प्राप्त । दिन र्या वा ना नित्र पर्य । वित्र प्राप्त वा ना नित्र पर्य । नवश्नविवालश्वापराक्षेत्या देरावळ्टाकुपवे पहेवाय सुक्रिया हे सूरा वक्ट.के.क्वाक्ष्याक्ष्यात्र्राय्ट्रायावार्टे.क्टेरात्र्। ।टट.त्त.वायुषा हूट.क्.श. विगार्श्वेटबारायु पश्चियाया ५८ कि बार्याया विवासी का स्वीता हिंद है। या विवास वक्रवाशन्तर्दर्कुश्रश्रविष्यत्रर्द्ध्रहेत्रश्रवश्चित्रवश्चावव्यत्त्रश्चावद्या ।८८. म् जाविश्वा क्रमां अधिव जीवायन दारा हिंबा अधिव खें वायन दार्या । दर र्येत्री हैंद्रिंगीव्हिनाहेव हैंद्रशयायाय उद्गेर्गी शेशशास्त्र हेंद्रशय हैंव द्रवि द्र्रींद्रीश तथा देवु.क्वालटा पर्देट्.क्री.श्रुश्राश.२४.ईट्श.तवु.क्रु.श्रवंट.श्रुरश्राश. वराश्वाचर्यात्रम्यावदिवाहेव न्त्रीप्रमान्वव नी सवरासे र्रे मुस्यावसावदिवा हेन पदिव अन्य केन या इस शा हिंदा है शासु के नुख्या मानन पत्न पत्न पत् चर्रियानकर्। के.क्.के.विर्यात्रश्रश्रश्रश्रश्रयात्रवेषर्रे हिर्या देव.ईश. शुः इत्ये मान्यान्ता द्वीरयान्यान्यायये यो नुनायान्ता नुनायम् इस्ययास्य द्रशायश्राक्षेटश देव.इशाशाहसी.ब्राट.तव.श्राध्या.वी.केंट.वा.क्रश्राधेट.ग्री.क्रूंचशा गुरायस्यामान्त्र न्द्रयेते न्द्र्यम् निक्षा देश गुर न्वेद्र यायस क्रेसप्ते न्मवः यन्द्रपदे यन्ते विषय् विषय् मेंद्र यास्या मेन मुन्य स्थान विषय् स्थान में क्रियायर प्रथम निष्य र र मेंद्र र रेश मिले क्रिया है। प्रथम निष्य निष्य मिल क्रिया वश्राह् में श्रीट. ततु श्री क्षेत्र श्राम्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य देव हे श सी मन र दि स्वापित प्रति । श्रिक्षा प्रमुक्ष स्याम् स्था देव श्रिक् श्रिक्ष स्याम स्था के साम सहे व दे त्या महास्या पा हव श्री दिस्या मिनिवि क्रिंश्ययायह्माम्बर र् श्रेश्चे प्रया वर्दे दि द्वारेम्बर हुमार्थे मार रु र र श्रेश

है। मि.श्र.क्षेत्र तत्र तर्र हैं हिंद्या देर हैं या किया केत्र देवाया पतिये हैं विवानी केर वाक्रमान्द्रित्रागुरायस्यान्त्रम् न्द्रियमानुष्यः द्रियम् निवेतः द्रियमान्द्रमानुष्यः द्रियम् र्वेद्रायाथका क्रेक्षायवे र्वावाय र्वावाय रेवाद्रा विकाय है। यावा देवावद क्षकामुक्षक्तायकामुक् नुकानि निव्यक्षकामु कुन वायर प्रकारानिक नर त्रुं र्ट्रान्वेषु श्रेमत्रु क्वानी केवाक्ष्य द्रवायाविद्र के अया हुट्या देव ह्या स्रस्य द्वाराम्या वह्य द्वाराम्य द्वार स्वारा वर्षेत्र र्या वर्षेत्र वा वर्षेत्र वा वर्षेत्र वा वर्षेत्र वा वर्षे वर्तेवार्वराष्ट्रिरातवायराकी.के.क्षात्रातात्व्वय.रे.क्ष्र्रातारावकीरा रे.ह्रा. वस्रअः गान्त्र न् न्येते स्विगानी कुन वार्क्ति केन गुर्मे वस्य गुर्स हिंदा यो वस्य या प्रत निर्मायते न्हेंसामित क्रियायमा देसाग्राम हिम्मे प्रदेश प्रमासिक प्रमाय निर्माय क्रियाय है सामित है स रटाचरे त्यं के विष्यं विषय हरिया दे पावन की शहराये के विषय मारा गान्व गान्न परिवादि देशमानिय हिंग स्थापानिय परिवाद मान्न विरश्रात्त्र क्वा क्रीश्रात्मश्रा विषय द्रात्त स्था हिर्म दे द्वा वे द्वा वी प्याप्त र पश्चियापर्द्व,रेर्तीत् । रे.वंशापर्द्वर,ग्री.श्रंशश.२व,ह्रंटश.तश.क.वंशश्चाम्प्र. वयेवसया सेन् यवे क्रिन मुसन् इति है सावित्र रात्र मुस्य या मुस्य वर्ष है विद्वापा क्वाइस्रा नेस्या देवसार्या है कार्या के वर्षे स्या है सामाहिसाया नर वर्ष के सेव हिरागा शक्क.केट.क्ष्मा सेशमा ट्रे.वम.प्य.पे.क्.यतु.के.मार्यासेशातान्य वसाक्के.च्र.यतु. यानित्रायात्रे कु युर्द्र स्था द्वेया देवया रात्र के परिते सामिर देश क्रि.ट्र.चब्रु.र्ट्रश्रद्धश्राद्देशतालट.श्रेशशी ट्रे.यंश्रु.श्र.र्ज.ता.चंर.यंश.क्रि.शक्रु.क्रये. र्मेष्यर ने मार्थित हे ने बार हे साई मार्थित के स्वर्थ है र मार्थ मार्थ है नि के स्वर्थ मार्थ मार्थ है नि के स देन्द्रक्षक्षेत्रयन्त्र्यम्यद्रव्यक्षक्षेत्रयवित्रद्रित्रयम्यक्षक्षेत्रवित्रक्षक्षेत्र

र्वत्ररावश्ववाय्वयाव्यावश्वरावश्वरावात्वरात्रराविवात्वराव्यात्वराव्यात्वराव्या वशास्त्रक्ष उत् गुर्वि अधावि रद्या विव हिर्या गरिन पुर्व पुराय भिव हि दिय · प्युन्कर् याप्र प्रमुवाम्डिन हे हैं . मुद्रा विहेश पावा वा शुक्रा प्रमुद्र प्रमुव स्थानी स्थाप क्या हिर्देश्य वर्षेय्र वर्षेय्र वर्षेय्य प्रमानित्य । वर्षे वर्षेया वर्षेया । वर्येया । वर्षेया । वर्षेया । वर्येया । वर्येया । वर्येया । वर्येया । वर्येया । वर्येया रट.तुत्.सेघश.शं.वैट.तुवश.वेत्.त्व्र.तूत्र्य.व्याव्या.व्या.व्या.व्या.विवा.वी। क्रूट.त्विवश. याचित्रायदे भ्रित् वर्देत्रावह्नताचे नेषानी स्वतः हित्ति दिन्ति स्वतः वित्रायावदे वित्तवास्वते हा यार्झ्यायवराश्चेत्रात्ते न्वायवार्देत्रायदेत्र्यायवाष्ट्रम्यायक्ष्यायवाष्ट्राय वर्दुन्गु न्यून्यन्ववान्वेषा देवे द्वेरनु वृद्ध द्वा दर्षाय केन्य स्था या बेरा डेश खेंग्या यहिंदा वया बेंदा यहुद उदा बेरा ही ही सामा पिवाय विश्व रावेर ही रावेर १८'वनाया युट'१८'वनाय'यवे' क्रींब'नासुस्राये प्ये 'धेरा रेनास'य'१८'वनाय' हे। क्रन्यसम्मुवायवे क्रिन्यस्त्राध्रम्थर स्रायके सुरायनेवसन्तकन स्राम्ब याधिव यदि क्षेत्र विश्व व्यव प्रत्यापर त्याया है। क्षेत्र यकुत् कर सेत्र तु क्षेत्र य म्यायानी सूर विवानी महेव र्घेर पर्दे द यानार विना दि सूर क्वियायादे माया नी ह्मर बेब के में बाधिब यदे हिया वुर ५ र व्याप प्राची है र देश य ५ र येदे स्रेयमा अववर द्वाद्रा विद्यार स्रेयमा वद्रिर दे वित्र के द्वाव व वाय स्रेया तर किर्रेर रेट वीत कुष ती विदर्र शालका विशेषका ततु हो र है। वसीपत राप होर न्दर्ये वर्षा न्दर्ये हिंद हेन्द्रस्य प्रस्यस्य वर्षा विषय उत्रस्य संग्रे दे स्याप्ता

बिश्च-दिन पर्वानिश्चायकापश्चित्रयेत्रस्य देवाय हिन्द्वीका । पर्वा ब्वाय २४.मुश.म्.म्.म् । ब्रिश.म.श्र.जश.क्षेत्र.येथा । ब्रिश.म.ध्रेट.ग्रेट.जूर. बेर्-छ। वेशन्ता बर्न्-छश्यश्याना न्ययवेन्त्र-र्नेश्चान्यश् ब्रेन्नस्यान्द्रियार्थियात्रान्यम् वर्षेया । न्द्रियार्थियात्रास्यान्यम् । वर्षेया यर दु प क्रिंग प्रमा | दे हिर दिश्ये दिश से प्रमा विस्थाय दिश्याप दिश्याप दिश्याप दिश्याप दिश्याप दिश्याप स्था म्रद्रा क्रियान्य वर्षेत्र वर्षेत्र क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्र वसूत्रा क्रि.येव.क्रीर.व.वर्.लबाड्री जि.चेश.श.योधर.वीथ.ग्रीश.वक्रा द्रश. क्रेन्यायकन्यदेविदेवयमसम्बन्धा द्वेन्यकुन्यसम्बन्धायकन्त्रायविदेविद्वदेश र्या अन्यम् पर्वे अपम्य प्रवृत्षणी क्षेत्र पर्वत् वस्य स्वत् त्र स्वत् न्य क्षेत्र प्रमानिक स्वत् व यान्युर्यायवे भ्रेत्रा देशन स्मायायदेत्र हेन पद्रा स्थल रुद् वेद नायवात् चित्रम्भान्त्रीयावित्रमीतित्र्र्ये स्थापर मन्त्रम्भान्त्रम् मुद्रम्भान्त्रम् उर्देर.वा.पश्चर.देश्य.धे। श्चेत.वपश्गीय.पत्रर.वशा व.शव.क्श.स्था.क्ये.वश. निष्याये । बिर्म्ये हुनामह्यानिष्ठ हेवर सेर्म्य स्थान वर्षे तर किर ततु मुश्रमा वर् दे अपूर्व सेश हैर रे हु वाय तर वर्केर विवाहर के. केपायापन्नाकित्रवा ।नारायवादेरविगावादेना द्वरायाप्रमा वेवानायुर्वा यवै कु मळन ने नमने महिंदि के मार क्रिंस क्रिंस के मार के म लर्-दूर् श्रुमायव केट.वाप्रट प्रिवेश शर्तायव पर व कूर्य के प्रिवेश केव श्री श्री वीश श्री वर्ट्रयदर वेन्बर पर विन्याय धेन ही निर्देश मानी इ क्रिंग् में हे तकर. म्ने बेर्था ने देव किया है अप का की क्षेत्र का कर की किया है व की का

हुँ पर्देश्यवत्त्व्ये रटावण्यर्गिष्ठा है द्वे केश प्रमानर हैं योश्या मु द्विट देर पद्भव य दे पदिश मुद्दिन द्वियाय येव यथा विवास येवा देव दु पन् व। नेबानुःक्रबाक्रा क्रून्यकुन्गुःन्रबाधान्यस्यवार्मवायान्यन्यस्य क्रेन्यने क्रेन्यक्नायेन्यविन्द्रम् वहान्यस्न स्निम्ब्रियम्ने याने क्रिन्य गुर्देव क्षेत्रया सेन दे। दे स्ट्रम् व क्षेत्रया य दिन पक्षिय गुर्व केन्या व निव सेन रु'व्यूर पशरे किं व केर हैं अपवर केर र्वेष यव है र वर पर र प्रेव व श्रेन् यायानु ने ने श्री मुद्दायम् अविदाक्षेत्रदायिव नी वा वा या युदा वन् गर्पेन् यम यवुदा वशरे किंव है न वर्षे अपर द्वापर पर्ने न वा क्यारे है ने किंव है न क्षेरा क्षेर कें है। रद्यविव मुक्ष मुक्य या या मु मुद्र मदा यदा श्रे त्वद्य प्ये मुक्त है। इसे यका वस्यायार्रायवेद्यार्थिन्द्रात्री झिरायायवर्यायर्थेर्याय्येर्र्भे विद्यानास्तर् हीरा मेश वि.क्र्य रवा हे सेर ये तहीय वि.हीं या विराह में या ता ता वा बीया रट. चलेव की सार क्रिया साम्राम् राम्या में निष्ठ निष्ठ निष्ठ में में निष्ठ निष्ठ में में मार्थ मार्थ में मार्थ मार्थ में विन्दरम्बयविष्टरमिव क्रिंद्य कि प्रविष्टिया विनेति दिस्य मिन्ने प्रविष्टि । विषार्श्ववाषाण्चिषाळेवा वेदास्य प्रस्व पर्य प्रवादि विष्टि विष्टि हिंदि की पन्दि देन वयार्चेयायायायार देविव वेदणीर्देव क्रियायायेद दे। देव्हर क्रियायादे वार्वेर थे र्रा में के द्वार त्र ने के हैं र में क्या ने र ने में के र के दे हैं र पहें दे हैं या दिन में पश्चित्रमु के स्थान के स्थान के स्थान के स्थान स्थान के स्थान स्था मु.र्रूट.त.सेर.सुश.ब्तानक्षेत्र.सू । निसुश.तर.वे.त.८८.के.८८.ववंत्रतं अधार

वरेव मुव मुव मुव वर्ष क्षेत्र या पर दे विव कि कि या क्षेत्र कि अवव वि क्षेत्र विव मित मि दिनायायायायायाची पश्चित्र मुन्दि स्वित्र मित्र मुन्दि । स्वित्र मित्र वर्देशासक्ष्यास्त्राक्ष्याच्ह्रवाहि । श्रेसशाग्रीशायन्वशायास्यावाह्यावाहितावि वन्नबान्वे न्देबार्य क्रिंब यर नु वायदेव यये न्देबार्ये र गुवाय सेन्दे क्रिंब नु र्श्वेन ने न र्श्वेन याया वासुरा देवासाया या पर नवा वी यह वास या या या वे के की रहे न तत् हिरा वर्षा ह्रिन सेन ह्रिया स्वाप हर्षे हिरा हिर हर र र विषय हिरा मी वार्ष वर्स्स्य छ स्रिय छ र स्रिय प्राय प्राय प्राय द्वारा स्राय प्राय प् यमायत्वमार्यसाधिकायवे क्षेत्र वदै द्वाक्षेत्रर्दे स्वाकाविकाद्वा वासेदारी. पश्चेर ह्वाबाब्धिवाग्री श्चेयातात्वा बिंब श्चार रेशियाबी स्वार तर वि. तर र्देशकी ।दे प्यट क्रेन पर्देन वस्य उत् हेश विवानी देश प्रश्नित वासवानु पहुंश श्रेन्द्रश्रेषावषार्श्वेयायाधेवाया नेत्रमञ्ज्यायायाधानेषाण्येषार्श्वयायावेषायहेन तत्.की. भक्षत्रात्री वाष्ट्रा का क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिय क्रिया क र्बेर है अविग पळग्यायव ग्वि हे व हो र य रे प्विव रा दे स्थार के या पेया देशग्राट देवावशायस्य प्रति हेव पहेव परि द्रीय दिन सी पवि हेव से दिन परि क्षेत्र,यर्ट्ट्र,तवु,ह्येत्र विश्वश्वात्त्र श्री विश्वश्वत्त्र ह्यूट्,ह्येट्,वर्स् श्रीयश्वायात्व,क्र्या क्वा न्यूबातान्त्र्रा झूट्छेट्रह्माबास्याचेबम्रद्ध्येवातान्त्रा सूचेबा बेन पहन पर्दा पुराद्या किर पास्का वा सामा की खूट विन कुट या दिया हर महिमाबुदायमेवारु विश्वरायार्दा विमानमायम् द्वारायते हेन प्रदारमहेन परि प्रशिवा

वित्र इस्रमः ववानामायानिकासे द्यान्या वदे हिंद्र वित्रसे राग्ने थे वेषाग्री द्रमार्रेवारु वकर पवे द्रविषाया दुवा विदायर है कि हे षा पवद पवे हिरा ग्वन्थर्। न्नव्यत्देरहेंद्रिंद्रिय्वेंग्यायायाकेंग्रह्म द्र्विय्यायेद्दे व्यित्रविष्ठावान्त्रविष्ठाविष्ठेष्ठाविष्ठ्रवार्षेत्रविष्ठाविष्ठ्रवार्ष्ठाविष्ठ्रवार्ष्ठाविष्ठ्रवार्ष्ठाविष्ठ् अकूर्य दिन्द्र प्रति र प्रति विष्य तर्ह्य हेव विषय प्रति हें मार्गि हिंद मार्गि प्रति प्रस्थाप र्ट्युक्श्यविष्टिर्द्धर्यार्ट्या वात्रार्ट्स्याक्षार्थ्याची स्रविष्ठा स्वीत्रे विष्ट्रित्या वार्ष्य गु.र्बर.मुंब.नुर.टे.तर्वेर.व.रटा वचराने.सर्थ.केंग.गु.र्यंद.क्र्य.सें.रट.क्र्य. यासह्य यात्रेयव्यसन्ययाचे दावद्यन्य राज्य व्याप्त विष्यायाचे दावरेष्ट्र या परिषायायायिका क्रमायविषा प्रमायविषायात्रा क्रमायविष्टियाया के. मुर्चेद केटा दे या के हिंद्या पश्चया वेषा गुर पहेंद्री विद्राप्य के वा या परे पर्वे कुराता ब नवारा वा पे ब ता ही वा वा क्षा वा क्षा वे वा क्षा वित्र होता है कि ता क्षा नवारा वा वा वा विवास वा वा मानव द्राया से मानव का से द्राया मानव का से मानव का मानव द्राया का मानव का मान गहर्निर्म्याकान्यान्त्रम् अत्तर्भान्त्रम् अत्तर्भान्त्रम् विष्ट्रम् चावनात्त्राचटाइयबाताबाद्रश्चिशक्षाक्षा देखाकूरावक्षायदास्य संस्था वश्राश्रावत.ज.विर्टे.रेज.ते.रेज.तेश.बालूश.त.वज्रुज.वश्रावश्रश.बे.कूर्वश.तपु.४८. चर्चत्रक्तिः केट्यो द्रीयाव्यूर्द्रद्रम्स्सासाद्रयाक्ष्रद्रस्याप्तर्रात्त्रस्याप्त्रम् । क्रेर र्मवाक्र्रायम्भाष्याम्बारबाद्रार्भाष्याम्बार्मात्रम् वाद्यवार्मात्रम् वाद्यवार्मात्रम् वाद्यवारम् श्रानुषायाविषाक्रम्या देवसासंस्रयाउदाक्षुःसमुदाक्षीःवसायायाम्यायायायास्य मु क्षेट में रुव मु कर मु कु किर केट है जिस के जिस के कि का प्रतास का मा खुव के कि कि का मा

तथा केट.रेग्रील.में ईट.री रत्तशासी.रेत्तम.क्रर.तत्त्रा.सेम.तर्वे.कुम.रेट.हूट. स्वाक्षि.सी.लूरे.ताद्र.क्दुर-रग्नेवा.वात्र्य.कवाशा द्वाइशासी.क्दुर-रग्नेवा.वात्र-दे.सामा क्ष.है शर्वे .की तथा तथा वीच ततु हिंद क्षा प्राची प व.जम.ब्रैम.भ.कचमाता.क्षेत्र। चाम्रत्र.ब्री.र्गीजा.व्यूत्र.रेत्तरम.सी.रेतवा.क्र्र.जतेम. स्वानस्त्रान्तः हित्स्वाहित्याविवाकवासाने। सहित्यसा देःवाहित्यीः वह्याहेब्जी विश्वास्त्रशा स्वासार्वादेवाश्यर्तित्वीय विश्वासव्ययम् तत्रिम क्रिन्यक्रम्भिन्यीयायिम्भी विषयावया विम्युम्भिन दिन्युम् वक्रिम्म् विश्वमद्यम्माश्रम्बम्यये द्विम् निष्यम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् विश्वम् सेर्गीर्द्शासुसेर्गुटा वस्ट्रियम्बिद्धस्यामीर्मेश्वास्यान्यावायवायवा क्वामुकार्याद्रायक्षायम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्यम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायमम्बद्धायम्बद्धायम्यमम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायम्बद्धायमम्बद्धायम् क्ष्रे श्री शरी थे. की. जश जश वश श्री पत जा विश्व में कुर्व शान तु ही वे कवा शाने हैं. विरामी हैरान् अके के ने पे बिया कर्या परि के अधार व ही अह व मी विषय पर चीत.तपु.र्थेट.ब्रोश.पर्शेयश.त.जश.विश्वश.४च.जश.४.४च.८८.। विश्वश.पर्वेट.जश. निहर की रे पर्व दिया विस्ता वा वा वा वा वा विष्त की दिव पर्व दिव वा वा के रास् विर्द्रम्बरुषायाळवाषार्था दित्रपण्चित्रपर्वे विर्वेद्धा बैचायक्षर्या वट्नाक्षर वाक्ष मुद्दार विक् वा नाक्षर कु रे प्रतृत कु वट मे र्या सहव कु द्वाका बै अव विमायकुर इन के के जिन्दा रे के वर्षी के अक्ट जिन या अपूर्ण वर्ष यब कर ग्री अर्के वे पान्तु रुव मी सुदे कु अर्के जिव पाया हे जा ब्रीट पाने ब्रीट स्व पक्र र

यात्री अर्डिना मेशार्डे हेवे यानावी वेयार्थन्य महत्या वर्दव देव वार्चर शी. मित्रात्रुव विस्तिकातालयास्कातीकाई हेवाकावि ने वीर मिन्ने शारे रेटायरका त.स्थात.र्ट्यासी.वाशवाचर.शाचचर.तश.ट्र.प्रश्नास्थात.श्रु.प्रवाश्राप्तथा.च्रा यात्री विषय क्षेत्राचा का क्षेत्राचा का क्षेत्राचा का किया है हि विदेश प्रत्य प्रति । धैरा दे द्वर श्रेव वा वे ग्रु वा है हे रु प शे रे रद प य स या वे प शे पहा पर वर्ग्य विद्या दे के वहद व शु हित्यी ब वर्त्य परि द्यी व विद्या में वि व व व व व बुवासविष्यराष्ट्री विगा श्रुदायाक स्तुदार्वी दुवायर यमदायादार सिंब दु वर्ग्यार्थे ।वर्षेर.वर्ष्ट्र.की.रवेश.श.क्रश.वर्गेर.स्था.देश मेर.वर्ष्ट्र. जुरि. वश्रिमात्रा वश्रास्त्रात्र देवेट स. ग्री. देवेस विश्व तर्रा वश्राप्त देवे. में क्या तत्। वया शायत है हिव रचिश शे प्रथा विश तथ क्र श वर्चे र सुरा रच्या त्र पर्वेथ त्र हिंच विश्व विश्व पर्वा वर्ष पर्वेट हिं श वर्षा क्रियं वर्षेट पर्वेट इ.स्र-प्रमुशा विश्वद्यानद्यत्वर् र् स्नुविश्वर हिनायाग्री र हे प्रायेषा । गुन्त्रस्य र् व क्यायर पर्त्वया विकामस्त्राय स्था क्याय स्ति व क्याय स्ति व क्याय स् . यइ वर्शेर यर छ प व्यव है। दे सर र के यह विश्व प्रायम् र यदे खेरा दे हे वे दे गैर.क्र्यातर्टरागर्थः देशया.सुरातावाचाचावावाक्ताश्रवाचे हिर.के.श्रट ग्रीटा वाद्या ह्र्यश्चरश्ची, अंचर्शः रेवा श्वर्वा की की जीराता विश्वरी शक्त हें इंद्रा दें वीरा क्रूरा वर्षेट्रत्ये क्ष्यश्रद्ध्यापेष्रश्राचेष्राचार्यात्रह्णात्रविष्या देवार्वे क्षाचिष् नेन्तिर्तर्रात्रवर्तित्वीरत्वावर्त्वा देशव्हिश्वरित्वेशकात्तव्यत्वांशया ल्रान्ति इवाबान्नाक्षरानु किरानु हिरानु हिरानु हिरानु किरानु केरानु करिन यथे केर विक यथे केर है। केंब वर्ष द्वार वर्ष द्वार वार वार वार वार दा

नुर ग्रुअ मुक्ष द्वा वर द्वि ग्रुअ मुक्ति दिन दिन दिन प्रिय मुक्त परे.प.कुर्रातुरात्रात्रात्रश्रम्भश्रम्भश्रम् ह्या हे.वश्रमा.वर्र.कुर्यात्वेदा.वाक्ष्या.वर्षर.तम् १८ वहेब यदे द्रीवाविर वस्त्र उर्ज्य पहें सम्प्राचित्र वर्षेत्र प्राचीत्र वर्षेत्र प्राचीत्र प्राचीत्र दे। वचनानी भटना के ना ही अपूर्व स्था नियम नियम स्था नियम है । यह ना के ना है । यह ना के ना है । यह ना स्था नियम स केर्रे मुक्त तर मेंबात्त क्रेर् क्राये हैर। ट्रेलट क्र्या वर्धेट र्यार मुक्रा यन्तर्मश्राक्तियाक्षेत्रपुर्वेषश्राक्षरक्ष्याः स्वाद्यस्य प्राप्तान्त्रीयश्रायायान्त्रीय त.लूरे.री तथारेट.तुत्राचेश्वश्चेतश्चीतश्चीत्राचित्राचेटा श्रूबार्बेट् वयातविट. क्षे.म.मूर.म.क्ष्मबाबी.लूब.५व.इ.केव.बी.पवीर.घ.टे.म्ब्यूब.त.लुब.त्तु.हीर वि. क्ष्याश्चर्यक्षेत्रः हैन्द्रियविद्यानिवायित्रयित्र पश्चित्रयास्य वन्दिता देखरवधुद्यायाद्वस्यायाद्द्री नावे याद्द्राचवेदेद्वीया र्षर्द्धश्चीश्चिषाम् निर्म्द्धश्चिष्ठविष्ट्र। ह्वश्चर्मानी स्वर्णामी स्वर्णामी तुत्.क्रेर.ज.केथ.भ्रेम.क्री.यर्.क्रथ.तर्थ.तर्थ.तर्थ.तर्थ.वर्थ होट्.क्रेथ.तर्थ.क्र्य.क्र्य.क्र्य.क्रिय.क्रे. प्रवेश्वर्वता वर्ड्या मुर्वे विष्यु विषयु विष्यु विष्यु विष्यु विष्यु विषयु विषय क्रिस.क्रेंब.के.रटा के.रेक्कि.क्रेंब.क्रेंब.क्रंब.वहब.रटा सर्केव.क्रिस.सेर.क्रवाक्राम. मक्र्यं ततु हिर् ल रू. तृ ज्वाची वाबा वर्ति स् वधुत र्यो वा व्यूर मुद्दे ततु कि मक्ष्यं यन्ने। येने नि नि नि विवादिर प्रवित सर्मेन येन प्रवे कु अळन में स्वित येन प्रवे कु र्ने तिश्वात्र से विश्वाद हिया का मूर्य तरा। इ.इ. तिश्वात्र से विश्वात्र से अक्ष्य में ने एत्य तमा दें,बहुस,लम.वैट.तदुर्ह्र हे बहुस.ग्री.घर.टे.दवैट.घषुदु.ट्रीजादहर.इ. र वस छन् यर पश्चिम पाय निकार पर्या मार्थित । निकार प्राप्त पर परिकार परि

रहर सेर ग्री यो नेय ग्री चर्ग हैर र सेंबर में बार्स ने बाद ए चरि केर ये व न्तुः होत्र वर्तित्वान्तुः त्यानुधारी तर्नाताता संस्थान स्त्रे प्राप्ति त्यान्ति । ने। येतु पक्र पाथमा दे यहिं वहें वहेंद्र दि वह वा विद्यार्ग गुर रम मुंख वेषायषाने सुरायस्व यर अर्दे श्वेष्यशयन् प्यये ध्वेर। न्येषायेष्र प्रविद्वार्य नुष्यदेशयायायशासुळेनशाईहिष्यक्केन्यायादनिस्यायायेनिः दे। हेन्सादेशप्रतिः सूर्यः यार्चिका सुवि क्रिन यइ उन सेनाका सुना कु प्रति दर हिराका यर वहनाय दरा नर मी के ब र पर्य दें र पर्य जाई र प्रश्निषा मुकाया यहा मुहर पर्य दें दें वि रेंद माह्य प ५८:इस्यायास्त्रविदा देव्हानुविद्वेष्ययाक्षुप्यविद्वेष्ठानुदानुदायराज्यः रुप्तम्यायका दे देव हैन विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित ब्र.वर्क्ष.वर्भेर.ता १५.२.क.म्.इं.चशश्राश्चा वृश्यविश्यतास्त्रा इं.वश्यविक. लकावरावश्चिर्याचार्विक्यार्थर्दिन्। विवित्ववावव्यायकावराविरावीश्चरवित्राद्वा यवै र्बेर्गी वहवाहेब दे सुर में खेव बर बबावा बुवा ब स्टा वे वर प्राप्ता दे बुर् छेर में बताता ता पर ता हिना शर्र हिर है अपर र ना या है अर्थ है र नी पर ना है र रे.श्रूबार्त्यावात्राचे त.चेबात्रम.चे.चव.क्रेर.लुब.चव.क्रीमा बे.क्र्येबाई.ई.व.डुं.चम. विवालकातर वस्त्रिकार या प्रमाय विद्या है। देश य विदे यदे देश की दूर विकास वश्चिर्वित्वात्वी सुरावेदशर दे अस्तिय प्राये के वित्व वाववायशावर मिक्द्रहे स्र प्येव देवा स्व सेव सेव मानवमाय वे वेतु प्रवे प्र सुगर दि य विन्दुनिक्षयन्ता पद्रद्वायर सुन्येवावि पद्द्वा यन्त्नास्ट न्येवावि है.मे.तर्भागरश्चीरा डे.तबुब.टे.बीर.जश.बेरा हुड्रव्य.बी.वी.संबराडी

म् वि.रेंग्रें हि. वि.सं. वि.सं. वि.सं. वि.सं.सं.सं.सं. विस.रंग्रेंस्.संतु.रेवर.रे.वेस. वश्रादेशक्व,रे.चर्षरकावा वर्वतम्वद्भःरेषद्भात्रम्भरे.र्द्रा रेग्रिवाक्ट्य. वश्रे । वर्रेन्यमळ्द्वे नुम्य पटा विषय्य सुर वर्षेन्या विष र्टा वि.चेट.व्रश्चित्राचित्र विवासत्तराष्ट्रियास्य विवास्य प्रियास्य विवास र्शियाय्विरादे । वि.वर्तात्रकायश्चिकात्रका वि.क्रूरायर रे. वे.वर.वी वेशनश्रुद्धर्यदेश्चेत्र देणद्वादश्रिते देशयायायाद्वाद्वरेर्द्रद्द्वम् ने सर माश्रद्धां वी नर्द्धार्यवे माद्रशास्त्र निर्मा माद्रीय पार्क निर्माण स्थान गर्डन मुन्देशया के दुनि सर से सह दुनि में से सम कि प्रमाय प्राप्त देव वर्षा क्षा प्राचित्र विकास क्षा विकास का क्षा विकास क्षा विकास का का क्षा विकास का का क्षा विकास का क्षा विकास का क्षा विकास का का क्षा विकास का का का क्षा विका स्वामान्यता कुष्टिता विमान्ता वेत्रावकृत्यावमा न्यवास्त्रावकृत्या हिन रुमर्। विवर वेदि र ग्रिय विवर विवर विवस विवास विवास विवास । दिया क्रन में नव मिन राम वा नव मेन मुं अहें शय थी। अर्केन हेन देन केन हैं चर्षा । नम्बयादीर प्रत्येव देशा खेरा विष्णा मुद्दर्भ पर्वे न दे न निष्य पर्यापरणी सक्ष हैन निर्देशियमार्थेन माने निर्देश स्वाह हैन राजे ने ना शर्ट्र विश्व तथा विर प्रवि द्व है प्रवि द्व । वि प्रविश्व प्रविश्व सहस्य विश या विवायविद्रदेशस्य प्रमास्य । गायावक्षर्ग्रीसकेष्य अस्य । विश्वरीव्य म्बर्यायाक्षराधेवाया दे प्यत्विवातु प्रमन्त्रा देदाव बेदा मे खे समय व्या मु अहर पर वा में कर हेर पति। दे पति व र हे र दे अहर व का अहर पर वा में क्र्राहेर्यहेश। यर् द्रेत्राश्चव वश्यवदे प्रत्राची क्रिक्र हेर विश्व । यहते

क्षे.यद् श्रवतायकाश्रवतार्टा क्षे.कूर्यकार्ट्राहुद्राय क्षे.क्षेर्ये वे.चा क्रेगायव्यस्थावव्यस्य वर्षावद्यस्य व्यक्षित्र वर्ष्यक्ष्य वर्ष्य हे.चर बर्ययेष्वर्यस्य विष्यं विष्यः विषयः विषय लक्षावर मी द्रमर्था वाक स्व पर्व द्वा दिव हेर मी सरव लट मी द्रमर्था वाक यव गरिना क्षे क यव पर्य पर्य पर्य पर्य दे । के प्रमाय ग्री द्रमाय पर्य पर्य पर्य पर्य । हिरा विवाही स्ववस्त्री सदयप्तवादर है विश्वस्त्री सदयप्य विश्वस्त श्वेषात्तर् हिर्वे हि विषय ग्री ह्या जवार्त्त चेट वट श्रव ह्या है स्ट्रिय हिया है या द्रश्रचीश्राम्ह्या । दे.जश्रके.क्रेच्यश्रके.ह्या.ह्या.ह्या.द्रश्रचीश्रम्ह्या.त्राच्या.ह्या.ह्या. चट बट अदे दिन नि भे भिष्य भागी दिन नि अप में जिस में कर नि अप में अप में अप में वविष्धिर है। मुर्रे विवे विम हु मुर्वे र अहे अ वर्षे र र विश्व प्यवे क्षेत्र । अरे वे मा र्नेग इंकेंग्रया पश्चयायदिगायवे नुषा अववे अव्यास्य प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त गे हिंग गर हैंग गर्य प्रिय दिया पर मु निरा है मु ज सि कर पड़िय दिय बर में र्र्-र ब्रे नबेंट विर मी सेनश हर ब्रियारा स्थाप में प्राप्त में प्त में प्राप्त में प्राप् वस्तिवर्गेष्ट्र देशकेषाया द्वार्षेया यह देश यह विष्ट्र यह वर्षेत्र प्रवेदिव देश वर्षे क्रिन्यरायद्वितः हे प्रदे कुराह प्रवयसः श्विस् प्राचिना स्वतः युन्यसः या श्विस क्र्राम्बुस्रास्त्रे खुम्बायार्स्वे क्र्राहि मु देमहिबामिय खुम्बाय खन्य स्व र् दे क्रुवा श. हे हिंद है पद के क्रिय के क्रिया है प्रवा श है क्रिय महिना सार्थ मार्थ मार यान्द्रियान्ति युन्याया क्षित्वर पञ्चान्द्रिया र द्राया मुन्या स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व गुरुग्रयते जुग्रय ये क्वें केंद्र गुरुषा गुरुय सवे जुग्रय ये जुग्रय ये किंद्र प्रवे दे गुरुष

गाँवे न्युषा रवे न्युषा गुः स्थिषा वा सिंक न गाँव । वा वा वा वा विवा गुः न्वे न्युषा गुः ब्रिमश्राता क.संब.चर्मश्रमाचर्मभ्रम.रे.हश.पुटा चलश.चालूब.मी.रेश.रेत. क्रें क.सेंब्र.चेर्थं श्वीर्थातीश्वासीश्वास्त्र स्वास्त्र क.सेंब्र.चेर्थं नीयोत्तर क.ज.सूर.च.लुब्र. त्री । ब्रे.क्र्याशर्रे हेव. के. च. व.र्र्या ह्रेंब. ह्या ? व्यवश्रियाश्यर्या हे र.व. वर. न्याना क्रिक्रमा बैचान्याना चिटाक्रिया में सि.होर्चान्यामा में स्थान र्क्च द्वानी दे प्रविव विवय विवय परिया विवासी नु इससा रूट रूट मी कुप ग्री दे वलेब निम्मायायायायायाया हिट नुः इसमामार्डियेयाय्नि कवार्वे । नुः इसमा गुःवह्रम् सक्सम्बे द्विन्यान्वेदिः नुःमस्यमः न्वन्यः द्विन्यः सव्यव्यान्यः वा इंक्रिन्शर्रे हेवे हे नवे हे अवव क्षाव र नु हे कर पति के पति असंसा ब्रायम्ब्राया ह्यास्य पार्वास्य प्राप्त विषयाय स्ट्रास्य मार्ट्र हित ही प्रविष्य विषय बर्द्धाः क्षेत्र क्षेत्र दिन्द्य वित्र मार्यः अक्ष्यमान् मार्यके प्राप्त क्षेत्र वित्र व श्रुकेन्बाई हे पश्चिम्याय केंबा उन् । दर्नेबाय पेर दे। मानवा प्याप्त मिन गुः क्षेत्रमायानु मु पवि स्वेर हुर पुरायायाम्बर्यायवे गायावेरायाका स्वापिक रत्तर श्राक्ष स्व स्व स्य मिता स्व भार प्रेर पित्र श्रापित्र भीता विष्य प्रेर पित्र प्राप्त से र ह 'ययस'महिस'गा'यायसु'गरिया'हु 'देस'स्। हि 'ययस'र्झे क्टर मरियासायायदेवासा ड्रेन्'ग्री'गाप्य स्वन स्वन्द्रप्ट केन्य स्वयं स्वयं प्रचित्र वित्र प्रचित्र प्रस्थाय स्वयं स्वय गश्यायश्याप्यत्वेदा न्यात्राण्टाम्बयाप्याप्याप्याच्यात्र्यात्र्यात् ।ने सः

युवैन्द्रायम्बर्गाः विक्रिंद्रमायम् दुर्भेषु व्यास्त्रम् स्रामेन्या स्रामेन्या स्रामेन्या स्रामेन्या स्रामेन्य पर्श्वराचि ताक्र त्रव विश्व द्यात्र चि द्याया मि श्राम् । श्राम क्षेत्र विश्व विश्वर विश्वर द्राम । ततु.ह्येर। ६.घवश.ह्य.क्र्र.चर्थश्राश्चत्.जीचश.जा वहेचश.होर.क्री.या.घ.क.स्थ. हा। इंश्राचित्रवे त्रिया ताका संयाव दे त्रिया त्राचिश्रामध्या प्रती भाषा विश्वामध्या वि न्वर-र्-विश्वायाक्षे देन्द्वान्द्वेन्द्र-व्यवश्याद्वाह्यश्यीःन्यदश्यन्याक्षेत्रः वार्वानिवालकाविटार्टार्वाटकाश्रद्धशाम्यात्वीयार् । विक्षित्वाकार्राहेवे हेता र् देग्यदे लेट चक्क सब महिन द्यार शक् सब पहु महिम देवे हेट ने सम् वाक्त निक्रा दिना दिना दिना सक्त स्वर्गित का स्वर्गित का स्वर्गित स्वर्गित स्वर्गित स्वर्गित स्वर्गित स्वर्गित वी वर वी दयर माणेव विरा देवे हेर दु अरव व्यय सु मुके खुंव दु व्येद या वाक स्व गरिनाक्षे क स्व पर् पर् मान्य प्राप्य प्राप्य वि में के वि पर साम्य प्राप्य वि वि सक्रमम्बर्गद्रात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वात्र्व सर बिट वाक खुन परिवादर। दयर शास्त्र अक खुन पर्यु दुवा विदेश परिवाद वादिश ग्रिशक्षान्तान्यकुत्रप्रुंग्रायदे हेट्यु व्यापति स्वापति ग्रिट्यति स्वापति । निमाना क्षेत्रा है वटा शाक्ष्यका प्राणा क्षेत्र है है शाक्ष्यका प्राणे हैं भूर प्राथा चयावात्रमानुवेत्विसमानुवित्यविस्यायाचेत्रम् ।देवाद्यसम्या श्.म्र.क्र्य.वेश्वा.क्या.क्र्य.क्र्य.ता रेट्टी तथा म्रीय.क्रांता में ता वर. यार झि.क्ट. ताचु.ल्ट. ताचु.श्रवत झूर.टी हु.हु.दी श्रेश.त. रताटश.क. तेथ वाडुवा. तथा ब्रियार्ग्रर प्रमूर प्रवे र इस्मा ग्री प्रबंद सम्मा मा प्राप्त क्रिया र देश प्रविष्य र व रापित्र र

गृहेश्याश्विश्यतेवात्त्वाहेटानु वानु द्वावि स्ववास्त्र स्वासु नेश्वाया देवे हेटानु गा इन्याश्याश्यार्थिन्यार्धेन्यारेरायादेशयादेशास्त्रीयात्रम्यात्रीयात्रम् गायायर द्विस द्वेष्ट्रस्य दरा गास्तुर दे स्वय दराय करायाया निवस परं मिर्टर गे.इंट.रे.क्ष्य.इं.हे.श.र्थशायवातात्व.क्व.वीश.इ.श्रु.ई.इं.ह्.व्रूर.ते.द्रव.त्.कुत्.स्व. म्बार्सिकात्त्रके क्रियंत्रात्मेवायात्रात्रे हिं । हिं स्र मिवायात्र मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्र र्ने र देव राव क्षेत्र का स्वा क्षिया की हेव पाव वा प्यक्ष विद्य से की की का की देव की की का ग्रथायन्वा वर् ह्रिंट द्वेर केर् ग्री भेर केर ग्री क्राय्य र प्रवास कर हिमायर में देत्ताले वा दे देन प्रमुख्य सामाया के सारुवा देने सामा से दिन सामी रद्धिर्यायद्वायात्रयात्रयात्रयात्रयात्रेत्रायिः हेर्ग्यायदेशाहेत्यादेवायो विष्या यार्बेट्रिट्रियर होता यस हिन्स्रिय सिम्मिन्स्य मिन्स्रिया सिम्मिन्स्य मिन्स्य सिम्मिन्स्य सिम्सिन्स्य सिम्मिन्स्य सिम्सिन्स्य सिम्मिन्स्य सिम्सिन्स्य ल.संस.४८.कैट.जश.चीच.तपु.वाधवालकावट.ट्रिश.चोषशाला.क्रीवातपु.ट्रेन्।इ.स्रेथ. नुर्द्र वर्षेत्र वर्षात्र सर्वा केश मुन्तर रहेरे वर्दे वर्षेत्र केर्य सर्वा क्रमाग्री बिटास्र र देवर्षियात्वा वर्षा वरा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष लेब यदे ख्रेरा नहिषाया वा बुद्धा झ्वा सेंबा कें यु हो ने वित्रा स्वा सेंबा कें यह र या क्षेत्राक्षात्वेद्यायम् । द्रात्त्राचान्या वर्षे प्राचार दर्भाव । क्ष.पश्चेर.तद्र.क्या र्.रट.शविष.तर.क्.श्चेर.तद्र.की.शक्षा पश्चेर.प्रश.वीश. ब्रुट्यावि ब्रुट्यिये देव पन्द्रपदि । द्रार्थिके। दे प्यट के बार्स्स की द्रपट द् चैबार्च। ह्र्या.श्रूर.क्र्याबार्च्याचर्दिर.ग्री.श्रुश्चात्रच्याचात्त्रःक्वाच्या चर्चायाः निष्यं निष्यान् वर्षः क्षेत्रः निष्ये क्षेत्रः के त्यस्याने त्यस्यानिष्यः निष्यः क्षेत्रः निष्यः क्षेत्रः निष्य यश्रमान्द्रद्रियः द्रम्यायक्षम्या कुवादे प्रविद्रपुरि द्वारे प्रम्याद्रमा प्रदेश

ब्रिट्यवियविष्ठे द्वा इत्वे मान्या नाम्या विष्या क्षान्या विष्या नाम्या यवै 'दु द वर्जे जर द ख्रुवा वक्षद क द ख्रुवा वक्षद के के के के के विकास कर ता. क्रियात्रात्रात्र प्रत्य वात्र क्या वित्र क्रिया प्रत्य प्रत् त्रद्रियायायकग्रायदे अर्गे हिंगेश्या विषयत्र त्रम् अरात्मिश्याप् विश्वात् यथ्यात्रुक्ष्वार्वेत्वर्धेतार्वेत्वात्रुवा दे.लट.तक्षवाद्यातात्वाचरावस्वत्रुव्वी वहवा. त.ज.थे.ची वेषश्रत.ज.थे.ची क्रूंटश्रत.ज.थे.चे.२८.वश्रश.तपु.चर.चश्रेज.चक्रेर. कु'र्ये'दे'पश्चवाक्रेव'गठिग'रु'मेंद्र'याथव'र्वे ।दे'क्रमम'ग्री'वट'वमाहसु'मेंद्र'यदे' वश्रवायाद्रायेवे श्री इश्रमाह्रमाहे भे हो हे विद्याद्यमा हु से द्या हु वा द्या द्या द्या द्या र्यागुव करावा अवारत रेति ग्री विवाया सक्वरिय हे बास बुवायका वक्किया र्वादायदात्रक्षात्राचा इत्युवामीश्राद्यायावरावायम् वृश्यापाक्षे क्रियापाद्वापा स्व.त.च.र्सवा.लुब.सू । रुट.क्.यट् र्इट.री.पर्टेर.स्व.श्याक्र्यायात्र.हिट.दी.य भूकान से वी प्रमुवा सर वार्य राष्ट्र वि देवा से प्रसामित प्राप्त हो है। दे विश्व स वश्याक्षेत्रपरियम् कम्बास्य प्याविमामिबासह्य स्रेति स्रेतः व्राप्त स्रुट्य स्र म्। ।वावव क्रममा ग्रीम ग्रीट दे महिट व मा स्टम हे जिस यम देर दर है व सैवा क्रम थेशबार्थशार्थेय.तार्वेट.हू.। १५.जावशबास्टराग्नेबारदेशार्थशास्त्रीरायं विद्यातवार्थे. यान्त् चान्त्र्रा देवसाव बुद् हे देव वनान्त्र पुरा के नामा के इसमायुक्तमायेव के दिवे के सर्व कर्त केर केर के स्व मा इसमा के सर्व मा दिव के सर्व पर्द न ट्रें इंश.त.क्ष्रश्रात्र्र्यात्वरत्वश्राद्धे तवचर जाहिर् थ्राट्य क्ष्रिका विराविर् विश्व त.ज.चर्ड्रेष.थ.थ.चर्ट्रेट.लट.वेच.च्र जिट.श्रु.क्रेट.टे.खेच.सेव.श्रेश.क्रूचेश.त.

लट.बुश.त.रथ.वेच.ततु.वर.कर.वधुश.बु! ।लट.शतु.कुट.२.की.वीतु.क्र्तातिथ. वा ट्रे.लट.ज्रूश.म.क्र्यश.कंट.तप्रवेद.ह्री ।लट.श्रुव.कंट.टे.श.क्र्रूश.श.चयेत.तप्र. वन्रमामानु सुरूपान्दर मुक्याये न्या इत्यार्थे र विवेद स्ट्रमार्थे द्या क्ट वस्रश्राक्त्रियार्श्वेद्रश्राक्ष्येद्रश्राह्य । विश्व साम्मरायन्तराम् निरम् मुराहे वर्षे प्रति मिर्मि स्रिति प्रति मिर्मि स्रिति प्रति । वर्षे प्रति । वर्षे प्रति । इर कु. उद्विच ततु नच क्रवाब दर देव ता च्रिक क्री श शहर न ता तरे व व श जूच. त्र विश्वताता विषय देशका ग्रीका का तहूर ता कूर्याया ग्री हर ही मुस्काता में का मृष्याम्ह्राताता रे.च्येषाग्रीयारे.श्राम्ब्राट्याच्यात्रीयात्वीयात्वाता. र्रायविष्याये प्रयाप्या स्थान गठिगानु ब्रह्मयायायानहेव वसामावव इससा गुरागुर विष्ट्र हार पर प्रमान र्थान्त्रिना मुन्ति स्वर्मान्त्रिना प्रहेना प्रयाप्य प्रवास स्वर्मा स्वर्मान स्वरंभ स्वर्मान स्वर्मान स्वरंभ स् वैव वहववमा क्रेन द्वीय य पुरा दे वाकी ववाद विवा वीया रहा वीया व्यवक्र केवा श्रामेश्वायत्र। निवर मुशायुव्यव्यविनायाद्रा मुप्तार्थेन्य मुख्यायायायहेव व्या क्राबाद्रियाल्य दृष्ट्रियाबायर सूर्य वित्रोत्ते । श्रीदेश्काबाग्री वट वद्या नियान स्टाप्तिव पत्रद्यानेवार्येवर्युप्रेक्षित्रे देशर्युद्धिस्यर्द्यास्त्रेवर्येवर्येवर्येवर्षे दे.क.हूर्य.ह्म्त.वी.ट्रेंब.कश्चर्यक्षपश्चराकायहेर्यत्था दे.क्यि.तूर्यं कर्षे

वर्त्राच्यानस्यान्द्राच्याः हुषाने स्त्रीचार्त्राक्षणायात्रम्याच्याः स्वास्त्रम्याच्याः क्वाक्षेत्रयाचा अर्डिनानीयास्नापर स्थाप स्थानेयासेयायास्या हैया ब स्वार्श्वरात्री स्वास्त्र स्वास्त्र में वास्त्र में किया सक्षेत्र स्वास त्यस्त्र से हिन प्रमाणिक श्चिर्याधेवाहे। अर्देरामुबायमा केनाहायवेवादीयायाहराया हिराहरास्त्रा पर श्रीका प्रकाशका विकाम क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क ग्रद्रिं द्वर्यक्ष्रं प्रवे क्षेत्रा द्वार्ष्यका क्षेत्रं वार्य प्रवे वार्य प्रवे वार्य प्रवे वार्य वार्य वार्य वयश्वराष्ट्रराष्ट्रराष्ट्रराष्ट्रियायय। यदगाद्वराष्ट्रराष्ट्रद्रायाद्वी ।वया नास्यास्त्र मान्यास्य । अक्षेत्रे वे व्यवे वि अस्य । । निर्मे व व्यवि र निर्मे स पर्झिस्यर द्या विस्थार्थर सहर पर्दे ने के ते देश विस्था वि व्यूर.ज्याचर्रीर.ट.लटा दि.चधुर्ड्स्ट.टे.इश्रानर.चर्ह्या विश्वातव्यर.वे. वाशवान्य नक्षेत्र ततु क्षेत्र । र्योवार्विय क्वियास्त्र वाश्वानी स्नित्र स्वानी स्वित्र स्वाना श्रुत्र्रिच्यायाद्याया वयाश्रयाणीयाद्व्यायायाद्वायाद्वायाद्वायाद्वाया यामिन्द्ररादेशकी अर्देरामुश्राञ्चनार्थेशमीमिक्टिर्द्रराश्यश्राद्रा अर्देश ८८.ई४.श्रेश्वरात्री.श्रेंव.ववश.शे.देव.चे.द्व.ट्व.ई.ई.ई.उक्चट.व्रि.थ.वश्रुंश.त४.वशेंटश. क्वार्त्य दे। सैवान्य रात्त्र श्राम्यशायात्र सामाना नामान्य देश नामा देश में सामा से सामी सामी सामाना से सामान यर्ट्यंत्रेर्भेर्भुः इस्यर्य्युर्यर्द्रिक्ष्रस्त्रवुद्र्यदेषुर् देष्यर्वन्नयाप्त्र त्तुं शुद्र श्री त सूर्य बार टा के वा शूबा की के दि श्री र क्वा सूर्य बार दे राष्ट्र का श्री थे . श्री र यार्ड्यायेव की देगादेश श्वरणाव श्वर हिर हेर पुंचे र यायायेव है। दे सर श्वर

रया वि.म्.म्.मूर.मू र्राच्यास्यास्य क्रिंट्यायस्त्रित्याध्य हो। सर्व पहेर मिया सुर भेषामि धुरान है। सि. २८ सि. श्रुव सिर्धा प्रियामिर्धा त्तृ हिरा शरवा श्वेश हिर हे र दे सामा लेश है अरवार सम्बर्ध वारा श्वेर प्राप्त । है। शर्वाश्चेशवी.ली.हिंद्रायालया हिंशाताक्ष्रायाक्ष्रात्राक्ष्रायक्षे विकाली. वाश्वरावश्वरात्रेश्वरायरावश्वरद्यायदाक्षेत्रा ह्रेन्यामेरावदाश्चेदाक्चेन्द्रेन्द्रा शुःगवशःह्र-गिन्र-वाशःश्रेशःतत् विश्वाग्रीरशःततःश्रेरा हेशःश्रेशःह्रिटःग्रेरः र् निर्देशनियार्गिर केर होर पालक है। दे हे देवा स्वाम हमाहे के यारि स्रमालका विष्या विष्या के स्वर्थ के राय में स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्ध के स् देशक्षक्षत्रम्यक्षयापाद्राचेत्रेक्षाक्ष्रकाक्ष्रिकाक्ष्रीकाक्ष्रक्ष्यक्ष्रकाक्ष्रकाक्ष्रकाक्ष्रकाक्ष्रकाक्ष्रकाक्ष इर्जिट्केर्ने देने प्राचित्र ही विषाने राम शिवादार दे। दे हर प्रवादा हैंग वर्तित्विते विश्वास्त्रत् में हैं देशकी बिर विवृद्ध कर तथा बिश्वास में विद्धार वहने वै। शिक्षयश्यीयारवाश्चानेयाहे। लेयायावया विवासनादेवाद्वार्ययायां विना जुद्र,पांडियात्र,ग्रीतालट.रेया.योथता जुलाशालट्या.श्रीता.ग्री.श्री.पद्र,प्रश्रातायोशेटता. वया दिव हैं र छेर पश्चेर र अ हैं व पावा वेत पर पश्चापर व पा है व स्था बेर्या हिर्णेशक्ति केश हैं र हेर्र्य वर्षेर केंग्य हैर केंग्य में प्रकार केंग्य हैर र्वित्रायवान्त्रीय । सरवान्निमान्निर होर वान्यानुमानुमान्य वर्देर पवर वीर्द्रात्र्यायम् विष्यावस्त्र विष्यानिष्या विषया विषय स् भ्रीताश्रात्वाभ्रीस हिराने दि दि स्थानावना वसना सुरस निरार दि रार दिन

ग्रिट. रे. क्रें प्राप्त विराय होरा इवा स्वा में क्रें क्रें के क्रें प्राप्त के प्राप्त विषय वर्द्धत्रुष्ठानुष्ठानुद्दिः द्वेद्द्द्द्द्वद्दिः अवद्दे वस्त्रात्वद्दे वस्त्रवाद्द्द्विः अवि भुै.च.वचवाश्राच्यालेब.इट.शूट.च.ट्र.ब्रैंट.लट.शु.चेव.इट.ब्रैट.व.व.ट्रेव्यातवट. सेन्यवे द्वेत्र वे न्यूर ने इसस्य ग्री ने न दे द्वर विन ने वा ने व्यर मानगा मु रे पेन् ने। युर्-१र-धेनिक्षामि देव है। इदि हैन किनानिकाधिने है। नवसानिकाधि र्ट्स्यासन्तर्ययेष्ट्रप्रायर्वेद्यायर्वेट्याक्षात्र्या देवात्त्रात्वात्रात्रे विद्या द्रश्रात्तव्रत्र्वाच्यावश्रञ्जात्र्यः श्रुपः स्ट्रियः ह्रव्यः ह्रव्यायेष्ठः च्रीप्रस्रेत्रः देशायवे प्रतित्र क्रिन्द्राष्ट्रम्यादेवास्याये द्वारा विषया द्वारा स्वारा स क्रमार्झ्यीर पर्वाक्षेत्रामार वास्त्रीय विमान मानिता विमान र्येन्द्री अम्मवनान्त्रमयायमा वन्ययान्त्रा मार्वेत्रमयन्ता नःस्र विरामवा सरमा के मामसमा कर श्रेव पर ना हरे ग्री हो रामर श्रिव के ने सम गरहर राष्ट्रेश निवर्त्ते तयर मे निर्देश चिवान हैशाय निर्देश यर विवर्त रही विदेश ने अव. ब्रेन्यक्रेन्द्रश्रयम्बद्धत्रित्रह्य देशस्वराश्चरान्यक्षेत्राशः २ंबाक्री,क्र्रेसेट.का.वक्ट.के.चतु.रेबाचारीश.की.बाटबाकील संस्क्रेट.द्रेसे.क्यट.ततु. गु.ह्रच.म.४श.४शश.सी.हरश.द म.हेचबारीयाग्री.क्र्रहरायेश्ववी.वा.वक्ट.के.वर. र्वट्याचुरेशक्र्रियावानेषायावान्त्राच्यावान्त्राच्याच्याच्या यव वशक्त मुन्या के देन वा के निया मानि वित्र प्रति हेन दे हम् के प्रति हेन

ह्माया हा ये दे भी कि दे प्रता के प्रता चर्ने चर्ने प्यट कुट र्च अर लुग्र गात्र श हि आ गार्स अ छ अ या या अर र ट स यदे खेत क्रुमाग्री पर्ने केन प्रेन निमा ने अकन निमक्त पर्वे सेसमान्येन समान मुनानी वेन नामवायदेव या वा के वर मी के वा वे मायमा के वे वे के व के वा के वा माय विवास इशायर देव्यातपु क्षेत्र है। ले क्षा हू है ग्रीय पर्धेश तथा स्वाय र देवी केश. शर्व तर वर् वेश तवुर्हे हे रेट तथि श्रधिशतर हैं र प.शरे तर क्षातर क्षा त्तावश्याके त्र श्राक्ष्य त्र श्राचेशास्त्री विकावशिष्याता देशाची सेवा में देर यक्ष्यायर हैं र पासे द से संसम्दित के की सूर पाम सुस्र हे दे वासे हैं। पर मस्र स विद्रा यद्राम्पद्राचापद्राम्यद्राम्यद्राम्यद्राम्यद्रम् हिरारे वहें व शे के दर्श विषाद्वर ये गहिषा हिराया शेरायर वर्दे द व्यव प्राये द स्वाबानाहिकातान्राच्या वर्ट्राञ्चवा क्रिंग्सेन्याणात्राह्या विश्ववादिक्षावास्त्र यर सेन्। श्रीर मान्त्रमाश्रमाश्री हेन या यर सेन्। दन वर्षे वे हेन या यर सेन्। तत्रहीर। रट.त्र.वीव.ही रवट.त्र.वार्थशाहीर.ज.वहंब.तत्रविश्वश्व.र्यार.रश्वर. मुःवर् वर्षेर् सेर्पवे क्षेत्र पदि स्याम् मुवाहे। देव से सेवे देवर में उसाम स शर्पते हिरा नमुराय नुष्के श्रिट दे नमुराय प्रायम ग्री तर् वर्षेत रेपित ग्रीट यरे क्रेन वासार हेर ने साराव रवर गार्स वासे हरा के हिर वायसन साराव वासा क्र.श्चर्वाश्चित्रवेशारः क्रेर्याये हिराते। हे स्थया व्यट्या हुर क्रियाया विक्रिक की वार्था गु.श.त.श.लुब.तु.हुर.हे। ईंश.वर्टिर.जश चर.कु.जेश.वत्तवश्व.व.जर.हूर। रे.चंड्र तेट.चु.मे.मु.मु.संबा विट.चसेश.त्.ल.मु.संश्रादी विटस.मूर्.कुर.त्रा.

लट्रिंग विश्वास्त्री । इस्राह्म से से के देर देर देर हैं देर से देर हैं निया से हो देर त्र्। विश्वन्तः। इंस्कृतिः क्ष्रश्वात्वेषाः श्रेषाः पद्। विषाः ग्रीः श्वापः रामः प्रापः ग्वापा विवास निस्तर देश हो सामिता । अक्टिवा पर प्रमुट पर मा अपी । भे पा मा अपि । इस मुद्दर । भिन्ना प्रमाति ता सहर तर त्वीर । व्याप्ति साराय हिर । तथ. वायावाकी देन्वात्वराक्षियायदाहेबर्राश्चरावदाक्षेत्र देशक ह्वाबाह्या केर गुःगर्वा मुद्राम् इति म्ह्युं ब्रीट प्रदेशिय देव देव प्रवाय प्रदेश स्था युवा क्षे.सं.क्ष्यपुत्रत्यवर्त्त्रत्यक्षयावर्त्त्र्यास्यश्राह्स्यीत्रत्यत्यवराष्ट्रया तातुत्रक्रें देवे से के श्राष्ट्रयातर ता वा में यात्र में या श्राहर ता रहे हैं श्रावत त्में ते. वच्चियायर विश्वदश्यी विश्वयाया क्षेत्रीत्र देशायते हिरावि हिरावदे देव देव वि डिन ।रेसमिहिषाग्री श्वरानि से से पार्य प्रति श्वरानि श्वरानि श्वरानि श्वरानि स्तर वक्क.य.ह्यश्चरम्भ्य.मु.मुट्यादे प्यदे प्यदे प्यदेशयश भे यादेशय । गुर्वास्तियनेत्याक्षा विकेयवे क्षेरायर देव द्यायनेव यायेवा दियामहिषा वर्न द्वा श्वास्त्र द्वेष की शहर या वर्ष है। स्वास्त्र सामा का की सामा है न तत्रहीर नेर हैं। दिवा पश्चेर देश मिल का श्वेष प्राप्त विकास प्राप्ति वशायक्ष मात्रा तीशात हिंद वेशायर हाता वहीद ह्याशायह शाहिर या वे शाहित । नर्षेत भिन्नमुर्देशमु हर्याविद्रा वक्ष्य ह्वायाद्रयामु हर्यावे लब्रायते छेर। वर्दे न वर्भे हिन्या वर्षिक हेरा स्वाविक र रे या वित्य सामक्रिया वी परिकार्या व श्चित्रविषायर विवाली । रट. जीवाला पश्चिद हिवाला यहिला मा श्विट विवाली विकाली व ब्रैट्.बाष्ट्र,लुष्.तुर्,हुर्,हो वाष्ट्र,श्चें,वर्शेश.वश्च,विश्च,वीश.वीश.वीश.वीश.वीश.वीश.वीश.वीश.वीश

ष्यात्वयानुवे सुप्रास्यास्य स्वाप्त्रास्य प्रमान्य प्रमान विरादेव देव देव के व्यदेश हिंदाय हेदाय अहर यदे संसम्बाद केव या केंद्र दुषा वेदायम् वास्रवायाविदाकुवावक्षेपाने देन दस्यदिन याद्येव वेदावस्य सवर ह्या दुवा दुवकर बिटा दे व्यक्ष व्यवस्थ प्रवे प्रतः देवे देद ग्री क्रे प्रवे ग्रीव है व प्रदेव प श्चि अर्थः श्चरः विषाया धेवाया देवावा देवावादेवा विषायदे द्वा छेवायदे देवा विषा ग्रिट.तक्र.त.र्टर.स्र.स्रे.स्र.स्र.प्र.त्र.त्रात.त्र्र.वाशवार्टट.स्री.वीश.सी.पर्वेर.प्रत.प्रश. यानिक्षाणेक्की दिणदाबुदाविक्रास्त्रनामानिदा देनासावरुष्ठाचा र्योवा यायायेवाहे। श्वरापविद्रार्टेबायस्वाहेवार्श्वरायादेवार्थेयायाद्यापर्द्यापर्द्यापर्द्यापर्द्यापर्द्यापर्द्यापर्द्याप नेर्यासायि में मुद्दार्वि द्रान्त्रस्य पासम्बद्धार्या सम्बद्धार्या सम्बद्धार्य स्थाप मु विरक्ष्यालय तथा लाम्बा मुक्षा मुक्षा प्रमान क्षा देवा वा निष्य मुक्षा प्रमान क्षा मुक्षा मुक्षा प्रमान क्षा मुक्षा पर्वःचरमु हुरमित्रायर्षायर्षायर्भगवर्षायर्षेत्रायक्ष्वमु हुरमित्राविष्मित्रायर् मेरा देरावया च अर्ग्णे प्ययमी मुर्ग्याविय गर्सिन व यार्ग प्यय मेर् प्रमुप्त परिश्रासु देशाया श्रुट पति र्सेट ग्री वह ना हे दाया नेश ग्रीश श्रीयाय दश सूना स्था गुःहेब क्रेन्पिय पर मुः श्रुट मिन्र पर्वा पर्वा पर्वा प्राप्त मिन्र स्वा सेंब स्वा सेंब मुन् वया वर्द्धराग्री श्वरामिव वार्क्स देश श्री वर्ष्ठ वर में मा श्री श्री वर्ष्ठ वर में मा श्री श्री वर्ष्ठ वर्षे य'ते' ख्रुवा सेंबा देर वाबवार दुर्ग यार्गा वर दें ते सरें त ग्रुट ख्राव वर दिये सम्बित्त्रानश्चिर्तार्टा श्चित्वेर्ट्यात्रम् अत्वित्रम् स्वित्रम् स्वित्तास्य प्रमान पर्याम्बार्शकायदेवकातव्यायराम् मुस्तिराय्वेरायद्यायदास्त्रीय। मुस्तक्ष्रादेशः

न याम अवा ग्रीम सहस् हूं वा मा हैवा मा हैट वा चे न ट. हैं र व्यास न सर मा निया. श्रुकामी त्रिय तार्मका विष्य विष्य के बात्रेय विषय के प्राप्त के बात्रेय के बात्र के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्र के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्र के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्र के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्रेय के बात्र के बात् की शक्त त्त्र है। चे क्रून् हैं दक्ष की श्रेट क्र्य हैं नहार श्रेप से अप के अप किया ह्यासाता वर्तेश तथा भेरे क्याराह्यासायर रे.क्याउर्वयमा सुर्वे तथा से यदे हैं र दर्ग वर्ष र इसमाग्री हैं र क्रिया है वाया दे ता क्रिया यदे हैं रा वहिया ्याया रद्यी हुग्राया वेर्दु यस देन केर वर्षेया विनाक्तावाबीहरा देलर वैवाक्ताक्तिक्ति विनामिक्ता देलर विवासिक्ता विवासिक्ता विनामिक्ता वसर्हेशसु सामामुद्रस्य वस्ति वर वर्षि वर वर्षि वर वर्षि वर्षि वर्षि से सामामु यर हेर दर्ब के है। इ कुर के बेय नहें के दें हैं दें के के बेब मायय यस नायय वर वन्द्र यदे हुर अहर यह स्र अहर यदे खेय खेर दे। र वे खेया ग्विः मुंखक्षावर् केर वर्षेका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका विरामित्र विरामित्र प्रवेश्वर्थार्म्या सेन्यर प्रदेशाया हे हे स्रेस्यर प्रदेश प्रवेश लय.लेश.क्षुंशकात्रर विवाधात्रत्ये विराक्षेत्री, क्षंशकाती, तूर् अर विवार वटा वश्चेर. नशरे प्रवेद यमेग्रय वस्त्र राष्ट्र यो प्रश्निय है। दे इ.सुश्चर्यत्राचित्र क्रिय्येश्चरत्र प्रत्य वी.सरस.क्रिय.वी.सुर.टे.चीचुवासात्र तमश्चाता. लव नव हैर हिर दिवा विकर देव क्षा क्षा विकाय कि निर्मा कि का वहना था हुराश्वतद्वाक्ष्या क्षेट वसावहिताता से मेश श्रेशश्चराद्व वहिता क्या बसायह्यायाहें हे भुगवायी यहना खेवा देनवायने वया हेनावायने वया हेनावाया र्र. इ. श्रम्मार्थतप्रति । क्वार्यस्य संस्ति । यद्यः स्त्रेर । स्रम्भान्य । स्यापान्य । त्या र्वर्ष्यश्चरवाद्विर्विर्विर्विर्विर्वेष्ठ्यायस्व के मुर्यायर मून्युर मून्याय न्या

वर प्रवेष र अध्यक्ष में बद्धात व देविया पर्या है। शहस के स की सहि परि पर्या नु'यम'ने न मिन पर उन नु 'वसूर पन न । हिर हे के न पेंबा गुन न वा पर्वेर बा ने श्रेयश्रक्ष वर्षाय्य पर्वाश्वर्षाय द्रा श्रेयश्रक्ष वर्षाय उर्दे स्टावी सर्वे त्र ततु.चर्वात्रराचर्चेराचर्टा इचाताक्ष्यातुत्रथ्यकात्व्यस्यात्रराच्यात्रराचे. चतु.कुर.लुब.तु.हुरा ।वाश्वेश.त.बु। क्षेच.शूब.वीश.वा.वर्हे.च.र्झुब.त.वा ४८. नेप्यटा क्षेत्र शिवा की क्षा क्षा कर में ने व्यवस्था के विद्या के वयाने प्रविव मानेनायाया ये प्रश्चित पान्या वियायात्वा ने प्रविव मानेनायाया द्या तर.र्सट.शह्रेट.श्रथत.ट्रे.चधुय.वीचेवाश.त.वीट.क्वेच.ग्री.श्रथश.ह्.ह्यु.बीवाश.वार्थेवाश. म् विश्वतिद्वार्याचीरश्चित्। शर्ट्यतिश्वावश्चित्। स्रम्यातिम् स्रिम्स् य.लुका । ४८.मी.लेक.ज.ट्र. प्रथमानिय । लेक.मी.ल्ट्रि.लू४.कूर हूर्यक.करका.केका रेअयर्द्दे प्रवेष त्यार रेया प्रथम विश्व में सेर्य सेर्य सेर्य विश्व में रेया विश्व स स्चिकाग्रीकाक्षेत्राक्ष्याग्रीकाजीक्षाज्याचर्द्धिकाताने जिसानग्रीकारीक्ष्याताक्ष्यान्ति स्टा वी तुरा वा स्वाप्ति प्राप्त सार्मेन प्राप्ति वा स्वारम् स्वाप्ति प्राप्ति हो क्रिन नामवावामामाम्बद्धारात्वर। रट्ने हिन्याप्तरे हैं रेंने रेंदे रेंद्र वेर क्रिया स्थित इसाय उव किया इसा सूर वया गर्वे र सहस्यक्ति का मान स्थान है व दर्श है। रर में हैं दि ज स्वास पद नामस समस्य से प्राप्त निम्न समा हैन स गी सुद रि ज स्वास या द द र्सिन्छेरकेन्नुस्यायरछेन्यायेन्छेर। वर्नरपहन्यार्छेर नावनापुः व्यन्ति। वहुवायवे श्रुः इस्रवान्त्रः स्वाध्यान्यः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्वाधः स्व र क्रें र प्राचित्र प्रवे हिरा । मानास प्राची पर्मा हेर में असे में असे मान हैर । वेस

स्चित्राधितातकर्ते। सर्ट्राचित्राता र्वे र्यायाधित्र्रियाची ।रेपवित हर्तायानुना मुकायमा दि यहेद मिनेन मार्थ स्तिमा मार्थ देन मार्थ हिमा मुका रवःश्रक्तिं त्वीवःतरः त्वीरा विश्वानित्यः तत्ति हैरा दे हेर हैं दे हैं दे हैं दे हैं हिरामाना सर्हा वाका न्याक्रवा प्राप्त वाक्रवा विद्या विद्य चर्रेर.तत्र.वी १रे.चबुब.वामेवाब.ततु.कूवाब.चबर.वी १८हूब.वीच.प्रच.शकूव. वर्षीतात्रत्वरीय वेशतार्टा बैर.स् वित्रवीवेट.वर्ट ब्रेंच वेशवार्टेय. वस्तिक वा मिन्ति के वा मिन्ति क पश्चित्यायायर द्वास्त्रीय विश्वामश्चर स्वाया द्वराय द्वरा देया देयार देर वाशवार् देवें नातु क्वादी प्रामी वीशावान्त्रीर मातु क्षात्रमा द्वेवा क्रम् रेवेर नामवार् हिमायर प्रमायवट मायेष् रिनामा हिंदे हें क्षेत्र सिमायर प्रमा यवर अधिक मी श्रुपाचयमायमायमुद्दार प्राम्द्रायाकी मिले या श्री सद्दा श्रिकावसकार्येचार्वकातातकुत्तावी सेट.कू.कि.। विश्वकायुवी श्रित्रकृटार्येच ।लीवा. ल्। चान्निन्द्रमान्त्री त्याने माला हे र नामा पाने र लिये हिमाने सान हरा है र वह्नद्राचर वर्षद्र या स्रेर हिंगाय थे वर्षे अदूर मुग्ना वर्षे वे दे हे वहेद च वन्ना विभवत्तर्द्र, त्रं विश्व देश हैं। विभविष्ट संत्रं हैरा ट्रेलट श्रे. वि शवान्वरीटान्द्रशानशानस्थादेशके वकुन्वद्रम् ह्याश्वरावेर्यशानेटा येषु र्श्वामु से स्टिन् मेर् के स्वा सावस्त्रा श्रेम मेर्टिन में रेट के रेम मेर्टिन इस्रायाक्ष्मसायविता देवाक्षेत्रस्वामाक्षी वाचिवासासीत् इस्रात्यासास्यासास्य बिर्यु दुर्वे पर्दा निवि दुर्य के से विर्यं के से बिर्यु से से विर्यु के से विरो के रवार्यक्षर्नाता बावश्वात्र्यात्वात्वात्रात्वात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

य स्पुर् गुनार्रेग्यार्र्म् स्थान्यात्र्यान्यात्र्यात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्रात्र्यात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्र में हैंग हैं हैं देव, हैं ट.च.वर्ट ट.च.ट्र.चवेंची रट.चे.वेंच के के के हैं हैं में हैं हैं के हैं हैं विश्वाणी पर दूर वाशवार विश्वासर हिंशास क्षेत्र है। है है वहेंद वा वशा वाह्याश सिर्ट्सेन्यर्दर्श्वेर्ट्र्रा ।यावश्वर्श्वनाची द्वर्येर्ट्रा ।याव्यवर् क्रा.र्चर वीर.त.क्री वित्र्य पर्वेश रटालट रेवा देव। खेल प्रवित्र साव हीरा देव. इंश.श्र.क्ष्र.चत्.सिट.म् अथेश.धेर.ज.चेश के.चत्.रेचट.म् क्ये.विश्वा पर. क्रिं ग्री क्षे व्रिया देशका वर्ति त्या हे क्षेत्रका ग्री क्रियं के वर्षा क्रियं क्षेत्र व्रिया वर्ष स्वाबासुर्वर मेबाद्विर कु क्रियावरे स्वाक्षा हा वाबिदा अहआहेर जा मेबा विसायवे स्वाका सु व्याने सावित की केंद्र वा यदे सुवा इसका के द्वा वसका म्रियापदे देवा त्रीत के इया तिवा देशका य स्था दे पद देव देव द्रा मिया देशका व शुःइ पशः श्रुः श्रेष्टिश रटः कुन् ग्रीः श्रुं चे श्रायदे दिवा शासुः इ पदे दिन्ती पुरः श्रुः श्रेः वर्ष्या देन्त्रामी बरम्गामा सुर्वा प्रमुद्र मुद्र मुद्र प्रमुद्र प वस्तिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्षातिक्ष वर्षा क्रूप्रस्टामध्याप्तेराणानेषात्रा ।क्राममध्यम् पर्वाप्तराप्ता ।म्रा ८८.क्रा.कंर.वीर.त.की वि.मू.च्येश्वरट.लट.टचा.कंथा खेशचासेटश.त.व.कीरा देव:ईशःशुःवर् नेशःग्री:सुराया श्रें रहेवाया नेशा श्रेवः विश्वश्चा सूर्वः दवराया रट कुर ग्री दे वियाय इयवाय वुटा दे द्वा की खे ह्वा वाय दु नेवा ग्री खुट र्घ विया यव हमाया सु हे दु स्वाय शी देव के द्वा स्र हिमा थे में बाब स्वार हमाया सु हे र् सेन्या के कि देवा के नियम मिया परि हम्य पुरा के के दिन प्राप्त कर प्रमान

नर्टेट.श्रुचेश.श्रु.वर्टी वेषु.रेचट.त्रु.इश.ततु.सेचेश.वे.वु.वश.वेट.होर.टेच.टे.के. बिट बट र हुर रामवा रट कुर में दे विसाधवे स्वास स्वार दे से के र बिट । रे न्नानी न्द्रक्षश्रमाव सूट सु पुरे सूट पाय पुर पाये विष् वशक्तिं निर्वेशकी प्रमान्ति वशक्ति वशक्ति वशक्ति विद्यापर क्षेत्र प्रमान कि विद्यापर क्षेत्र प्रमान कि विद्यापर नेश्रार्श्वराहेनायान्ता विवासम्बाधान्तरायान्ता वितास्यास्या है। मिन्द्र-वहिश्च-द्र-पद्दिवा वेश-वश्चिर्याये हैरा देव हेश सुवर् नेर्ती सर्यो न मुन्येर भेषा इत्वी विषय। क्षेत्र निर्मा रूट कुर्ते केर इसम्बद्धाया देन्नाने क्षेत्रम्भाषास्य दुन्ते दुन्यी सुद्रिय विस्य देन स्वास सुवा क्रिन् से तुषा वित्वारी मुप्ता वेष विस्वारी स्वार में स्वर में स्वार में स्व ता. इशका. शु. ट्रेच। केंट्रावशका. हुश. तत्त्र देवा केंट्रेट्र तत्त्र केंट्र विश्व केंट्रिय हु. र्वट. मुश्र. ततु. स्वाश. कु. मुश्र. बुट. बीट. कु. इ. मूर्य. त्यीर। ४८. किट. ग्री. रू. मुश्र. र् दिन मुय्य न मार्मिय महिमारी पर दिन मार्थ प्राधिक पर दिन मार्थ प्राधिक पर दिन मार्थ पर दिन मार वित्रवस्य वर्षु मेर् मानुवाय प्रमा वित्रवस्य मेर् भी प्रवर्ग्य प्रमा वि १८.इश.र्चर.वीर.ताई। मिन्य्येश्वर्थरटालट.रेचा.रंब। खेबाचिर्वातांतुःहीरा देव:इशःशुःकुटःबुटःच वाचिश्रायवे:बुटःच रटः नुशःशुःकेव वावश्यायय प्याया ॿॱढ़्रेर्त्रीशवियत्तक्षंतिव्रर्थर्थर्वार्वाराव्यक्षंद्रयत्वीद्राता वैद्रायाशक्र्रेरतावा विभायते अकेन या र टानु सासु हैं न न न भागाय द ना या या है के न मियाया है युदे हैंट.सट.रेशर.तशातव.हैंट.व.वर्वेट.। शक्र्ये.त.क्रेर.ह्य.त.ह्यातव.क्रेर.ह्य. रट.रेश.श.र्डूच्यावयावालव.रवा.ता.वा शक्रशंता.ग्री.श्रवा.वर्षेवा.त्रश्चित.ता.क्ष.

प्वे र्ह्ने द्या व्याप्य प्याप्य द्वार प्राप्य द्वार के र विवाद द वाराय व विद्याप्य र र र्भासुर्श्वर छेर् श्रेत्रेन पस्य पर्दा द्वा विदेश स्टब्स श्रेत्र । स्पर्व सूर प्रवृत् हे पके पर्वत् नामवा पकर प्राप्ति व हे देवा वी दिया महिभावहसान्यवान्दायक्रायार्वेन मह्मवान् द्विसायमा द्विसायायिक है। हिदार्वेना मिन्र्यं मेन मुग्यस्य । रद्या ने विष्य में या में य त. है। विश्व. मेश. मेर. वृत्त् नाशवाचरा वेश मेशेट श. ततु. हैरा वक्ष. च. तूर. चार्याया विदेशक्षा सुन्दा शुन्दा अप्ताय विद्याया नित्ता गाँव सूट दि स्थाया क्रिंट्रिंट्र मानेबाक्तरान्त्र हो। श्रान्त्र वर्षा प्रकार्य वर्षा मुद्दा दिना विद्या की सुर वियम्द्रायाण्येव। वेषामासुद्रषायविष्ट्रिमा देपविवाद्गप्तिस्रायवेष्ट्रमार्श्वेषा पूर्ताबाबारी महिबातपुर्दे वातपुर्दे वातरा मुर्दे दूरा मार्च कुरा सी विवासिका हिर रेगमान्द्रा ग्वरणट मुद्दारार्येदे युवारी क नमास्य ग्रिस द्रास्य मिर्सर्टे म्रिने में प्रमानिक स्थानिक स् त्रश्च के त्रित्र प्रति विषय विषय विषय विषय के म्राम्यत्वेषर् । वित्रवाषायर्वाके विष्यवश्येषा वेष्यवश्रुर्षयः ध्रेरा दे क्षराद्रावाशवार् प्रमुखायवे दिना मृत्यु हिन श्राचे हिन शर्दे व प्यापा हिन शर्दे व प्यापा कूर प्राप्तर र र त्या कर है व है व की पर व कर दूर ल में बर हो र का है र पर है व पवःसिवाबाक्त्र्यःश्चित्तरवाद्धरः द्रान्द्रःश्चर्यः क्वितायम् वात्रः स्वाद्धाः स्वाद्धाः है। शर्रेर विश्व तथा पहें पर दी पर दे दे दे दे हैं। विश्व हिंच श्व दे हैं पहें दे तर दी । लू. पैंक्ट हैंय तह से हैं .स. लय गूरे हैं। जुरा चरा सार हैर इंचरा वर्तिः देव वा वार्षा देश विषया श्रीयश वर्ते र दर्श शुः हर वर्ष र प्राप्त र

गुः दर्द्व प्रविव द्वियापाणवाया दे स्र प्रमुख्यापित देश देर हुँ या यद क्ट. रट. चब्रेब बीश बीच तता हुट. ततु हुंच रेश चट्टेब तर ट्रंस् बहुंच हैं वेश हैं खेश तर र म्बानकर्त्रम् न्यापदेव पाद्रा वदेर पह्रव में व्रित्मावयायक पश्चित देशायते मूर्शः से २८. तुत्रः श्रमूषः तूर्रह्शः शे.वर्ते ८. धुरः। वर्तेशः वेतुः जूर्शः से वर्षे २. थेशः वर्वेट.चन्ना ट्रे.चध्येय.विचानावात्वतर्वेट.वायनाध्यावात्वत्वेट.वे.क्षे न्यूट्र.वेना.वना वदे ने देन दस द में वादिर है। । इस पासे दे के दास में दिन दस यदेव य ने का मुन्य विकाय मिन का या गाव मिन विकाय सुद्र का या विकाय र्देन निषयानु हुन स्वा द्वा अपन्य प्रयोग्य अव प्रमा निषय कुव प्रवट विने प्रव है। रूट मिसिट्रार्श्विकार्यट्रियाच्येरे हेर् मुक्तिकार्य देश स्थान्य देश स्थान्य स्थानिकार्ये हेर् उरर्दिन्नु दुष्कुर्ण्यरर्दिन्ग्रथानु हुन्छेर्। अवरर्र्र्म्येरे दिक्ष वायोष्ट्रातात्रात्रवात्र्र्वाती हैंट्रे द्रश्यती बाह्रेट्रायो प्रदेशव बात्यव सात्र्वाती परे. कूट्रवेर.शर्.मे.स्ट्रक्र.हायायर.पश्यश्वाता पैविधेतु.र्व्यश्चर्यर देश.र हे.ह्येशतालुब्रत्यदेक्षेत्र वर्दे.क्षेत्रत्यक्षेत्रब्रतावावक्षत्यक्ष्यःश्चेत्रत्वेत्रत्वतः वर्चेर वेश च हो। वविदे वक्क रेश र दर देश या सबिव विद हैं वा वा का र हिर ही. श.तृरश.तवु.वकु.च.हैंर.तर.वेरी जश.ह्याश.दुश.वी.सैचश.शे.रतु.ह्य.वी.तूर. ग्रथार्ट्रइस्यायास्त्रव्देति। देःस्युवैर्वेद्राम्रयार्ट्रकृत्याक्षेयदेद्रमेक्ष शुंब होर विरायर क्यारी वर्तिया वर्त्य ती बार बा के बा की अपूर के वा पड़ ही वा बा कू बा गु.सी.र.१४भाताअधिक बुट.र.के.यथाय त्रमाती.जभानुर.गु.क्जारी.विषायभातस्थिता. तथा १.वर.वव.ववंश.वे.क्रेंप्र.दे.वचैव.तव.ववंशकाश्ववश.विर.तप्र.क्ष.दे.वचैंप्र. व.लुब.तुर.हुर। । शिक्षाता क्रिट्रट्र चीत. कुष्य स. शर्व. शर्व.

ट्यापत्रवेषा । इस्रास्याप्यम् प्रति द्वेपस्य ग्री प्रवेदाय विया छिटा । वय देवा प्री यविव केर पुषा विवाय यम् पर विवाय सम् ग्रिश्रायायर र्.जूट्श्रासीर विषेत्रायदा इवा वर्तेर विषेता वा ग्रेश हिंद्र ग्रिश वरादेवात्रमान्त्रान्ता देन्द्रमञ्जून्यराद्रायेवारम्बित्रम्यवित्रम्यवित्रम्यवित्रम्यवित्रम्यवित्रम्यवित्रम्यवित्रम् र्ये है। वक्के पर्यद्र मध्या की पर्विद प्यर क्यूर प्यये कुर मेश हेर येद दरा। हो स्रश गुराञ्चर देग मेर मेर मुरायायायहेर र राय सामा मेर प्राया र्ने दुर ने जुब रव विव जन ने इस य रव पुर ये दूर य जब में ब र्वेन ब सु है . वर्वः स्वानी बार्ने ह्या नव्या वा वा वा वा वे प्रति हे न हे न हे न हे स्वाय प्रयान वा विवास र्क्नाका केर मिन वर्ष श्चिम श्चित पर मी हमाया इसया वर्ष दि वाया वर्ष पर दिन याया वनानश्या वर दे मुक्ता वनाश क्रिंग ने हेर हिंच क्रिंश या न ख्रार् शास्त्र मार वर्षुरार्टेश ।वरार्देदेण्यराद्वरार्थेगुबाळरावा यबायमाद्वराष्ट्रियामाञ्चमाखरा र्ह्रेणमा द्राप्रवाश्वाश्वाह्रेणमा अर्थिन विश्वाद्या वर्षा ग्री है वर्षेवाश्वरमा कुषागुषागुराद्वावाक्षेत्र्याहे। सहदायमा द्वराया द्वराया व्यत्याम् वश्री, ई. वर्तिवा. चैवाश्वर्टर र्ज्या चेश्वर्वाशेरश ततु हिरा श्रर्टा प्रश्चर योरश ट्रे.ब। ब्रेट.त.चर.त्रा लट्र.तका.वेट.। ब्रेट.क्रूजा ट्र.बंद.क्षत्रक.क्ष.वंका.वे.च. क्राबाह्य दिवादत्वहाह् सुन्तरायवात्रीर क्षेत्रप्रायर दिने मुकाया वास्तुन दुना विकाया वास्तुन दुना विकाया विकास वयाचीशामियाताक्षाची घडे त्व्रीतु चर हु बु श्रक्षव शु में पूर्य कीशामियातवशा संश नु'न्गर'र्येपकुरब'य'क्ष'नुदेश्रयाय'ठव'नु'बदे दिंबावि'व्यवावाबुरबा ने'यर' रिश्वेतात्र भ्रीतिवीर की तर द्वे र्ह्ट्रि हिंद रिश्वेष्ट्वी तर हैं वे की

वाज्ञवाकात्रकाक्षुं प्रदेश्वर प्रदेश्वर न्यार स्याय स्वाय हिवा वाका वाज्यका सेन्-नुःश्चिष्यायम् न्रें सेप्युम्दिमा नेव्याप्वयाप्वयाप्वयः श्चिष्यम् नेप्यन् हैं। । दब वर्षेवे पर दें हैं। कें खुन श शु वहार दुं वर्षे पर दि । अवे पर दें हि गा क्षेत्रचर हे क्षेट दु वर्षे चर संदे दह्य मिने वया मस्ट मार्से । के कर निमा चर्ने रेर्दा देवेन्दर्भुम्बर्थाक्षेत्रवाक्षुप्याचेव्वदा अक्षेत्रवर्भात्रव्य वक्क.का लट.जेश.प्र.चीच.क्रं.चरेंब.त्रच.चरेंब.क्र्ब.ज.भ्रें.च.ट्रब.त्रप्र.ज्य जा चरेंब. स्वारेवे वर्त्तु के व्यापर पेर्प्यापर पर्वापर पर्वापर विषा वेव विरा वर वर्दा क्रेयामहेषाम् वर्षात्र्या द्वारावराष्ट्रीत्यहेरायहेरायहेरा क्रेयामा वास्त्र रे क्रियाशायुव राष्ट्र क्रिया क्रिया वक्राया वक्राया विषय श्रम सम्बद्धिर वर्षानु माने प्रकेश्वेत्। हिन्सास्यामा हुन न मायावर्षायरे पर है हु हिन्दु न यद्। हिन्द्रम्यदेग्वरंद्रम्युवान्न्यहेन्यवार् र्येर्क्षियायरास्ट्रिंवाया ग्रीटा गीय जरा परिवासी दु. झे. य. खुना मु. जिया मी शत्या पा से प्राय दिया परिवास ह्नी विर्द्धत्रेश्यर्वा कि.श्रुवा की श्रुवा की श्रुवा की श्रुवा की विष्या की विषया की विष्या की विष्या की विषया की विष्या की विष्या की विषया की व बे तन्वानावार्षाः हैन्यां गुराकन् प्रयापह्णा वर्दन् गुः क्वें क्रे हे स्वानि । वयान्युत्यान्त्रा यदायर्द्देत्रेन्यायायव्यान्त्रा द्वेत्रेयान्त्रेयायां सहूर् जम्म विषया विषया हिंदा माजा विषय मित्र मित्र मित्र हिंद रे हैं जमा इट्यदेश्वर्त्वर्त्त्रीयाय्द्र। वेश्वर्ष्वाश्वर्षा वर्त्वर्त्त्र्यान्वेशयां वे इ.क्री.जु.रट.तुत्र.र्भाष्ट्रच.रची.रची.रची.रची.रची.रची.रची.रची.वि.य.रची.

चारुचात्तवः हे हि चार्षेत्रालचा किचारा ग्री त्राकृचा विचा के किच त्राक्षेत्राचा विदः क्वावस्थारु देवा विदेशिया । भेरा है हे द्वा वीक्ष व्या विकायका पक्ष या लेब है। दे द्वर अर्दे शे दर हैं हे शेशवर दाय श्रुव विवय पहिता प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त यव केरा दे लट पश्चित रेशायव विद्या श्चित्र स्त्री द र्योव स्त्री व र्या सद्य मित वश्यमुन्यराष्ठ्रायाध्यक्षेत्रा अर्द्राष्ट्रवायवा द्रियावयायराद्वे रतानुवाया वर्षा किट.ठ.लट.बु.चरेच.तर.ची किंचरा.ग्री.सें.लु.ब्रैंट.ट.लुर्था किं.लु.चर्चेचरा. वार्श्ववाबायर है। विश्वासिव देवेट बागी र्वं विश्ववायमा विश्ववार्गीवा र्जूर्यस्थातरती विवाधातवातिर्ध्यत्रेर्टी अप्तर्रित्यीवार्जूर क्षेत्र तर प्रथम । रे.लर तर्थे तर्वा किरी । विर्मुवी राष्ट्र मृत्व श्रिया पर दी। । वर्षे इंट.रे.र्ह्याशकुष.त्रा ।लु.यु.यश्यालट.पर्झ्य.तर.वी ।ह्याय.रेट.तर्झ्य. १८। अ.चव.रग्रीवात्विर.वाल्यासायसा अ.चव.रग्रीवात्विर.ग्रीसःह्यासाया विट क्वा के अव शुर इस पर पहना कि दिए के विषय कर जिटा दि है दि है । क्याप्ययाविता विक्वायराम्यावित्रिक्तित्वी विष्यतास्वायावदेवित्वर् ची । श्रु. स्मार्ट. में से सामाया मुख्दे। ज्याना सर्या तुर में रा दे प्यार स्वा म्यूया द्रियामायान्यान्यस्यायवेद्रायविवादिन्यसाग्रम्भायस्वावस्यान्यस्या चिर्ः इतायायमा क्रीर ख्या हीर हिंदायाया देर नामया पर देर नामयाय है। र तामया विमा तायशा के.ला.चेंचेबश.ज.रश्चेबश.तर.चे विश्व.तप्र.चर.वेशेरशा श्व.त.जश. चिरक्तायाक्षेत्रपाया वसासविद्यचिरवाग्रीत्ववायव्यापरा वेषायावया लश्जीवरी वेशायवापरामश्रम्या स्वासार्वामाववास्यसावीची स्वाविता हु मुंबै द्वित्यायमावस्य ने सम्राम्य मानुम्य पर्वे इत्वे देव देव देव दि ।दे प्यत्ये मेया

द्रश्रातार्श्ववाताता अत्यातात्विराक्षेतात्वर्त्रे देशेरायस्वात्रात्वे त्राह्मे र्ने मुंशक्वार्यन्ते। क्रून्पकुन्णुं क्रियावस्य कर्णुं क्राया कुन्य से साम यर बैंट य दे टर्ड क्षेत्रात्तर ट केवा वहूचा तालु व तत् क्षेत्र विष के ति व त्रेत् स्रेम्प्रास्ट्रिं निष्ठे र सेन् नुपान स्थापने क्रिन् पर्ने विष्ठ न स्थापन सेन् नि हे देर पायका है र्रायक्ष रात्र वहिषाय र्रा । बिर्यय राज्य अर विकास है। इ. क्षेर् तह्वा देव के का प्रधान निष्या । इस्त्रा के कि का विष्या निष्या तत्रिम् ने स्वत्रस्य मिर्ट्रिया विष्य में विष्य स्वाय में मार्थे स्वार्थे इवार्ट्र्र्र्र्न्याव्या श्राच्या विष्यं देवा स्वार्थ्या स्वार्थ्य स्वार्य स्वार्थ्य स्वार्थ्य स्वार्थ्य स्वार्थ्य स्वार्थ्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वर्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वर्य स्वार्य स्वार्य स्वर्य स् वर्षान्त्राच्ये विष्वेष्यान्त्र विष्यं विषयं ट्रे.क्रें र.च.रश्चेयत्वयत्वी हिंगासी हिंग प्राचित्रयापर है। विवाद हेराया ल्याल्याम्बर्थात्तरः। ज्ञित्वर्रित्यास्यस्यापरावस्या विसामस्ट्रायदेःहिरा देख्याची दे व्यवाद्द वर्षेया द्विवाया च दुवया देवाया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया नुस्रान्याश्चराद्वा देवाद्वमा देव्याद्वमा देव्यात्माश्चर्यात्मा व्याद्वाद्वात्मा देव्यात्मा व्याद्वात्मा व्याद्यात्मा व्याद्वात्मा व्याद्वात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मा व्याद्यात्मात्यात्मात्मात्मा व्याद्यात्मात् यक्षेत्रावाक्ष्रास्त्रः देवीश्वासक्ष्यत्याक्ष्रियायाद्वीस्वासक्ष्यावस्त्र व्यक्षास्त्र स्त्रावाक्ष्यात्र दे क्षेर् यथा दे वया भेषा प्राच्या यथा सुराया । गुरु क्षेप्या देश देश वेया चिश्रायदेख्या देरामा इत्राचित्राया है स्वाचित्राया है स्वाचित्राया विद्या स्वाचित्रा स्योद्रायान्त्रम् स्वाध्यक्ष्यां क्षार्ट्रहे दे याट क्या ग्राट मानवा द्वाया है। सर्हे से वस र्हे हे र के वारे वस वह र विस वस स्थाय है र हे के के र र वर्ष पर्यादश्रश्रुश्चरयायश्चरत्त्रेर्द्रद्रिय्यम्बर्यर भ्रेत्यते स्त्रित्यते स्त्रित्यते स्त्रित्यते स्त्रित्यते स् क्वायाधिकाते। अर्दराग्वर्षा परार्थित्यम्बर्धायावस्यावस्यात्र्या

ग्रम्याये के रा दे प्रमान पर मेरिया म द्रश्राला नेबाग्री श्रीम निमानवि वृत्ति श्री है हि तकर दिश्व दे रहत द्रिश्व रिट किया दिर न्याया ब्रद्धाः भुन्या अव विषय निष्या निष्या निष्या निष्या विषय । पवित्रायवे द्वापर्वे त्रावे श्वा विष्या विष्या दिश्वे वित्राय वित्र दि । विषय वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि मैंच.त.त्र.४८.धेर.भी.श.द्रदश.तयु.घर.ट्र.म्रैंट.घर.वेरी जश.ह्यश.५श.मी.सेचश. स्प्तायाद्याची मु लुकापादेकाद्र इत्याया सत्त्र विदादे पादेका सुर्द्र द्वापाये र्गे अ श्रेन मेर् मिर्पर ४ वर् प्रवार विषय प्रवार केर वर् मेर्ड मेर् श्रीश्री र.टे.वर्चीय.ततु.घयश.श्रोधश.विटे.तर.कथ.टे.वीर.त.लुथ.ततु.हीरा देवाश. र्ट्यू विवासी क्रिंट्र प्रति र्ट्ट विश्व हिंदे विश्व हिंद्र विश्व हिंद्र विश्व हिंद्र विश्व हिंद्र हिं वश्रतीयशक्ति.ये.र्दर पदु हैर य नाश्रिश्य रूर्टर क्रूश्रश्चे ! इ.स.तर नाश्रश्चेर. यदे थी ने ना शुअ दर्भ मही दे ने व यदे हिर दे यो दि यदे थी ने न शुअ हे सुअ क्षत महिसानी इसामेसामसुसार्यादेव क्रिन् छेन छेन छी कुरामसुसान्ता रूट नुसाकी पर्वे न यदे क्रुट दट के बा अनुका दे मा अब उद मिर्ड मा पु पदे बा या के मिर्ड मा मिर्ड में स्यदेश्वर सेस्र संस्कृति देश्वर स्याप्त स्यापत स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्यापत स् व्याम् क्षाम् वार्यान्त्र व्यान्त्र म्यान्त्र विष्यान्त्र विष्यान्त्र देशान्त्र विष्यान्त्र विषयान्त्र विषयान्य विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्त्र विषयान्य विषयान्त्र विषयान्य व शेर्र्यान्यारे रेर्न्य पर्दे वर्षेर्य वर्ष्य वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर् लानामाश्रम्भ्रियापान्ता दे स्रम्याचमार्श्वी पद्य छे दापान्ता दे वसाई हे भ्रम यन्ता दे वशन्तर्येवे सर्वेद में स्थिय या दे देश या प्रदेश पर देवे प्रवादता

व्यन्ता धर्र्रा धर्र्या मुक्या मुक्या दि स्टिस अहु र वि दि र प्राप्त मि कि दि र से दि स पुं मुरायाधिक यदे हिरा हणका महिकाया मुया है। ब्राह्म यदा महिका निया देन गुःद्र-वाशवात्वशायुन्धःह्वान्,वादशायवः इत्यावश्वराद्रः हेश्यस्तुन। वि गे सुमाळव गहिमार्स है प्ये में बारी गहिमारी हैं प्री केंद्र हैं ने में सुमारी प्री में कि यदे कुर दरके अस्ति । स्वादि द्रीय विक्र ने द्रा अद्याप मिन् ग्रेक्, ग्रेम्ब, मुख्यदे कुर सेस्य दे में रहेर सेर मुन्य स्पर्ट के सम्बन्ध है। पवः हिट र् ज्ञापायश पुरायवे भी ना श्रुवाया सेना सम्माय वे देवाया पित रू श्चि त्येश्वाचार्यकेश्वाची वार्यर्टरा शहरायर्टा श्चित्रवार्टा श्चित्रवार्टरा क्रायाम्बन्द्रविटाने वर्धास्य द्वार प्रविचायवे निवास क्रिन विनाय रहत निवास स्थाप यः भेत्र पदे खेर दिन्य न स्वयः न सुरायः न न स्वयः म सुरायः न स्वयः भे स्वयः म स्वयः स्वय त्री शरशक्रिश्मी शत्रत्रेत्वश्चराष्ट्रश्चरायश्चर हिर्देर पायववत्वियासायहितासा हरः ब्रक्टर्म्चनम्बुम्भासेर्ग्युटा इत्रुक्षिण्युर्गेर्द्रम्बाबयादेवाक्रूरम्ब्रूरम्व निर्मायवेद्रायवे कुर्र् रायक्षाय प्रतिक्षाय विष्याय देशाय वर्षाय । यदे इश्रयम् म्नरम् दे। वन्नश्रुश्यु देन्यावयक्तान्तर्दे देन् देने र सेन्यन क्रम.मधेरा भित्र हैट.रे.ल.चे.चर्निमार्म्याम.स्रमात.धे.केवा.तपु.से.चर्नेट.सेचन शहर्तात्राच्यायान्याच्यात्राच्यायान्या हे.हे.डे.व.तथाववंशावेशाकु.ल.चेशाने वार्नेचातश्र के अन्तर्भवत्तर वायश्र तर्रा हिंहे देखेर वात्त्र वा वायश्य के अवस्त्र त्र हु ह न बिश्र देवे र श हिर त शक्र ब हिर । दे क्य श र है व श र व श र वे त त श न्नेर्जी.क्वार् ने संस्थान मुर्माय साम्या वार मार्ग्नेर हिन सामावे मुर्मे स्थान है। वयश्रामश्चित्रप्र कर्रिया मार्थे प्रति हिर्म व्यापा मार्थिय हिर्म विकास मार्थिय है।

वर देव बर बेब स्वामा । मन्ता खेर मव विषय के नकर दे। भिनमिम नावयासे दें निर्वेशसार्गयाया । वर्गायवे समस्यामसासर्केना वर्षे स्था शक्रा के विशिष्णता भें ता में या भें प्रात्ति प्रात्ति प्रात्ति में प्राति में प्रात्ति में प्रात्ति में प्रात्ति में प्रात्ति में प्रा म्बि.शरवारी श्री.य.वुष.क्वायमराता हिर.वेर.कूब.शबिष.हिर.क्वायमराता जैश्-र्गीवान्ते निर्मातित्वी सी विश्वास्ति विश्वासि विष्वासि विष्यासि विश्वासि विष्यासि विष्यासि विष्यासि विष्यासि विष्यासि विष्यासि वि स्यान्डेन्यानु नायन् पर्वे । १८ में हो बियान्दि हे स्थार्दे र प्राप्त यदेर्भुगशन्तिनानिशवदिरामहन्त्रे हिन्दानिहेन्यायसा देणदानर्देश्वर्या श्रेन्द्रिम् साम्यान्या देश्वादेश्या विश्वाद्यात्रा विश्वाद्यात्राच्या वस्रायक्षेत्रराये । विष्यास्य द्वेराववस्यवसार्यका स्वास्य स्वास्य र्येदे भेर य से दी ह स्वापा से दी वर्षा ग्री वर्ष से दे दे हैं से दे वर्ष से से नःक्षेत्रेदेशेश्वामानाश्वभान्तः वियान्नेत्रायम् अस्वावहुनानी अर्दे व्यक्षानाशुस्यायदे हिरा नेप्यर वर्गवा के दार्श सन्दर्भ विर अधुद के दार्व पर दि ही पायेद वरायद्वाक्षे क्रामवयार्श्यायायम् यानेग्रह्मस्याप्यात्राक्ष्रा यहर्ग्णे ह्वेर नुगयाते। वेशयात्रा ह्यायपुरायशण्या दर्यायायेता गुक् क्रिंर प्यथा । क्रिंर प्यते क्रिंचे रहक रंतु क्रिंट । विक क्रिंदेश प्ररागुक द्वादे क्रिंपणा विष्णे विश्वास्य मित्र विश्वास्य दिन हिन विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य क्यानिश्हा विके जार्चाट कु वर्चे विके थी विज्ञान विका विका

गर्द्रमान्त्रः भ्रेम दे सम्मिन्त्र में मिन्न स्त्राम् सम्मिन्त्र मिन्न मिन मिन्न मिन विर क्विन ग्री अभग र ८ . जर्जूच मा ब मा सूर क्षेत्र अप या कथ मा सुर . मा ता कर राष्ट्र अभग . र्टा श्रूर हैं दे, जब हूंच ततु क्रवाश ईट वी तथश तथ तथ तर है. वे ततु हैट श्रुश्य यदःस्वानु वह्ना हिन्। देन्द्न् सामक्रमनु द्विन ह्वा वहन वहन वहन वहन होन्द्र मुन्त्रम्भाष्यम् । वर्षः वर्षायाः वर्षायः वर् र् क्रें प्राथविष्यान्ता विषयाक्तात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्र ने वश्यक्रेन प्रवश्चिम क्रिये न्गरचित्वेवारेमाया स्रेरस्य इर स्रेरची क्रांचेरची स्वर्ण्या मट्रायमाय्यीकात्रक्षकाय्यीट्राय्वा रट्यूब्राज्ञिकाकाक्षत्रीट्राम्ब्रायाः वाक्षेत्रदानिक्षात्ते स्त्राचन्नाचा वास्यायान्यम् स्त्राच्या यात्रे व.चर.क्रीर.क्षटाश्रवेष.वज्जूट.ता क्ष.त.वचेर.त्रू.क्.टूट.तत्र्। डि.क्श्रक्र.द्रवाश. स्रिंद्र विक्रिया विक्रिया विक्रिया दिवा विक्रिया के विक्रिय के व मुन इस इर इस्र र दिया विस्तर दार में विषय दिया देश में विषय र्षरम् मूर्ती श्वर किरा कर्र्यातर उड्ड बारार्ट की दे अश्वराक्षर श्रेयक्किन्या वेन्द्रमण्येन। देव वसूत्। नेव स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य यर हैं र य खेर है। इस मानम र स प्याप्त दे व से र से न स स्वाप निर्वेद्रशास्त्राक्तेत्र। श्राटकानी निर्वास सिवसाने दिना द्रवास सिवस हिन्द हिन्द वि सेवस ने इसस्र रेग्रा स्वे कुर्यावे र छे द्राया सामित्र की। स्वाप्ता प्रस्ति नार द्रार गुःरथेवार्रथास्यार्पर्यापनिवार्। रे.ब्रिन् ग्रेन् ग्री-व्यवार्मीवामी-झाइयबार्याया र्वेदे देग्र मा अड वा मा के दे दे विता मा कर वा दे हिंगा मा वा के दे के वा वा के विकास के वा के विकास के वितास के विकास के विकास

याम्ययान्गरन्यरची प्रवेषार्ययान्त्रयायान्यायाः शायन्य प्रवित्रन्ययान्त्रया मुः इस्यमः स्प्रुवः इसः यः उत्राचित्रः वसः स्वावद्वः वरः वेद्यः यवः केदः व्यवः के यर विषय रेस दूर येसे रेस येसे येसे येसे प्रति । प्रति विषय प्रति दे। दूर येवे अर्गेष ये श्रु व से देर के अधा सु पश्चर प्रवे के। दर येवे अर्गेष ये के पश्चित या वाबीवाबात्र ट्राक्ट्साश्रद्येत्र हिरावालय तत्र हिरा श्राटवा ही संश्राह्य हरे हिराहे ब अद् कि व जाव हि नहा द गु न जर व व देव। क्र में व दे व क हि न व क ह्या विचान्त्र्वास्त्रास्त्रेष्ट्रेष्ट्राप्यक्षाः क्रियक्ष्रेष्ट्राप्यक्षाः क्ष्रा ह्निमा य झु से ब खेर सेन म खेर दरा र न खेर यद न ब म खेर न दरा थेर मेशाणुवावावह्वायवे द्वाया इस्र ह्वा शही वद्वा ख्वा श्रीयावा क्षेत्र र् मुरक्षा देशया पविव द्या ररपया नव येवे स्वारम्भवस्यस्य द्युरहे महिषायार्श्वेदानेदाद्वाराह्य श्वेदार्श्वेदायाया रदाविदानी माद्वाराह्य स् विश्वार्थनाश्चार्या देलटाइट्येदेश्वेद्या श्चिता श्चिर खुवा सर्हे खेवा सर्हे खेवा सर् वाशवाध्या शर्र र विश्व श्रेश प्रमित्र प्राहेश श्रुष्ति वाश्य प्रमुख्या स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित निश्रम्भयाया रवानुः क्विनामयाद्रा वर्षेयायारेका द्वेराद्रा द्याळेनाई. इ. १ श्रमा ग्रीमा ४८ में किट मान मान ग्रीम में मान मान मान में सर्धेणरादे द्वराववेद गुरा देवे शेष्वद्वर दे। वरादे विवानी द्वस सुवहना मीमिसियान्यर्द्भाषयायद्यातात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्र

मे रिट.जश.वर्वेट.चतु.वि.विया.ज.वर्या.तवर.श.लुब.चतु.ह्वेरा ट्रेश.ब.चुज. न्रिन्देहें धिन्देन दुन्दन्ति प्रश्नाय प्रमाद्या दर रेवे अर्मन्ये रेव स्मान्य स्मान्य प्रमाद्य स्मान्य समान्य स सी.मैं र.चतु.द्रभातावर्तामी,यामैवा.मैं र.विप्र.चतु.मवा.वर्त्त्र्या.वेश.वे.में। वार्ष जानर रे. इस् ग्रीट तपु शरवा भेशियायशा देवा दिव तर भे ता पुर पार्ट कुरा शरीय. ब्रिटा मैंचाराज्ञार्यार्थ्य भी अर्थ्य शायत में चार्मे द्वाराज्य में मुःस्वयःशुःन्वायःन्वावीःश्चृःयुग्यःयाविषाःग्रीयःययःनुग्यःग्रीःसःन्वयःग्रीःश्चयःसुः वहेंब्यने निरम्बस्य समुक् बिर ने स्युवि निय स्त्रीक मेन मिन प्य रहक नु विश्व लचेशाची,श्रद्धाक्रिशामी.शयु.जूटशाक्रीट.ह्यंशातपु.श्रे.जुट्टातपु.विश्वशाता.श्र्यंश. तर्सिर्याकामी मित्र देवात्र राष्ट्र मात्र राष्ट्र मात्र मित्र मात्र मित्र मात्र मित्र मात्र मित्र मात्र मित्र मेर्गीक्तारी मेर्या विश्वास वर्ष्ट्रियशानशारी कि.पी.सी.य.सी.य.पीया.तात्राच्याशामात्रातिर. यर रुव र् व्यूर प्राचिव यव से रा ह्या वर्ष में मुवा है। र प्राचिव में प्राच वयादे विवेच विवेचारा ताता तीया श्रमा अव वर्षेत्र तीय वर्षेत्र स्था वर्षेत्र स्था वर्षेत्र स्था वर्षेत्र स्था व त्रवे तत्राचिष्ठेश र्र्षेत्रयात्र तर्वेच त्राचे र क्या यवेषा वेट क्वेच ग्री श्रेयश तथा चींच.ततु.शु.चर्श्चेट.तब.वेश.भवित्रविश्वश्वश्वश्वश्वर.विच.त.वे.वेष्व.ता.वेट.शुश्रश. न्यारान्यारानु प्रयासायायात्रीयाणीः अर्मेट्स्यार्ने वायात्रीयाणीः वटायाटाचार्ट्स्क्रियाः यविष् रेश.संस्थात्रव्यवस्थात्वर.ज.विष्विष्यवश्चित्रत्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या य'दर'भेद'यदे य'सेय'य'वे सेसस'ठव दु पर्देग्रसप्ये ग्री स'स'ग्रेस'ग्री सुर' स्वाबायद्रेत्वस्कुवायद्रत्क्रियास्यव्या श्रायक्कित्रयास्यस्य विदायस्य मैं बर र् मुडेम रु पर्डे अप्य बे सु सिमा अरवार् पर्डे अप्य र र किया असुवा दे वा इट येवे अर्वे व ये बुवा क य वे पर दें के व क क्रे व व क खु ब्वा क य द ट के क अ हु व

जैशक्षेत्रचीवयाणशावटार् क्षेत्रातातातात्रार्टात्वर्वातीचीर्थात्राच्येत्रात्राच्येत्रा ब्रे.श्रर्थाकी.श्रंशश्रथ.१४.ति.ति.वीय.त.रटा विश्वश्रायपुरात्त्रा.त्र्रा त्र देव विश्व विश्व विश्व त्र विश्व दिन क्षेत्र का श्रेष्ठ विश्व विश्व क्षेत्र विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य र्वट्राज्ञास्य मार्ट्या येवास्ट्रिक्ष मार्थे स्थान्त्र मुक्तायां के देवा स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स गुपायाद्रा यद्रायमाद्विक्र क्षेत्रायाद्वीदेवायद्रायमाद्राद्वीरायमार्द्रम् क्रुमाशनिषा श्रीनेष उपना व दुत्र से श्रीश्रेष श्रीमाश जेश मिया सेप महिषा यर्दा नमुद्रमुद्राक्ष्यकाद्वीरेदेदारमाञ्चायदेग्नद्वमा मेद्दायाञ्चामद्वायाद्वा विवाश विवास विवास विवास त्रा त्रा विवास त्रा विवास त्रा विवास त्र विवास त्र विवास त्र विवास त्र विवास त्र विवास र्रासेस्यान्यवास्यान्द्रेवयाः द्वीयायात्रे देवारवायायाव्याः स्वयायान्या स यमानुनास्यये पुरासुनाय द्वा देवासाय द्वा मीसा कु साय देवसाय देवसाय दे सदया मी संस्था क्षान् के न्यान्य स्थापान्य के स्थायन स्थापित स्थाप स् नीवाशानावाद्वव । मुश्रमार्गतायुग्राचक्केवाशास्तावात्रमाधुराचरुषायार्गराह्वे नु जुन्य या भु न सु र मुन्य र मुन्य र मुन्य र मा न र मुन्य र या मा मि र मुन्य र या मा मि र मि र या मि वहरारे। वेदुर्द्रायेदेर्ब्याळेवावदुर्द्रायेहेर्ड्र्र्ट्र्य्र्प्य्येन्त्र्यदेन्त्र्ये अ.उग्रेज.योश्रत.योऱ.र्ज्यात.ग्री.ग्रेथ.ग्रीश.विष.विष.ग्रीश.ग्रेथ.ग्रीश.विष.विष.विष.ग्री ७४०. पश्रिम्यायदे दिवा मुन्दे विवेष विवेष या नेवा सामा दे दिन विवा वा सुसाय है युर विवेष या स र्गेर.स् विमानमिरमातानार.विच विज्ञानमिष्राताक्षेत्रराच्यावनमामार्गात्ररज्ञ ब्रैर पर्यक्ष पार्ट हुँर पर इस पानवा रसायर पास्ट्र पर परे खेर । इन्ह्रे पार परिष तार्टात्राश्रीयात्रुवाश्यवेश्राश्चित्रात्रेश्च श्वित्राच्यात्रेत्र्याच्यात्रात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्या

मृत्राक्षितासीर्ट्राक्षणकात्रिकातात्रार्धाकात्र्येट्रायीराष्ट्राक्षाकात्रात्रात्रात्रात्रा तर सुरातालव द्या श्रिमाया गर्टा वक्ष स्वाया स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त शक्तशाक्ष्रिंद्रद्रिःशागीय तथना है। विट तर्वे वह तथिय विवास के क्रुवाश ग्रीश चर्यात्र्रेत्रयात्र्रेर्यात्रेत्रयहेन्द्रेत्रयहेन्द्रयाचार्या । विद्यायाः हेन्यया रदाने तिश्रामी सर्वे में चार्टा विश्वास्त्रीय श्रामी वर्षे देव से प्रामी विश्वासी र्में हे हे देव देव वा विम्य वह रे नियम प्रति के भी विषय पर रे की वा विम्य विम्य निहेश सेन् पर्वे वेशन सुर्शय याय महेत दश दर्ने मा वश्य उन् ग्री युशा निर्ने यान्यान्त्रीयावित्रम् व्यन्यायायिन्यरार्टेयानेयायाने। देनेयायर प्रयाने र्ह्र क्रि. चर्ना वर्ष वर्ष क्रि. ह्रिया में क्रि. ह्रिया में क्रिया हे क्रिया हे क्रिया हे क्रिया हे क्रिया हिर्म क्रिया हिर्म क्रिया हिर्म क्रिया हिर्म क्रिया है क्रिय है क्रिया है क्र च.र्श्यश्.ग्री.जैश.श्र्या.श्र्या जश.र्ध्य.वीश.चभ्रीर.ततु.र्द्या.चर्चता.चर्चेता.श.ल्य. यर वया गर्दे र अवशरें हे पकर मे न्यी वार्षिर द्वा मुयाव कार्षे र पवे छे र न्वरण्या सेम्बर् करणेवा हे हे पकर र निर्देश कर मुन्यम स्वा देव लुक क्षेत्र व निर्दर यात्र कार्दे हे पकट मी द्रीय वित्र द्रम् मुद्रायक मित्र पवित्र ही र र्रा ।दे.क्षर.विषाता.वाक्र्य.त्रा वर्त्त्रा.चव.वीषा.ग्री.दे.क्र्य.क्षर.टर.देग्रीवा.वक्रिर. मिने किन होन के निकार ग्री बरबाकुबाग्री-रग्रियायिर-र्रह्याशुःश्चायर्र्द्र-यबाक्कित्श्चर्राद्रावी युवा र्गीवार्ट्यं नेशायवार्मियावित्राविश्वायाय्युश्वायाय्युश्वायाय्युश्वायाय्युश्वायाय्युश्वायाय्युः यरखुर बद गुर सेद यर वया विकायते द्रीय विकास कि गी दे कि केद दिन इवि ने किंब केन ग्राम्प होत्र क्षेत्र प्रवेश्व र के । त्रम खुष्य वा खुम ने वि ने बेश के प्रवेश के

गुरान्यर'र्'पर्ट्स'पर्या रे'वस'पश्चितस'पदे'र्गुव'विर'ववद'पर्ट्स'स'वेस' नु'या वुष'न्ग्रीय'मी'पश्चरगिवे'युष'ग्री'क'ने'न्द'ने'इसर्वादी रद्धीर्ष'दस' वश्ह्यशायराज्यरावश्यावश्यर द्वायावह्यायशा दे वाश्यवश्चितशायद्वर प्रीवाद्विर व्यवदासायर्श्वसायां बेसामु श्री व्यवाळे देवायु प्रसा दे से स्वान स्वापित वासाद र वै। विग'येशक्त्रं द्वीदे रेस यय इस्ता विर्मे पत्रे द्वार प्रवित् की मा विप यव निर्मे व विष्य मेरे निर्मे विषय मेरे निर्मे व विषय मेरे के निर्मे के नि चुवर्पट्रवर्ष्णवा । व्यवश्यवे पश्चित्रचे दे त्रवे हे। । यटर्प देव स्मूचर केवा हैर्र्स वेशस्त्रप्रया वर्षेत्रयोषु वर्ष्याश्वरहें देग्नेवायेष्यावश वेश र्गीवासक्तारियान्य निर्धात्रात्री विद्यातान्य निर्धात्र र्वायवेर्द्रवास्त्रिक्षेर्व्यायराव्युह्मरायवेष्ट्रिरार्द्र्य । यदाविष्ठवा । वर्ष्ट्रेद्रार्था यश्रास्टाक्षर क्षेत्रायवे के स्टार्ट्शन्वर्शयव श्रीत नियाने साथित के के के नियाने श शे.वर्चें ४.वश्वारशःक्रिश्ची.क्रैं ४.शु.२ें ८.वर्द्धिप्री चेश्वात्रप्रतात्रे द्रवाशात्रहरः मिल्ली प्राथ के बार्म मिल्ली महिल्य के प्राथ के पशरे प्रविव निवास प्राथमा करा की परि परि परि परि परि परि हैं है से सम र्यर क्रियाय के अध्यक्ष क्षेत्र कर क्षेत्र का निवास कर कर क्षेत्र का निवास कर वस्राधिव। लव्यव द्वर रेरासर्थितास्य विवास विरा द्वर वर्षेर यापिवाः वीकानामान्स्रीमकाराकाक्षेत्रकारुक् विम्नाकारुद् त्याद् स्रोद् पुर्वाचन विवासी । स लुबेबी डे.हेर.प्रह्मश्रयात्तव हुशूनालबी विषया केबा मिर्ट्या के का मिर्ट्या के वा र्वेगा नेश प्रेव प्रवेश देन ना मुखा विका प्रिका के के ने निर्देश विवा यस वट वी करे दिर देर केंब्र यव अदि विव देय दे किया प्राप्त कें के राव के वह र

हा क्रेट.ह.ह.ल्ट.व.जमा जेम.ब्र.वाचवा.लम.वट.टे.बेरा किरम.क्र.बीच. कु लट द्या पहें व विश्व प्रविश्व प्रविश्व प्राप्त प्राप्त प्रम् प्राप्त में प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप् ब्रेमा विक्रिया विक्राणी विक्राने विक्राने दिन देन के क्रिक्र के विक्रानी का क्रिक्र के विक्राने विक्रा क्रिक्र ट्ट्रिंट्र क्रिंश मा क्रिंश लिव में केंद्र क्रिंश मा मा हिंद्र क्रिंश मा त्या क्रिंश मा मा मा मा मा मा मा मा मा अधिक के जिस पारी प्रमान है। अर्देर मुख्य प्रथा निया वे स्थान मुन्यों द क्या है। । श ल हिन्द्र स्थापर प्रमुखा वेश नश्रुत्य वेता मुद्दा अ कुन् खेन खेन प्रमुखा वेश नश्रुत्य वेता अ बै.शरु.रेवेश.चर.ब्रै.वरिव.शवर.क्ष.चरा क्रिय.पंश.तथ.तथ.थर.पंट.तरु.चरा है'च'नेन्'चम्यान्यर'क्यापदेख्या दिन्याह्रम्मान्याह्रम् ष्रात्रात्यात्यात्यान्त्रीयानक्ष्राय्यात्र्रीयायात्रात्यात्रीया स्याप्त्रेत् । वि र्गीवामी इंट.च.चर्षश्वश्वश्वश्वश्वश्चियामी विवायश्वश्वर स्थिता पट. हा यदे यत् व तु क्षियाय द । वे व द तु वे यह व परि ख्या वी व क्षियाय विवाध परि . गुर वेन्यायायायाय्व दे । । रर व्याय हर मु न्याय वयाय प्राय मे दूर परे दे दे सामह्यायते प्राप्त स्थाप्त स्थापायिक प्राप्त विषय प्राप्त मि क्षेत्र क्षेत्र स्थाप्त स्थाप ८८.वीश.मी.क.८.८८.८.५.वहर.त.लूटश.सी.चीर.ता.वाश.वीश.मी.८मीवा.वाूचर.चीच. यर र्श्वेषाया विवादि हो द्येर व व्यय पुर्दि क क्रिया में मुन्य व विवादि व द्या प्रति व विवादि व व व मी.लेब.की.शर्थे केंच.रेट.चेलहाचालूथ.वधु.धु.रक्षितायपूर्य.की.बेर.वधु.धु स.ततु. क्र.ही.र्योकाररःरंचवयव्यःवेर.वधुक्तरं जेश्वाम्यःक्षःवधुक्तः राष्ट्राच्यरं वधावहेशः त.जस.जैस.देग्रीज.की.योचज.लस.वट.त्ती.बेर.पंचुर.श्रूस.टेब्र्स.त.के.वे.लुब.तवु. हिरा जैश्रम्थ्याविकालकापटारी हुरा क्वांत्री के किर जुते प्रकेर प्राथित केर क्रवे.के.चधुत्राक्रूरे.हेब.जा जेश.स्यांश.ग्रीश.चर्चं दुर्। जेश.ग्री.क.चंश.चर.

वर्ष-त्राक्ष-श्र-विक्रिय-देता विलश्च-दिर्वित्रक्ति विश्व-त्रक्षा सेट. र्येन् दे या द्वाप्य । इस्मान्वना विदेना स्थित हेता दि द्वाप्नवियाय सावदा रे.पहुरा वेश.तव.घर.हैंच.घघश.वश.वरींट.घ.क्षर.वशव.घर.वशेटश.श्री व्रि. ब.जैंबाचिवाताबावटारी.सूत्राक्वार्ड्स्ब.त्य.सूत्रास्वाराश्चेतवारीट्यटामुबार्टटाल्ये.प्रवास्वारा न्वयाप्यापरानित्नी कारे रेरावर्झेयायर प्यन्तायी प्यन्ति दिन्ते मुनियो र विश्वाभी में द्वानश्चाश्वान विश्वान विश्वान व्यापर विश्व द्वान विश्वा तास्थरायीटासेट द्वेचारी सावस्थारातालय तत्र हिमा तेरार्यो वासी पड़ेया ते इस्रायान्यान्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात् त.जर्भा अर्ट्र-थ.नेट.मू.र्ज.क्ष्मश्रद्धी । शर्थ.क्ष्म.र्ज्य.प्रच.पे.पर्श्चेचार्था खेश. र्टा श्रु श्रु श्रु तिया है। वेश श्रुवश न्यु स्था वेद प्रमा वेद प्रमा वेद प्रमा वेद प्रमा वेद प्रमा वेद प्रमा क्ष्या वाज्यवास्त्र द्वार्यकार्ज्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या निमेटकात्त्रान्त्रीया जेकाग्री निषकानाटारी हुकाताची हुडि हिरानाजमा हुडि श्चित्र द्वित तीक्ष तद्र ता किवायद सिंद्र प्रयायविष योषका विष स्वाक शिक्ष यह स्व किरा अर्देर मुकायका गुरा दे क्रायुर में व्याक्षेत्रकायी वेका मार्केर शर्षाकितात्रात्रश्रातात्री भिराताविश्वातात्व्रीत्रात्राची वृद्यात्रात्राच्याचीता पर्वेश ट्रे.लट.प्रट.मु.ही.मू.ज.शूर्यश्रात्याचेश्वाश्रात्येश्वाश्रात्येश्वा र्चन र्श्व निर्ध त्र वृद्ध माना अने मानी सिर्द्ध ता स्वी माना ती मानी कर पे मानू प्रिय र र ट्र.च्.रेडेर.शर.रे.वेश रे.बंश.के.श्रू.बंधेश.से.वश्चेर.बंश.र.केंत.रंट.वंशत.हेर. वर्श्वरायर ग्रुप्ताधेत्र वा दे सर वर्श्वराय वाद्वेषाय विद्यापराय श्रुप्ताय विद्यापराय श्रुप्ताय विद्यापराय श्रुपताय विद्यापराय श्रुपताय विद्यापराय श्रुपताय विद्यापराय विद्यापराय विद्यापराय श्रुपताय विद्यापराय विद्यापर विद्यापर विद्यापराय विद्यापर विद्यापर विद्यापर विद्यापर व

न्द्र-नुष्याये से व्याकुद्र-द्र-नुद्र-सेस्या स्थया हित्यार प्याचित्राया यथा नुद्र-प्रते ह्यामान्त्रमान्त्रीहर्मामानान्त्रम्यम्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान र्था.मी.के.मू.मध्याक्षेत्राक्षेत्राचित्रत्येयात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या त्तु हुर विर्तर लेवा क हु है श कि रटा लथ वर्ग वित्र त सुश्रभ त वा वर्ग स सेंचर्यामी देवारा तार तूर है। श्रवार्श्यायामी शरू के निया के त्यीय कुट तीवा केंद्र वरे केंब कु इस रेवार् ववर वर्षा ववीवा कु वर वार्टर से वसूर वरे र्वो वा गर्थश्राक्षाण्यस्यार्च्यान् । विरान्तेन विषया विषया विषया । विषया । विषया विषया । विषया श्रेयश्र-द्रयदःश्रयायद्वेवाशःश्लेयास्वर्यायाद्वेशःवश्रा दरःग्रःश्लेषःयाया रदःवीःश्चिः प्रक्रानश्चित्रविष्ठा विवादित्र विवासिनश्च देणर वे निवासिन नुवायक्याहे सामासुवायवसाम्याचीत्याहर नुवायको स्वायम्यान्याहिक नुवाय पश्चामार्भारे त्या । १ क्षेत्राच्छाम्छ्याच्याच्या देहेव त्रीवाव्या राज्या नावश्याया । हैं खेश मियार प्राप्त हैं प्रश्चिम । बेश सेनाश मिश सुव परेव रहेव रहेव पर हैव तर.शर्.मृ.ल.त.स.संरक्षत्या.त.त. क्रिय. ट्रा जुवे.पर्वे.क्ष्यता.वाथ.पर्वेरथात्व. क्रम्यायकर् महिषामहिषामुक्षाम्यायायम्य। वेतुप्तर्वायायकाम्बर्धायते कूर्वायानकर पुरस्य प्रधियान प्रधिया जाती निर्मात प्रधित या प्रधिया मिन्न प्रधिया विष् ट.केवानाबेट.घर.वलवाश्वातालात.संश्रामीकावाबीटशारायुक्तिर। ट्रेंडर.ब.सूचिशेश. नुव नुष्य म्हमायायायवि यस। दर्य सुन्दिव पह्मायायायायाय पदि महायाया सुव

वर्षेत्रपादी रद्या ही स्ट्रा ही स्ट्रा ही स्ट्रा ही स्ट्रा ही स्ट्रा स्ट्रा ही स्ट्रा ब्राय्या विष्यान्य विष्या देशायवे प्रयाम्बर्धि स्वर्ते स्वर् चवि द्रियायि विराय दिया विषाय वषा चर्षा ग्रा देश अर् व नावषा वा वेश.ततु.चर.वाशेटश.ततु.हुरा के.शु.श्रृश.वश.श्रेव.तट्वे.त.केंट्.वश.श. वन् गुरा सर्वेद्रिया सुवा की स्वापित स्वाप्य स वायदेवसामादी दत्तवास्त्रास्याक्त्रास्याक्त्रात्त्वराचा वेसास्यासाक्रवासाचन्दरः विश्वाते। क्रेनाबायर् प्रत्येवाय्ये स्थाय्य स्थाय्य विश्वायव्य विश्वाय विश्वायव्य विश्वाय विश्वायव्य विश्वायव्य विश्वायव्य विश्वाय विष्य विश्वाय विष्य विष्य विष्य विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय व वान्सिवाचावदेवसायाधेवाचा देवावी नारानिसाचदे केवा हिराववे श्रुवासाम् क्र-दिब्तत्वर्तवादिव। शर्शक्रिश्वश्वश्वर्त्त्रिः में सर्वातिवाद्धेरे दिव् पश्च भुवकराम वेशक्ष भूर वर्षिशक्ष वर्ष हे मुश्व दिर के भी दिर के हिर वकर निर्मेशन दव शिवायार दर वार्टर है। निस्तिन निर्मेशन के किया कर मिना करा क्यादि स्र ता पर्यापी युषा सुदि हे द्वा स्र पी दि पर सह द द पार्थिया यद त्त्रीयाश्चरत्र्राचनुष्यायदेश्वर्षाः कुषाः इयशः वाचिषाः वशः स्वायाः वर्षः स्ट्राचनिष्ठे ट्रे.क्षर्याय्यायाययययविश्वेषात्र्यायर क्षेत्राक्ष्ताय्ये हिंहे श्रेश्वराट्य विश्वेष वदश्रसीचश्रात्रद्रश्रादाक्षरः वेश्वात्रस्यायाचनम्यासा वेशायवश्रा भीवार्यात्र स्वा हियायार स्वा देशामधिरशायाक्षर है। शर्र र विशायशा श्वेत र्टा से ब दुवा से ब ता हो। विश्वायर केंट्र शहर विश्वश्व शहर विश्व ब्रे हैं ब नक्ष्यक्षेत्र विश्वानाश्चर्या स्ट्रे रा श्रुव द्वर स्वाहित पर प्रश्रास्त्र र्षर्दे । श्रुवे श्रुवाय द्वे पाचे राववुय दुया देवा उर दु द्वे व व या राव्य राय श्रीया तालुब्रायुक्तिमा देखात्मक्ष्यम् स्थान्त्वे। येत्राच्युक्षम् वास्यायुक्षम्

क्रमःगुन की सुन्तर धेन देश सेन्य में केंगा नहेग हैं वहें वहें देन दे। सरम क्रम में कियात्र में वात्र भी वाट लाय ता से र में वितात त्राप्त प्ता वी तीया प्रीट सर स के स गु.भेषु.मृ.मृ.क्रा.केट.रे.रेच.उट.चर.मूच व्रिश.त.ही त्यूश.वर्चीर.जश तेट. म्.कं.लुबारचारे.केबा बुबाउर्वेटाचाक्षेत्राजुबाबाक्ष्या । ट.केवाउड्बातपु.कंबाबा र्नेत्रायाक्ष्यम् वित्रा सक्षे वस्य रहा हार्च निह ने प्रवित्रामिन सामा गा तार्थः भीवत्रातीया वह्र्युः हुः शेर्डे स्त्रुं प्रटाचपुर्वा लक्षः गान्तु वर्वा स्त्रिः गान्त्रे । अन्दें दे दिविषायाक्षे दे पविष्यामेगाषाया सम्मारु गुः सुदे हे दे रूट पविष् मुःमन्नाक्षेत्रने द्वा वेषायवा । नाक्ष्यायात्ना मुद्रायक्ष्यायायने वर्षायाः लिता श्रिक तर्रेष मान्नी पर मी द्वित निया मी विषा मान्या भी भी विषा पर ही ने मान्या तर में रे क्रायदायर में शतक्षा वार्यवायदेवस में द्वा व्यापार स् स्वाक्तरास्वापसावाद्या क्रमावी देन्द्राद्यायायेत्री देवितासारमाक्रमा वयग्रद्र-शिवासिट्ध्रुप्तिक्षर्राचासिट्यात्रात्रात्रा । इवायाविषयम् र्रे.ह.रट.वार्थट.र्र.ह.वार्ड.वार्यवार्ष्यकार्चर.वाष्ट्रवार्थ्या विष.वीकावश्वत.ताय.व्यंता लट.र्र. इ.श्रथ्थ.रे ततु.श्रेच.वचथ.वध्य.ह. व.श्रथ.श्रेच.वचथ.जग्र.चचरे.त.क्षेत्र. छ दर्वेष है। यर्रे इस यथा वेष दगर के र इस है गाता । र द ने न हैं नूर.लट.रेवा.र्ड्या ड्रि.ज.र्वेचारा.तर.रच.चराश्वाश्वश्वा विशेट.वी.द्वेच.क्रीया. वक्ष्यायास्त्रमा वेश्वानश्रद्धार्याययास्त्रीता मास्त्रानी द्वारा सुना ग्राह्म निक्षा मास्त्रामा विश्वान मास्त्र दे। नस्टान्डिन देन पुन्या मुद्या गुद्र सेस्य उद्या हराय उद्या भेरा राज्य में न्द्रसम्बद्धाः वर्द्देष्यानुद्रस्य क्षेत्रास्य द्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य

ने वश्चिव क्रिया प्रकृत्या प्रमुव प्रमा क्ष्या क्ष्या क्ष्या प्रमुव विष्य र्सेन्स.स.च्यानायडेनाःहे। देवावी हेहिळ्यादेर रचना सेर ग्री नश्र नार प्यव तार् थे हमात्र क्रम हो शास्त्र राज्य शास्त्र वा तार देना पार के मारा के मिरा पर ता का नुरागुरायसायुक्त सुम्राक्टिन्सायाध्यकाया नन्नामीक्टिनागुरादेन नमनाभेन ग्रीमसुरा ने प्रत्यत्र वित् । यद्या के बाय देव पार्वेद प्रया के दे प्रत्य प त्त् । रे.बश्कू.बन. १.सं.च.१.मू.च.१.मू.वीश.ट.केवाच बेट.च.लुब.वा इंचशर्ट्ब. तासियात्रियात्रियात्रयात्राम्ब्राचात्र्रेत्रत्रात्तेत्रत्रात्त्रीयात्राची प्रमानिक्ष्यात्राची जसार्वेर.चत्री प्रसातक्षा प्रस्तेर.येषसात्र क्रीपा क्रुसात्र, प्रमात्र प्रमात्र प्रसात्र प्रमात्र प्रमात्र प्र त्र अर्र र विश्व तश्च विश्व ता विश्व प्रति प्रति है । श्रु श विश्व किर देव पश्च द्रम्या स्व अक्ष्रम्य रें हिंबायश्च शेंद्रम्य । श्चिम् व्यापदे शुर्म प्राप्त वन्यायवे र प्यावेष मी सुग्यार मी पन्या हिन नु वहें व प्याव है हिवे सुग्या वकर वर्ते । इना अने मुन्य में हे लेश या वहे या अने नियश हर विव नि । विव निय पश्च क्षियां हे र अथवा ग्री श्रियाचयवायां विषे हे मि अथा विशे द्वारा हे र मि र वि र विषय है। यर्ट्र मुब्र विद्या युग्य में केवाबाया वुग्य मा दि हे मुन्य पर्ट पर द्वा स्वा क्षेट.वर.लट.बु.चर्ड.ववश्रशी विवश्य.ग्री.चुव.बुश.चश्चन.त.द्रशा विश्व.वश्चरश यदे हिरा हिन्या कुर्नर हिनायनमा दुर्गरि दे के हिनायन दे दुर्ग में का का मार्थ ठर्रेणारुर्रुअर्व सुअर्रुअष्ट्रिव प्यापेव पर्ये द्विरा देवसप्त्व पर्युपर्वे। गुर्व मु प्रवाद रेवि खुन्य निर प्रवाद विश्व र्याय में के गामिक में देव दे निषर वयाक्रमभागी द्वराम् महर्षिता देविक हिर्देशमा माम्ममा विकास माम्ममा

तक्षत्र विकार विका ग्व. हे. इ. श्रमान श्रमान रे. दे. प्रचार कुर हे. श्राच र प्रचार स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान ने प्यतः प्रति श्री पर्यो स्वाधावार प्रवाधावार प्रवाधावार प्रति । यह वा वी खेळाल गुर ने प्रता प्रता वा र्विषाद्वाच्चा द्वां क्षां वा श्राम्या श्राम्या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व इर प्रध्ने ही दिन पर्देश र द्या विषय वा विषय वा विषय है विषय विषय है । में स्रोत्रा है स्राया ग्रीयाई है नाबिया ही सं क्र्याया स्था सामद नार न हीय. र्टमा वर्षात्राचर चर्चेचरा चतु चर्ड चर्चर इर्षा वार्ट ची ही चर्षा रहे व की मा वक्रवायवेद्ध्यद्भावायायम्यायस्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य र्टरात्तुः हु तिर्वेश्वातुः के सूर्यश्चिश्वशः श्वेशशःत्र विर्वेशत्तराय्ये दे हु तूर् जूर र्यार रसर अहिर मधुअ कु दश्यर लु या रह मि मदस मधुअ र त्वारा रश रट.म.सू.चर्षश्चर, द्र.च.रट. विष्यूर्याचा शटश क्या वश्चर द्रा हु. विर्यंश रे.५.च.२८.६.६.वाशेश.वेथ.शूट.च.२८.५.वाडुवा.ता चट्र.कूट.२वे४.श्रु.वे२.तव. नन्नाहिन्नु स्थान्यान्क वाद्व र्याया स्थानि स्वारा दिवा सामान्य में प्राप्त निया य शुन दिस हे मानु मायवे देन गुर पर्दे धिन यवे शुरा प्रति य दी रूट हैन दे मन्यानेनयानामानामान्यान्य के मान्यान्य कि नियान्य नियास्य नियास्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य नियाय्य निया इ.तकर.कुर्तातुःरूप्र.चैरा कुरायरूरे कुर.र.कैवायर्थे तर ते.रेश्रासी इ. क्रि.जुरे.चुरेश.तुर्। ब्रिट.ग्रीश.श्रश्रश.वीश.के.वे.टर.। वेश.श्र्यश.ग्रीश.टे.क्र. पर्वेष तर हूर मुश्रम की मैंच विषय प्रायम विषय मेंद्र विषय प्रायम कि ने सर रेगम गम्भुम र है पायेषा कि मेर है न हो मान कर मान कि है र र

द्वायमान्यायर ह्वाय पदेश । विरायर व्याय उदावद्वा हेर छ। । विषय वह व्यापत्राप्याप्याप्यक्रियह्रस्य वृष्ट्रस्य क्रिया विकाम स्ट्राप्ति विकाम स्ट्राप्ति विकास स्ट्राप्ति व वित्र मुलेषायाविदि हे नामुम्राया सम्मारू दिन्द दिन र्र.ट.केवाति, बुबातव, रूप लायात् हिरा ट्राक्षेर्य स्थानियात्वीयात्वियाः यायार्केसाउव। द्वीसायार्थिदादे। रदावी क्वींगसुद्धान्नास्या क्वीं क्वदाने क्वीं स्थाप त्तर्क्षर्णव प्रति भी निवेश पानी रूट दशक्र ने श्रेश र प्रति हैं प्रकट हैंव. इ.क्ट्रेट्रजुद्रेन्द्रेश्वतातावा क्यातद्राश्रक्त्वाक्ष्यावेर्द्रेत्वा श्लिमिने बियाना ग्री हैं है रहे। । क्षिट या र प्या नेया देश क्या पटा। वेया स्वाया ग्रीया पक्ष र त्र.भर्.स. १८.१ र.स. १४.१ में प्राचित्र विष्य विषय विषय विषय विषय विषय ग्रन्। दे स्रम्पन्गारीन में बाद्या विकाय करा । ज्ञाय वे प्राप्ति प्राप्ति विकाय विका यदी । अळव अ रुवा दरायर दवा ख्वा । दशळेवा श्रेश्र प्रत्य वर्षे सार प्रा विषान्त्रम्यायवे धुरा अळवा या दुना वे धुना अळव दुना में दि प्यर दया छना मुत्रम्। १० में न्यव वे स्यान ने ने प्राप्त के स्यान के यव विर्मेर हर कर के तार दे किया अधियों हेर हर दे के अभार तत है के पे में में में चत्रस्रम्भार्यात्रक्षासम्बद्धा । स्रम्भारद्द्वास्य स्ट्रिस्सम्भार्याः म्रम्भात्राविषाचर्हेत्रप्रवेश्वास्त्रम्भात्रावाचा

वातर्वातमात्राम् केमानाइसमायर प्रवापमा पर्वे पार्ट वर्षे प्रवे प्रवे प्रवे प्रवे प्रवे प्रवे र्शक्ष्य । मुश्रमान्द्रम् कि. हुर्यायाम् भ्रममान्याम् भ्रम्याद्रात्र । स्टान् स्थाप्र द्रम् त्तु.श्रश्नश्न.वे.वे.व.केर.वेरवेश.तर.वे.व.लुव.तश्रवे.श्रश्नश्न.रेतत.बेश.त्रह्रे. ताल्य प्रत् क्षेत्र है। अव क्षेत्यमा ला नेम म्रम्भ प्रवाद प्रत्य प्रत्य प्रवाद प्रत्य प्रवाद प्रवाद प्रवाद प्र विषय्यन्याळेगार्चे विषान्ता श्रेयषाच्याची देवाचेन्यकेन्थी धेरान्ता इया यर द्वायव सेसम उन की मा स्ट्रिया प्रवादित की से मास्ट्राय के मास्ट्राय के मा में निया मित्र त्रिया है के किया मित्र के मित्र श्रमात्री सैंच वयमात्वमा रमाक्र्यात वैंट च हु हु द हुट ह तह में क्वि ज्या वमा वश्चेर्यवे ध्रेर्प्य केन् केम केम भर्म प्रवादित हैं दें विष्ण प्रवादित या स्र प्रवाद त्तुः हैर देव विवाय गार णे मेश नेय संस्था द्वार पहेंस देव सहित हो सर्र प्रस् वर्षा क्षेट्र.योद्य.रचिंबाच.योचेबात.ली जि.चेबाड्यश्रवाद्यत्यक्ष्यात्र.चर्चेशा हिट्र. वह्रवासेस्रमान्यवानेसामुम्पदी धानो दुं वे दे र दर्गिता देशानासुर सायदे हिरा र्वित्रारी जानेबाबेयबादयवादयरायाचिदायायाववदादी क्रुदावसवारुदाया ररावर्वाणानेशासेस्राचार्यवर्ष्ट्रियायराम्बुर्धार्ययेषुर् रे। कुर्म्यस्वर्षकर्वात्रस्य द्वाराष्ट्रस्य मुद्दस्य स्वर्षात्रम्य स्वर्षे स्वर्षात्रम्य स्वर्षात्रम्य स्वर्षात्रम्य वर्षायवः इत्वन् कुन्नाराष्ट्रभाग्राराने क्ष्राम्यान्यायाः भावत्यायाः कुन् गानव त्वात्रविवा त्वार र त्व दे ते पो ने या प्वे या ने न प्य में स्था गार प्रमा के वा के या व न्यवःन्राये नेषा केष्रवान्यवः गृहेषा क्षेत्रवाह्य देवाह्य ग्रीतः विष्या ग्रीतः

रटायद्वादेव मुं अदेव स्वा अळव सेवा सह सह प्वतेव पदा पदि के सारा वर्देव यो ने बा क्षेत्र बा निवा व्यापा प्राप्त व्यापा ने बा विष्ठ क्रिमाशेश्रश्नाद्मात्र श्रुवा श्रुदे हे श्रेश्रश्नाद्मात्र वादे दिन दिन हिं स्वापाद विवा दि महिषाद्दे आहे महिव पद्म पद्मिषायदे हिरा देव मि प्रिया महिषायर वह्मश्रामुद्दायाया मेश्राक्षेत्रकाद्याय वहस्राद्याया क्षेत्राचे द्वाराया ये नेश क्षेत्रकार्यत्र चुनायार्गार ये क्षेत्र क्षेत्र ये वा सक्षेत्र या पर्वा विदेशकेना वि.श्रम.क.रम्य.क्रम.म्भ्रम्थ.रमत.र्जूच.त्त्र.क.त्य.क.प्रमाय.रम्य.रम्प्रम् द्व'र्'श्रश्रायम्र'रायर श्रायवर प्रमाववार्त्या रिषाव ररायुवाबा रराद्या क्र्याक्षस्य द्यव हे हे वकट हैं के यूर वाबवाय द विवाध गार है क्र्या बात है र विवाध गार है क्रिया वार्थ र विवाध चवः वान्व वायो ने सासे असा न घवः श्रु अर्व वान्य र प्रात्व वा वा कि वा वा कि सा ग्री सा र्रे.इ.८८.ट्रेज.वे.वह्रब.तम.४८.बैट.वी.मेश.४घ.भ.ज.विंदे.तो पि.ब्रैं४.वी.ब्रैं४. पश्राचिश्वाचिश्वापराग्नेद्राताञ्चिश्वाद्मेश्वादेशे दे त्सराम्याच्यात्रेश्वाद्यात्राच्या शहरात्राश्रीरावेशामी विज्ञात्रात्राचितारारा विश्वास्त्राचिता देवता देव मान्या क्षेत्राक्षा गुः श्चितः व्यवसः व्यवः गुरः। देवः श्चेरः वारः व्येशः स्रेसः द्यवः स्वापित्रसः यास्ताः र्शर.त्र.वि.व्री.वी.व्री. तथा जैशावश्वा २८. क्ष्रातर वि. त. तथश्वा थेश. मिश्रामित के मा वर्षा वा के अधिकार में अधिकार मित्र के अधिकार के निष् लामियाग्री रदाविव मी सेस्याद्याय लेव प्रसादे क्षेत्र पर्हित परि हिर है। क्षेत्र परि रचेशास्त्रास्त्राम् विद्यास्त्राकार्यीः ह्रेवियावार्याया कार्मकार्यीः प्रदानविदालवः तबार्थ स.च.ड्री ल.पुबार्श्वश्वश्चर्यात्र वर्त्वीश्चात्र विद्या वेद्या वेद्या व्याप्ति स्वाप्त विद्या देव विवास गार मैं व विवस तस वर्ष वर्ष दे र विद्य है र हे र हे संस्था देवत हैं स्वी में में

र्वेशके। ईर श्रेमश्री श्रुव हवरा दर्। इ.क्रिंट जुदे वर्दे ता जना ला वी अक्र्ये. में की अपनित्र के विश्वास्त्र निर्वाचित्र निर्वाच निर्वाचित्र निर् रमवानेशाम्हरम्ये कुः सक्षत्राचित्रं नावशायरिषा हे नाविना मु र होना शान्या पश्चिमनात्रात्रेट्ट, दह्रव सक्या सेव द्वा श्चेतात्र जा प्रवाश्चिताय मार्श्वेतात्र ह्या तर क्रियाता वार्श्वर प्रथा दे स्टर पर्ह् र प्रवित् क्रिया दे से प्रवित स्था में स्था प्रथा र प्रवित् स्यापक्षेत्रसायविष्यसायायान्त्रीसायायान्त्री वालेवास्यसान्यवावास्यायक्षेत्रायक्षेत्रसा गु.रू.म.ब्रैटम.धे। तम.मु.म्मस.राव.स्मायक्र्यम.स्.पर्वे र.यम। वर्षम.पेव. म्रमार्पत् मुम्रायक्षेत्रायक्षेत्रायुर्ग्य प्रति केत्राये स्वर्षः देवायः सेवायः पर्वा.सूत्रातात्रारूराचेशाताशायाशीरशायीता इ.स.शशायशीरशातासराप्रा त्र नर्सुस्र निस्ति वेतु परु गति स्यापी नियुक्त हैं है सर्क्षेत्र पहें ने यो लेश यदे विवेषाया क्रिया विवास विवेषा देश के विवेषा विवास क्षेत्र है विवेषा विवास क्षेत्र विवेषा मु पर्दे हे पकर के वर्षे बाद दे दे ने र मी के वाद दे र ने र मी के वाद दे र ने र मी के वाद दे र ने र में र मे पश्चार्या कुश्च स्रम्थ र निष्ठ द्वार के विष्ठ दि । देव देव । से स्वर्ध प्रम्य दिव । से स्वर्ध प्रम्य दिव । ष्रमानि तर सेवामाना क्रमाचे रामधेशान र वर्षे र तर तथा स्वा विषा वर्षे र सार्वः हिरा शुःसर्नेन नगर में नय नारेन स्ना नहिषा पर सुना स है नय वान पर गीष वन्द्री। श्रवाया निवेधिक्षेत्रवाद्यम्बर्धाः मुद्रास्ट्रिक्षा विस्तु क्षेत्रवा रेतव विश्व की के वार्त के में कि हैं स्थान का वार्त के श्रेष्ठ के श्रेष्ठ के वार्त के श्रेष्ठ के वार्त के श्रेष्ठ श्रम्बर्नित्वीर खेबाज्ञ मुत्राचित्र प्रति प्रति मुन्या के चले मार्जे मार्जा रहा में हिर्मा वसार र रेन्स ग्री रेना सासूरा वेस स्निया नासुर या दे प्यर प्यत्ना क्यामुर्हेब्राम्साग्रम् सुप्तस्य मुर्गे व्ययम् प्रहेश्यक्षाम् प्रमान्य स्थाप

रक्षाश्चवाने में द्वा के के देश वा का श्वास वा श्वास वा श्वास के विषय हैं या त्रव शुन्तकेवारम् शुनावादाद्देतः - जुन्तम् स्थाना ग्रेशाच द ग्वं वर्षेत्र यणकाहर्यवे बहात्रवायम् वावास्य वात्रास्य वाह्य याद्रा एत्यार र्देन दूर या कुर मा गुर शायवे किंगा सर मा बुर शाद ग्रेवा श्रुवा है या दे के न वहेन यदे र ग्रीर प सहर वयार मिया विक्र क्या अर्हन नी स समा है या है सिया में सहर . मांसहर्याम्बर्द्रास्यसम्बर्धायसम्बर्धायरम्बर्धायर्द्रा देन्त्राचुवेन्त्रम्बर्धायम् यर वर्दे र स्वाक्ष ग्री सुंव ग्रीका वर्षेत यर वस्त्र यदे है र देवा स्व वर्ष है। बर्रे हो जमा हे सर पर्ट्य स्व वर्ग गुम गुर ख्य गु में वयर वे वर्र काम वश्रुं नर वर्षुर नर रव मुनद्देव परि हुर्। वेदु न र्यं वर्ने क्वा शक्ते सेदे क्वाबेबान्य प्रति । देव के प्रति विषय स्थाप स्था यायान्वस्यस्य दर्धिकुरायानुःही वर्देन् कन्सायार्भुन् यवे देशसाय वास्ता गुरिद्रियम् वर्षा रायस्य पुर्वहेष्य या स्मृति देश हिरा विषार्भेन वा गुर्वा या देश हिरा अर्दरान्दर्भाग्यायनु नु पायम् करायन्त्रानु सदस्य कुषानु सहन् पार्दराम्याया सर्वित्यात्रित्रात्रे। द्रवासायर् निकायकार्यीयाय्रित्यक्रियास्कृतानी स्वास्त्रसम्भापन्तेन ने हिंग है हैं अर्थे अहर पायहर पर हिंग पाने अरश हे अर्थे हैं दे यहर पाने र क्यायायमुक्। देवशास्यार्क्स्यायावे मुन्यायी यह्दायावराषु व्यराद्वा गानियेनी मान्ये राष्ट्र मान्यवित्। हे ये य किलाय र बार्य कुरा हुंच राव सिति हो सर्हर याद्राक्तिं अध्या देवसम् स्टिव्यम् मार्थाप्त्र विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्रापति । गरिकारी हूर्या अंश कि.एश. दशार र व. ब्रिका कूर्य र दर हुश श्रीयी है वंशक्र. श्रन्तविद्युत्त्व श्रूर्मिय्ये स्थाने तर तथ्या हर ज्याश पर पश्चया । श्चित पर प्राच प्रश्न । वश यश्रिष त्तु हीर श्री द्वा देता हैं के प्रविद्ध हैं हैं श्रीवत वर्षेतु वर्षेत्र वरेत्र वर्षेत्र वरेत्र वरेत्र वरेते वह्न यन्ता दें हेन यन्ता के के के विषयन मन्ता के वहेन का यन्ता लट्रमायरक्विर्यन्द्र। बेर्जीक्विक्विमायन्द्र। क्विष्यवेष्ठ्रपादेर। हेर व वर्षाय र प्रमान केर है। इस यर से हैं न यद हिर यर के साव केर पकर यर दे सूर्यन्य यदे अळव के रिन्द ख्वाय दर्गेश है। दे ख्रेश्व व के शय मेव नुकि ही ने रु गासदेन वर्द्धर यथा। इया वर्द्धर से र पर इया वर्द्धर हैं या। सिना में केंग्रामेन्। केशाना सुरक्ष पार्व सुरा नेशान प्याया हेन पारेशाना सक्र के निर्दर श्राद्वयाये द्वार्ये द्वार्ये प्राथा दे त्ये क्या के त्या वहें व द्वार्य हो। ह्या क्षेत्र क्या की व्या विवश् वना लट ब क्षेट वा बना के का मी मी मी मी मी में महिन में विश्व स्वाय वा मी है मा मेटा वश्रश्रह्मे वश्रदायदाक्रियायश्राह्म हिटायरायद्यक्षायदाक्षेत्रका विया वर्ते र इवावर्ते र ववेवमा हे र आ । महा क्षा इस समा में है र हि र सा । हे हे र र्वेटबाग्रीर्नर्श्वराम्बा वेबान्ब्रियायये हिरा देण्यत् अप्ते र् पार्त्रशर्मना स्वर हो न उन न सामित्यापे पुरस्ति हरा पर हो दान न साप है न दिन्या है। इस्राम्ब्रमान्स्यायाया प्रस्यायसान्द्रम् देवाराशीयुर्से सुर्वे प्रदेशायद्र है रेवा की पुर्ये द्वरणाया वेषा मार्य रायवे है रा दे स्पर्वे स्वा के पदिष्ठ र लय गिर ब्रैय वयश्वश्वश्व मध्र शय द्वर प्रश्व वा द्वरे र र वा वर्ष र विषय हो। यह र र चेश्रातका क्रु.ब्रे.ब्रे.ट्र. तककात्र.ची वेश्रातविका मेटात्राविकामी.वाश्रात.

स्वास झ नामुख एस ही 'बुक 'वा ही तर्वी द हा दे वह संस्तर है। दे नामुस वा स वन्त्री कुन्न न्त्र प्रायम् प्रायम् क्षाया मुस्यायि कु अळव प्रीय प्राय प्रिय देव.इश.शे.बैंच.वयश.जश.वरींट.व.क्षेत्र.शिव.वोश्वर.वीश.ट्रेच.वीश.ट्रेच.वीश.ट्रेच.वीश.ट्रेच. मुक्षकुराक्ष्याम् व्याप्य स्तर सहिर मुक्ष सहर हेर संवय ग्री सुवा स्वय विषय गा वया यथा । अर्य केश दूर्य में हान प्रत्य विद्या शिवी हैं दर केरिवा दरा । लिंड दर विश्वास्त्र वर्षेवास्त्रश्रम् वर्षेद्रश्रम् वर्षेद्रश्रम् हिन् हिन् वर्षेद्रभाष्ट्रभाष इंश.क्येश.ग्री.क्र.द्रथ.वर्वेट.ग्री.ट.मेवा.वह्रथ.तर.ह्रूर.श्रश्रश.ग्री.श्रैंच.घयश.वर्श. वर्षेट्र कुट्। शर्ट्र विश्व वश्याटा टे.त्व वैच त.वश्यातर वी । श्रू. शर्च. म्ब्राम् अत्रान्त्राहार्यहार्याहार्याहार्याहार्यात्रेत्री हेहे वहें विवायित्राये वार्यायाय है। । दूरियो श्राण्यका गुर्दिक प्रमुद्दिय देश । । यह में प्रमुद्दिक रहे । रहे देश हैं । प्रमुद्दिक रहे । क्री दिश्व त्यन ग्री पश्चर हिर्च श्र पर्हर पर है। विश्व हेश कर्व श्र ग्री र क्या पत्र र चतुःत्वाति हु दक्षर् वार केवा केश है बिर वर भे हुस्यश तर वहेवा तर विशेषा. ततु.होर। विधाशतश्री हिंगाशतर्रेर.तरीवशत्तु अदश्रक्षेश्वश्रशा विट. क्याश्रेशकाग्रीकासक्रेट्रविकावी विकटार्स्वाकायदे के वर्स्ट्रायर है। क्रि.कार नि र्वे.माथ.ते.इ.पइ.सं.ह.स.लश्च्यीरेशे प्रमाशेटश.ततु.तुरा शक्टर.ततु.ट.केता. र्नेन मुन क्रिय पहेन द्वीय है। हैन हुए ए ह्वाय परि नायुर परिने मुन क्षेत्र तत्रहिर। इंगम्र्रेव्ही तैं.इ.ध्राम्पूर्ता क्षेत्राश्रक्षात्रे क्रंप्तव्रेथात्रे

वा ट्रे.लह.क्रेंगश्रट.द्रुपुट्टें हु। ट्रे.लब्रेंडे वाड्रेगश्र वस्त्र.क्रे.ग्रे.इंस.से. क्रवामान्द्रहितः स्टाविव वी प्रद्या विद्या है । हर्ते सामान्द्रा स्वापाविकायते र्नेन ने ने प्रतिन प्रमेश माधारा हर ग्री अर्हे दे पार्ट है ये प्रदाय निन मी पर्या नेत्रेन्द्रिक्षायवी । अर्द्राम् अववाग्यामः विम् क्रिया वस्य मे देन प्रमुद्र मे ट.कै.व.मेश तथ.क्षेत्र.विर.त.श्याश शै.क्ष्याप्र.ताधु.क्ष.प्रधाश.ततु.प्रवात.क्ष्य. रे.त्म्.पश.र्च्यश.वर्ह्रदे,दुर.र्ड्शक्यश.ग्री.र.केवायवटा, दुव.र्डश.से.र्ट्र. तकर. र्वेदः केदे प्रमः दुः यया यायतः योगा विषायगागा वहा श्वेरः क्षेत्रः यय प्रमः प्रमः वाया प्रदेशका इत्या देशक्रेंद्रिंद्रिंद्रियायर मुक्षक्तिक्षेणक्षेत्राप्तर मुद्रियायर मुद्रिक्ति प्रदर्भियायर मुद्रिक्ति प्रदर्भियायर मुक्तिक्षेत्र प्रदर्भियाय प्रदर्भि चर्-छेब-देब-४८-१८-सिव-केंद्र-तेब-ज्यान्यूर-तद्र-झ-अथा-४८-सिवाब-वर्द्धःशरशः कुषा वस्ता उर् केंग्रावित सहेश यर प्रस्था या यह पहें र अर्के प्राये र कुवायहें ब्रायाये व वे विद्याय दे द्वार प्रमेश सम्प्राया प्रमेश प्रायाय देवी सामाये प्रमेश है व पहें व यवे न्ग्रीय विम् वस्य उन् चने हिन्न हो में श्री खे में मार्ग है स्वानु वकर वह्रव मी नाहेव र्या अक्रम मु वर्मुर पर्मा प्रभेत रेश यदे हेव से स्थाप सामेत १८.वर्रेर.लूब.जनान्नेर.क्यू.च्यू.च.रटा रे.ज.चहेब.बबाह्याब.द्रश यवै पर्ने केष पर्ने वार्ष ही व हो द हा व से द पा पर्शे र प्राप्त वार् की ही र र्रा चीर तालु राष्ट्र हीर क्वारट्र वार्ट राष्ट्र हिराव के राष्ट्र राष्ट्र हैं राष्ट्र हैं राष्ट्र हैं राष्ट्र हैं दे। श्रीयातातुत्रभे भावराद्ग्याश्रीयश्रीयश्रीयश्रीयश्रीयश्रीयात्रीय क्षात्त्रेर.लुक्रेत्रक्षरे क्षेर्यहूरे तत् हिरा हिषाता क्षेत्रपूर्वर वाला क्षेत्रपूर्वर वाला र्श्वना हेर विदा विवर वर्ष के प्रशास सम्मान के विवर वर्षेत्र कुण्यमः भुगम्यस्याम् । वर्देन प्रमुद्रास्त्रक्रमा ह्वेत व्यस्य दि सन् पुर्व भागित्यः यान्तीवाविराक्वाअक्रमानीनिरादेवद्वावन्यावानित्वा न्देबान्दर्नेनवा यान्युन्यदे । न्दर्भे क्षेत्रयाया युष्यमी यद्भन्यवस्यदे भ्रेता केस श्चिमाश्चित्वा दे.लट.श्र्ट्रे.श्चे.जब.श्रक्ट्रे.तु.तु.दु.क्षेट्र.लब.कर.रट.तू.हुर.तर. वन्द्रवश्चार्यम् द्रित्यविष्यास्यक्ष्यत्रम् विष्यविर्वे स्वाप्ति । ह्य रायर ग्रास्ट्र या ग्रीसाय ग्राया विता हित हो दि हैं राय दि दि हैं या दि दि हैं विताय विता हित हो हैं विताय विताय हैं कि स्वाय हैं कि स्वाय हैं कि स्वाय है कि व्यार क्विया सक्ति विदेश ग्री व्याप्तर द्विया या वना वाया र ने निदेश ग्री निस्ति द्विया या निदेश श्रायम्यायदेश्वर देरावया श्राम्ब्रीत्यायस्यावस्यावे स्टार्ट्रहेराब्वरायदे न्दर्भे क्षेत्र प्रदेश किया है प्रति वा विष्य प्रदेश के वा स्टिश के वा स्टिश के वा स्टिश के किया स तत्.ह्येर। ८८.त्र.बीव.ड्री प्रचानि.ह्र.ड्र.श्र्याश्राक्षे.क्षेचाश्राश्राचाक्ष्यात्वेषात्रहेषात्र् लुब्रायदानुरा देरावया बेर्च्याई हे लया लुब्राई अबायर बुव्यायदे हिटारे वहेंब वामावश्व वश्येमा मुद्दे हे अ सेना श्व वहेंब द्वेष यदे है र है। अर्देर मुश वराषे सर्दे हेव किरावहर मार्था । रशिवाविर वर्षा रूर हैं पर है। वेश नाश्रम्यायवे के मान्यानिक ना मान्यानिक निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के त्र निश्न ततु विष्य तथा विर मी दिश्व व तिषी श्रात्र श्रात्र श्रीर तत्र विर तत्र श्रीर देःलरःदेशिवावित्रःकेवासक्तिवानीःक्षःइस्राहःक्षरःक्षेत्रःचवःक्वार्णदःदे। क्षेत्रप्त द्व में के का के दार ति होरा के दिन हैं दिन के प्रति के वायर मिलन मुर्यिन्दी युअनी यद्भरविषाये काम्डिषा कुंद्र दिश्ये स्थानु रायायसमावया

यसायर गाइव पठराइर। द्विना वे क पठिना न इव दे इसस ग्री हेर दुः संगिदेश ट्रें ब्राइस्स्य विश्वालया क्रमहिश्याय है द्वाय है द्वाय है द्वाय विश्वास गस्रम्यास्त्र इत्रद्रिया क्षेत्र हिमास्य वो नस्य में नस्य में निस्य दे वाबासिया शक्य सूर्या देवा है वाबास सूर्या देवा श्री देवा है सिंदा सूर्य स्था हिरा भुट्रक्रवाबाद्धाः सर्मार्थाः सर्मा याच्या वर्षे वर्षे याचित्रा सर्मा स्वाया वर्ते.यश्यार्ट्य झेवाचाचाटा पेटा विश्वाचशक्त क्षेत्र है। रटा तृथ शहूर विश्वाचश श्रू. मृ.स.पूर्य तमार्ति । विश्वसाता स.ल. श्रुटा तुः दुर्। विदे तार्षे वासा श्रव मे स.चर. रे. त्रमुश वेश स्वाश ग्रीश पर्वेष ता विश्व ता वे में व वाशवा वाश पर वी स्वाश वह्रं हुंगा देश मु च ता सेवा शया दे त्यस मु त्यस मु हरे हे उत्र हे हे अ ह ने से स द द वहूत या वा र विग दियादेशदर्गेत्सयाक्षेत्रवावायवे द्वेत क्षेत्रविश्वय है स्रात्त्र द्वित्यवे द्वेवा गवगानुर्भेर दे। पुरानी यहर यहिरायदे द्वार स्थार हिंदे प्यस्त स्थार मार दर्भ याक्ष्रप्रदान्त्राची अक्ष्र ह्या शामिश विष्य प्रदेश विष्य प्रति हिराने अर्दे प्रमुख प्रवा त्र हैं है जुरे हैं ने बार ज़िया दें हैं रा विषा सूर्य का नवा स्था स्था से के विषा स्था है रा के पर्श्वित्यास्त्र स्त्र देव रत्यो अनुवाव पर्नुवाय रत्यो क्षेत्या राज्या वाय रत्य वे.र्ट.र्ह्रहर्ट्य वर्षेर्र देश्यके। सर्ट्र विश्व वर्षा स्र लट.र्ह्रह्र स्वर्थेय र्वे.ला विष इ.२.५.५२१ । इयाबायबाने थे हिरापार् । इबाग्रापार निर्वा क्यात्म्रियवात्रा कि.श्रुत्विचेववाद्येत्त्रात्याचीरावेवा वि.किट.रू.हुत्वववा वानवीवाश विश्वतिश्वरत्तुःहिरा गीव हिर्ह है नेशव है वर्गातर वाववारे. त्र्रिन् शेशवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्रवान्त्र बेयबन्द्रम्यबन्गी ले इट र्ट्ट्यिन स्वा स्वा बार्बिट से दे रेट्ट दे स्वय सुट परे

ब्रेरा श्रेजिंद्रियाद्दा इस इंग्रियाद्द्रियाद्वर वित्रियाद्वा विषयायाध्येत पर्व ध्रिम्ति। इ.क्रिन्, जुत्रेन्द्रात्रा वे.क्रम्त्री, द्रम्या, क्रिम्या, क्रिम्या, क्रिम्या, क्रिम्या, क्रिम्या, मृत्द्र विर्मू । वेश सूर्याश ऋत्वाल क्षेत्रश्चा विर्मेत विश्वात शहर . तत्र्सुल्यान्ववानुर्वे देश स्वर्तिन्त्वित्र विवश्यास्य स्वर्णियास्य स्वर्णिया वर्श्चर व स्वाया ही सहर रहा। अधाया ठव वे हिट ठव दशया ही वे हिट ही र व र्सेनामाञ्चानमा द्वित्वामा स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स नु र्योद दी वश्रामित वार त्रवे स्वापा स्थाय विवा नु वर्षा यर प्रश्राय है पहु चतुःस् रदःरद्यायो मेश्याप्दद्रिरसेद्र्याप्रयाप्यस्याप्ते वहेश्याप्र म् इ.श्.श्रुद्र-द्रवाशन्तरवालालयाली निराक्ता क्रिया क्रिया क्रिया निराम स्थापन वर्गेर पर्वः में प्रेव पर्वः भेरा नहिषाय देन षाय र धर्म पर्वा मुख्य में दि में र केना ग्रिक्टिव्यन्द्वार्यायक्षयावाद्वाराया या इवे जरमायार्गमायार्ग्य । प्रत्येती । प्रत्येती सर्द्र ग्रमायमा स्माकु चल्याक्यान्यायदेवे देने पुवायिक्यक्षे अर्केन देश मुद्दे प्रेट प्रेट देन है। लेख चित्रम्यायाक्ष्म र्योजाव्यम् कुवासक्रवाची क्षा सम्बन्ध वास्वा कु प्रविदे कुषा नियाक्रा प्राचित्र के विष्य क्षेत्र क् भक्षत्र जश्र चेट क्वर राष्ट्र चिया शर्म क्ष्या ची खिया की श्री कूट शर्म हूं चाश्र राज्य । इरक्ष्यायात्रे सुर्ध्वाकेषा देर् वर की र्से पहुर्देर यात्रे सहराया वर्षेष वर्षा ही स्माक् है। दे इस्माक्षिम क्रिया देवसाय प्रमाय दिन दे हिर क्रिया वार्षि म म्। तर्मःसिवाःकीःपध्याक्षाःयर्पयात्रात्याः वात्राः स्ता कीरः तर्मः वावाः ततः

स्याक्तित्वरायाम्यायम् तत्रास्य विष्टा स्या देश देश्वरायस्य वार्यायम्य के.जबाके.सेच.कुबे.चंबेंश.ज.जच.ततु.सेच.के.उकुट.टेस्बात्र.चर्ट.ततु.होरा बेशर्निशयायमें र्याधिक है। इस मलना रेस या वर्षा निर्धेवाया नवा है कुर वर् अल्या र ते व्याका क्षेत्र व हे स्वर व स्वाक्त क्षेत्र के या प्रति स्वर सुनी के तर विर्वेश बुबा चे बोट था तपु होरा देव ताब हिंब ता वा चर्चा हैवा ता बाट बा केश.ग्री.तूच. थव. श.तीश. तथा तके व. ततु. योष्ट्र . वीं र. ततु. हित् . श्रे वे. हिता. के .कुव. तूत् पर्वेष.श्रु. वे. देश. कुचा वी. तेचा केत्। किंचा श.ग्री. ला चा वे. कुश.ग्री. तेचा केत्। विचे वा त इंक्रिन्यां गुर्वा क्षेत्रका क्ष्या क्ष्या कर मा के हित् हित है दे हित है ति पा है वा का ग्री सुना के दे विषामध्या वर्दर देव वे भ्रेव कर दे। भ्रेव कवा वर्ष क्राट्य का मध्र श्रान्य क्रियाकी संद्रायां वेया श्रा है क्रिया श्रा है श्रा है श्री है स्था है । श्री संद्रा पा है । या है । य त्त्रचराष्ट्रचे वित्राक्ष्याच्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्या क्रवाक्षान्त्राक्षान्त्राक्षेत्रा विषान्त्रा विष्यान्त्रा विष्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा बेचा देव कु सक्त जिन्दी पदे हिंद दिने र के जिल मेश या पर्देश सूच है। कूर्य द्रवाकाता वाट खेवा । डे. पट्र प्वते खे का में का में इ. प्रूप मुका प्वते वा प्वते वा वा विवाका सकूर्यतातु सेवा शक्र्य तायर त्येत्र शुतु सेश्व पर्ध्य तातु होरा विश्व त्यू स्वेत मुद्रेगमान्द्रम् तात्री मुर्द्रायायद्रमान्ययम् मानुगम् मुद्रम् यास्यूर् ने। इनास्त्राणु नहें वे सहत उर्दे वहें दे में वहें जी नहें जो जे कर में जा के के र्गीवात्रिर केवासक्ष्मित्र क्रियास्त्रित्र वास्त्र केवासक्ष्मित्र क्षेत्र क्षे धुरा देवे बद बस इवा सेस दर खुस द्यी वा विश्व ग्री विश्व कि विश्व से देवे वा से देवे र्गाणिय व र्रे हे तकर लिय प्रमानिया चिर्य परियात लिय व श्री प्रमानिय त्तृ किर् ट्रेस्ट्रेट्ट्रिय विश्व विश्व विश्व किर्य के किर्य हे. हे. वकट कि वश क्रायदेवरायवे में टाउँ अवसावस्य प्राप्त । द्रीयावित्र क्या सकेवा में भीत्र बी.त्र.च.रटा वाश.केवा.श्रक्त.ची.श्रेचश.बी.व्र.च.प्रथा.बी.लूर.वा विश्लेष. र्शिंगी निर्देश्य के अर्दे विरास्य में रिया विरास्य के या अर्केना ने अंचराक्ष्यरासुर्मान्यर्ग विदा विदार्गायादे व्ययग्रहर्गी अंचराशंहर्मायापर वर्षे च लिन श्राप्त वर्षे व निम्न वर्षे व निम्न के व निम्न के व निम्न के विषय यात्र झानार म्हित्र स्रारायर । र्गीवात्रिर क्वियासक्ता में र्गेर मुद्र स्राम्य स्.चेध्यासे. इस.से राज्यासे न्यासे स्यासे स्यासे स्थासे स्यासे स्थासे स् न्त्रासु वर्गेन्। इस इट न्ट हुव सदे नुवानु से वर्केन्य न्ट रेग हु है स वर्गेर् पर्येग्रा छेर प्राणे प्रापे हिर है। हेश हैंना वहा नव हे क्या नव न र प्राप सर गुरा दियानवस य से पर्मे दिया । वार के विषय परि सर स कु स गुरा चिर्यन्तर्वे पक्षेत्रायर छ। वेश स्वाधानश्रद्धाय वेश विश्वाय वे। विवः रे। वर्षायावर्दराद्यीवावविरावाद्युरामुवे द्वात्रम्भम्मवावावासुमासुनाद्वाया वयवानेगानुगम्झन्याश्चापन्नराम्या अकुरादेत्रराम्झ्यायायनराकुरार्दे इ.इ.शू.क्य.क्ट.श्रम्थ.वेट.शूर्वाश.व्रिश.यातु.क्रेट.श्रट.त्र्र.क्षे.त्रताक्र्य.चेतावाद्या. सैयात्रेशतंत्र देशतर पर्वेषतान्य कु.चवु.सुरा श्राविवायी वर्टर दे.सेर. वह्रद्रयायाद्रविद्यायायदाद्रवाक्षेत्रायदावया द्याष्ट्रवायाद्वे क्षेत्र विद्यादेवाया यायमें द्राया में इस्यावना वस्या वस्याचा दे वित्व के द्राय स्याचा स्वामा यन्द्रमादि स्मृत्यस्त्रित्वयाविष्यम् विषयाविष्यम् स्वाप्त्रम् विषयाविष्यम् स्वाप्ति

चवामाश्रम्यान्त्रम् न्यूराचरावस्या वेषामाश्रम् वायदे सुरा देवावा हून या वा क्राम्वनावमा नगवःक्रियःचा चर्ट्रमःस्वःवनमःभ्रदःग्रीमःवदःचनदःयः र्वाट्यायायुटाङ्ग्रेवायवाकुरायवा विवासीन्याई हे वयास्वि देवाईव हेवायवा वीर अश्वराट्र शासी हिंब है। हु हि हा वा सूर्व हे ब वा तूर बेर वी से साम विश्वराया यवे झ इस्रमान्याम् सुस्रायवे इस्रायर पहूर्ताया प्रमेश या मुन्यर उत्रार्थे दे। र्रे हे वया श्रीन्ता वर्षायव से इस्सावया महास्या मार्थित या महिसारे व वसा अर्केन देन पर पार निया दिया है या है साथ अर्केन देन मिर पर उन येर पर देने स्वाश्किः अन्तरम् वया यवायावयस्य प्रम् वयावयस्य ग्रीश्राच्यस्य गृत्र हैं च च देव यान्नायवे श्रु खुकान्ता व्यायान्य वित्र यान्तान्यवित्र विवासीकानेकान्य निर्मान्य यदेव य देव की दूर वासवार हा। वावाय विदेश स्रें र से य के वायद हवा से हुर यन्ता वयानायसान्यित्वाहिसान्तिःयाश्चरायदेशवयानुसायदेवानहिसान्छेरः श्रेन्णी बुर वह्ना सक्रम प्राधिव परि द्विर है। युर हैन यहा सम्बंद हैं र पहा रें हे खेराबा निवारवा विवारी में त्यदा सर्वेग विवारी हुर वा उरा मुंबादी सर्याक्षित्रम्भवत्रम्भवत्यात्रम्भवत् ।श्चित्रम्भव्यत् विष्यान्त्रम्भव्यत् विष् निर्यास्याप्रस्य म्यास्याणी विवानिर्याण्य हेर्यह्नानिर्याण्या विवानिर्याण त्तृ हिर् तिया देवा त्रा अक्टूब दूब लाय संबर् ग्रीय वायवाय र श्रावाये द्या पूर् गुःस्याव द्वेन जीवाश दर्वेट जीवाश द्वा ना क्रिंट न स्था क्ष्य विश्व शक्य ह्या ना पि.श्रम ।श्रात्वश्चितःतपु.स.प्रिमाञ्चमश्रम्भाष्या स.जश्च्चितःतपु.भटः देशःपि.च. इंसिट्रम्बुद्रम्बर्थः द्वारम्ब्रम् इत्राच्या विश्वरात्त्री क्षात्मवर्गात्वा वर्ष्या

व। वर्दर मामर व वर्षायव र में वा विषय व विषय व विषय व विषय व विषय व स्यामात्रावानुद्वादेवादेवप्यानुवाद्वाप्यमात्वयुत्रात्ते। हे द्वराष्ट्वयायमा र्श्यान्त्रास्त्रक्षायर विद्यान वस्त्राश्चित्राचार्त्रीवाविरावाविर्वि चित्रः च्रिक्षः म्राम् विद्यास्या स्त्राम् शक्षत्र त्यात्र वा त्र्रीत द्रवा राय हो र तर् शात्र है वार शास्त्र द्रवा राष्ट्र वार शास्त्र द्रवा झं क्रिन्या गुप्ते निवास द्वार्क्ष म्या मिना पर्ना परि सुरा वेदाय प्रेत पा देव पात र्हें ब.त.जा क्रा.चेंचें चें जा अंश्रम् नेंचें कें कें जिंदे कें कें जिंदे कें कें जिंदे कें जिंदे कें कें जिंदे विर कुवासक्या वी हेन पानवा प्यस्त विहास हमा हमा विद्या देवी द या र कुवा वि यव है। वर्षायाश्चिर्यवे द्वारायर देवेर्यव विर व्राप्त विवय लक्षावरक्षेत्रपदेख्रिम द्वेरद्वायद्वव्यव्यव्यव्यव्यव्यक्षित्वीत्वाक्षित्वीत्व लक्षावर प्रिवेष विश्वायत देवा श्राया पर देवा की शा श्रुव किया अनुव देवे प्राय की शा मैंच.त.थ्री ह्र्य.सेट.जशा ह्र.इ.सूच.ट्रत्य.जेश.वट्ट.जा किवायव.से.यु.४श. चबुब नवस्य वेस स्वास स्वा विवाद दे वा द मुवाद वि स मुवास हैन । यवै कु अळव रेपेन ने। हेव यहेव यवे न ग्रीय वित्र हुयाव शमावव रेव अहन यवे महिषा द्वत्रदेशद्राव्यवेयाववे इयावर्द्धेरद्रा द्वत्यक्षश्राद्राव्येया चव द्वार्यो र द्वार्य व द्वार व द् नि.च.वीश्राचर्येश्वर्त्याच्युः ह्र्याच्येत्या दे.ज.श्रक्त्रेर् चर्ट्येर् श्रेट्या दे.चर

क्वां शक्क्वां ताब क्वां प्रवाधाया वार्स्विया वृद्धः स्वया प्रदा प्रवाधाया स्वया प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास प शक्तश्रात्त्रिश्राश्रात्त्र्रित्राचित्रत्त्रित्र द्रात्त्रात्त्र्यात्रात्त्र्यस्य सावान्त्रियस्य सावान्त्रियस्य वे अ हैं। व क्वें अब पक्ष के द पा मुक्ति पवे द वे बाय पे दि पवे हिया सम्बाध अवस् वुन्यक्रममाम्याद्विम्मायायाद्विमायायित्ति। द्रमामाहेन्निम्नाप्यायायाम्मममा न्वश्यद्वर्यायञ्चयम् न्याये क्षेत्रं विष्ट्रं वि महिश्रास्त्र श्रायदे द्वितः इवा वर्षेत्र श्रीश्राम् कृत् व्यायदे अळ्ळश्रश्राम् वा यदे इवा वर्चेर भारत द्वि स्वास्त्रमान्त्री हिवा खेदान्दर पुरावित खेट साहितास गमवायवे संभाव मेरिया हो संभाव मान्य मेर्स स्थान मान्य वा है दूर द्वियायदे द्ववायर विर्देश पर क्षेत्र प्रदेश क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रदेश क्षेत्र क्षे मु दे दे रे ते निव त्रव रा में ने विवास द्रा मी हिंद रे हैं है हैं व ये है से पा सिर्या गरमी वर्षे क्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक वारेवा अर्हेर वी अर्ह्न अपन्त वे या अहेर पर दे क्रिया प्रवे क्रिया दे वा पर्न व यार्चियायात्राहे स्रमानु प्रवित्र खुवायाराये दे हे स्वार्टे हे ते वार्था हे हे विश्वादर वर्षित्रातास्वाकातात्रभाषावत्वादायार्ज्येका स्वरात्यात्र्यात्रस्वाचरावर्द्धा रे.ज.चर्थ.त.चूरा.त.थ.तिथा.शक्ष्य.के.से.भेर.चस्रीर.वश्च.कंर.चध्य.कु.चर्.वुर.कु.त. शवर वहूचे ताच के चतु देशवाब हुव से चैवा वब र र र थ है हिंदा वर है र देवे श्रमार नवायानहा देनिहेर्निन्याया नवे से देवे होना या या श्रमायह नया न र्रेहे दर्या वर्ष वर्ष है। विवाये दे किरायुम की यह र युरायये करा दु है वर्ष यहेब.ततु.रेग्रीवा.त्वर.लूटश.ह्यश.सूत्रातावाश्रयश्चराय हेब.तर होरे.त.तूतु.क्वा. र् हैं नर्दा देव बर्वे के नक्षेर माया खुका है कबायर बुवाब यदे होवा थेवे बर्ट् इर प्रविष क्र. मुद्र क्वार हिंबा हे हैं शाया क्षेत्र प्रदे हैं र है। इ.क्रिंट जादी वा बीश. यायमा देव केव केव मिनि ह्या तिरहा । तिरहा या मिनि हा । म क्टेश्वरवन प्रवादित में का के के विकाद ब्राह्म । पदंब,तर.श.वीर.लूटश.श.ही व्रावशेटश.ततु.हीर। शहर.वह्ब. त्तु.श्रु.श्रुट.व्य र तर्द्या विश्व शतातावायुवा लट त्व ब्य हे हे त ब्य ता दटा रवा. ग्रेन्त्रम्यद्रि । १८ म्यु के १८ म्यक् श्रे वर्णवावित में श्रेरम्यदे प्री प्रमान ब्रेन्स्रेन्द्रस्यविद्रर्पन्तस्य विक्राणिक्ते। न्यवायन्य हर्षे हे हिवे छ्या वीका वास्य विकारी र्रिष्ट्र.क्रवाच में मार्था विकार्य में दिया विदेश में विदेश में मिर्ट स्त्राचित्रस्य मान्त्रा विषास्त्राचा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा यायास्यार्भिरादे। दशक्रवावीतम्बराया देखेरावम्यायस्यान्वयान्। मिन्याय प्रमान मिन्ये प्रमान मिन्ये प्रमान मिन्य प्रम प्रमान मिन्य प्रम मिन्य प्रमान मिन्य प्रमान मिन्य प्रमान मिन्य प्रमान मिन्य प्रमा र्टात्री वश्वश्चित्रह्नाश्चिश्चानुस्राच्येत्रविश्वश्चर्यात्र्वेट्याक्ष्र त्रत्री क्रुबाद्यबाद्धरायक्षर् श्रुव द्वित्रापक् द्रेद्र हेव वया द्राण्या के प्राची प्राच वश्यक्तिन्द्रेन्त्वयवश्यक्ति रत्योवयन्त्रविषयपर्वेश्वयवश्यक्तिक्ति कुर.धु.चयु.द्रथात्रार.च्याच्यु.सुर.र्ह्चचश्चित्रच्यी.च्यातात्री चर्नेशात्रु । च्रिशात्रु.

पञ्चरायंत्री रत्वीत्वयात्रराणुर्याचीत्वयातुत्ववराते हरात्रर प्विरायायो मे हुया कुट.रचातवु द्रशात क्षेर्ट. हुंशात लुध है। वर्ट लट हिन् श.ग्री नश्च शावूर चर्च. ताथ्री मित्रुयः पञ्चराताथ्री हैं हिरातर पञ्चता है। ईर राष्ट्रे हैट इस्मराचरीया चार्यायश्चर्यात्र्री संत्राञ्ची विस्तिय्याम् स्वाप्ताञ्ची स्वार्थात्र्यात्र्यास्यायः इयश्यम् मीवे पर्वे भीतात्र पर्वे राम्य विष्टे निया विष्टे निया विष्टे मान्य विष्टे निया विष्टे निया विष्टे निय वयानु र्येन ग्रीकायरेन यर निर्माण क्याय त्रापत्र निर्माण ने दिर स्मान ने रहेन श्री वश्रावर्ष्ट्रायाई हे देवायु यादा राष्ट्राया स्वासा श्रीया के मात्रा सम्मान स्वी स्वी प्रमुख मुक्त स्वाय के विद्याय प्रमुख से हिंदि । विद्यी प्रमुख्य व्याद विवाय पिद चहेत्र.श्र.प्र.चर.चंश्रेटव.चेटा वसवायातात्वात्रवात्रीयावायावायर.श्राचार्यरया ग्राम् यक्षत्रम्मवारार्यत्रप्तरायर्थायायायोग्नावार्थायीःवर्त्रम् णेव है। दे द्वर खेंच द्वेव प्राम्य प्राप्त या नेविद या द्वर येव या येव की अळव ह्मायाक्तरा के किर प्रवासित के विदान में अकिया में किर प्रविक्षित प्रविदान सुर्य मा विद् हैगा देशवासिटशत्तर हैन स्मिन्द्रे वासेश दे समाम स्थान वित्वति क्षित्र मिर विद्या वित्वा कि इत्या वित्र के कि दे कि वित्य वित्य वित्य वित्य वित्य वित्य वित्य वित्य वि हिर.र्ज्याश्चार्थितश्चार्थार्थार्थार्थार्थात्। के.केया.श्चार्ज्यार्ज्यार्क्यायार्क्यायार्थार्था तास्थरात्राचा वा वर्षेत्रात्ते वार्षात्री वार्क्ष्यायावित्रा विक्रास्थरार्टा चग्रेग्राथम् रहेर्जी वहेर ह्याय हि.स्यारी ल.प्यावच्यात्र ह्यायाव्यस्य पर्क्र.संदु.ह्रेब्रच्यावावावावावावावावाच्याच्याचा । दे.क्षेत्र.पञ्चवाचायाच्याचावाद्याचा ने हिन्द्रेन्द्रम्मण्यम् व्याप्ति हिन्द्रम्भ विषयः हिन्द्रम्भ विषयः हिन्द्रम्भ र् नियान्ता विष्यूर्यर् र विष्यूर्यर अलाव तत्र वार्ष वार्ष विषय विषय विषय यान्ता विनायर्रेहेग्वस्थाये वृत्त्वेत्रं विन्तुत्रात्ता विवायते सुक्षात्ति । क्रिंब प्रवेश्व सुर वि सह ५ य ५ द सह्य प्रवेश वह सामु वस के ५ वह र पर का ५ वह र व.ल्रथ.तपु.हुरा वश्रिश.त.थ्री लव.लेश.ह्रेशश.तर.खेवश.तपु.क्रेथ.ब्रीश खेश. विश्वाया श्रम्भाराष्ट्रम्यायायायात्वर्ताः वेर्त्वे । विविव्दे वेर्त्वायाव्यायम् वा विषाम्बर्धरकार्यते भ्रेरा वदे स्र रावर्षेत्रकाया वा केंबा उवा द्वीबाया वेद दे हिनाबा देशकी अवस्यात मान के विश्व विश्व विद्यायय दिन विश्व के कि के कि के कि वच्यानुवे न्नवयागुन् वानुवे द्वराचिया ह्यु वायवे न्नुवे हूरा व हु पार्ट इसाया सम्बन्धियात्र्यात्र्यात्र्यात्रेत्र्यात्र्यात्र्यात्र्येत् स्वन्यात्रेत्र्यात्र्येत् स्वन्यात्रेत्र म्प्रत्येर प्रवृक्ष्यं स्त्राप्ते वार्षा श्री वार्षा प्रविद्या स्त्राप्त स्त्र स्त्राप्त स्त्राप्त स्त्र र्थेर्ने। वस्ट्रिक्रम्स्यम् म्राम्यस्य म्राम्यस्य विष्ट्रम् विषय वस्य न्यास्य विष्ट्रम् श्च.भव.भेर.र्वर.वव.र्ग.इ.शुब.वुर.२.वर्तेर.व.२८.। ववश.वेव.सेवश.बी.श्वर. लट. में बे का है . कुषे नूस खेट बे बे बे टे . वक्ट. के . वह अहू दे ता है थे . वह . ये ते ते ते ते ते ने । हिर्मार उत्र र्वत्य रायणे व मये हिर् सुयायये के माराय हर्मा विवे के ना य मध्या चे बाता वार् में बाता व्यूर्ति हैं वार्ष्ट्र विश्व दिया विश्व दें बाद बाके बाकी. शहरे ता पर्वेष ताथ। क्रि. इ. घनाश कर ज़िश कर शरे तात शर श के श उह या हे थे. र् के दिन दिन स्व मार् दिन मासूर वेदा देत किया दुव के मार् हे मार् क्षेत्र मार् हे मार् क्षेत्र मार् हे मार् क्षेत्र मार्थिय म या इससा गुराय हे दाया राष्ट्र प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति । या दारा प्रति । या दारा प्रति । या दारा प्रति । मुन्यायहर्वाहेब की लिब वावयायहर यार्ट इसायायह्व प्रत्याय वाहा ने वाया हो र ५ वशुरावाधिवायवे क्षेत्र। दे स्मरावर्ष्ट्रित्यादे सुरावि स्वार्थित दे। ५ श्रीवा विर या समा कर हो था वर्ष हेर व रेष श खेर खेर खेर कर वर वह र परे मुन्याच्याक्तरम्बर्धान्त्रवाद्यान्त्रम् मुन्याय्यान्यम् स्थायदे। श्र वर्शेट्र्ड्रिं ले. मेशक्री वेश श्वीश में ज्या किश वर्श्वेट तर शहूर वेश तथा विशेष याक्षराम्ब्रीयाध्येव यदे क्षेत्रा वदेव क्षेत्राचित्राच्या हेर वश्येषायर नेत् । रे.यश्रमेव.ववश्वश्वरादवैट.व.र्डं-४-४ट.र्ट्र. इ.वकट.रे.वश्वत्व.वार्वट. प्रवेतर्विवायवानु के बर्धायर यह कि व कि र जी अर्थ र प्रवेत प्रवेत । वा निवन देशका है हैन का सिविट दिट सकेंट्र विवाय वह से विद्या है दिया है दिया है त.बाल्य ततु.शह.तूर.श्री.तथ.इ.४च। श्रर.श्री.तश.श.ता.बाबशतु.श्री.श्रूर. गुरप्रेर्न्नुबाद्यापर्द्र् के ब्रह्मायर क्रियं के द्वाया राज्य प्रमुद्या ताक्षर में रे. तपुरके अक्षेत्र पूर्ट है। कूर्य के अश्मिश्य प्राप्त प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त मि.मक्ट्रामबीयशामशानरेर.इ.वेर.म.क्षेत्र.म्बूसशाचेशाववेताचालचेत्राचु होत्र.हो वर् अक्ट्रवा इ.केर.जरा विश्वात् अवव सेवा इ.केर.वर्षा विज वर्ते र द्रवारा मक्षाम् मानु क्षाम् सुर्यायये सुर् वयुवायये देशाया यर सुगाये निक् नेर्रम्बहो वायाया स्रवस्थायायाच्याचर्रहेर्ड्ड्रिंग ।र्राय्या अर.रेचेवाचे.क्षी रि.का.इंश.बे.टे.प्र.या विश.स्वीश.विशेटश.तव.होरा क्र.ल. ब्रिन विश्वासिन्या ग्री स्वाया देव दे त्वक्ष प्राये प्रति प्रति प्रति स्व क्षाय प्रति प्रति प्रति । प्रविष्क्रियन्त्र में दिस्ति कार्या स्याने स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

वर्डिनेट्रेट्रेशके। श्रेट्रिशकायशा प्रत्वीत्विर्ज्यवाद्येत्वर्ष्यान्त्वा विवर् यायदे या केंद्र में पिर्वा या प्रवासी विश्व प्रते मह या दहा या विश्व प्रवासी विश्व प्रति । व्यूर क्षेत्रकारट जाव किया वक्षेत्र विश्व तथा विश्व तथा विश्व तथा विश्व वर वहन यदे हैर देवशर र लव लुअ हैं अश्चर विवश्य दे हैं र अक्षाश वयानुदाकुवानुभिक्षेत्रकानुनिद्धाने स्वयंत्रवा क्षेत्रकारुवान्यक्षरानुनिद्धान्त्र ब्रैय:ग.ब्रैटश र्रे.लुवा.ये.वीर र्शावशायादा.वश्वशायाट.व.लूटश.सी.वीर.ता. वश्रीहे पकट र पुराय इसस र में दिन केर में साम र पार्टिस यर हैं अर्ने माने । अर्ने र गुरायशा ने स्र र इया वर्गे र पति ग्रेन र इया वर्गे र र पर्या ्रिका हिन्द्रा दहन देव र पर पुरावर्षिया दे चुर वर्षे गुवर्द्ध हे खे सवर पर चश्रशा विरश्चश्चरात्मे वापक्षाते दे प्रवित् श्वरा देश मार्थर श्वरा विश्वरा तास्वायक्षयसास्य दिन्द्राचाया विद्यापत्रयाय चेत्रायदेवाय चेत्राय विद्याय चेबातका चेट.कु.नेबाबु.संक्षां केंद्राची विबारवात्तर वे.कुशाववीदावा विवार यत्रेद्धमञ्ज्ञायर्ग्य । अर्घनाराङ्ग्रियर्पनायायात् । श्चायवर्ग्येवाविरः वस्वायर छ। विर्देश हे से देश विवायववायवे। क्रिके दे दे वर्षे स्थायर छ। हि हुव.ब्रें. त.वर्. लुका.ब्री सिर. हुवा.बुका.ब्रे.बाज्र कुष.वर्चेरा विकारचा.लूर.ब्रे. यरे पत्री | वियावयुरावरे वा वे स्थायेत् । देशमाश्रुर्शया स्राम के में स्वी । व्रश पदःश्रमेव पर्दर्द्धर्यर्गर्मा सम्मायविष्ट्र दुः द्वर्दि र सेद् पदे हैं। ロ型、とおと、近、はとは、ないは、ち、こと、ち、ち、と、「のかま」、「新して、多、ち、こととが、 श.स.ची.वर.बी.ड्र.शूर.खू.रेयार.त्रश्राश्रक्षेत्रता देव.तूर.ब्र.बीश.चवव.चरेट.

इसमार्ट्रमारी नवातात्रिमार्वाट्रमार्वाच्या बिवामास्यास्य स्थार्थितावरात्रीत्र ब्रेट्रु इर्ट् व्याध्ययम् उर्द्यापये स्पर्दे वित्रु वित्र वित्रे के वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र रवानुष्वर्यरावायाञ्चेत्राचे क्यान् द्वा देवस्यर रर्द्या स्वरं वसमाधर न्यास्यास्य स्थान्य वित्रा द्वेष्ट्रम् स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य विया अनीव पर स्वेद रगीय विय नामय पन्ना कुर नायम से स्वर स प्रमेशन स तश्रजीय राष्ट्र क्रिया पद्म वश्रान्य । क्षेर नार क्षेप्र या व दर्श आ क्षेत्र । चश्रश्रातात्रश्रद्धर त्र वि चर्र द्वा मि वि रात हिंदा वह । व् वा वह । क्षरानुषान्यान्त्रभावतार्द्रात्यवराष्ट्रमानीःयेन्द्रात्वयानीयान्त्रीयान्त्री पादनः पर्व.तशा चेट.चेश.वेट.वर.तवर.तर्थेट.देशशी विकृ.त.वेश.वश.ववर.तर. द्या विद्राक्षराश्चिर्यव्यक्षरावर्ष्ट्रिया विद्यविद्राया विद्यविद्राया विद्यावर्ष्ट्रिया यवे.हीरा थेव.ववु.क्व.वहुर.धु.हंबा.शूबा.हूर.वाबवारे.हीर.ताच्छेच.होर.हरा कर्त्यन्य लर् के श्रू त्रविश्व वित्व श्रीया सेवा वश्व श्राय विद्य स्थाय कर्त्य विद्य वित्व हिल प्रवित्रविष्यव्यम् राम्युप्तव्यम् व्यवस्यदेशहर्ति हेत् प्रवित्रहेत् हेत् प्रवित्र यव निर्म्य अनिकार्य प्रमान स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य वीच की की प्रह्मा अहत तर ती शेंश दे नां ना कु तर की दे दे के अल जा ला हो । दे हो है है मेटा र्रुमायन्तरायहा महिरामधिमानेदार्मायमा सिर्द्रायमा तर.श्रायक्रेर.स् रिश्व.क्रंब.ब्रि.श्रद्धा.श्रायक्ष.व्याप्त.रि.पर्वाय तर विशेषा विश्वविद्यात्र हिरा वर्षेर हिवास है, वर्षा सेतु है विषय नुर्वेदि सन्दुर्द्व निर्वेद छेद मार्थेद स्थाप स्थाप

ब्रुट्या गु.रे.बे.शह्रद.द्रश्यत्तर.वर्गेर.वर्द.ह्रेरा ट.बे.बर.वा.बेंच.घवश.ग्री.कुटश. क्टा बर् पन्न प्याया पक्षेत्र श्रुपायले। इया वर्डे रापले। हिटारे वर्डे दा पार्था वशा स्वार्थेशर्दिन्वशवानुःस्निप्यदेग्वरंदेश्वरा दिन्वशवावशहिःसदेः र्शिवायित्रर्वायामाने व्यक्षर्शिवास्त्रियाये प्रत्ये के स्वा स्विष्मुका के विष् क्ष्यान्य स्थानिक विष्य त्रेय स्थानिक स सक्तास्व दे श्रुपक्षेत्र क्षेत्र प्राचन प्रमाणिव हे। क्ष्रुप्य प्राचन प्रमेष प्राचित्र क्षेत्र प्राचन क्षेत्र मुक्ति । १ वर मित्रात्विश्वाताल्य । मित्राताल्य विषयाताक्षे । मित्राताक्षे । म्तिष्रात्र् वेश्वासिर्शतत् हिर्ट्य क्षेत्रेर्येत क्षेत्र विश्वास कर्योवा जशक्रिशतर विशेष तातृ हिर् विशेशत् है। ज्येशत् ही श्राम् ही श्राम हो श्राम् ही श्राम हो श्राम चैरक्ष्यायवेयर वे इवावर्षेर अर्द्र सिरक्षण या मुख्य वे हे श श्रु इवावर्षेर । व्रश र्शिवास्त्रियायने नेन मुन्दिया द्वीं नास्यानेन प्रकारिया सामितायने प्रकार नास्यायन प्रकार नास्यायन प्रकार नास्य यर वे क्या वर्षेर केव में है। दे वे दर में हुँर परे द्वर प्र प्र श्रायर केर बा जेव वा देव हिट दु कुव अक्रम महिषा गुरि दे प्रमाह वा वर्डे र दुन हु व्याप के वि ह्र ह्रा विदायमा इया वर्ते र हे मामु इया वर्ते र तरा विवास वर्षे र इया वर्ते र क्री दिरात्रा हिरावा स्ट्रिया दि वहार क्रिया विका स्ट्रिया विका स्ट्रिया विका गु.केल.मू.क्जातमूर अकूच । द्रमानिश्यातपु.हिरा चेरीयात्रिरात्रह्य. वासेश्राद्धे क्रिं त्वर्ता तका सेश्रास्त्री विष्या दे हरे हरे हरे हे देवी वे क्रिं त्वा वा वाय का ही. देनित् हिर्हे के वर्षे पार्य ने येन वर्षेत्र के नित्र के वर्षेत्र के वर्षेत्र

ने हिना विक्रा क्रिके क्रिन्य के ने हिना सुरामन क्रिके क्रिका ने मुराम स्थल क्रिका यव दे किर इसम हैं वर्गे है। हैर बेर वर्षा दे किर दु व का या दे कि निश्रमार्था । यो मेश ग्री शा क्रेन परे दे हित शा क्रेन परे दे हो इन र्श्वराष्ट्री मानवा प्रवाद क्षेत्र परि देश देश देश देश देश है देश है न परि देश है न श्रमायुमायासून्यवे देशना ने यहिन हेन्यमा मुद्द क्वायवे देशना है सामिमा वार्श्ववाता है स्ट्रायवार है है । ब्रायाया मुराख्याय है है । वे वे वार्थ स्थाया क्रिंग्ययायर वहनायव दे हिर दर्दा । इर मी दुन दर पठ या पव दे हिर पर्छ स्किन्यायम् प्राप्त स्वाप्ति । दे कि द दि । विष्या मुद्दा स्वाप्ति । विष्या मुद्दा । विष्या मुद्दा । हिरा शर्म्या सेचाराक्या श्रीकृषम्यायाक्याचिराक्यायदान्त्रेरान्यस्यायश्रीत र्दे हे पकट के व पे क्रिट पर्य दे कि नार्य के प्राप्त के हे ब ब ब व पर्य दे र दे । । द द पेये र सर्गेद्र'र्ये श्रु वा मुद्देर संस्था सं श्रु र प्रदे दे हिना वुषा हे द द मिरा विदा र्ग्नास्त्राम्नेनामायर क्षेत्रायदे दे हिन्। विस्रमायवे प्युसायवे र क्षेत्रायदे दे हिन्। युवा स्रिंह अस्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वना विक्र के स्थान विक्र के ति स्थान के ति विक्र के ति र्यवःस्यायक्षेत्रयाक्षेत्रयायवे देशेर्यास्या देवायावर् मुन्दे हेरा हेरा कन्या भी दे हेरा अर्केन यदे दे हेर दर यह यह व हो हे य सु इय पर्हेर सेन्य वर्ष्यत्वा वेषानासुरसायवे सुरा त्रीयावित्र कुवा सक्ता वानानेनासाया गमेगमा मेममान्या मेममामा मिर्मान्यूरायवे दे हिर एवं दे हिर हो देवमा र्शिवावित्रक्तार्मासकेन दिक्षरार्धिक स्थाप्त विद्यान्य स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त तराक्रिताराष्ट्रयो.ता.झेट.झूर.तियो.राष्ट्रये.ते.शु.सूर्यातो द्यो.सूर.व्ययो.ता.सूर्यासूर्या

या हार विश्वा स्वायश्वरा विश्व दिन विश्वाय निष्य विश्व श्वर मुवा या अक्टर्यहेंद्रपर्देर्ह्रिक्षरया अवर हे.यर पर्देगा नेश.यर शतर होर. ता वश्यी क्वार्वेट्टा रह्मा सैव क्टर है मैं रह्म सैव र वेट सेव प्रते है. हिन्यकु नहिषाने। ने द्वाया या किया में स्वर्ग विकासी विश्वाबित्रात्त्रिय। कि.त.र्.ह.तपुरायभुर.वार्चेत वत्राक्षितात्रेयात्रात्र्या गुःदेक्षराद्वा पद्यस्याद्वरक्षर्याद्वरक्षर्यात्वर्षः क्वायवे वर के दर में हिर य के दाय वर क्वायवे हैं हे दरा के अ से न साथ र्श्ववाशाने दिर्त्यार्ट्स विवासक्षेत्र वार्षा चिराक्ष्या प्रति वार्षा विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास यवैदिहेन्द्र न्द्रित्स्वित्स्वित्र्येक्षित्र्यं व्याय्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या यान् जुन्य के दे देन का पर दे हि द । मु नि के नि के कि का पर हु का पा हु का पर हि का कि कि तालामी त्यूरे तपुर्ह है। की कि का जमा रेट तु हैट हैर वेट के विषेत. यासाम्बरमङ्गात्र् । वास्त्रयामा सुवास हिन हिवास या है। विवे या यो वो विवे न तत्। ब्रामिश्रम्भात्त्रः श्रेत्र। द्रश्रमान्द्रमेत्रे स्वावर्धेत्रः वाद्मेत्रे स्वान्ते। ब्रम्बद्धाराद्वर्याय्वेष्ठवायवेष्ठवायवेष्ट्रम्द्रा स्रवहेवायवेष्ठम्यवेष्ठम् र्थेर्। रट्येर्टा वश्चेर्त्रयामग्रायवे इवावर्धे मर्टा ह्वायावानिवा चवु स्वायम् र मुराम में निर्मेत्र र में रवाश्याद्व याविवायवे स्वावर्त्ते र विश्व पर्हे र यवे कु सक्त र्ये र दे। स्र स्वावश नुभग्राहेब रग्रास्तिर रूर् न्र प्रतास निर्म र प्रता न्र मार्थ प्रता न्र मार्थ प्रता प्रता न्र मार्थ प्रता प्रता इवायर्चेराधेइयस्रेन्स्राय्हेन्यवे स्त्रेरा विदेशयन्त्यम् स्थायान्यस्य

वर्तेत्र। बर्तावार्ष्ववायवास्वावर्तेत्रः इससार्द्धाविषा । वर्भेतः द्रसासास्रवास्वा वर्त्ते र क्रुमालका से पार्ट्य प्राप्ते में पार्ट्य के पार्ट्य प्राप्ते में पार्ट्य प्राप्त में पार्ट्य में पार्ट्य प्राप्त में पार्ट्य में पार्ट् देशास्त्रवाषायायषाद्रवेताषाहेव सावेदाहेतायषायहत्वषावया वया द्वियायवे स्वाप्ते र लेब प्रबादे द्वार पहेंदि या लेब प्रविद्धिर दि दि प्रविद्धिर या तरि होते । पश्चेर्द्रस्थित्राचेर्द्रप्रदेश्चराष्ट्रप्रक्रिं सक्ताचि श्चेर्त्याचे श्चेर्त्याचे श्चेर्त्याचे स्वार्थित्र प्रक्रिं ताश्चेष्रत्र,श्चेंचेश्वाक्षी,केषु,ष्रवाद्त्र्य,देव्ये,देश्वाव्युश्चिश्वाद्युश्चात्त्र्यात्तिरत्रः क्रियानर्देशाम्थेशासी: इसाताक्षेत्राचेषाः च्यान्येशाः च्यानाम्येशाः पर्वेशत्म्य्येशकुन्ध्रयाद्यात्र तिश्वे द्विष्य प्रवेद द्विय प्रवेद द्विय प्रवेद द्विय प्रवेद द्विय प्रवेद द्विय वेब पर्व महेब प्रेर झेरे दर दे दे रे रे रे राधिव क्षय पर्व र कुवादर व वायव की कर वर्षः विष्ठेव रिष्ठेव दिर विदेव राष्ट्र वाश्वया सूर वार्स्चिय या भीव विदा स्विय स्वया देश बैर्ट्र्र्ट्र्ड्रेबर्ट्रियंदेबर्ट्युक्ट्रियंत्रदेवर्ट्युक्ट्र्यंत्र्र्याश्वाच्युक्तुक्रियंत्र्या द्रश्रदेश्वर्वाच्याब्रद्राच्याचे प्रविश्वर्ते व्यव्यक्ष्ये वित्र्ये वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र हिर्दे द्वा क्षेत्र दे प्रमुक्त प्रमुक्त प्रमुक्त वा दे स्मार प्रमुक्त प्रम र्ने.जेट.श्राचक्षेत्र.की.जेश.की.सै.ज.की.रे.टर्। ट्याची.सि.चर्ट्राह्यश्रव्य स्त्री.की. है। गुर्वार्श्वेरायमा मुन्देर्गायार्गायस्यानम्म । व्यवायमानि वे श्वेरायारा क्र्याम् रच विश्वराह सेराया दि सेर सेया के प्रथट स्वाय लेवा वेश प्रथि था.

ततु.हिरा के इ.त.थ्री हे.केर.चश्चिषशतश्चर्येत्रेर.द्रशाशवर.हिथ.ततु.क्र्र. नावनानुः व्याद्भानितः । स्वाद्भान्ते व प्रदेव प्रदे वयुर्डं अची दर्दु हे व पहे व पवे द्री व विर मायव प्रत्य प्रवे के। दे द्रा देवे क्र.स.रचेश्वत्रक्षक्रद्रश्च.पर्देश.तर.सेर.कुचे.ब्रोक्ष.चोश्चलत.श्चर.ट्र.चवु.क्रम.तर.चर. यायाद्वीरार्नेर्प्रयायमञ्जवान्त्रियानीत्वान्त्राक्ष्मेत्राक्ष्मेर्वान्त्रान्त्रा याच्यायाद्या वे अर्थेनशह स्थायद्राणी प्रत्याव्या नुष्या अर्था प्रमाणि । दे.श्रवर क्षेत्रतर वहूर्य पालुब पतु क्षेत्र क देवा तथी पश्चेर द्रश्रामश्चर स्रीत त्र मिन्द्र दूष मिन वार्षे र में बेंब क्षेत्र कर के विषय कर में हैं के मेंब कर कर कि कि कि कि कि कि केंगान्ना नियविव युवायावकुनान्निवी । सम्साकुसागुमाने अकेंगायेव देश विश्वानिश्चानवुः हिन्।।। शिश्वानः स्वान्य शत्ते विवानितः विश्वानितः स्वानितः विश्वानितः विश्वानितः विश्वानितः श्च पर्व के अस वेना साम निर्मा निर्म पर्व है से पर्व अस पर्व र पर्ट सुवा क्यायर्वे र च के स्वाप्त के र क्षेत्र के भाषामा । दे द्वा गुक् के र के के र के र के र के र के व सम्बद्धाः क्षेत्र से दिसः ग्रीय क्ष्या महिषाणी । वर्दे द द ग्रीव क्षर विवस वहिषा हेत द्रव.क्रव.व.क्रव ।रेतता.कंष.केर.केता.वाश्वर.त.तर्शाता.लवा ।केर.पर्दुव.क्रवाश. यठन्यारेवार्डमायदिवायान्या ।ने हिन्सर्वेटार्वेमार्वे रेवास्यूराह्मस्यमार्गा विच चर्चा द्वा स्व दे हे पकट द्वट द्व । विस्ट मार्थ स्व प्याप्य स्व क्वानालका विश्वेरका है र क्रिं वर्त्वा अक्षर दशक्ता मानालर । कि क्षेत्र वर्ष्ट् वश्वान्त्र्राम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्चान्त्रम् वश्च तश्यद्वाक्षश्रक्षत्रम् मुवायायवरा दिख्रियक्ष्याद्वयाय्वद्वावद्वाया व्या दियायाद्र रेवेदे येवा या वन् नाहे र केद र्या दिस्य मुवाविह या के अर्थे.

क्रवार्याया । विद्रार्यित संक्रवा विदे वर्षा विद्राय व पश्चित्रेयः स्टब्स्य क्षेत्रः यदे । कर् लिश. छ. प्रवश्रामीचे दे वर्ष । इचा शक्या विष्यं क्या विष्यं क्या विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं वह्नांईर.पेषुःचाववाःग्रेरं.केशश्रद्यवःतर् ।शह्रूरःपषुःकुशःवाःपरं.हैयःवहेत. गुरक्षेत्र विष्युत्व विषयः वर्षेत्र विषयः वर्षेत्र वर्षे वर्षे वर्षेत्र वर्षे र्मिश्रास्य विश्वश्र श्री वर्ष देवी वर्ष वर्ष सम्बन्धिय श्राम् तर्ष मुक्ति ग्री वर्षे विवर्ष । श्रीत्र मिट्ट प्रचट क्रिंग में जा शक्ष बे जेश क्रिंग जे क्षेत्र में प्रच में जेश हैं व सुप्र च जेश श 位上、单切、对架单、对更单、打工、着工、打仗 la去似、近上、单切、口切、口皆单、丸、而单、少上, विषयःत्रम् मेर् देश्याप्र क्रिम् ह्या। अर्थे ज्या। ज्ञा । क्रिम् हेरे। यथः पर्देशः वर्वेट.संबंश.केज.वर्षंत्र.जूटश.वर्ट्य.क्रिंग । प्रव.केश.वर्क्.गीय.वप्र.शक्यं.वर्षेश. 白田下、山 [夏之,勇士,口山,为时,爲之,且口,更到,祖,娶工 [更知,曷女,古天之,为之,之时, वर्षेव कुव वदे हेवा । बद हं न है।

चित्रप्रत्येष्यः चर्ष्यात्रच्य्येष्यः चित्रयाच्यः विश्वः चर्ष्यात्रच्यः द्वाय्यः चित्रयः विश्वः चर्ष्याः चर्ष्यः चित्रयः चित्रयः चित्रः चित्र

यम् केष के में प्राप्त के प्राप्त केष

वि.श्रु.वी.पे.शर्डे.कु.पि.ला कि.वशव.२२.ग्री.केव.तू.रतवा.वाबर.त. वर्षायवे सन् द्वादेश स्वादेश स्वावया ह्विन की हिन्द येवे नान न नुष्य या अव देन नाम वा चतुः थे.श्रांचेश में या मृत्य मार्था केश ले. नेश गीया । ट्रिम ही ग तह्य प्रमाणा वा वि यवैन्यया । वियायन्तान्यः येवि स्त्रीत्येन्तः। । निवेत्रस्त्रेन्यः स्रस्यस्यस्य यायनुन्। स्वानु स्टिन्वयायावये न्द्रीत्यास्य विवास्य क्षा क्षा विवास स्वापकर पा । यह व ब्रेस्यायुग्राह्मा विष्या है स्राप्ता विषया है स्राप्ता विषय गर्डी । कुर् दस्स्यागुर भी कुवारी सकेंग । या मस्यारे दे के दा मार प्रदेश मार । स्रातिकातर्थात्र्यान्त्रमात्राचनद्या विदेत्रःक्रियः व्यवस्त्रत्यीःकेवात्रार्थात्यावारः यायनुषायये हेन्बार्यस्य एकन्यायानुन । कुन्निहेषानी समानानन । यनुषायये के पहेरी र्वारकात में वार्ष के प्राप्त विषय का स्रीर मिन्दा में देव अव र्मार्चर्रुरख्या म्द्रम्यार्म्य केर्म्स्यार्म्य केर्म्स्यार्म्य गसुमा म्रामेर गुःकुर या सक्ष मुः र मेर मुर स्वा सक्ष र देव र र सम्बन्ध परेर

कुर महिका की नहीं न नवका कुर हो हा नव ए प्यार्थ । नव महिला हा केर ही । क्रि-इवावर्त्त्रेरामी क्रिन्नरायस्यायदे हैं क्ष्यायदे विवादरा अक्रिन्मेशरमात्री. क्रा इयावर्ट्रियस्य क्रिन्द्राचन्नस्य देश्च वार्ष्य क्षेत्राक्षेत्रस्य स्थापित्रस्य स्थापित्रस्य स्थापित्रस्य है। क्रिंयवर्ष्ट्र-विषा इवावर्ष्ट्र-क्रुन्ड्रस्थर्थाणीक्षेट्या विष्टान्यवाके दुवानु देश। दिन्दिब इया वर्डे र अ कु द ग्राम्य। वि व स्वा वि व स्व दु दुवा ग्राम्य। देश मस्रम्यदे भ्रम महिस्याया देवास्य प्रमा वन महिसा दर में दी दिन र् इ.श्रन्जी.कैंन.जाह्मचन्नानेनान्त्र.प्र.चतु.कैंन.विश्वानी.लून्च। इ.श्रन्जी.कैंन. महिषाक्षेत्रणु कु न व्यवस्था स्याधिव। न न मिल्या वयस मेश रे रे प्वये कु न र्पन्रप्रद्रायम्या अध्यवना वर्षेत्र्रहेर्युर्थेर्थे स्थाय्र्रिरवर्षेत्र्युर विश्वर्त्तर हो र पर पर वर्षा या ही सर। वयस र र मेश र व हैं सम पर हिनाया । इया वर्द्धेर देश दे प्रमान प्राप्ति । देश प्रमान प्राप्त प्राप्त प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प महिषा मानव युगका द्वाना य दरा र युगका यन न यदी । दर ये ही इस विष्ठेव । कुन्यमुख्यार्टे में वान्त्रन्तु विषा वान्या वान्या के दिन की कुन्या के वार्या गुःकुर्णेवाबिरादेश्याकुर्पुरायम्रायाद्राक्षायम्यादे। महिबाबेर्गुकुरायया क्रियाव वा प्रतिवादि से मार्थ किर विद्या कर ने विष्य प्रतिवादि वा क्रिया विद्या नुष्वया गर्देशकार्त्रे कुर्यार विग ।गदिशकार्य कुर्या विवशकार्कुर प्यत्र व्या प्रिन्तिसायवे क्षेत्रा वित्रामसुस्रा यद क्षेत्रामी स्वायसायाय वित्रम क्षित्रामसुस्रा र्ट्रेन्डर्न्, नियान्तर्भावया क्रियामुस्य मित्राम् नियान्तर्भावना र्देव में है प्वविव पर्दा मा में भेर ही मुर् प्यव व परिष भेर ही ही प्यव प्यव हिया

यादेशद्वाध्वावेशवेराद्री वित्वाचयश्मेशदेरदेरवेरकुर्देशकेर्येरणुकुर धेव वसासाधेवा धेव व दे नमुस्राहे के हा दूर दु नमा हर सामा दूर प्राची सा लुब्द्राच्यकानेकार्रात्राच्याकृत्रक्षारुवा ग्रिकास्रेत्री कृत्राच्या सः अर्'ग्री'कुर'णेक्'मदे'धेरा वर्विर'वाबुआ विदेश'म'रट'युवाबायाविह्या विदेश' ब्रेन्'ग्रे'कुन्'ग्रे'नेब'न्न'। वयस'मेस'रे'रे'यवे'कुन्'ग्रे'नेब'यम्न'पर्वे। ।न्न'र्ये' बै'इ'सेन्'ग्रे'कुन्'पेब'ब'ग्रिय'सेन्'ग्रे'कुन्'पेब'ययाष्ट्रय'हे। ने'पेब'ब'घययाह्य ' श्रुषाणु पदे के ब दर हिंद हिंद हिंद से बाय पर पे बार या पहिषा द हो र खेद पर पे बार पे बार या पे बार या पे बार य वर्ह् निवानिक्ष्य निवानिक्ष विवानिक्ष विवानिक् लुबे.तब.विच.तवु.कुर। चेब.त.ज.कू.बे.र् रे.श्र.वबर.तर.वजा श.कैर.ग्रेब. यदे य के व रे में बे बे व रे के व रे में में के व रे म म्बिबर्मन्ययानविष्ट्रिन्द्वयम्बिन्द्रम्यः द्वायान्यः स्वायान्यः स्वायान्यः स्वायान्यः कूट.ता.चधु.चर्ह्र् .चेठ्र.बाद्घ.च्र.च्य.चेश.बेश.कूष.त्र.च्या.त्र.कृट.तश.चर्चर.तु.र विषाचेर। देश्वायवरादेक्रामदेशामु भ्रात्विषामु क्रिंस्य प्रवेश्वराये पदे हिंदा र्वेरक्षेर्णु भेषादे। क्षेत्रप्रिक्णी पुर्वि क्षेत्रा प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र यवैर्देव विवयवे क्षेत्र है। वन में क्षेत्र प्रमा क्षाय है र की वे कुर र न न न । वरे सेर.कुरा.सूर्यामातमार्थातमारा ।रे.बु.क्वा.पर्कूर.मार्केर.री ।श्र.कु.यावय. र्गास्त्रास्त्रा । रराये वे द्वारा स्त्रा हिना स्ट्री स्त्रा । स्त नास्त्या देशनास्त्यायदे द्वेरा नहिसायाया दे सेद्रायका नास्त्रास्य र्टा गुर्यायसम्बद्धयमिश्रम र्ट्येदी रुषाविर्ययमा गर्या गर्या

चनद्रयायायहेव वसा द्रायुनासाय न । इस्बराया नेसाय न्नाना निवा हो द ययकुर्द्रा इस्रियद्गुनान्नुनानुन्द्रिद्यायाकुर्द्र्वर्द्राकेरावक्षायवद्रादे हुदे हुइ अळ्यस द्वाप इस्या वया हुव अया अवस्य र देव पाय हुद् गी पहेंग वेर्'र्'वर्र्र् वेर'व'यर'शे'वहर्दा देवे कुर्'न्रेश'यशक्षेत्रत्वासुन्यस्य श्रामक्षमान्यान्यान्यः क्यामक्ष्यान्य न्यान्य न्याप्य व्याप्य न्याप्य प्याप्य यासाधिक यदे हिरा विदेशयायामावक युवास द्वावाया दरा रह युवास विदेश रट.तू.ब्री श.श्र.त.रच वि.र.जश.झ.श्रश.च.ब्र.चेश.तयु.ज्यूर.श्र.क्र्यश.चश. क्रेन्यसक्तिन्ता देवार्यस्वायमक्तिन्ता देवविवन्तुः क्रेन्यन्तिवः बिट विवा क्ष उब की के रिवाय हे बा बा वहें ब यदे किर वा बाद बाय की राजा की रहा रहा इं. इंश. शे. उहु थे. तपु. ही ४. वी शेट था. ता. त. किंटी लट. में टे. श्रुटे. इंश. शे. उहू थे. तपु. ही ४. चीबीटबातात्राक्री श्रिकाता हवा बीवहबात दे हैं र चीबीटबाता कि दे दे तहे थे। वेच. म्ब्रिट्रात्रशा पश्चिट्राप्ट्राय्ट्राकार्ययाक्ष्यातात्विट्राट्रायक्ष्याव्या वर्वाद्राचीनामुक्षाक्षात्राव्यवद्रादे। दे हे नुराद्राद्राद्राद्राक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्या रे। वर्षाम्भुरित्यक्षा पश्चेरितावविर्यवर्ष्ट्रियायर्टा ह्र्याबायवविर्यवर देशयायायहेन नशक्समा नुग्या गुः सुगिर्द्या गुः सूया मिन हेन या कु न मिर्द्र गि स्ट्रीय मेर्न्या मार्वा केर्या रटा जीवा मार्वा सवा या प्रमुद्र रेश में के मार्के र वहिमा गुःवर्द्द्यान्द्वायाराध्यरादे। द्वाश्यर्थानुः युवाशाव्युद्रायुवाशार्द्वानीर्वाद्यवा

वहेब्यवे कुन क्षेत्र कुन में निया प्राप्त न येव क्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वर्षेत्र या या कुन १८। शुःश्वे भुःवशुवायवे कु देन के देन के देन के स्थाय दिन विवेद वा विकेट विकेट हूंन या या क्रा वादा के वा सुदे देवा वादा द दावा यह दुवा अक्रेन यदे होवा सुद क.कृष.चर्.रेथ.तथ.ह्या.तर्तथा.क्षेत.क्ष्य.त्र्य.क्षेत्र.क्ष्य.ता.श.क्रेर.रटा वाचेवाश.सेव.र्यवाश. वर्द्व कु बुद वर्षिय हेर वह हिस्रय सर्क्ष्य पर्व हैन हिन् कि के देर वह पर्व पर्व हैन वर्वमार्क्यमार्क्रकर हेन्याय कुन्य वर्षेत्र वर्षेत्र माय कुन्य कुन्य वर्षेत्र वर्षेत्र के स्वामार्थ्य कु मुन्यत्र्र्यात्र्यात्र्यं विषयात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या नेबारे रे प्रदे कु ने के र प्रवासिक के प्रतासिक के प्रवासिक कि प्रतासिक के प्रवासिक के प्रतासिक के प्रवासिक के प्रतासिक के प्र बे हिंद हैन हेन बायते नेबारवादर । धे अहै यहे हैंद द छेर के जी जो नेबा जैव यवे धुरा दे प्रविव दु दे पहिषा ग्री व्यव ग्राप्त की पार्ट देव की पार्ट पर की प त्रुं महे हूं महे र खेर खेर की ले कि कि महे वा है अहे हैं अहे महिषा कर महे. हिरा देशव द्वर दित्रयर विवाध नवस हिंया नास्य दिशा देश या ताथ दिन । देव न्यायनेव यान्य रे विद्यानु विद्यायायी यने य केव येवे यो ने या द्वान हिंव वया वक्रन्द्रिम् श्रुप्त श्रुश्चरक्ष्य द्वानु द्वेत द्वानु वित्तर्देश स्थानेत इर पहिन्यान र दिन में किर दे अ किर ही जी र वर्षा नेया रवास्याम् वास्याम् । देश्वेस्यावह्र्यास्य वर्द्ध्यायहर्त् हिरा मेबारच कु केर कुबादवा हिर वाश कर दुरा हरे . राष्ट्र के अक्षेत्र कर वर् ना हिन् श्रेमहेन् छवे परिवादिक निवादिक पान्य रेगा हिन् जिना भागवे पने च.कुर्नुतुन्त्र, नेशर्ने विवश्य प्राचिश्य विश्व विश्व विश्व प्राचिश्व प्राचिश्व विश्व विश् ग्रि.क्ट्रम.सेंद्र,क्षेत्र.ज्यं जी योद्वार्गालय तथाई क्षेत्र यहूरे ताद्र होत्र हिंद्र वाध्वेद हैंद

स्रमायमान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्यान्त्रास्य षयादेव देर वर्षिवायावार दुर वी कुर दे थ कुर कुर किर व्यव है। यावव वर्षे के.शक्र.वंशा क्वात्वेर.कंशश.व.केंट.केवारी ।र्ट.ट.ट्व.क्र्यारे वंशा व्ट्र. न्यवाञ्च स्याप्त्र निष्या विष्या विषया व वयशक्तिक्षाल्या वित्रायायाक्ति क्षायहित्ययाक्ष्याय वित्रिक्ष वर्ह्ट. चेतु वर्द्धम् क्रिंशव सेंट्रे विषय क्षेत्र विषय के विषय है वर्ष विषय है वर्ष विषय है। सर्याक्तियां गुना मुवि होर येव की वर्षि ये प्राप्त मिर प्राप्त मिर प्राप्त मिर वास्त्रायावान्त्रेमा वयमाकुराग्रीरवे यायमर यार्गा वर्मायावे वना मुप्तमर यवी । इटार्स दी ह्यम कुर केंबा छन । हिंद था द हे व न सुस दु थे दि था ले.र्बट.व्यव्यक्तिरे.टेट. <u>१.६.लर.जुद.क</u>ेर.श्र्याश.याट्र.श्रीय.व्यव्यक्तिर.क्ष्यश. संस्रित्यवे क्षेत्र। चहित्राया वाचित्रश अक्तिर दिन् कि सवे दिन वनर या वनर क्रिन्जीशह क्षेत्र प्रमान्द्रिय पहुंच पर्ता । प्राधित वर्ष प्रवे क्रिन्टिं हिर्वार्धे व वर्षे शास्त्र वर्षे हिर्वा क्षा क्षा है व हिर्वा कि वा कि वा कि वा कि वा कि वा विकास त.मु.म.र्रूट.पर्केट.पर्क.त.ब्रहेश.से.लूट.ततु.हिरा पर्देश.क्टेंट.जुवे.पर्वे.पर्टेश.प्र. वदिक्रश्चित्राच्या हिन्या इत्या वहिनायवे वहिना होन्यु सार्विन दे। हुन् हु सार्वेदु पर्क.पर्केट.ता.वा.क्रिंग.धे.क.तप्र.वर्ह्या.ता.ट्रा लथ.वाया.वा.क्रिंग.धे.क.तप्र.वर्ह्या. मन्ता मन्त्रकृत्यक्षिके हे स्यर वहिषायव वहिषा हे द्वा सुरायद प्रति । ट्रेक्ट्रबाह्य दर्मा वित्रवेद वर्षे नार विन । कुर के अका किर ग्रे खुन केर प्रदेश देन देन कार नाय पर क्राय रहा। किर

गु.श्रुश्व-द्रेष-द्रेगश-२ गव.च.स्यश.ट्र.जय.र्ज.च्यु-इ.त्यश्य.मु.स्रुवश.वळ८.तश. दे सर प्रविधा पर्व हिर वर्षा पर्व प्रविधा वर्ष । विद्रा विद्रा विद्रा पर्व । विद्रा वातर्थात्रयुक्तान्त्रे में अन्तर्भात्रहें प्राये कु अक्षत्र वित्तर् वित्तर्भात्रये कु न्यार देश्वर्शीश्वर्यस्य अर्थेरवाश्वरद्यात्र्र्ये विश्वस्थात्र्यं विश्वर्षात्र्यं विश्वर्षात्र्यं विश्वर्षात्र् यश्रावितःहै। वर्षायविः इक्तिन्। देखेरावह्रश्रायवे क्ति श्रायवा गार देवे यम्र क्रिं सालवायवे हिरा वर्षाया वाहें माहे इ क्रिं लवावा वर्षायवे इ क्रि.लुब.तब.श.विव.झी ट्रेंधर.वर्डिश.त.चशर.वर्टेश.व.हुंश.बश.इ.क्रेंट.टे.हुंट. पर्वसायसायम् पर्वास्त्रेर। दे पर्वसायदे स्कृत्र साथवाते। दे सास्रेर ग्री कुत यान्त्रवादानुष्ट्रा देक्ष्यत्व। इत्यायान्त्रियायानुपाने। वित्रकृत्वयया श्रेर मे न्द्रम मुन सून परे वसा इसम हिन् की वसा दु हेन वस की सिन सन सुरा है। मान्द्रायायवेवसायायेद्रायेष्ट्रिया देन्ह्रयायेद्रायद्रायदेश्चर्त्रक्त्र्यदेश्चर् त्तर्त्तेत्रा वर्षात्तव्यम् क्रिंत्रिक्षत्रव्यक्षत्त्रक्षत्त्रक्षत्राध्यक्षे क्रिं क्रियायान्त्रिम्बर्धियदेवन्त्र्वर्धियम् क्रिन्म्बर्ध्ययात्त्र्यः वित्रायदेवर् मेरा देक्शास्त्र इन्त्रायाम्ब्रायाम्बर्धायाम् वन्तुन्त्रावन्त्रिनामिश्वे विन्गु देव स्थायम् सवायर हेव। वर्गव विगमिशके सास्ट या व हिन् या वर्गव विगानीबान्ने अर्देर पक्षव पान्त्रसम् क्षापर पक्षत प्रवेश में विषय पाने। वर्षा

यव इ कु र के स र का कु र है। समाहि र ग्री र के र स य व मे व र खे व र दे । दे स विर्ग्णु अक्षर रेव पक्षर पर्त स्वर्भ पर्द स्वर्भ पहिर् छ इसमा पहेल स्वर स्वर स्वर पर्वा पविर पहेला बनायावान्यायम् वात्रेनवाय्ये स्टिश्य देक्षा वर्षा द्वीरमायायुर हेव. मुक्षामिन मुन्द्रम् स्वायायम्या वर्षेया स्वार्थिन देश मिन मुन्द्रम् मुन्द्रम् स्वाया देश स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स शु. दशका विषय ता तप्ता तत्र हिरा दे कुष तथा हु हि हिर प्या हिर की र विर श यायमेवाक्वार्यिन दी मिन्नावा क्री मिन्न देन मुख्या इत्तर हिना वे मध्या नवता वार्गीवार्विरमीक्षिवाहीम्। पश्चिर्मस्यावहिरादेशमध्या इवार्वेर पति। देक्षेद्रावेद्रम् । इस्यापिक्षामी मार्थादेशाद्रा हिन्सादेशाया देशाया क्रियम्बर्गाम्यायम् वायमेवसायवे द्विता दे क्रिया स्त्रीय द्वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वि हिर्गी देवूर मारा व मेवा स्वापित हो। देश मेवा हिवा मे पान मन मारा मारा महन यदे क्षेत्र सार्वे द साय व वे वा यदे क्षेत्र द के सारु मा वे सार्रे हे गात वसाय हुसा ग्रिमार्चिन् ग्रीन्नित्मायायवेषाळ्षार्याचिन्द्री वहेन् च कुनावनुन न कुमार्थ मुञ्जूवा वार्वह्र्यान्त्री अक्ट्रियामामळ्यावह्र्यात्राभ्रवमाम्। देवव्यानेवामामामामा ब्रे.म.जम.ग्राटा अ.म.र्ट्.भूव.र्ट.क्रेट.ट्याव.वा विट.क्य.ब्रेच.ब्रेच.तदाववश.वट्ट. लुया क्रीर.ग्री.क्री.शद.क्री.शर.ग्रीरा विश्वर.घ.जरीश.घंष्र.घंष्ट्र क्रीरी क्रुश.चीशेंटश. ब्रुवायायी अर्वेट विश्वाद्वारे वा प्राप्ता प्राप्ति क्षा विश्वार विश्व यम् वक्षत्रम् मुद्दा दे दे वक्षत्र द्रायद्र प्रवे धुन प्युव द्राम् सुद्दा है। दे के द्रायमा

गट्रविगःविद्यान्ति । व्यानिक्ति । १८८ अथ वीत हरा। वि.शह हें वे की शहर वे शहर वा हूं ये बाता। विट किंव. र्रे. इ. तर्रात्में दे. व. देवा तेवा विष्या विष्या प्रवासिया विषया १व यद्दा विदेव यर मेद्दा दिया माद्दा के अअव यद्दा अकेद यर मेद्द यन्द्रके वद्रवस्य वद्रम्य । वद्रक्ष्य देश्वर् राष्ट्र व द्रम्य स्वास्त्र व वस्य विश्वार्थरश्चिर वहस्रार्वावाववार्यर वहार्यर। सर्था क्रियां में की वर्षात्र क्री विश्वर छेद्र विश्वर दा छेद्र वाद्यर दा विष्ट दा छेद रावे खुर छेद दी देवा र्ता वर् देव क्षाचर वर्ष हेर्या । मार मे द्रा सुमाव सम्मे देरा । सरस हमः यक्षव्यादेव केव ग्राटा विवयायर रया दुष्यव प्यायेवा किरायव रया येवा कर्षा विरश्कियावहेंबातविरात्री गिवि.क्रीशारव.से.सेशातर वी वेश. र्षा । रुषर द्वानी कुर 'यथ गुर्ग कुर गु सबर हुन 'यर्ष य' है। । स हुर वर्वेट.वर.श्रु.वर्वेर.मू । वृक्षत्रक्षेट्य.चेट.। वाक्ट.व.वीच.त.जका.प्रेट.। रेतवा. स्व वर्षायसाम्बर्धना मानव सेरा विह्ना हेव मासुस मी रेव केव मुरा हिर म् तका है हिंदा में अक्रम विद्गान के हैं है । विदेश रेट प्रमेर ता इसका नावश्वा हिंगबायवे इया वर्षेत्र देशाय हेना विनुषाय ना ना ने बाया रे.लुब.रेट्ब.वीटाई.केर.जवी.टा इ.कूब.बशब.क्ट.वाक्ट.वेट.कुट. । श्रु.पंब. रवान्नवान्त्रवान्त्यवान्त्रवान श्चरमान्या विश्वाहेग्'र्'अयापह्यायापाण्या विरयापार्ट्यायुवावहेर्'यूर ता शिवत वाति क्र हेवातर्टा शिवाक्षित के वात हित वात हित वात विष्य विषय विषय जा चीच.कुष्त्रचा.मू.ब्रीट.तथ.पीट.। टेतवा.र्वष.दर्श.हश.वश.वीश.वी ।द्रश्र.

याम्बेशगादिः स्त्राचा । द्यवास्वावद्यायः स्वाधिदः द्रा । कृदः द्यश्याग्वादः स्व चार्रु.स्.लुवा व्रम.चम्रीरम.तातु.होरा के चार्यभाताुवी लुक्.है.धे। वीतु.क्रत. वर्चेराम वे सु गाञ्च ना सुम की सान तुर सह द या में मूद वा मर्ने में प्रदे पा के में त्रातर्यात्र्र्यात्र्र्यात्र्यात्र्येवाचायरायाः वीयात्रात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र त्रमधा गाव हिर्मा त्यमधा निक्के यदे त्यमधा र र यही त्यशा सक्रमा तृ स्था व न्दर्य पहिषाणिव है। व । प्रविष्य है। अमेव में यु ह्यू प्राचित्र देश परिष्य हैंब पर्यादेर प्रथा न रायारे हो। हैन बारियान के पर हैंब परियान की बार्य राया है। विरायन्त्राक्षरावदेःद्रश्यास्त्रान्। यहास्त्रवास्त्रस्यवान् । प्रविसहन्। वयवासः ताहितान्द्रतानुष्डाहराहरा हुवाहित्र्यावनेवाहिर्न्यह्रमान्द्रियाहराहर् श. गुर्पोबायक्केर्द्रेश्वर मार्ग्यहरा र्गुवायकेष्ठिःस्या वर्षात्रस्यः क्यायन्त्रिमासुसारहर्। मुगुप्यमेशायिक्षिम्स्याये स्वानिसायिक्षाम् वास्त्री रित्यास्य ज्ञानका प्रमान हेन कर में देर होता है न कर है र हैन व्योवायार्भेन्यामवान्द्रमामुमामह्ना देन्यायी हेमावन्य मुनाउन वहेन न्ययायमेश्राम्भेद्राम्यार्ष्ययार्ष्ययार्ष्ययार्ष्ययार्ष्ययार्ष्यम् वर्षेत्रयश्कुन्धेः यद्गतम्वायप्तरा देशस्य स्वयम्बयपाद्यस्य सर्दिन् । स्यान्य वर्षात्रव्यान्त्रश्रम्पूर्यं द्वार्ष्य्यायर्त्र्यं यात्रा क्ष्र्र्यं व्याप्त्रा ीपाबर्टा अवर्याची नन्र क्रियासर जेगबा सक्ता मुंचूर प्रधार र जेगबा दे.च्युकाग्री हेबाबी तचर त.लुब हु।। ।। हीबाता विव तर्वा हु ह तकर रेवर. ह्यमार्गी पर्देश । सामस्याप्त्र प्रमान्त्र मान्त्र मान्त्र नामा । स्राप्त र सीचा

त्तु विवानी विशापनर वार्षा । सहर नी शाद्रशाम वर्षे देते के वर्षे राष्ट्रशाम व नुगायाम् अकाया देव देविके प्रेक प्रेक प्राची प्रेका वका ही वाप ह्या स्वाप द्वाप प्राची विकास विकास विकास विकास में निया में तर्बा तर्वा वाया वाया वाया विष्या विष्य के वाया विष्य के विष्य के विष्य के विष्य के विष्य के विष्य यायमानवर्याहर वेमायर पुर्वा विहेमायायावि। रेमायहेमायी र्वेर रू कुचार्ट्र्श्रात्रार्चात्रात्र विशवशात्रश्रह् स्र स्थापार्ट्रा वर्ष्वेश्रश्रात्र विश त्रह.क्षेत्र.वर्ष्ट्य.क्ष्य.क्षा क रिट.त्रुड्री क्रूट.प्ट.ट्ट.त्त्र.लश.हेत्र.क्षट.पश. क्र मुरमानमा क्रिं र्रा प्रमानिकायायदेव द्री वायक्रिं र्रा नुवामानमा निकार इस्र-विक्तित्त्रविवाद्विवाद्विवाद्विवाद्विवाद्वियायम् देशविक्षायाव्वेषायस्य देशवाद्वियायस्य ग्रीट.टेर्ट्रश.चीव.श्रा.च्रूच.तप्र.श.चरी श्रुच.टेर्ग्य.श्रुच.श.चार्र्यश.या.टेश्चेत.वप्र.श्रु.च्यु. हिराहे। क्रिन्ह्राख्टायमा लटान्यान्वरावश्चराष्ट्रियान्वरात्रा विवाधिया क्रिंगीद्धान्त्रायाता विताद्वार्धातात्रास्त्रास्त्राच्यात्रास्त्राच्यात्रा क्रवे.तूर.वर्ग्ने विषाचित्रात्त्र.हिरा क विषेशतात्रे.रेघट.क्रश्र.या.ह्य. वयागुर-द्याक्रवादर-र्द्यायाक्वायविव पशुर-द्वेषाते। देः यावशुर्वाद देया विश्वात्रम्यम् सु स्वरम् गुर्द्र्यः गुर्द्या गुर्द्या के रादे हिर है। सहस्र हुर प्रमा र्शियायिरार् वे अल्वास्येता । र्सिक्वा इसस्य वे स्ट्राटार् । वासर पद्र.दे.क्षेट्.श्र.पंबातमा विश्वेतवा.ग्रेट.क्ष.त्रात्यीय.त्र्। द्रवायक्षेटवात्र. ब्रैरा नगर इस नग मिन वस नस के मान र में साम ख्या पति न सुर स न र स म्ध्रम्म मुद्दूर्यर मार्ज्युर्मस्य ग्रीट श्री प्राप्त दुव प्रास्त्र मार्थ हो। ग्रीप क्रिव स र देश शत्र विषय केर मेर किर भेर वे कि प्रत्ये विषय के प्रत्ये

नासुरसायवे भ्रेत्र अ विस्त्राया वात्रास्या देखा नहिसा गुः देखे देखा द्रभावेष्ट्रभाक्ष्या द्रभावेष्ट्रभावात्व्यक्षायात्वेषायात्वेषायात्वेषायात्वेषायाः कूर्यमाग्रीमार्चेर.रेचे.भर.विवासावायमाहामावासाचीसातासामार्चेर.वुटा ४८. वन्यार्ह्रेणमार्द्रमान्त्री कुर्ज्ञेन नेरामानेषा । भे नेरामार्द्रणम् अर्थे देवमार्दर इस्रथासन्तर्भापर नियान्यर प्राप्त विष्या विष्य स्थापनि । मु. मक्रव देटे. लुबी पहुँ सम् हूं प्रां भी सार्थे ट. रे पे अर खें चे था वे था हु सा वी श्रेस. निसाताना निसाताना मित्रात्ता मित्रा मित्रात्ता मित्रात् पद्मार्थायत्रे वर्ते वर्ष्ट्रमा पर्वे मार्थाय हिमा देशाय प्राप्त देशाय हिमा क्रमग्रेच पश्च । मायह न मायवे क्या पर्वे मा सायह मायवे क्या पर्वे मा रेमा यानिश्वायदेश्वायदेन्त्रम् स्रावादेव निश्वादेश्वायदेश में निश्वाय हिन्द्रम् स्राया हिन्द्रम् वाम्बेर्द्रियायार्बेदायार्बेद्रियात्यार्वेद्रियात्या देवेद्रायाया ज्याबानावर्षान्तर। हिन्बायायवे देशाया वर्ते देशसाया । विवसायदे हिन्बायायवे बर्बाक्यामुक्षा । श्रेकामु देशाया क्षेत्र या बुद्धा देशा देशा देशा देशा देशा है । या बुद्धा देशा देशा देशा है क विश्वरातातात्विश्वा पश्चिर् द्रश्चा श्चिश स्वार्टा ह्वाया. रुषा.स्रुषा.क्वा.ज्या । ८८.त्र.बु.हूच वा.रुषा.चु.हूच.टे.च क्रेट.रुषा.केबातवथा था. शवतंत्रवट्र्ह्र्वेवव्यक्षेत्वव्यक्षायान्तर्यंत्वक्षात्ते देव्यक्षात् हेन्य रुश्र श्रे प्रतः श्रेष ने न श्रिमार्थेश मी तथा मिर क्रा प्रतः त्र होर । ने से प्रते क्रा पर्देश गर-रुर-नि-हेब-५८-पहेब-पवे-५ग्रीय-विस-य-ए-कुव-५८-पासय-सूर-वर्देब-पवे-रवाश्याद्य प्राचित्रवायदे स्वायदे र प्राची दे हे शायुआ मी यहर ये प्रीक मिना वर्ष्याये स्थारे मित्राये इवावर्षेत्र वार्षेत्र यार्थे वार्थे वार्थे वार्थे वार्थे वार्थे वार्थे वार्थे वार्थे

क विश्वान हूर्य शाह्र शाहर शाहर शाहर हे वा वा द्रश्रा से विश्वान विश्य वालका रह्मानूत्रावेशालेबारालमार्ट्या विवेशाचे श्रेष्ट्रान्त्रा पुरा निश्नम्याम् मानि दिस्यार्थित निष्या खुवाद्रा व्यया वर्षेत्राया परिषा न्दर्भे ने हे ने प्रमा न्द्रमा स्वापन मान्य मान् गुःग्रबाधवयायय। ।रग्यन्दः भुदः भ्रवः नुः । । व्रवः स्टः नुदेरः सेदः रेसः नेबारी विद्यासीट्यातक्षेत्र तीयाग्री नविद्यास्त्री हात्रवा मुद्या मुद्या स्त्र म्रामा स्थान स मुक्षेत्राकारवाराता स्वा श्रेष्ट्रस्य या श्रीष्राक्षा वर्षेट्रव्टर्वेट. वश्र मी खुरा है 'न्द्र पे 'न्द्र । इन्द्र मिना वे मार्थ साहिता प्राप्त हैं दिया चब्रु.च्येत्रच्यून्य प्रम् क्रिम् प्रवेद्व द्ये ना श्रम्भ प्रवेश सक्ष्य ना विद्या विद्या स्थम । वाणराम्बुद्धावमा क्वें स्वे क्याने मंत्री दर्भ दर्भ क्वें क्वें द्वा वि क्वें के क्वें रटायवेवायकुर्द्धवेर्द्देवायार्ट्यस्ट्रिंद्र्यायुर्वायुर्वे योष्ट्रिंद्र्यायुर्वे योदेश्यायार्ट्या हिंदा त्रात्त्विद्रः र्ट्यूर मुर्द्रः संक्षेश्रक्ष हे मार्बुश प्रदेश सक्षेत्र मार्बि प्यक्ष प्रस्ता प्रकार प्रकार स म्रामा होत्र में मिर्मा प्राप्त का मिर्मा में मिर्मा मिर्मा में मिर्मा मिर्मा में मिर्मा में मिर्मा में मिर्मा में मिर्मा में मिर्मा मिर्मा मिरमा पद्भारमाश्रामान्ता वर्षिर वन् शागुक की मिलेर क्यूर माने के मुख्य पदे कुर शेश्रश न्द्रश्याम्ब्रेग्यवे स्यावे सक्ष्यं मिन्ने मिन्नु स्यावे क्रुर् सेस्स दिन् हेर बेद्रुव्यक्षयादेषाय्विरायद्वात्राव्यक्षात्रविष्ठित्दे। व्यवस्मावसद्दावयाया वायर दें त्विव वान नी क्याय छव दु वाद बाव बाव विरायर क्रिय वेव छिटा। व्यवा यप्रात्ती,श्रथं स्वार्ट्टार्ड्र तथा.श्री.श्रुर्ज्ञ वारश्रवंश्वराव्यूटा की.वर.हीरे.ततु.हीरा

भवाश्या नर. में अवर्ग श्रेम न में राम हुंदे वहूर मा है हि वहना है . हेशक्तरी विस्रामा विस्यानित्यास्त्रित्या दिस्ति विकास है पक्ति वकवाबा दे.ज.बे.क्षेट.वार.च्चवा.श्वर.कवाबा.ततु.इ.चक्चेट.कुबा.चे.वा दे.ईबा.बेश. सूर श.नम.में स.तत्. चर्टे यट्टे श.नम.कूँ वेच हिंश श.नम.वेच वेटा चेरेश. श्रु.वाबामुबायवे निर्मान के अपन्य के केर विदेश केर गवे उर वर्व वर्क र दर्भ हिर या र विंगा सर क्वा स पवे उर वर्क र से या है। र्रे मुर्द्राहरूका वार्ष्य है है है है है न स्ट्रिया अराक्ष्य स्वीय स्वी हिरा द्वरावदास्यक्र में क्रिया मुख्या वक्रम्या देवे हेट नु हेट वर में न्या सर क्रम्याये उपकृत्य क्रांच वर से राज्य वर्षा है। वचच.तत्र.क्ष्य्.व.क्ष्यू.क्ष्य.वेश.क्ष्य.वे.क्षे शक्ष्य.क्ष्य.वश्रा वेट.क्वेच.श्राभा गुःरद्यवेष्डा विश्वक्षक्षात्रायायेषा वेषान्ष्रद्यायवेष्ट्रिया नव्यः वेर.चबुव्.इ.र्.र्.जग्राचिश्वाचिश्वाचिश्वार्ट.क्रियाचश्चाच्येच द्राइ.व्यवेशा ट्र.र्र.र् वश्रह्मेट हेंट र ने अपया अपर्व में देश हेंट रक्षिया दे वस्तर र पहें न हैं। गर्य-विग्राग्रीक्षण्यापुर्यापुर्यापुर्यापुर्वे देवस्याग्रीक्ष्यक्षाकुर्यापुर्या रुषर विवय याना होना विष्यं स्थान निष्यं स्थान विषय विवय या सी रुषर विवय या चार्यरा बैर.वचच.तत्.इ.सेचारा.ग्री.इ.र.वर्टे.चत्.हेरा रू.मेर.टेटे.श.चरीश. मु अर में क्या मर सामलया मु र्ये र दे। द्वाया या कु ने। मुनाया मु अव रावे स् साम्बर्धिस हमायदास वहिषास्यक्षित्र विषय्ति स्वायान्य मिसा वहेब यवे सा के अवे सा नेब र पणी सा वेंद्र श के र बाबा

शक्ष्यात्रान्। जीवाशातविष्यात्रीयाशात्राम्यात्रीयात्रीत्रात्रीयात्रीत्रात्रात्राच्यात्रा चवरायश्रश्चिट्रचत्रक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यत्रेश्वर्यह्रिर्द्यक्ष्यः द्वर्ष्यः ह्वर्ट्द्रप्य महिशागु दर दशमि के मार ले दा पक् पर है। मु महिं में प्येत है। हु में दे हर पर प श्रामित्रमा सम्वेषायदान्युः द्वा क्षिरावदानम् । हैं नदारारानि समसामित्रिकः ववः धुराते। दे इस्रां भी वटा वसा दुटा दटा मुदा सेस्रां मार्के विराववा पवे धुरा है। हूँशावर्चराजशा थे.रीशासैचातपुत्रकी.लुशायी। कि.ला.चेट्ट्र.पूर्ट्रतर नी। विभागश्रुद्रशायवे द्वेर देव द्वर द्वर प्याप्य श्रेगिष्ठ थ श्रे इत्र द्वर द्वर प्रकार के कार्य है के स्त्र में स्त्र म क्षे.सं.क्ष्याचारमाण्येवाते। विवादाराज्यात्वात्वा विवायम्पर्याययाः भ्रीता देवे बद बबार्स कुद द्वाया ग्रुया गर्डे में दि बद बबा द्वाया गर्डे में धिव है। र्र.केट.चहुरा.की.केट.ट्व.शर.वीचरा.चेर्या.वार्यात्रेश.वीरा.ता.ता.चहेर.येशा द्र्याधनाः सेष् श्रीकाग्रीः पर् क्षेत्रः ह्याधान्य तक्ष्यः पर दि श्रीया र प्रायते वर वरा गुर हिर विदे द्वा या के रिया के निवा वा क्या में का वह वा नाव वा वर्ष वा बुरा पर ने बबा के न करा वाया पर नियं देव की देन मार्थ के नियं नियं कर कर न वकराववानुरा देवानुर्वानुर्वानुर्वानुर्वानुर्वानुरावानु वासेरादे। र्रेक्टावीसर्दायाद्यात्र्याच्यावस्थ्यायवास्त्रेत्रा वादीवावकाद्यास्य र्वे.श्रुंबर्बर्धिं के.व.लूर्ड्ड वाल्रुंब्जी.रवर्त्वाश्रुंट विद्रः अर्टेट हूंवाश. यर में वायमें प्रवे हिरा विव वादे र सा च द हुंद मुवा सव व द द सा गु ट कुंद द र

निर्माश्रिया के वहार नियम दे विरम्भ निर्मा वर्ष कर विरम्भ ने प्रियम विरम्भ के विरम के विरम्भ के विरम्भ के विरम यात्र समावन्त्रमादे निर्धायययया वयद नेनामा हे द्रायमा स्थाप्य वया यात्र इवावर्ट्रियाइसम्मी वर्षेत्रायवे इतिसम्हित्यवे क्षेत्र वर्के तुस्स सुदेवे वरः ब्यादे महित्राक्ति देव के सक्षेत्र के यादे वार्ष के सित्र के प्राप्त के प्राप इ.रे.धर.वेर.श्रमकात्ववतःत्रत्रःश्र.ध्येष्वेश्वीःबर.क्ष्येरीःवयात्रात्रः लेवा क्रिन्सेन्द्री देने प्रसार्मा यादमें द्रमा प्रदेश देन देवर देश वर नमा ब्रायिक्यार्रे मिट्यिक्यायात्रका केत्र । क्षिट्यिक स्त्रीय सामित्र प्रति । क्षिट्यिक स्त्रीय सामित्र प्रति । च.चधुतुः चैर्वेर् वेर्त चंडिवशः हैं हु हु हु चो दी अश्वरायवातशः शकूरे ता चधुतुः इ. धुन्ना ग्रेट. वेत् । ट्रे. तना क्री मात्य शक्तमा ग्री. इ. यधुत्य र व मात्र प्राची हा प्र सुन हिन्यागु उपास्यापु विवास व चेश्चान्यावाचा चेश्चान्यस्कृतः विवयः पर्वः क्षेत्रक्षान्यस्य द्वान्यस्य विवयः याक्षरायम्द्रायात्री ब्रान्त्रार्ट्यस्यात्र्यावश्यायते व्राचान्दर्यायार्श्वनायहेवः त्राचायार्श्वेना पहें न रवायाया है। देव स्वावित्ववयं ने हिन्दा वित्वे देव स्वाया रुष्ट्रिय्युषास्त्रेत्रम् स्रायाक्षय्य स्रायाक्षयाया मिनायहेषाया वार्षेत्रायहेषाया वार्षा ह्य र शेवा है। देवे इत्ये पावश पायर पावश प्येव। देवे के देवे त्युश वयुर पे हि र्र्रायानुषाञ्चयाञ्चात् ज्ञायानाष्य्यायायाच्याक्रयायाव्यान्त्राच्यान्त्रयाच्यान्त्रयाच्यान्त्रयाच्यान्त्रयाच्या चव्यानम्भाक्षेत्राणम् देवाळे देवाळे देवायम् इत्यानम् वित्राचा क्षेत्राचा वित्राची

यायाअव्याम्बर्धायकामीव कु ही देवे इत्ये मव्याअमीव यायवा देवे के देवे विश् हूर् दिर वर केश य शर मेद हा साम है। वि य त साम वि ए हेर है। दे बु.जैश.चश्रश.२८.ज.विच.तर.येथेश श्र.च.रेंगे.त.थंश.चर्चे.तपु.चर.ज.क्रें.च। ४श. तर कें.यो लट रेवा तर कें.यो रव रे कें.यो हरा तर कें.य है.लर जवा वी. कुट इस्रमार्थस्य प्रतिव क्रिया । निस्साय हिना थे प्रत्र प्रती । निर्पेर हिना थे नगरन्बरक्षरावरक्षणा नेवसन्गरर्थे दुर बन कन ने ही चेर पवसाय वार्दे भिग्रेशाचा नसर्थे दुर इन कर दे हे वर ग्वसाय वार्ष भिग्रेशाचा देवित्राञ्चेनाचाद्राप्तर्व्यर कुन्ववस्य कुन्वित्र वित्राचित्र विवर्ष स्था वयर से गाव शय वे संध्येव की |देश व देश वे वा वा वा देश व देश वे वा वा देश व षयायित्र र्थित् दे विदेत् यद्य कि वया शत्यायि यदे वा व शास्त्र यदे । विना ये प्रति र ये दिन । क्षेर । प्रति र दिन प्रति दिन विकास । स्रेन्यान्त्रेत्रित्रादे होगाचे। अग्रेन्यात्रात्राम्यात्रात्राम्याः पश्चेद्र'यदे विवा थे। वि रें र्दर वे या इस्तर यदे वा वस अप यह रायदे विवा थे। ही में दिर वाबर वाब बाद पवि या है हैं अबाव द्वा नी वाब बा स्वया प्रह्ने द परे हो ग वे इस्रमान्य मार्व भ्रमा दे स्मरमान दिस्य रेवि मान्य मह्व मान्य वायमाया क्रियालवा नर्गेयायार्थिन्दी मैवानुः स्वायदे द्वान्येयस्य रे रे पाना सुन्या सुन्दा लामेशक्रास्त्रीत स्वापानि प्राप्त मेन प्राप्त स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स बिर वर्षामा मिना विषय यो नेमायर दी यद कर लिय पद हिरा वि वि वि मिन हैं जैशाग्री निवशास्त्र जानिय जानिया जाकुशास्त्र । रिमेशिया जूर हो हिमेशा दुशा मी हैन सम्मान्त्रीय वाहि है वे व्यस्तावान द्वार प्रमान किया दि स्र मान द

र्ने मर्बेशक्ता में मान्याची प्रत्य क्षेत्र त्राच क्षेत्र क्षे द्रयामार्ह्रवासाद्रयास्त्रमास्यावायाम्यमा हिवासाद्रयामी वास्त्रिकासे वाहेसामी द्रिय शर्र्यत्रव्या रे.चेर्थका.ग्री.र्ष्य.केश.तय.तथर.ता वि.चंग.पे.क्री.वर्ष्ट्रव्याश. देशनम्दायम् दर्भेत्री व्ययेद्गी कुर्द्रेन्द्रवावस्य उद्धि भेत्रे कुर्देन दुष विद्या दे वा क्षेत्र हिंदा द्वार वा वा विद्या है दे वा विद्या के विद्या है दे वा विद्या के विद्य द्रवाशामी के से दर वार्य अपर्या दर में है। बर बाक्य प्रायय वारा पर मुना कर म ग्री हिंद के द हिन्य परि ने या र या खे 'येना नी 'यर्केन 'देन' द द । देवे 'हुन्य क् कु द 'ग्री' वर् वक्त रेवि यो मेश अयोग ने अर्के ने निर्दा रे निर्देश में रेवि रहेर से र याचिना खेरी सक्ति देन हो दे त्या है यह हिंदा द हो र को ही को से हि या हेरा यह या किशायत्त्रवाशात्त्रविवाशाकिरात्री नेशायत्तर हिंदार वियाश्वरात्री लाजवा नि'अळेंब'रेंब'न्दा देवे'द्यम्याचकुन'ग्री'मञ्जूष्याग्री'त्रु'वे'स'प्यमानी'अळेंब'रेंब' ५८। दे निष्क्र श्रु सुनाम श्रु ५६म ये निष्के न य के सेन विव विव सके के देव विव हो। दि वार्षे निर्देष महिषान् हो र खेर ही एक स्थान के से का है र निर्देश महिषा महिषा विकान का ही र्ह्नेट हैन्द्रेन्स प्रते नेस राज खे चिना ने सकें ने देन दर्ग वस दूस ग्री पदे पक्रेत र्येदेणे नेम संयोग ने अर्कें दें दिन दिन दे महिम हैं दिन हो र से दे हैं दिन हो न विवे सर्केन देन प्येन विदादेश पदेन गहिश द है र से द भी खे खे प्यदाने श पर हिंदी गुःर्रेहे देरपुषे अधिवावी अळेव रेवरारा देविषया अवस्य मुहराया यहेव वया निवि द्यासुन्य में द्वार दा वया द्वार सुन् हें य होना वेदे स्टें दे विव वै। ।ग्रेशपावी शुर्मिर्द्राक्षेपवे स्वयिर गुग्गस्यापाले प्यामी सकेव देव

१८। क्षेट्रावर्ट्यमेवरावे अविष्य ब्रियाचे अधिक क्षेत्र के विषय देर्वाच्यक्षानेक्षासुर्धेवकायवस्य देर्क्रस्यायावदर्द्वाच्यायावहेक्ष्म् विना ये 'दर पदे के ब 'यदे ब 'य' बे विना ये वे सक्कें ब दें ब प्याव है। सक्षु त 'यश है। मुक्तियर बुश् सूर्या सार्वा सीर सात्त्र हिरा के विश्व सामिश सार प्रचर ताता विश्व सा वरे हिंद द्रेर केर ग्री खे के वनर या वरे व वह सर्वे र केर ग्री खे के वनर या देन्त्रक्षेत्रयायास्माराश्चाक्षेत्रंयुषायाम्बद्दान्त्रव्यक्ष्ययम्बद्धान्त् म्तानबिश्रा ईर्रायानचरता चर्त्राचनचरता चर्र्ह्रिर्येष्ट्राचनचर यदे। । दर्भोति। अर्दे स्वाशमानेशमार पदेव पहेंच पवित्र पवे सप्टा देवे हे हिट्यें कुर में कुर 'यथा स्याय हैर महिना महिन सेथ पुराद्या । दिवेद पर सूर् हैं रच वचर थे। हिंग रेग कु. वर्र र सर स के स व वीच। किस चर्ग सर श्रव कर्वान् वा वी पर्वा केर्रि पर्टेर् पर्दे नार्दे नार्दे वा स्ट क्रिक्ष स्ट क्रिक्ष र्हेट्यान्टा बेसबाउसाय वर्तेन्यवे मञ्चायदेव हवाम्बन मुबाहेट्यान्टा र्में मोर्वे र से र वा सूर परे र पर में स प्रवाप मारा स के र पर में सुद रें र याणवायते हेन् युन्या भी देश वया नुपाय हेन्य पार्टा केया वया रहिता तकायक्षेत्राक्षात्र्याक्ष्यायाय्ये स्टाप्तेष्यं मुक्षायुवायकाः ह्रित्यवे ह्रित्ये हेत्यवे व्यत् त्तु किया दे लट सेवशत्तुर हेट यन्दर में दर्ग्दर पदे हेट हैं र मुक्त गुर स वम्राया ग्राम्मार्स्रम्याविदेर्वराधेदेर्त्रस्यास्राहेर्याधेस्मान्स्राह्र

तरे हिंद क्विर पर्याद गारा देव राके सं द्वि गार बवा ने बाद हैं द क्विर कुद हिंद क्षेर्ण्येत्वा वर्वे यन्ते व्यव प्रमाष्ट्रवा है। यर है व हे ना यदे व रूप द्वार पर्वेत मुमान्द्रम्य पश्चिम्याय दे दे दे दे कि ता हिंद हे पिन पारे कि पारे कि पार पिन पा न्दिन । धर धुन हेन प्रते न्द्र या प्रति । विष्य के प्रति निष्य । न्यदार्थायकुरवश्रूराधिक्षेत्रा है भन्यवि वियावसासस्य क्षेर्यार्च्यायवे जुका क्षेत्रका क्षेत्र श्रुप्त श्रुप्त हैं या है य कुवे यदे या अधिव है। धे रेवाया वनाव निना ने कुद वा यद खेद यवे छेद। हिंद हिन्सिंद्र सुस्र नु हिन्सप्य व जना केन् मि प्रेन प्राप्य ने अध्यक्ष है। ने प्रथम सप्य वस्तर्भात्र भी कृत्याचेत्र प्रवेश द्वाया स्वत्र द्वाया मानस स्वतः स्वत्र वायक्तेर पर्नेश्वरायायश्चरप्रतिपरियायदिश्वायविति देवि धुन् हे जिन् सामासुकायवः र्षेद्रपवि क्षेत्र। कुर्द्रपुष्ठात्र विकायाक्षात्रेष्ठ प्यत्र वुर्द्राचेक्षक्ष वर्षे प्रचानाना पवि पदे यद्रायम्यकुद्रायोकुयायहेव्यवेषदेष्यायरदेश्यायद्रात्रायम् मी अवसासुष्यदार्थेन्यवे भेना वित्रार्थे स्वरायात्र प्रवेषने प्राप्य देशाया है। देवे इ अवायवे कुन वायर सिन्यवे कुर। वें व हे इर सेव वे वा पक्रेन द्रशानु हेशास्त्र ने प्रत्यात्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित्र स्तित् क्री मदे केव हैर जेव है। विश्व मदे केट दर् में अप विषय महिया राजानहें थ वर्ष चिरान्तु लेल तर् केर हैं न हैं न हम दूव ला पेश किशालित हैंट. 32.dea. करवात्रात्तात्रीतात्रात्तात्रात्यात्रात्तात्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त् पलना वस पर्वेश पाय दे हिंद द्वेर के दुर हिंद खेय के है। वयस नेस नाहन वार्वन्यायात्रीयात्रवा क्रिट्रिंद्रायाद्रिशायात्रवित् । विदेशास्त्रेत्रस्यायदेश्चित्रः

य थिया । निहेश र्थे प्रत्यापान र धिर्या । नियार या विवार **न्छेरक्षेन्**नु छेन्यवने केन्द्र न्छेरकेन्द्र क्षेत्र क्षेत्र विदेश क्षेत्र गुःचदे च द र हिंद हिंद हिंव श्रायंव केश र च वहिश्व विश्व वरे व हिंद हिंद हैं न संवेद ने सरव की संबेद य पेंद गुदा इन है स गुप्त वरे व हिंद नेन्द्रेन्स्यराये नेस्य ना केंद्रिय देने हिन्स्य । ततु.पंश.रच.ग्रेश.इथ.ततु.हैंथ.श्र्याश.ग्री.थथश.जुथ.चध्येथ.लुथ.ततु.हेर। लट. इव क्रिया श्री पर्ने पाया श्रेन विव क्रिया ने पाया वया क्रिय क्षेत्र क्षेत्र स्था स्था पाया पर्ने क्षेत्र क्षेत्र देशवास्त्रयम्द्रयास्त्रयदेःहित्द्वेरकेद्रुं हित्दर्गेशके। हित्देद्रयावहित्रश गुराञ्चार्यान् गुण्यसास्त्रकेन निम्बन् स्रीकरा हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र मिन्द्र वार्यसायहित्रमा गुर्प्यादेरायायम्भात्रीयायवाधिराते। मारातमा हिराहे द्राप्या हिराया हैरा ल्नामायमा दिमाने प्यमासकेना हेराया स्वामी विना हे हैरा हे प्यव लेना म्ब्रिश्याय तारत विविश्वात्रेश विविश्वात्र नामित्र विविश्वात्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्त्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्य विविश्वात्त्र विविश्वात्त्य विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्य विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्वात्त्र विविश्य विविश्वात्त्य विविश्वात्त्य विविष्य विष्य विष्य विविष्य विष्य व तृर्द्धिरतप्रयेशत्रे। विष्रित्र श्रुप्तेश्वाश्चित्र वर्षाञ्च वर्षा क्रियाश्चित्र यवे हिरा व्रायाया वित्रारी वदे वाके द्रावि यो ने कि वित्ति दे ते वायुवार् विशावशान्त्राम् अपन्ति । स्वात्ता स्वित्राम् स्वात्ता स्वात्ता स्वात्ता स्वात्ता स्वात्ता स्वात्ता स्वात्ता स् कूट श्रव पश्चिम्पर श्रे पुर्वा विकान सुर्वा स्टें हिरा विवा क्रिक से देते हैं ते

क्रश्रम्भावस्य स्ट्राच स्ट्राच्य स्ट्राच स्ट्र ब्रास्टर वहेंब की क्रांहिन प्रक्रेंद्र पर प्रक्रिव प्राधिव परिष्य प्राप्तिव । विष्यात्रेराकेन्यो भेषा भेषा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वासुर रम ही वा वावास मंदे पदेव वादेश क्षेत्र वर्ट पर देव के वादेव हो। वर्ट र वर्ष्ट्र क्रियं क्रियं वर्षे श्रेष्ट्र इया वर्षे र या क्रियं ये ये या या प्रति वर्षे प्रति वर्षे प्रति वर्षे प म् अर् किन प्रायम् प्रायम् । विष्यं के कि विष्यं के किन विषयं के विषयं के विषयं के विषयं के विषयं के विषयं के विदेशि विवाध या वा विसाध वा वा प्रति हिंद हिन हिन साथ देन पा सवा विसाध करें मुर्देब न्यायने व यह भेषेपीया यो अर्कें व देव पीवा ने या पर देवें वें दें राम या दरा र्व में देर मुबवामहिषापर। क्षेत्रायायर रेग्नायवि यदे रेव में देर मुबवा १८। बुद्दिनानिद्देव कुर्दिन पार्यानिहर्या देन पार्या कुरायि कुट् मुत्रमात्वरात्वर्थियमात्वरम्भ्ये रहार्ट्यामभाईमाभविषात्वर् राज्यस्य विषाप्तरा इ नुन्दिस नावस य वितर नहाव की गाव है य यदेव य वे स विवा नी अर्केंब देव विवा दे.व.तर्म्ह्रेट.त.चेश्वेशत्तर्देर्व्यत्वेशवत्त्वे.शवर विट्टित्वव्शाद्वे.शवर श्चित्रा देव के दूर वाबवा हूट यायवि यदा अवर विटायव रवा यदा श्चे अदा श्चे महिषासुर्येत्। दे स्युवे पदेव महिषा सुम्ह्यासासु द्रिया या महिषा या सुर द्रिया यात्री वर्दरायक्षत्रायदेत्रामहिकार्यहेराकेतात्र्वरायह्माक्षेष्टिमायेवरामळेत्रादेतायेत ही जि.व.वर्टर वहेब गीब हूच वर्ड व ता ही श्रव में दे ही व हो दे गी र वा बा वा वा विन्दा वर्रायानवा गञ्जाशासुवे कु हुन र्क्सार अध्यापवे से वारा हेन व वारा हुन ता ब्रैट.यंधुद्र.यंषरे.चिष्र्यूट.श्राण्ये तद्र.सू.वयातसिय ता क्षे.पश्चेर.क्षेता.मी. मान्द्राचा विवसानिसार्टिन्द्रिमा विवसानिसार्टिन्द्रिमा क्षेत्राची मान्द्राचा विवसानिसार्टिन्द्रिमा क्षेत्राची मान्द्रिमा क्षेत्र मान्द्र मान्द्रिमा क्षेत्र मान्द्र मान्द

पश्चितायर् । र्टायुडी पार्चेशका श्चेतुः द्वेषा तट्वु कुव वार्द्ध्य श्चे पुरा श्चेत्रा श्चेत्र श यहेव वशमानव देव ग्रेन या भव निरा ने पर मी रेग शप्र हु अप या यहेव वश पश्चित्र-र्मेश्रामाञ्चनाक्ष्यामान्तर्द्रायर अर्द्ध्याय माराविन । सराधित हेन्ययायायायादित्यास्यानीः क्षेत्रायदे अळव द्या अहर हुन्ये अहर हुन्ये अहर वा हुन्य स्थार वर्वि कुवे मार्डि में अप्येव। कुर के विमा अपमा मुख्य वर्दे र पा क्ष्र में मुख्य के दिवे इस्यायक्ष मु द्वित्रस्य वर्षे रादे प्यतादे साधित। रेषाचिका दे प्रवित्वता वर्षा म् वश्यक्षत्र देग्र म् प्रकश्य शुर्णे प्यायम् अप्याय शम्य म् याप्त स्थात्र या मृत्र-दे.वर्टर.व.लर.श्र.लुच.तव्.हेर.स् स्वाधावाध्यातावीव झे तर हेच. विनाययवर्देर्याक्षराकुरिकेश्वरिनायनाक्ष्मश्चीश्वर्रावाचनाक्ष्मश्चीश्वर् वयान्नर्थायवे सळव द्वे द्वे होत्या महिला । सार्या प्रवास्त्र कवा शामिका के वा क्षेत्र होता होता । वा देशनक्षेत्रयते युगन्द नेशक्षेत्रयी देशमहेत्रयहेत्य महेत्रय कर्षेत्रया विश र्टेन्निजिनार् दिन्दिन् सेन्यसादेव स्विप्यव सक्त द्ये सहर सुनाद्ना कुन अवदे देन महवामि महिना हु के नहार देव वह महिन है र के न र् क्रियासात्र र्यासाय देव क्रिया स्ट्रिय स्ट्रिय स्ट्रिय विस्ताय विस्ताय स्था स्था यवै अळ व दिये अहर हुन दि । कुव अहरे देंद नामवानिक में सिंग हैना णेव पर वया क्रियाये अकं निय असर हिमाने। यन गुरूर प्रविक गुरुष गुरुष अकं न र्ये पेत्र यदे भ्रेरा बेर व क्रिन्ये रेता दे पद्ये सक्त द्ये द्र एक प्रयो पुरा ने क्षेत्र हिन्य मा केत् यस की गुरू माने के शु जुरू के सा हो । केत् मे अन्त र्ट्स् में के ने के प्राप्त में विश्व हैं से र पहें दें अ जिव प्राप्त है र विश्व पर्य से से में श्राम पर्य से में

गुपाक्षे कुरक्षित्वायायदेर्पयाक्षरकुष्ठियाक्षयायक्ष्रियाक्षेत्रायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्यायक्ष्या ब्रिट र्लिट श्रेट ग्री हे बा खे र के विचा हो द या नाट विचा । ना बचा बा से दे र दे ना बा र द दे है दे र्यसःस्थायवे सुःसवे सुर्वे सर्वे सुर्वे सर्वे कुषा गुण्य सुवि केर वेद मुण्य सिर्वे कि मुश्रमः १९४ द्रश्रमः वारम् मारमाना नाम मारम् वारम् विष्यः प्रते विष्यः प्रते वारम् विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः म्हेबाल्ट्रायाया महिमासदात्राकानेबामिवानुबास्याये मान्या र्थास्यावान्त्रवान्त्र्यान्त्र्रम् तत्रहीरही जैराहेंब जर्म हिराहर में रातर हिंगाजर विश्वसम्बर्भात्र ब्रे.चिष्याम् अर्थः है। विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास् देशन्यर मुच है। है। नियर दे मध्याद्र द्राया स्वाप्त स् वायहेब बसाम्रास्यायायायोद्दर पव क्रिर वियुर पव क्रिय पव क्रिय प्राप्त है नियुर देन महासाया स्वाप हिर यावावसानुषासुन्देवासुसानुत्रम् वित्राचानान्त्रिम् । वास्यवायावान्यन्देरावश्चर प्राची जेबादे देवा वर्ते राता वा की श्रव भीर वर्ते रावव हिर है। द्रश्र में जबा गीय. कृत्यदेव पा श्रुप्त विष्य श्रुप्त क्षित्र में क्षित्र में क्षेत्र में में कि उन्त्युरा हिंहेदे सुर्या दे हेर हैं। डेस म्यूर्य यदे हेरा म्यूर्य पहे केष्ठ. तक्षेत्र. क्ष्याची त्येषट तका येट तका देश ही ही तका त्येट तर हे शायर वीय है। क्री.इ.चर्षा,थर् सेवश्रासे झूट्सर्टा ट्राइशश्रात्त्राश्राम क्रिय सेर सेट तर वर्ष तथा

यान्दिन दिन्दिन कि दिन्न कि दिन्न मान्यकि अहर हैं अद् से र दिन दिन कि मान वारवा वकार्य दे हिरा विदेश दे विवक्ष मेकार हिर केर ग्री वावर वा वहे व वका वका र्शासु श्रु अर्थ भुर्णे प्रम् पुर है। धर ध्रुव विषापर निषा सरे भ्रवह स्वा वियानु पर्योद वस्रया ग्री केवाया वर्षिया पाया मुखाद विया वा स्रोद ग्री यस स्रवित पिर इंशर्चिय पु पर्सेन दस्य ग्री केवा सामार्थिय पाय सिंह सामा सहस्रामान मार्डिया दिया र्न्यक्षिट्रसायसाक्ष्यायराम्बर्द्रसायाम् विमा दिवाकु सक्ष्यायराष्ट्रेदाचेनायवा बाशह्य त्राप्ता नार प्रथम निवा में विद्या निवा में विद्या में विद् र्ने विष्यार्स्य निष्या होत् । विषया होत्या विषया होत्या स्थित हिरा व । गर्याना है। यहें हिर्याया मेरे सामाव जीवाया जात हैं या है दे हैं दे हैं र वाष्ट्रन्यराग्नेन्गुमा क्षेत्राचेन्ग्रीके वाष्ट्रन्यराधिन्ने यराधेकाचेनायवे अयबासी, लूटे, मुबारवाबातवा हिंद् हुटे त्यू या केंटे हैं हुत्वा या वहें बाजी अयब सु'णे'नेश'गुे'धुन'कु'द्रा वल्लस'य'द्रा र्केद'य'द्रा वनाय'यरहरस'य'वस' च्रायदेयदेयम्भाक्षिर्विर्यक्षिया व्याप्तेन्य्ये निष्यक्ष्याचेत्र्यदेत्रप्ति विष्यः विवायदायमाक्रमानाम्त्रीर्भीक्रियाम्याम्यान्त्रम्भीक्ष्मी वर् नमा क्रूट कर वर्षेया पाल मार् हिरा दे स्पर् स्व क्रिया है पर दे स्ट्रिय श्रेन् ग्री यो मेशादे याद श्रिवद मी क्रेव छित्यर उव महिश्रा ये माद उद मी से वर्ष सुरा न्त्राहे रद्द्राण्याहेव सक्व विनक्ष्याये वस्त्र विन क्षा के नद्र के ा है द्वित्सर में बहुश हिंदा है वे स्थान पर वह वाता दर्ग वर दे है वे जेश. वानवर्रियम्बर्ष्यम् म्यान्त्रियार्व्यक्षेत्र म्यान्त्रिया म्यान्त्रम् म्यान्त्रम्

र्नु आर्थेर् दे। हु ये अमेर्या क्षरमा क्षिरमा नबर नव्य के र पुरे व्यव गर्मे. इत्रिय्म्यक्षर्रात्रा कृष्ट्रियायर स्रात्रायर स्रोहेष्वक्षर पुर्वे पर्वे स्रिय इंस्स्रिके स्वामित्र विकाल वर्त्त विक्षा वर्त्त विक्षा वर्ष विकाल वायवि दरार्ह्मेरायायविषा इरबावषा इव हुंबा कुंबा कुंविर केव हुंवा वा खुरायर केर दी र्देन्द्रायमा अविदायमुद्दायामहिमार्श्विदागुम्पतान्त्रायदा न्यित्र वित्विर वित्वित्या । क्रियाय देश स्वाय दिवा हेव सार्रे वा वर्षा प्रवास है। । क्रिन्य यविष्यदेशानेत्र अर्विष्ट्र देशायश्यवव वश्यरित। ।गर रु कुर रू र श्रेस्र श वि श कुंबिटा दिग्या स्वापायह्याया अर्प्या अर्थियायाद्या नव्यादेरा सेस्यादे चर्यरक्षात्तवाद्वीता रे.क्षेत्रविषात्रात्त्रात्त्वेत्तवे.क्षेत्रवित्रक्षरात्त्रीय पश्चित्याया दें हिव लुकायानाव ५ ५ प्य हुव ५ मिकायर सा व ५ व ५ र पहूर परेव विश्वन्ते र स्त्रे के दिवा माने सा महीत या वायर दे हित व्युक्ष वा वाव न प्राप्त है विश्व वा वाव न प्राप्त है व ते। पश्चिर हेना वानिकाना दिरायर हेना वारे अची प्रस्त वारा श्चे ने पर र्ने नाशुस्य न द स्थाय है प्रविव नु समुब पर पर्ने स न निवाय र नासु र स या न दिवा वक्के यन्दर्स्य या अनुव यवे न्योनेव की वेद नावाय पश्चित ववाय में न्दर्स्य या श्रद्येथं.तपु.रेथं.श्रार्थात्री.श्री.तीश्रायध्यापश्चिरतात्त्रहुद्वातिशातात्त्रयेर.रे.वर्श्वेथं. र्वेश्वरावराष्ट्रीराहे। हेराखेरायमा स्वाहराजीमाखेरायाक्षेरवळेवात्रयायाहास्र लुब्दुश्रायत् वाब्दू है विकट् नीश्र नश्रद्धश्र वश्र है र वश्र श्रव्यश्र प्रवेश हिन् श त्रेम्भम्भग्रात्रेन्द्रायद्रायद्राय्यास्याये क्षेत्राते। दे केद्रायमा दे व्यमाञ्चर लट.उष्ठ.रट.हैं। डि.क्षेत्र.वर्ष्ट्र.क्य.वर्षेत्र.व.वर्थे क्रिय.वर्षय.ह. ह.प मधात.

म्यामा । देश मुमादे प्यादि में प्राप्त में प्र में प्राप्त में प्त र्वित्यायायम्वायायायाद्वार्रियम् विविष्यसाविद्याम् देशाम् देशास्त्रात्वाविष्यसायम् नास्यामी सुरामी स्थानावना ग्राट्यास्ट्रायदे भ्रिट्रा देश स्थामा स्थान वर्षा ब्रेन्य क्रेन्ट हैव वना गरेन । इव गरेन हेट नु हुर हे नम्न वेष निश्रम्यत्ये भ्रिम् दिव निविदे रेश स्राम् ५८ सुनिश्रम् । विश्रम्य निविद्य स्थापनि । वेषा श्रेषात्रषायानियरपुर्विदायम् गार्वेषायियः देरावश्वार्णित्या यद्रा वक्क नर्द्रयाशवामी इत्वामश्रामी ब्रूट अकेट मिन या श्रम ने या विदेश असम र्श्चिम्राणी रेश्चारार्टा वक्के पर्वे मार्थिय के मार्विवे वे मार्थिय की रेश्चार हरा पर देवे कुर वुष दे निवेद हु वुष ग्री देश पाय कि वा देश दे दम अदम में हु वुष महिशासकेंद्राद्वी दिपनेदर् प्रतिकार्यद्वामार्थादे मनिव केंशा सुन्ता दे प्रश वर्षायद्यापर देव विष्यु वेदिष श्रु दिर्ग पर देशात्व दुर्श सक्या श्रु र य वे निविदे क्षे प्रमुख क्षे प्रविदेश । यह विषा निविद्या में यह दुष में कुर विद्या पर मेन्यनिष्णाम्हिषामि द्रिया स्थानि द्रिया स्थानि । यहिन्या स्थिति । यहिन्या स्या स्थिति । यहिन्या स्थिति । यहिन्या स्थिति । यहिन्या स्थिति । यह ब्रूट अके द विच ना मुख दे लगा ना देना नी से अस द से ना मा गु देश पा ना दे द जी। दिन्यम्यान्ने व्यायान्ने वायो दिन्यम्य यो देशसान् । क्रियम यो पुमानुन्यरः पद्माना निवानी वित्रा मुन्दा में व्यानी व्यास्ट में हित्य वानुना के कर यक्षेत्रमान्डेमान् सुवासुधिक्क्षे । माने वारे अप्येष्ट साम्द्राय वर्षे अरुवा र्वेषयर्ष्ट्री इवावर्द्रियम्बावेदिःरैबास्ट्रियम्बाम्बाद्रियम्बा नित्रम्थिश्वरात्तात्रप्रदेशवेश क्वावर्त्त्र्रतात्वत्रीष्ट्रिश्चर्त्त्र्र्यान्त्रित्र्र्यान्त्रम् क्तियीर मुख्य मेश्रानर मियद क्रिर लाग पार्त हिरा वाष्ट्र से वास्त्र में मार्थ र सिर

सहरायायाक्रियाच्या न्वीयायायेराने। क्यावर्तेराययानविवासुनायुग्रार् क्षात्राश्चिव त्रातु त्वश्नाती सी पर्वेश प्रस्थाय ता वा पर्वेष वशाव स्थापित सी पर्वेश वर्गियात्तर्भ्यः कुरात्तर्भित्र। ध्रेष्ट्राचित्राच्यात्त्र्याची सी.सी.वर्षेत्राची सास्तर्भर सहर् तात्ता क्रिमाल्या द्वायायायादादी ववायाल्याचायाविदाक्रमाली क्रायमायाद्वारमाली शर्यास्यास्तर्दरस्रेपवे इवावर्देर स्थिय प्रतिस्थान केश्यर प्रतिस्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित श्रिभाता विष्ठुतविष्यः क्रियाद्दे त्विष्यः सर्द्यः विष्यः वशा विष्यः तस्यः द्रशा विष्यः स्था । वर्ट्ट्र-क्रिया भ्रि.ध्यापर,र्ट्.क्वायद,श्री.वार्थ्यरी श्रिट्र-ह्रेट्र.ह्यायात्रास्त्रक्र्या. वर्षास्त्रा व ।। मस्यापाने नेन मुन्दिर वर्षे हेन सर्यस्यान निर्माया मस्या गुःसव रगाम्बव यर दे दर पहुन दर्गेषाय दर्ग हैन बारे सादि बाप मद परि र्रायाने देशकार्या स्वापित्रा सुरास्त्र महिवायाने स्वास्त्र मित्र के रेपा र्रअ.र्जु.श्रथं.रचे.तचेव.धुवे.चेशवाचर.चर्चेथ.श्रुट.तवा.कुर.श्रुट.तूर.क्र्रे.तव. क्वामुसाझ्यान्याम्भन्याये स्वापित् द्विमा देवागुरा स्वापेन्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राम्या पर हेंब पश्चा अपनर हिर नेश पते हा अदि अव र न वा वा पहे व व बहे न शर्में व है। देश खाया नियय देश पर्या की नि है र पर्या केश पर्या नायमा निर्मरे ततु केर क्री इस उचेर स्वमा वि. शुरु वि. जस हुन स. पर वि विस. गर्थरम्यत्रक्षेत्र। क ।गर्थमान्त्री इत्यन्द्रलयःस्यान्त्र्यान्त्रान्त्राह्मास् वचेटशायशानुभानितु,योरेशशानाक्यूट वर्षा है। वसूशानीशाशहरे नातु हिट विथे र्टा श्रम् जीवाश्यी प्रथाल पहेंशारा वाशवाय हुंशा शेव वेट वा वाश्रम हैंटश.

विश्वत्वान्त्रस्ते क्रिट्टर्याया श्रम्भी विद्यत्य सञ्चन्या द्या स्थम विश्वत्य स्थम स्थम सु'येब'यर'हेद'य'येब'र्बे अ । नसुस्राय'यानसुस्रा हेनास'रेस'ही'दहे'या में रेसर्ट्यारम्हेम के प्रमुख्य है। प्रमुख्य हैन हैं। प्रमुख्य विमा रहे पर्देश १८। रेअ:स्र हिंर:दुन'वर्'क्वंवार्वी ।१८:र्घ'ने। इ कुर'वेवु'दुन'य'र्रा दुव्रमूच वाशवादर मूच् नर्देश दशा वाश कुवा श्रमा वा जी शार प्राप्त निश रेअ'स्'र्टा इअ'म्बम्'रेअ'यर'ह्रेन्थ'रेअ'युष्प्र'रेवर्टान्देव में 'रेअ'यर' पर्वश्वत्रमा न्यान्वेत्रत्रम्यान्न्यंत्रम्यान्यः विष्यान्यः मु मिनायर पश्चिर रेस रेस याद द मिन्दा हिन्स रेस वा व्यस दिन दिन दिन र्वन महिमासेसम् र्वन की रिसायर पर्सेमायमा स्थायर विषा श्री प्राया विषा वासवा बेट.वर्चेव.ई.रुश.त.चध्र.वेश.वेश.वेर.रूच.वश्रश.वर.प्रश.कंर.वर्धेवा क्री. जुरी. पर्वे. पर्वेश. तुर् हु श. शे. प्रचरश वश क्री. हि. श्रम हूं पश्चर श्राहिम देवा. नु निस्द्रस है। दे हिंद वसा से से र हुद दर प्रस्र महत्र दरा अने हैं वर्षे चलेब पहेंब य दिव य हिषा शु दव दि दिव दिव दिव दिव स्था हिंदि र पायव पाया दिवा डेश ग्राम्या डेश म्युर्ययये द्वेरा दें न यन् स्वया व द्वार प्राप्त द्वार प्राप्त स्वयाय व वे व क्रिव केर दे। र हे पहुर्ज्य प्यव परे हिरा गरिय परे हिंग सरे स ही. वश्रान्त्रश्रामान्त्रश्र ह्वित्राचायात्रवा द्वाप्त्र व्याप्त्र दे। व्याप्त्र विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र विश्व ग्रेश त्मार्वेषाक्री खेनाक्रिया वर्रे म्याया में वहेषा मुर वह्ना में साहेश इब्द्रिं किर वहें ब्रमिष्ठियाय सुर्याया ये ब्रायि सुर्या स्व विष्ठियाय है। वहें विकेत र् नु प्रदेश्यार् वा मु देश के द्वार विषय । ज्ञा देश का मु ता की वा वा वहर

श्चित्र मा मुजायर में दे ता हूर्य शायव रूपाय स्थाय शायी मुजायर सामिदा। हूर्य श द्रश्रात्तवरात्राद्रश्रातात्तरात्र्राद्रश्रश्रादेशाते। क्रिंशार्क्षश्राद्धेरात्रात्रे श.ही.श.इशश.द्रा.वर्चेट.तव.हीर। ट्रे.लट.प्र.हूंच.तव.बेट.वर्चे मूच्ताता.वा.हूंच. यदे बुद वहुव विवाद हिंद दु वर्षे द्वी पर्वे देव देव देव देव देव देव के विवाद के विवाद हिन्दिन् केर केर की बेट प्यह न सवाया हैया पार्टिक दु पर्वी देने साथ हिर बियाय थे बुद्र वहुवार्चेव पाया विदेव की विद्राण सवाद्र दिन पायव की विद्या कि विद्या क है। बेर्-रे.वहेबाक्रियामध्याक्षाकात्राचीत्रात्र बेर्-रे.वहेबाक्रियर त्रुरा द्रुया तायधिततुर्द्व कुर्द्व नामवास्त्रातावार्त्र भाषानामुभाषित् कुर्वितायार्श्व प्राप्त द्रम्भाति। द्रमानाविद्यानद्रद्रम्भाक्ति, व्यवाद्रम्भामानम् वर्मान्यम् वर्मानम् वरम् वरम्यम् वरम् पर्याचेत्र सित्र सित्र हित्र सित्र स्वा स्वा हेत् हित गुब्र पह्नाबर्द स्थ्र श्रेब मोदेश मोदेश महिना कर दु यह स्था बुरा पारा दिया राचा श्रीयादाव श्री तीशह वर्षा वात्राची दशा श्रीत का श्रीय श्रीय देश वा श्री हिंद हिंद क्षेत्र यव क्षेत्र दे स्वत्रेत क्षु जुला हियायाया क्षेत्रका द्वेत स्वतः ह्यू मी दिये के दिन मानया म्त्रमार्म्बर् पुरक्ति प्रकेषिति वर देहियविष्यिय स्वाप्ति मु लुक्तियाया वक्कर्याद्भात्राचराक्ष्याचराक्ष्याचराक्ष्याचराक्ष्याचराक्ष्याचराक्ष्याचराक्ष्याच्याच्या यवे हिरा सेसस देवे अधर हुग हैं व या वा द्वाद्वे के के व से साम से साम है व वर्ट्टेम् बीश्र श्रेट विव इ.शर्टे ह्वश्रतम मूजित हुं दे वर्षे देव् शर्मे श्रेट विव. अ.शरी. कूषेशतर श्रात्रेजाट र.चैर.वश्रश.वरी.वश्चानुशाही.यविष.री.कुर.विप.हीर.

श्रानुसम्परि:श्रुम्। म्यान्वेन स्वा द्विया द्विया यास्या की द्विम् विदेश सन् निर्वा स्वा विदेश न्वन्तु कुर हुर य हून दु रवे निष्य प्रेय हुर हिन्य रेस ख्रा देन हिन्य वानश्चित्रियात्रवाववाद्यत्राचित्राच्याः व्यानश्चित्राचित्राच्याः विवादित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्र इश्रश्रार्चाश्रार्च्यार्च्यार्ट्यार्श्वरायराष्ट्रीश्राष्ट्रीश्राष्ट्रीश्राश्रक्षवात्रीत्रार्व्यार्वेश्वरा देश.थ.पर्श्चेय.वी.श्रध्य.सीयो.ज.पर्ह्न्श.थश.ह्याश.द्रश्य.वी.जश्र.ज.क्रं .व्यटश.एश.ता. यर येव हो दे यादे दूर दुईर येदा दे यश महस्य सह से दुर्व स मिर कुर व श्चायन् प्राचित्र वित्र वायश्चयःक्वाद्रा पदेवायाविषाणीः निरादे वहेवावायश्चयः क्वावी । दर्धाः वान्यस्या व्यस्तित्व सुर्दे हेव दित्ते दिव विषय वार्या विषय हिवा दिवा दिव निष्ट र्रे हे वे किर दे प्रहें व प्रायस्य सुवा के समा दिव सुवा में हे वे किर दे प्रहें व प्राय रेअर्दर्युबर्दिव विद्यार उव की में रेअबा युबर्दिव की रेबर्दिवा युबर र्वेब कु रवर्षे। रे ब्रूर वश्याकी लब तत्त्री देव है हैर वस्यासु वेद व्हुवार्वे । १८ में दे वुस १ वेद १ वर्ग में मुद्दे १ से स १ वर्ष १ मा १ हिनाबारियानु वर्देन्यास्निवायवर्देन् स्त्यास्य नु प्यान्य गुर्मा स्ट व्यास्य व्यवस्य विद्या वानश्चेर् ह्वाश्वादेश्वायाद्यः क्राय्टान् हिंद्देर् ह्वाश्वायायायाद्येत्र मुद्राया वात्र इस्ट्रिं न्र्रायदे व्यूष्ट्रिंद्रा व्यूप्ट्रें क्रिंद्रिंद्र हिन्द्रें व्यूप्ट्रें क्रिंद्र क्षेर्-हेन्यायये क्वेया बुर-इया स्राप्तर पर पर ये पुरार् पे व रूप क्विया विषय चावका हात्राचा स्थान देवा चावका हिंदा ना सामित्र मानु प्रसामी का हिंद के देवा मानदे

चैश्राताताशाचिरायवुःषित्वदेशःक्ष्रेर्द्धदेश्रहेषाशातवुःच्चित्रविचिराक्ष्राःक्षेत्रःचेत्रात्वेशः निव निव निव वाक्षा निर्धाण सुराय क्षेत्र देश मी स्वर्थ सुष्य प्यापित वापार विव क्षे.श.ह्यंश्वरूपान्त्राक्षित्वात्त्रात्त्राक्षेत्रा देशव्यःह्यात्तास्यायात्त्राह्यः क्रिमार्डमार्द्धरायदे मेर्नामार्थिय स्थानिया स्था स्थानिय स्थानिया स्थानिया स्थानिय स्थानिय स्थानिया स्थानिया स ग्रेग्किन्भुर्णे विवास्क्रम्भु र्वर्म्भ्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य र्नु अर नुग्यान्य मान्य चर्दित्रस्थाच्युचादुर्। रस्तान्त्रच्यात्रम् वार्याच्याच्यात्रस्य स्त्राच्याच्या यात्रे हिवाबार्रा अपवि खुबाद्वेव खेव हो हिंदि पहेंबा बी वि आयाव दि अधिया प्रति क्रिन्द्रस्यायायमा वर्षे नायदे गावासम्बद्धमा अरया चन्त्र विद्वा । गान्य स्वावन नगन्द्रिक्षाच बदाल्लर ह्वदा । गन्द्र प्यदे के देश द्वा गिर्देश । गिर्देश युष्वस्त्रवित्रस्त्रम् अस्त्रित् देसम्बद्धर्यायवे क्षेत्रः दे । विदेशयादी पश्चितः रेसन्द्राचुरान्वे प्रिन्यर उव महिषायार्गे रेसस्र देशका पश्चित रेसा पश्चित्रारा त.ह्र्यम.इश.मी.क्रेर.झेब.मेर.लब.त.वार.खेव नि.तवा.थे.पश्चेर.इश.मी.ट्र्या.झुट्र. त्रात्र्यात्र्र्यस्य प्राप्ते विकार्यस्य क्षेत्रात्र्यात्र्र्यस्य प्राप्तात्र्यस्य प्राप्तात्र्यस्य विकार्यस्य देव.क्रिंट.क्रिंच हेट.क्रिंट.क्रिंटा विश्वभाग हे.च.प्रशह्सायक्षा क्रिंट.त्. वर् या युषा देश यवे च्चा वन् प्राप्ति दे। युषा ग्री न्नि प्रिंग् गुष्प विष्य या वष्पाया त्रद्भाषात्रद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायाद्भाषायद्भाष लर्मित्राक्राक्र्रायमग्रम्पर्मित्राद्धिर्। स्वासायक्षेत्रवित्रम्प्रमात्रीया ठव इसमायायर युक्ष देव श्रुप्त निर्मु प्रमुद्दे । व युवे सुद्र मिन्विव दुर्स्टिन् वायवस

सिंद्यात्तयातीयाद्रयात् ह्रिरात्याद्वेर। प्यायाताद्येराक्त्यं स्वीत्रायायायाया इस्रायायदर तीरा की सि तर्र दें। दे इस्राया से दे हिन हो हिन या पर के व र् अर्दर्व्यप्रादे द्वर्या हेर् पर्वे देश देश वर्षे विषय विषय विषय विषय देखाअवामी सूर विव मी बादवेव मुंदर। दे इस्रवावायदे हिंद मे मुखायहण वर्षा इर पर्सेश्वरायां ने दिवन पर्व देन विन प्रेन हैं दिन पर्सेश वर्षा सिट प्रेन प्रिश्वर दिन क्रुं अके द 'इसमाग्री 'हेना सामेद पान माहा सवायय पर्य र कुवा चीमा नवसाय दसमाने। वर् दिन्द्रने प्रविष्यामिषायामध्ययान्तर्भी द्वास्य रवावयाप्रसुवयापे दिन्दि दिन र्निष्यामे विषामार्थेरयात्रात्रीय चल्चाताताच्या रयात्रम्यायान्येत्रात्रया र्मेक् रे.क्षेर्.क्ष्मास्त्रः जैसार्मेक्षा मासरामा क्षेत्रामी जैसार्मेक्षा मासरा क्रेब्र-देवाबानाडेवानीबायुबाद्वेब्र-हीं | दिराधाया वदे हिंदानी कुबावहवायवे सुर्थशतिट,ग्रु.प्र.ज.क.चश्र.कि.क्र.ते.क्रे.ट्र.चध्ये.याच्येयथात.क्र.ज.प्रयाश.क्.क्र. में विश्व संस्थित प्रति स्प्रति स्पर्या स्पर्य स्थित प्रति । स्याप्ति । स्यापति । स्याप्ति । स्यापति यदे ख्रिरा दे प्रविव द पदे हिंद नी किया पर्यापय प्रथापवि रे रे पा स सर है। है। तीयायधातानु नामा है। है र धा है या है या है। वसमायधातिया वि र है या पर युषाद्वेव प्यव हो दे हे द यथा यह मुव लेया मुप्त प्याप्त । कि प्याप्त या व यागी विष्युं में सार्गार से प्रवादी विष्ट वे क्विया सर राय है यह निष्या नास्त्रायवे क्षेत्र देन्वे वर्ति ने निर्मे वर्ति में किया प्राप्त क्षेत्र अके देने ने ने रामे वर्ष च.कं.र.वे.झं.श.ईट.शूर्यश.टैय.त्.ज.प्रांश.कं.कं.र.वे.वंश.झुश.त.वु.शुया.शूर्यश. श्रेयश्रद्धराये व्यापि विष्यादि विष्ये के विष्ये दे हिंदे हि

ग्रिटा विटाक्ताक्षेत्रकार्यये प्रति द्रियायित्र अक्रिय विकायक्षेत्रकायये भ्रिय दे चलित्र र्न् प्रेट की कुषा चन्न चार्य महिना स्वापा स र्र. इ.श.सं.वा.प्रवाश.सं.कं ४.हे वश.स्थाताष्ट्र.तीवा.सं.ह्.इ.श.सं ४.स्थातव.वीश.रे प्रथ. लया है। दे हिदायमा न इन मार्चा या सेन मार्च मार् वर्सुमा वेमागर्यत्यात्रातुः ध्रेमा देमामान्यात्रम्यमानकृतः झाममान्यात्रम्याः द्रवाबालाक्ष्रां स्रुवा सुग्राह्म प्रवृत्या प्रवृत्या ध्रमा स्वमा सक्ष्र प्रदान स्वमा सक्ष्र वह्रव याध्यव है। वित्य वर्दे रटा विश्व या गीव वं या प्रिश्व वर्दे हैं वर्दे र वर्दे र वर्दे र वर्दे र वर्दे र र्वेद्र'न्युर्घरण्युर न्निव्यायदेर के हेंद्र'यवे कु अक्दर र्येद दे। रन्याय देर खे. श्चे देशन्दर्धिस देशमी द्वर दुःसहद्वरास माम्बुद्य पर्वे श्वेत्र देशक त्युरा न्वेत्र कु ख ता कुषायर हु त पकु दुवा छ। देवे हि ए दु पवि ख रे विषय के पार्वेश पहेत यस्यक् में महिसायें दि । महिसाय है। यदे हिंद में कुसाय नियायें साक् से कुर क्यामेश्राष्ट्रक्याद्वर। देवाववृता देनान्याकेता देवागुरा क्रामक्रीनाक्षे रेगमा सर सुराय है दे हिंदर रेगमा सर सुरायवे युगर् ने व ये के है। कुर है या वया दे हिद इयाय स्रेर पन्दी वेष ग्रमुद्याय वे स्रेरा दयाय रेग्याय मुर्चे देण्यर रेग्रम् स्र व्दु बिरा द्वेष ग्रियक ये दे प्यर द्वेष ग्रिय स्र व्दु है। इयासूर है. स्वेर रवेद माले रेस प्वेद स्यायेद स्यासूर मी रवेद माले सेंगा मा मा पर् वर्षक्षेत्र। वाश्वयायाद्वी वर् हिंदावी क्षयाननवायदे ह्वी वाश्वयार्थ ते वर्ष्ट्रदार क्यान्नरमिष्यान्त्रिंहा देव मुप्तर्दर्दर्द्रामा सेर मस्टर्हे हा हे हे पकर र्राम्भीर्यास्त्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् स्रित्रम् यदे जुस द्वेद वेद कि है से सा वया वयर प्र इस प्र वा सुरा द्वेर प्र विष

वाश्रुद्यायवे क्षेत्र द्वेद्रावि व्याये व्याप्ति व्याप्ति वाश्याद्वा व्याप्ति वाश्याद्वा व्याप्ति वाश्या क्रायर द्याय है है यह अरा की दिवस यहिर वर्ष हिरा वह यह । क्वियह । क्वियह । ८८.र्बं त्वतु श्रीच तातृ हु हु व श्रेश्च ८८.र्बं ततु हु ह तकर व क्वा में श्रुष्ट त न्द्रिन विदेश स्वापित ह्राह्र मश्रुशाह्र हे तकर जा देव पर्य क्या मिशा पहीं पा लेव पर्य ही या के पर्य विश्व र्वत्रहेश्च्रिः दुः वर्षेर्वा क्षिर्वा क्षिर्वा वर्षेत्र यो वर्षेत्र यो वर्षेत्र यो वर्षेत्र यो दिष्र ब्रैंन'नु 'हुन'केर'। देवे क्रेब क्रियानर मर वस्य संस्त 'चेन' क्री मेथाय सपने हिंद मिर्टिन्दरावक्षपाने स्रिर् हुर विनित्ते। कुर छे साथसा रवट ये वह ये इससा ही लटा ।रट्नेपद्नामवयाद्यस्य ५५५ । विद्र्प्य सेर्स्र हुप्यस्त्र । श्रे श्रूर.बैर.त.पुश्र.चनरे.ट्री दुश्र.चर्थरश्रातपु.ब्रैरी पट.के.श्रूर.बैर.की.चरे.कूर. मी किश्रायध्याताता वाद्रेषावशाचिराया वर्ट्रायव्या तिवासावा सामित्राया से प्रायक्षायवा क्यावर्द्धिर विषयमान्त्र विषयि है। क्रु देश या वर्षा वर्दे देश या स्वर्धिर वहुका वया विरश्कियात्र में में प्राप्त विद्यायात्र विद्यायात्र विद्याय विद्याया विद्यायात्र विद्याया विद्याया विद्याया चिश्रायदे हिरा देव के इंदे स्मिय हैं नाय है नाय दे नाय दिना बिया है ना स्वा विवानु निर्मेन पाने निर्मेन प्रवेश्यन या वा विवान ने विवेशन माने विवासित हुन गु.इवार्व्यूर चर्ने देत्वार वे तीय देवर हमहूच गु. अश्यानुष क्षय पाय हिया ४८. लर्पन्ते हे द्वाद पदे प्यत प्या दि दर सक्द श स्व मी पुरा हो सार मेद सुर श

गुःचदे च दे चदे चदे प्यव त्यम । दमद चदे दे महिस द द व ने या व दे हुँ र हिंद य चल्रीन्त्र विराधराष्ट्र हिंदायां विराधराष्ट्र विश्व विराधिर विश्व विराधिर विरा येब किए। दे न सुमाने खुमाद्रेन मन्मान माने व द्राप्त द्वार्म मुना हिना यायान्यम् अ अ वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् याया कुराय नु वर्षा त्तु.कु.मध्याह्यास्त्रीह्र्याल्या । रटार्म्ह्या वहुराद्यायाराध्यारम् त्तुः इतात्तुं र पद्धारत्वासर छेव दे हि तक्कर्त्वार कुवाया नवसावसावसादित. विर्यम् विरम्भ विषय्येष्या विषय्येष्य विषय्ये द्राय्ये द्राये द्राय्ये द्राये द्राय्ये द्राय्ये द्राय्ये द्राय्ये द्राय्ये द्राय्ये द्राये द्राय्ये द्राये द्राय्ये द्राय्ये द्राये द्राय ग्रन्द्रम्भाम्यक्षायद्वा युवाक्चिष्वद्रम्द्रिक्ष्यद्रम्भानि देश क्तिक्रातालका जेश्रार्ट्यार्ट्याले विष्ट्रम् । विष्ट्ये देशाया विष्ट्रम् वा वेबावियातवात्त्रिया विरागयाः सैनबात्र्यम् कृतिः स्रयः सैनबाद्धयः प्रतितः र्सेन्द्रिया सेस्रयानुगयाय विवाद के गठिया हु क्रिया देशिय है। इ कुर प्यथा रेब केब केब रेंग्य रेंग स्या वेब रहा खुड्य अधेर गाये अर्देग यह या वेब स्वास्त्रान्यत्यायवे क्षेत्र देश्वर वर्ष्ट्रियम दश्यक्षेत्र स्वाप्त वर्षाया वर्याया वर्षाया वर्याया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर मान्यीयाययमान्य द्रारा ने इत्यन्तिता ने यायहेन ने या हरान्य शर.विवाबानाचेश.इशावर्थात्तेश.होर.ला विवाबात्त्र.स्वाबाक्टर.झ.तेवा.बलाशथ्या. क् भेर अर्द्धा कर हर राजा वर्दिता नाय सान्तु देवा सा सी सिनी मी के वा वकर। मुश्रात्य स्वायासीयावस्य कि.ज.मुश्रात्य हिं से.सी.सा. के.विश्वरात्र हा मा

पिश्रशास्त्रदायावास्त्रसाय द्विसायात्र स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य नेषायर हेर द्र्यूषाने। वयायर यथा दे वया माराय होना ये हो। रय मु स्यर में राम्यविद्या । मर से सम्यान्य प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वार्थ । श्रद्राचित्रवाम्बास्य विया दिल्या विद्यात्त्रवा विद्यात्त्रवा विद्यात्त्रवा विद्यात्त्रवा विद्यात्त्रवा विद्यात्त्रवा तर र्ह्न । श्चिम क् से प्रस्त विष्टा र् दे के ज्या तथा रि. च. के ति वर्ते र च. द्री विशेश ता लुध तर प्रशास र ही । श्र. बु इस्रायर र्जुन मुरूर प्रमा । स्रायद द्वार प्रदा विद्वार देव । विद्वार देव । तथाय। विराधिराय्यास्यास्याचा दिवाराष्ट्रायास्याचारायाः विराधितरायाः ब्रेन विवासमायर मेथा विवायमा बया वामवा विश्व मेर हो दिन पर ब्रेन मेर वश्रायाय स्रा । ग्रायाय म् ग्राय दे स्याप्ति विश्वाम्य स्यापि स्थापि स्थापि स्थापि स्थापि स्थापि स्थापि स्थापि वी वस्त्रम्भस्य प्रमान्द्रम् स्वयंत्रम् स्वयंत्रम् । विष्याम् वास्त्रम् । वश्राह्मण्याणु प्रत्यवयायार्थिद् या ग्रुटा श्रेश्रश्राह्मण्ये विश्वाययायार विमाया ब्रे.हु.देर-दश्चेष्वयायानवर-दे.पश्चेष्वायानवा-प्रे.विराध्यक्षयायम्याय्येर्यया दे. कुर द्वास्त्र विस्पर्व कुर सेस्र स्वयं विष्य विष्य के दे स्र में दे कि प्रे कि है। दे वा मृष्याश्चीयता क्षेट्य क्षिता याबट यायबारी सुराताय द्यापारा प्रिया या रेटे.बेट.च.जग्रन्थरेटा टे.के.येयु.टेबंट.च.चंब्र.ज.चेट.श्रंश्यार्थरेयार. र्शर्त्त्वववत्त्रवुक्त्रभ रविद्यावृत्त्र्र्यः मान्त्रभ्यावश्चरात्रुष्यः

वम् नि द्वाक्रेम विवाये प्राप्त रे क्रिंग अस्म अवे क वर्ष म्या । निवाय पर्वे मिनावान्य दुन्य है। सिन्येय दिन्य मेशाय प्राप्त विकास के है : भून प्यम् : इस्र दे : दूर वदर । दि स्रवे : पहुं महिष् इस्र सु प्यम् । देश ग्रुद्धायते क्षेत्र। श्रुत्रायदान्ववाया प्रवित्या स्वाप्त्री स्वाप्त्री स्वाप्त्री स्वाप्ति । ब्रिट. टे. वर्चेट. घर. ताट. वर्षोट्य. जा है. चेवा. है. व्याया ब्रुच . वर्षा ब्रुच . ट्राय . बेव. यान्ययामु प्रवेत्याक्ष्मा मुद्रासेसामाई हेवे इत्यान्या मेर्यान्या हेर. वृत्रे द्वारा द्वार वृत्र द्वेत दे स्रोते प्रमान् प्रवाद प्राप्त द्वाद प्रमान विद्याप चल्रे.चंर.बृर्ट.वर्ड्य.तर.वंशेरश.व्रा. विवाक्ष्य.व्रा.वा.वा.वा.वा.वा.विर. र्वायाचारे सूराया । सूर्यासारे रायाके रायास्वार्वाया है। । विर्प्वाया हैया त.झा डिब.कुवा.भ्रेश.त.त्र.वशवा.ज्या प्रताशित्यातपु.हिरा ट्रे.लर.लश. ययश्रीद्रम्ययविद्रद्यः विस्तर्यायम् वित्रम्यम् वित्रम्यम् म्रीस्ट्यीयायट्रेन्यात्। वीयार्त्वेन्युं,श्रेष्यायट्रेन्र्र्ट्र्यून्यं वावर्त्वेन्यायायान्। न्यायी केन नुष्ठे न नियाने दिन देन प्राया ने निर्दे न निया निया वर्तेर.तश्र्वे.श्रेय.तर.वृदी क्रमार्थेटश.तवु.व्रेरी लश.यवश.ग्री.टेचव.य.वाश. समायहन् मी द्वादायक्षा सक्ता मुंचूराय धिन हो। समायहन मी द्वादा प्रवेशार र्ट.ज.केथ.श्रेश.ग्रीश.विच.तपु.होर। शश.वंध्य.वी.र्थ.बी.विच.श्रश्रश.वीथ.रेट्टा वयाश्ची मेंदे न्तु अदे वद नु यहेव यावेगा निषक्ति ने सुद व स्व हेवा है या दे य में हिट.रे.जूरी र्रे.श्रुश्चियत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्या रिष्टेतु है व्यु दिश्वाविश या । गर दे है वया पहन सूर या दि के अर्गन में पर वर्ग के प्रमुख में पर में मा

शे क्वें द्वा । क् क्रम्म वर्षा वर्षा क्षेत्र । । दे के नदे न न क्षा प्रा विश्वासीर्यायदेश्चित्र। क्षेट्विद्स्यर्ट्ट्रेन्य्र्यास्यास्यास्याय्या तर तर्वे श्रासिय मिर का श्रमिय द्राप्त है , देव कि सूता व श्रात्रे व तर वे श्रासी विशेश. त.थ्री इंस.यचर.ततु.सं.शुत्र्रका.वर्त्तेर.पश्चिश्वातश.वेंट.टचे.श्वर.विवश.वावश. इस.चंसेश.वेस.च.जस.चेंड्.कें.चेंद्र.वेंट.स्राया.टेंचे.श्रद्ध.चंट.टें.चचस.तस.प्रच.वें. विर.तर.१४ भी रेश.रेशवश.मेथ.वेश.तश.तश.क्रूर.वर्.त.मी रेश.रे.श.वव. क्रेब मुबायमाणे दानदे ही। दे दर हिंद हे द मुक्त यह माले माण्या प्याप्य कर दे हे र से द र् ब्रिन्द्रमाक्ष्माक्ष्मानुनानुमान्यस्यायम् पर्देगाक्ष्मा हेयाक्ष्मान्यस्य पर् चबुष्रियाचीयात्रकार्ड्सरालरा। द्रेयात्रकायदेवाताद्रवातीःक्ष्यात्रव देत्रक्र्यायात्री वकर पन्ने रे निक्रम पुराय प्रकर खुंवा दर्भ वार् केंब्र क्र में क्रू ने बार में अर्थ. गुर्रर्प्तिव हैंद्र्यये दर्द् र्रे निर्वापनि द्र्या देवा प्रति द्र्या देवा प्रति विवास ट्रे.सं.चेत्र.कूट.धेट.एश.तत्.सेचश.शे.इं.ची.शक्ष.याववा.वा.वट्र.व.ट्य.तर.वेश. हेपार प्रस्था अर्जन पर्ने हिंद की स्थार्स वार् प्रकर पार्टा ने सु मुके परे हिंद रेडेर.शर्.की.ल.पंत्राक्षियाकी.यंबेट.क्षा.वेट.द्रवाकावकी.द्रवाका.की.द्रवाका.वास्त्रार्टा विर्नायर अंशार्वेत्र अवर विवानाश्रद केत्रे हे तकत्र मुख्य पर्य प्रथम वित्र रहा ने लट सेव के कारार से मार्य हैं ना न से ना के कार है। से के ने से मार्थ में न्ववादि सेस्र हे किया महिला क्रिया स्थाय है स्था स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्क्राच्याक्षान्त्रवाद्वान्त्वान्वान्त्वान्वान्त्वान्वान्वान्वान्त्वान्त्वान्त्वान्वान्त्वान्वान्वान्वान्वान्वान्त्वान्वान्वा यायुषायदे द्वा वस्य कर्त्री । यदे द कवा का के व में विदेव क्वा प्र के वा न्द्रा दिन्ने में वास्य स्थान स्थान । श्रिन् स्थान सुर्द्धा स्वर्थ स्थान स्थान । यहे या तक्री रिकुश्चायवर्द्धात्ररश्चानुर्व वेशमध्रिष्ययवे भ्रेरा श्चरा रूर. चुवे-न्वश्रातिक्रीक्रिक्तिक्षाक्षेत्रम् विवायम् । स्वायम् स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः या क्याश्रास्त्राधिराद्वात् स्वास्त्राधिश्रायदे पाकेशा विष्याद स्वास्त्रायः वह स्वास्त्रायः वहेंबा व । गरिषायामगाद्रवेदायादुग । युवाद्रवेदादमाद्रवेदायी में दिया म्बार्यक्ष्मित्रेर्यक्षित्रेर्याची लागानु व्यस्तियार्वाचा म्बार्यक्षेत्रे स्वाचा स्वार्यक्षेत्रे स्वार्य ने हिन्यस्वया स्वया की दे विक हिन्यस्वया द्वाद्वेव स्वा के वा की व वना मु व त्युर रहेवा हमा दिव है : इर क्षेत्र हा खेव हेव वे वि दिहार है। युहा निव निर्मा निव की के रिकारिक की विषय के विषय के स्थानिक की स्थानिक ह्र्याबान्ध्रायदान्नेदाक्षवादित्राद्वा द्याद्वे वाद्वे वाद्वा द्याद्वे वाद्वा द्याद्वा द्यावाद्वा च त्रकातात्रे विष्यात्र क्षेत्र विष्यात्र क्षेत्र क् श्रुव द्वाप्त हिंद देव देव देव विषय देव हिंदा देव र विषय विश्व हिंदा देव र विषय देव हिंद र विषय देव र विषय देव देवे इया वर्षे र हैं व दु वर्षे दर्भे प्रायमिव प्रेव प्रवे हिया मानव प्रदार ने महिषा म्रिश्मान्याने ह्रिया मित्रा के मित् क्षेट्रावद्यक्षास्त्रम् क्षेत्रस्य निवास्य स्थायाय विवाद गाव प्रसादेव हिन निकार्यात्र. नाबव स्थल र ट. हैं है व अर बर नाबर र नहें व नव है ट नव स्था र मर्टर व में व स मध्येत्र पदे द्वेत्रा महिषायाचे। दमा देव पक्षेत्र देश पुरे वर्दे द्या शेष वह दे। हिंद पहुंबाखुदेपक्केद्रियार्थाय्ययार्थाय्ययाराय्येवरायरायम्द्राय्येष्ट्रिया मानवायराय्ययारायम्द्राय वक्केर्द्रसाधिक्यरम्बया क्किंद्रवस्थायश्चरक्केर्द्रसाद्दर्द्दन्द्रवादिक्यम्

यानकर्याराचन्द्रायदेखिरा लेखा क्रिन्येद्रो यानकर्यदेख्यायवरः र्द्रा खुव दु क्षेत्र वाये अस्य विश्व वाया वाय दुवा कुर स्वाय दे हे व क्षय या निश्यायाद्रयानीयावस्यात्राद्ध्या बिरामारे हेरी नेयायानेयानी मुक्राप्ता बिरा ग्री इसायर द्वे वा के वार्स सेवे देवा केट इससाई सर विद्याव केवा केट. इस्रमाग्रीमान्यान्त्राचेना ने वायहेन नमान्यमा वेन की मन्दर नेमान्त्रवा वी । १८ में है। है न हम या मुन्य या निष्ठ प्राप्त के निष्ठ है । विश्वार्त्त्र विश्वार्त्त विश्वापति । विश्वार्त्त विश्वार्थित विश्वार्त्त विश्वार्थित विश्वार्य वि गुरार्द्ररावन्नराष्ट्रियायायावन्नवाद्य्याहे। द्रयास्या वृत्योदे हेर् देयाच्या त्री । ह्यायाग्री दे दे प्यट द्वा यह्वा । ह्वायाग्री पश्चेद या ह्वाया वयात्री । दि हे . च त्रायाया के स्थान के बान बुद्धान विष्या महिषाया की कुर में दे हिर में ब वयावर्स्वेययाव सुव सेंट द्रायां वी दिया मुवासूर दुर्विव है। दे हे व सेंट व.नश क्रेन.तश्रु क्रेंट.वर्श्चिश्वात्र वित्र देन्त्राचीय.तत्त्र वित्र वेषाम्बर्धरवायवे श्रुरा द्वरामा दे दे राज्ये सेवाया रहा नेवा गुराया देविसवा व वेशायानिवानुके हे। हैं या वर्ष्या वर्षा कुरावी क्या वर्षे रायी मेशानिया विष् व्याम्बाग्रदाश्चेशवाता । दे.वे.र्स्यात्वर्ता ब्रै.क्याया विष्या मुक्याया । हेरावळ व्यापर चतुःश्रेष्रच्ररच्यूरा लेषाग्रह्मरूपये धुरा ग्रुकायहै। अवअः श्रुर्र-१८ छे। नेश्राह्र में बे त्वाया के प्रति वा में प्रति वा में वा मे में वा लय ततु शर व्याय विर्याह ह हे हें दे प्रया रें ने वह ये विर मेवा श्रम नवता कुब की विव केर हैं इ. चव किर देर कि रहा विवा विवास की वा लर. र्यात्र कि.वा रव रेकि.वा ह्यात्र कि.व. झे.लय वाया या केट के झे हे विषय

तत्रुश्चर वेश वश्चरमा ह्र हेर दर प्रार हें न वहेश गा वर्मा दर रें स्वाप है देग्वेब्यम्हरा कुःअःद्वाया बुःदरःरुषःखयः इरष्यम्दरा । इः क्वेब्रादर्वे चिं जशक्त के वा विश्व में हैं चविष या आक्रिक पर्व श्री ची श्रामी स्ट्रिक में प्रिक्त में प्रिक्त में प्रिक्त में पर्वे परिवासमा दरार्ग् सं वास स्वते केंट्रा है आ सं मूर्वा वहें में पार्व वाना लेब यदे छैर यब वन ने कुर से लेब यन रें। दि व रें हे छेट यर यह र पत्र वाश्विधात्त्रं वेर वक् इतक्रिं विवर्षात्रं व्या वेर वर्षेत्रं र वर्षा गया. वेषा वर्रेषाववर्द्धवार्षाक्षरण्या स्टायुगमाकुटावर्वेषरारुपर् गाबुद विदेव भी कथा है गाव के दूर्व कि विश्व करा के विदेश के विदेश करा करा के दिया करा के दिया करा के विदेश करा शक्ष होर्ष शति होर्णे पर र्रे स्वर् राम्य प्रति प्राप्ति राम्य प्रति प्राप्ति राम्य प्रति प्राप्ति राम्य राम्य मियायन्द्रिया अन्याये अद्योषान् स्वार्थित प्रति स्वार्थित विष्यायान् सुसा इ ववे कुर विवेदिन वन् या यन वा भी कुर विवेदिन वन् या कुर विवेध ग्री ब्रुबर्स्स्यादेव प्रमान्या । इत्ये द्वा स्वये द्वत्य स्वयं के स्वय सर्गेन में ख्वे कुर र् वहेंग ख्वार्ये रो रेस विन से वर्ते रा रेन वर्त् दिन्द्यमा केना देव मुदा क्या सूर अर्थे कर्य द्यार की कुर पु पर्दे मा पर्द सुर देक्स उना हिन्य ननस ग्री हन यर सेन्दो रेस पनिन हिना समेन ता चलट वर्षा जैंग ग्री क्र्या अक्ष अत्या वर्ष वर्ष हो में मूर्य वर्ष वर्ष ता से रगक्ष महिरायमा अस्विव वाय राम् मानिराय देश अनि वि मिन मुख्य वि हिराय वे कृ देव बर्व नव मही दे है हिर्म क्व की क्र प्या हर नव द्वार माम क्षेत्र नव मान या निश्वत्रिट्यर्थर्भात्रात्र्र्य्य । श्रिव्यूर्यं क्रिंत्र्यं । श्रिव गर्दिन्ययदि देवाग्यर्पयादि हो । हिराम्भीन्यायदे हो वा वे वा नु सार्थिन

दे। विराधेशकार्गराद्शराद्दा विविदे वेद् वाकवाद्दा श्रेवावहेंब मेवादु मेग्रायवे कुर दर्। वेद ग्रय की कुर दर्श स्व की मार्थ के किया के दिन परि कु अक्षव रेप्ट्रे केव नट नेव राष्ट्र पविषा कुर केट्य द्रा कुट क्षेत्र शास्त्र र वा श तास्थराहिर्तातास्यात्राचीत्रात्रात्राचीत्रात्रात्राचीस्थानीःदर्गवासवातकरातार्टा नेवः मुं संपर्व संस्थान्त व्यवारी रुष्ट्र नाम सामा दे स्र पहेंद्र पर्व हिन विक्रम नेत्र मु द्वापये कुट सेस्रम पातुना स्रवे कुट सेस्रम द देन पारेना मु वहेंद या सेप्यहर दे। बैट.शक्रदे.ह्या वश्याचट.पेट.वी.ह्यूर.तव.वी.ट.श्रंशश्यादे.विव.ये.त. पर्वः कुर क्षेत्रका त्रिक पर्वः द्विम विकारी विकास के विकास माना का का कि विकास के व इ.स्ट.च.जश्र्म्या.चेर.वर्षश्र.केट.वर्ज.इ.ज्व्र.केट.त्व.......वे.केट.त्व.......... यद्रायम्यायायावावा क्रिवासेर्दे द्राप्ति स्टायायायायायायाया व्रिःसन्ते कुं क्वा कुं निवर नु कुषाय भिन्न यदे क्वेरा ने भर क्वेना दहन देना नर हुर स्वाक्षेट्र नुकुष्वते के क्षेट्र विषय अपूर्णिय यावापाय स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य वश्यायर हेट देवा नु कु नय विवेदी । इत्वेद कुट हो देवे वस्तर दिन विवेद र्टा किं यदुः क्वा की बाबिर तर रेटा क्वा है। ह्या वहूं वे कि विश्व ता प्राप्त नर की मुब के मानवाराना विर्मान सर मा के नद कर ने निक न सवा निका इ.चे.च.चलश.केट.वश.रेच.में.के.च.रेटा अध्याचवश.केट.विश्वश्राता वि.ट्रेच. र्कत्रया किंत्रपु.कु.र्वी.तक्ने.त.स्वा.वाश्वा.सं.तेवा.वाश्वा.या.ववा.रेवी वित. में देश स्थायि विस्था वा विद्वा हिंद ये। विदेश पक्षे दुषा सामित्र से कु परे

विराधराद्रात्वरायधिरायवे धेरा विकारी सर्वे वे सिंदे हैं देव हैं से विकार है स चर्चर.त.श्र.वचर.तत्र.चरा चर्ना.वीर.जश.बै.चैंग.चलश.वंश.बैंटा चेलूब.वंश. रे। रट्यं वे मार्ड्येव रवट र् मुक्षय रटा क्षे अवे विष्ट्र रु कु ववे रवट रु चेशताला निवासी रे लिए अपवि में त्वा में त्र में मान कि निवास माने प्राप्त में नावव नासुस्रामी पविकारे विकार प्रिंग मुलिट रहार दिया अरावि मावसावसावसा स्टाप्ट्या दिट हें वा विषामश्रद्धायवे भुना देशमावन स्थय गुट अर्केन के । अर्वेन ये चधुदुःक्रैटःप्रःप्रथावाक्त्येशक्षाक्षाक्षाक्षाक्षा प्रटःप्रटावालेशाक्षीबार्टटात्तावेशावेश. क्षे.श्रान्वेदःक्रिंद्यालबःभूरःक्रिशःप्रशास्त्रवर्तःक्रिंतालवाहे। क्रिवःक्रिशाम्द्रःचिवाववा र्गे.तके.त.संग्रेच्के.वंदुक्रा र्गे.तके.त.संग्रेचे.वा.द्रेग्रतके.देर.संत. स्यान्त्रिराचर्य्यायदास्त्रम्यायराज्यायाराज्यदास्त्राच्यायान्त्रस्या वयाकी ट्रेड्बाक्केवाशवाक्तियावाक्तियावान्ता ट्रेब्बाक्किशाद्वाद्या १८। स्यार्गीत्र्वे विश्वत्वे देर् देश्या के देर कि त्या विश्व के त्या १८। रे.चर्षे त्यर तर्वे र.केर.बी.रेवर.रे.वेश.त्रु.श्रंथ श्रंथ व्यक्त त्र की.रे.बी.र्.बी.र्.बी.र्.बी.र्.बी.र्.बी.र्.बी.र्.बी.र्याच्य पित्र स्पर प्रमार है। युर हैं ब यथा वे ब र गर या से गया रे स पित्र है। हिर ५८.वर्षवाबार्ट्यवा वित्राहित वित्राह र्शिवायिरःरी विषामध्रम्यायवेःहिरा देःसरः द्याव विषय समिव रीः पवि म्र्रिप्रमान्त्रितिबार्षाः कें. यदा क्रु. श्रम् व. त्रा. यथा व. या. रवाक्षेत्राच्येत् कृत्त्र भेरत्ये क्षेत्राचि क्षेत्राचि र्या देश कर्षाच्य र क्षेत्र क्षेत्र विद्य र के स्था

र्गीवात्रिर्वेर्येष्ट्रम्वित्रम्वित्रम्वित्रम्या वर्ष्ट्रम्ब्रम्वेर्येष्ट्रम् गु.इ.च.श्रुट.चेत्.संश.भूर.श.श्रूचश.लेत.र्ज.तचच.चत्.इ.२ट.र्हेर.चेत.श.र्थश्र धेव है। हैर बेट थया ज्ञानवे क दट बूट पर दर्ग विदेव प्रगुर केना नवा शकुष्ताक्षी कि.षु.र्ज.लु.शूर.लुष.बू. कि.बु.र्ज.ताथाक्री.चवु.वैटा वि.रेट.पेश. ञ्चवाक्षरमान्द्र। विक्रिष्टेवाद्रावि वसाक्वा वेसामस्त्रायदे हिरा सः येवे वर्ना गुर नवना मुर्चित दे। देश पविव दश्यर हैं शेरा नगर हर पर हे वर्ग्रम्मस्य म्यान्त्र वित्र वित्र देन्त्रस्य सर्ग्त्र वित्र मिन्द्र म लट्रान्त्र्वाची क्षेत्र वा वहें वा वा क्षेट्र वा वे उत्तर व वा वक्ष प्रकृत है। अवा प्रमा क यद्रा इद्रा कुद्रा विषद्यर्या मियायर वियत् कु विरामन्या । यन जनानी केंट्र सिर्टा श्रेमा वहुंब र मारा हो देना मा इस श्रामी हेट व राम बेट वहुंब. मु दशह्मा क्रिन्यव ह्मा क क्रिन्य क क्रिन्य के क्षा के वह माना लव है। ने दशका मु हिन वश्रास्त्रानेशक्रिन्यादुनानेशाणुवावहेवायवेक्तवश्रावहेवायवे कुन्ति प्रवे कुरादुन्ति प्रवे कुरादुन र्वा नामवा प्रमः द्वार प्रवेशक म्यान बुर प्रवेश कुर द्वा प्रवेश किया नामुमः वशः श्रीयः श्रीत्राया युषा ग्री द्वारा होता व्यव वा नी क्रिट क्रय शा ग्री शाद्वार दिये स्र्रिर विग्राम् सर्पटर मेश युवावा र्श्वेद प्रांदे मुराम हे द्राय र श्वेद । दे यह सहया र् द्वित्तर्द्वेक्षवासाग्रीत्यावद्वस्यर्रेत्वेत्तर्देवे श्रामेत्रेत्वा वद्वस्यव्यस्यर्वेतः वह्नाने द कर दना श्वाहे द ने द रावे के सामुद द मुराव श्वाह मानु र वि साम स्वाह में में न नुःत्वाकाने र्राया के विदेश के किया मेर्ना के स्वामित के किया ने नास्या

मु निरम्भ सु वर्म् । वर्क्ष प्रवेर के के निव क प्रायम सम्मिन के निव कि निव के न ग्रयायकरावराष्ट्रेरायाणेवाकी । बार्ट्रावायाया वर्तावेवायां वर्तावायायां त.झी बुश.चैट.क्श.चुश.ग्री.पबुर.तर.चश्रेटश.धे। क्श.चेश.लेज.ज.चलू.प.चैट. वीषानुन्यते भुरा कुष्यळव नेते भुरा सम्माजव योव के किया या वार्य पदिवा हेब बेब म म स्याप्य में युर हेंब यथा वर्जे य प्याप्य या या विदेर बेरे या पहेब या थेवा वेबा ग्रुट्य मेटा हुँ द पहुंबा थवा गुट हुं द द्वर पे वान्वसन्तर्निमानीसान्तिन्त्रान्तिमान्तिमान्तिमान्तिम् द्व.पीट की शक्य देश किट क्या प्राप्त की त्विय तर शुर वर्षीय है। वाजा है तवीय व र्वरम्भूलर्द्वरानेश्राशिष्वेष्यम् हवायवे श्रीरम् ।र्श्याव स्थानेशः ग्री'मर्विब'म'णेब'हे। द्येर'ब'व'र्ये'श्रेषा'ठब'र्येर'मर'ठब'द्रर'मठबा'हे'णुया नमूर्त्याक्षर। क्षाःस्थान्त्रात्वात्रहेव व्यालीवात्मूर्तालवात्त्रहेर। रे. वार्षे तत्वातकर श्रातकर विश्वालि देते । वित्यावी र्यात्वर मी वीवायावा ग्रेन'ने'कुर'हे'वि'केन'र्ह्हर'दुन'यकु'व'सू'त्न'दर'दृग्व'दर्दिर'द्रियदिर'दर'कु'व वस्याम्बुस्यार्देवम्बुर्गानुगुर्गायवे वस्यायकुषिक्षानुद्याये स्राप्ते **१.८८०.पर्वे.रैंग.प्रा.शक्शश.ग्री.१.यप्रु.**ईट.तर.चेश.तप्र.सेग.श.ग्रातथात्रथात्रास् श्रे कुट वस्रास्त्रावय थे नेषा श्रे कुट दुवा दटा वार्षेत्र वस वी देस केवा परे कुट दुवा क् बिटा नामकाग्रीकावकानाम्य नी विषयामान्य विषय पार्य के मानवा देशा मानवा देशा मानवा देशा मानवा देशा मानवा देशा रे'य'ह्नेर'मकुर'मकु'रे'कु'प'णेव'पवे'धुर'रे |विव'गुर'वर्थि'सळस्मारे'रेर' र्युःस्वर्षर्य्यावर्षारः दुवायविकःरे कुप्यविवायिवेषाः याकुरः दुवायकुर्देवः स्प्रित्यः स्रक्षाक् प्यटादे वार्वस्य बुरायके रादे नार्वे विद्यायते व्यानस्य वान निक्ना

वार्चेट.वर्चेट.वर्चेब.ब्रुश्व.वा.ब्रुश.वे.चेश.त्रु.व्रि.क्ट्रब.ह्यं.च्ये.वा.च्ये.वा.चेथ.वे.वे. यानेरावि दरा देवविन दुर्गीयाविरामी वर्षे वर्द्या दर्गी वर्षे वर्न वित्र हि दे दे दे वा वी विषय व दे वा दे का की का की का की का की का वा दे का वा विकास व इ.चेब.बु.उत्त.च.चर्च.वर्ष्ट्रस.से.चेट्.जी। सूच.बेर.वर्ष्ट्रस.तार्थस.कंर.सूट.चस. लट.के.शू.चधुव्र.द्रश्रतश्रध्याचक्रे.ध्रेर.कि.त.त्रच.चधुर.वेर.ट्रेस्थ.धे। व्रज्ञाव वर्षा सैग.मै.वर्ष.वर्षेत.र.र.पुटा द्विश.चमै.द्वे.सी.इ.स.ही रि.वर्ष.चमैश. तबर्ची तकेत् । रेथ्र तक्त प्रेस्त क्षे से तक्षा । प्रदेश तथ मि से वा विश्वर देश । क्रिया ईट्रट्र वे द्वापकुर्व वेषायश्रद्धयाये द्विमा देषा व विषाय विषाय व्यूट केवा विविधित्रे ते वा दुवा दुवा दुवा पुवर्षि वश विधिके दे र विविद्या दे रे रे रे क विविद्या वर्ष्यायसाववृद्द्वानी वर्षे स्ट्रानी द्वा स्ट्रानी द्वा मुख्य स्ट्रानी वर्षे प्राची वर्षे स्ट्रानी वर स्ट्रानी वर्षे स्ट्रानी स्ट ह्य दे र य र र । र के वार्षिय विकास के विकास के वार्षित विकास के वार्षित विकास के वार्षित विकास के वित वर्षेयाम्कुत्। वर्षेकुत्र्वासुर्श्वयवित्रकुत्या देण्यत्वमाम्केषामाकुत्रसम्भा हिराम । अग्रेवाम। है। में। हे प्रत्र हायर माया माया है। प्रत्र हे माया है। क्र्यानक्रित्रा वर्षाचावरुद्वारा स्ट्रिंग्याक्रियारा न्य्यान्याद्वा दुः इतिवैदे कुर विषागुर पम् दे विष्य पम् कुया क्षेय क्षेय के यह पादे क्षा हर देशकी मिर्नायर है हिरावर्दि के वा नश्रमा ना मुक्ता ना मुक्ता ना मिरा है। यह वा निमान के निमा के निमान क्र्र-रे.चे.चतु.वर्वेत.चेतु.चेंट.कें.क्वा.श्रायट.ट.वार्बेश.य.ट्यूटश.बंश्वावीशेटश.त. चैट्र हे. क्षेत्र के विद्र क्वालटा क्रिया वर्षेट वर्षा देया र त्र क्षा क्षा वर्षेत्र वर्षा वरा वर्षा व

वया । वर्षा निर्मा क्रिया हे देव ना ब्रिया हुए। । ज्ञान व कु हुव छे ए वा । दे वया वेब नबिश्व है साया वेब स्विव या बिहास विद्या ने से मुद्र हैं दिये हैं सा खेना व है या यांके विद्युत्त व्यापता दे हे दे वाया है साइना मु वर्केन या वाया निया हे हित्ते कु'या । दि'के के दि'या के व ये प्य यह । । द्विन वा निव प्रेव के विनाय प्य । विन क्राबास्ट्रिया हिंग्यानास्याद्वेष्ठात्वानात्वा । श्रान्त्राक्ष्यात्वा वक्क प्रस्त्य वृत्रा विश्वाम्य प्रस्य प्रस्त्रा दि प्रविश्व द्वाप्त विश्व में स्राप्त विश्व प्रस्ता विश्व प्रस् पर्वः देव त्वाव क्षे त्वाव ग्राटः। दे हिद वामा सर्वे व र्ये हे स्थू विर क्षे । विवाद विगागा विरामवसायद्वेवसा ।गा विराक्षा विराम यर वश्रा । मार वश्रासमीव र्थे दे कुषा । देर मवश्रायमाय विमाय दे हि द्वा । दे क्षार्व गाव त्या । विश्व गार वव श वया हे क्ष्य वश्र विश्व विश्व विश्व व मा विकाताची किर्धानमानानानाने के कियानान के कियान है। मिन के कियान किया कियान कुर निषा छे र पानार विना । निर्के र्वे र प्वेयर प्वेय स्वा छे र प्वेय छे र । छे सारे र । वया देशविर वर्ष इव डिया छेद क्रेब छेद परि छेर हो वदेव वहिंब विर यवे अपानार विन । देवे पर्वे न युर मे श हे द परे खेरा हे खा पुरुप र र लब लग मी केंद्र क्रिया मी बाह्य होंद्र दें नि में में में प्रत्य में में में प्रत्य में में में प्रत्य में में बुद्रान्नव्यक्ष्यम् द्वद्येवे क्षेत्रावदेव यद्दा के बुद्रायद्दर वक्षेत्रवे मुक् मुन् क्या क्रिंद्र हिंद्र द्वेद्रव विदाय या अप या मिया मुन्त या अप या प्रवास मिया मिया मिया मिया मिया मिया मिया त्रमान्द्रमामायद्वेद्रक्रान्द्रमामाम्यम् सम्माय्यमायायदेव्यावेत्वाच्येत् व्य म्रजामीमामितान्तरात्र्रम्यायात्रम् वह्यामान्त्रम् वह्यामान्त्रम्

होर म्ब्राम्पर दे। अपवे मुद्द समाय वित्र प्रमाय वित्र विष्रुश्चरियात्रा क्षुं अदे भुष्वाप्रदेश देश देश के महिषा विषर् शक्का वर्तीय। लथ.वर्गा.मी.श्रेट.अश्रश्र.वा.ह्र्र.वश्रश्र.विश्वतश्राप्ट्य.तर.पृश्वत.वि.वर्ष्ट्रय. कुर जीवा बैर वाश्वर रार्ट कुष तयर यह मुर्चा शासी वर्चे रात्र हिरी पर्ये. ताक्षश्चाल्य मी व्यव राष्ट्रिय पानी विर व्यव श्वास सामा प्रति र स्वाप ही र प्राप्त सामा सामा प्रति र प्रति प्र य हे द ख्या मेश्राया याद के श्राया व्यदि दे। गुन है ना नव्य हे द ग्री कुट वर्षेना प्रवे हे र कुर ह्मास न् हेर से न कि ता प्रति के ता महिला कि विष्य पहें न ष्याचिरावश्वास्त्रराष्ट्रिरावाद्राश्चान्यातातात्राचर्द्वयायवाक्ष्याचेवावाती.सी.सी.पाता वश्रकी क्षेट र्गूर में दे ता लुक पर्य हिरा चल पा वा लट हवा का परि वा हवा का की. वदा इनश्रामु देवा इनश्रामु देव द्याया इनश्रामु इनश्रामु दिन्य वर्ष वदि ग्रिने भित्र है। हैं ग्राम्युरायया खु वे ग्रायेद में ८ विर है। ।ग्रम हिग्या वर्वेर.चव्.ऋ.च.ही बुश.चश्रेरश.चव्.हीरा चर्थेश.चव्.हंचेश.रेट.। चर्थे.चव्. क्वायामार्यिन दे। वदेराम्ब्रमार्था खुः दुंगासुमारमा कुन् हे मिविव ह्यासारिया इ.श्रेर.त.रट.रट.वी.कैर.ई.वश्यवर्तातविष्यते.त.लब्रातव्रहेरा परें.वेष. र्टाचर्षायदे विषयम्भयम् ग्राटार्यम् वाष्यम् ग्रायः विषयः गुःलान्। क्यमान्ता व्यायदेशक्रामान्या क्राय्येतः व्यापान्ता क्राय्येतः क्रमण्डरा स्रिक्टिंग्स्यक्ष्म्यक्ष्य्ररा र्षि:संगित्रेषागविः ह्वाषा इस्रया ५ । १ अविद्वी प्यापे ने र वहेवा पाणे व पवि ध्रिया चर्यश्चर्यः इवाहा द्वराह्य श्चराह्य व्याच्या विषय विषय क्षेत्र विषय क् कर है है नश्चार पर पर निया होता । यो ने नश्चार है है नश्चार की से दे राज्य में न लय ततु हिरा लाग्यमिया ता हिया राज्य सम्बन्ध हैं तिर प्रति व हैं व ता वा के राज्य । र्वेश्वराख्रिने। इवश्वश्वश्वराहर्जीर्द्शाचीयावचीयावत्र्वेशयाक्षाचार्था वार्षेर्याने वेशायर मुप्ते केर् प्रेत्र प्रेत्र भी वेषा मुख्य में प्रमान मुत्र मुल्य लट.लूर.री विष.शूट.च.रटा विर.तत्र.क्व.वर्त्तेत्र.च.व.वे.च.वेर.क्व.व्य.व्येश. र्थेन्यवे भ्रेत्र न्द्रार्थेन्ते थे जेदे जन्दर अठव मी कुर जेश जुर जवश्यः ५८। विदेश्रिमधान्य में जिला हो ना में विद्या में का निवास में द्रयायान्द्रायुवे न्नवस्यासुन्वस्यायस्य न्नेत्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रयायम् क्ष्र-मुश्न-स्ग्रिय-देव मुश्न-स्या वि.स्वाय-ग्री-वर्ष-वर्गेया ह्वाय-द्रश्न-तर्गः ल. मेनम्भ्यामे द्राप्त विष्या विषया वि च्युनाचन्त्र ब्रिट्यार्ट्स्वाना ब्रिप्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या न्। अन्तर्भ्यस्य सन्द्वरस्य मध्यानी मन्द्रस्य मध्यान्य भ्रम् मध्यान्य भ्रम् ब्रे.चर्नु निविदः स्वाकाग्री देशद्व ५८८। श्रे.वेनाकारा वका वृद्ध वर्षे वर्षीका वह ना वावश्रास्ट्रवाश्रुअभी रद्भात्रद्भावा वाश्रुअभी रद्भात्र स्थात्र्भावश्राम् तत्रेह्राच त्रवाह के विषयं क्षेत्र का कर दें क्षेत्र के विषयं के व गसुअ की ग्राम्य के जो जासुअ की जार्र का सुराय हु के राय ह्वा का जी प्यर प्येत किरा दे.ज.लट.क्रें.च। रजाचा क्रा.क्रें.चश्यारटा श्रिव.वर्षेत्र.तर्टा चर्चेवश.

य'दर्। मनेमसासुमिर्स्यावदेग्वइ'वनद्'दुर्वेद'दे। युर्'ह्रेंद्र'यस। वह'धिस' ने किन मार्था मार्था । यह प्रविद्या मार्था सक्षेत्र किन हैं। के साम् सुर सामवे ब्रेरा गमुम्रायाकी ब्रिरास्मामाग्रीदिन यानु सालेगार्येन गुरा वर्दर वहन थे। वरार्म्याद्व त्वराहे। बैट इंचरार विराश्चर में दूर वश्चरा वराया श्रामित्र देखेरलूटशासी.वीरातावशासी.श्रद्धां भेरावप्रदेशता.दे.विवाशामी.द्र्यालया.वी.दे है। दें हैं दें प्यक्षा दें हैं प्यें द्र श्रं शुं शूर प्यये ग्रं ग्रं ग्रं ग्रं श्रं पर देश ग्रं प्ययं वि वेषामध्रम्यायवे द्वेरा ववे यात्री हमाक्षर र्रा व्याववे दे ववे व देर इव क्षेष गुण्यदे या क्रेब प्रसासिक सुसार् हें ग्रायाय दें दिव दसाय है। ह्या सामी देव दसाया प्रेब र्मात्सिकाक्षिक्तियासाक्ष्याचिकाता हिनातान्याक्षयायत्र दिन स्वर्गा विदे विन्दिन्दिन्द्रमः हो। विक्रिय्य प्रत्येष अळव विन्दि। विक्राया सुरक्ष प्रवेष्ट्रिय। शर्ट्रायर्न्द्रम् स्वायायपुष्पाद्रा स्वायाणुष्पद्रायस्य स्वार्म् रावस्य स्वार् ह्मार्के कुर्य रेट हिमाराकी देव रियाना महिलाकी रहेर प्रमास करा ने सामाना पहेव वर्षा चैर्न्यतु श्रु व्युक्ष न्द्रिया व्यव्य प्रस्त प्राचित्र हिन या स्वावा स्वयं प्रस्त स्व पालाबिरावचराताच्या क्ष्येशाच्यकान्वराज्ञान्यालाबिरावार्टराट्याज्येयकात्तरा नेषान्वीषाने। दे नेषा व व्यवस्था व यथा व र शिर्षा देव नेषा यर व श्रू र शी। दे वमान्वन र्ने में साम क्राप्त की राव की राव की स्वाम समान राजी हैं। वर्द्रान्त्रिक्षे अध्याद्या देशर्द्रेष्ठ के स्वायाध्यय उर् के अपने सर्वेष के अ र्नेन मी स्मान्दर प्रवास प्रस्था स्वास मिन हिर निवे हिंग पर्दे ने ने में स्वास मिन हैं। वाश्वीनिषायदेविषावादरा देशदेविषा मुम्मा हिषा देविषा मुम्मा देविषा स्था प्राची सामिता स्था प्राची सामिता साम इ.च.लुषे.ततु.हीर.धे। स्च.श.जीश.ततु.इ.च.भ्रीश.वीतु.कीर.ग्रीश.वर्देश.ततु.र्थेर. गर विग दिव कुर ग्रीश पहुंबा पवे कुर इस सारी किया किया पहें ने में ने पुरा प्राप्त किया विश्व किया प्राप्त किया यवै क्षेत्र अद्भव अद्याययम् अवस्य उत्पुत्र र में कुर कुर यवै देश देव मु अ सुर वश्यविरशय भेतर है। हुँद यहुश वशा दे यह व निवशय समा क्र अद्भुत्रम् साम् मुर्ग्य प्राप्त । अप्रमुत्र मुर्ग्य प्राप्त देश प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र चत् वेश.चर्थरश.चेटा अक्ष्य.चर्ट्र.जश.प्रेटा र्ट्र्चशतव्यस्थ.केश.ल. वश्रुत्। ।अद्भेत्वेत्वन्युन्त्र्वीयक्षेत्र मे स्पूर लर अ चीय है। जूब कि राज है ला बे खरी। कि व र पहिर य हर श ता है। विश्वानिश्वानाय हिरा त्र्यामा स्थानिश्वानाय हिना या पश्चित्र वर्गवानेग्रान्ध्राम्बर्गाम्याने दिन्द्राम् स्थायम् वर्ग्यान् स्वाप्याने स्वाप मित्राबान्य में क्षेत्र प्राचित्र हो। पर्हेर् प्राणीव मी कुष्य अकूष । क्षेत्र गावर प्राचार प्राच प्राचार प्राचार प्राचार प्राचार प्राचार प्राचार प्राचार प्राचर प्राचार प्राचा वर हेर्। देशवासेरश तव हैर। इ. चेवाश तव होवा जा जा हैर हारा वाश हैर. चविद्वानी व्राचित्रवाष्ट्रवाष्ट्रवायविति हिर्देशसम्बद्धाः वित्रवास्य व्याप्त बद्क्षे मेग्रायदे विग वे दे प्यट दे प्येव है। दे हे क्षेत्र कुद व्यवा अवे क्षेप्य केद तत्त्रिरक्षान्यश्चर्त्रीःसूर् वेशत्रर्रा हें हे र्शियाविष्रक्षेत्रे केर् वसाग्रीर क्रीर विद्यात श्री नेवसाय विद्या स्वाया विद्या विद्या विद्या विद्या युर्क्षि वशा बुर्द्धायुष्ट्या पुर्वा । युर्वा अव द्वा विद्या

यवेर्न्द्रमादाधेन देवा देशर्न्द्रमु । अर्थन्त्रमु । अर्यमु या दे या हो या हो के द् या या ये व ते शायवया यह व के विषय पर हो गाये षाद्युरादे द्वासायुर्यायदे वयुरावाद्यासु वयुरादी दि द्वाराद सेवासायदे हेरा यान्डेनासाधिकाया रिक्षिष्ठा ५ गुरासाधिक के लिया पर्वे । द्वाया द्वार् पेका खेना क्र्यामु व्यव वर्षा दुवा के वर्षा वर्ष र्ट्स्ट्रिंग्युर्ध्यत् बुद्वेन वेदिन बुन्या सुन्युर्ध देन रहा दिन सुन्युर् शर. वै. उत्तर अक्शब बी. वृश्याता वा चारा चतु. वै. कुर हिवा. वृश्यापत खूवा. क्र्याव्यात्राक्षे क्रि.ही.या.वाया जा.प्या.सं.जार टाव्यार प्रवेषाया विर्वेट.व. ल्.ल.र.च्युरा विरावित्रवाश्वाकाशीकास्यावकाशी । इं.ल.ड्र.शूरारवारे वर्ष वेषाम्बर्धायवे धेरा धना वे दे दे राधे ने मब्द्र भी रामा मुद्रा ने रामा प्राप्त मिन्त में दे रामा स्थापन है। देखेर वर्षा देव के वार्टिन इंस्या शिना दर है वाय वेषा गुराय नदा रट.र्ज्यका बेश.यंबेटश.तत्.हिरा श्रेट.यंत्.ऋत्तर.की.रेवेश.की.है.हैत.बट. र्शे केवियात्र होत्र हित्र त्रायक्षया हिंद्यायाया हित्यावे हुर हिवा वाहिता. सुरायदासुर्वाङ्कितावेश मुंही देखेदायशा श्रेटावर वश्यश्वश्वश्व श्रिवादे म्या.एर.वीर.तर.योषय । श्रमायमिरश.तत्.हीर। सैयश.वर्रर.सूर्या.हू.वा.योशेश. द्शिश्वामाताद्मुक्तमात्त्र्द्री द्वाद्मभभक्षेत् गतिक्षिक्षेन्यामा मह्द्रपादिकेत लय्त्रातु क्षेत्र क्ष्याके वार्षेत्र स्थान्य स्थान्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स नेर पर्नेश्वरायते दश्वाय हेव वास्त्राय विवा के वास्त्रा की वास्त्र किर हेन हेर

ब्रेट प्यमा इंडियमुम् कुम्मक्र के देवी विम्नट य हिट वा वर्षेट वा वर्षेट वा वर्षेट वा वर्षेट वा वर्षेट वा वर्षेट र्ट.र्च्चथार्ट्ट्रशक्ष्यथायी। विवाज्याविधार्द्वाचार्याच्या ब्रेरा इवाद्येर देनमुख्याय भ्रेन हेवादेश मुन इवाद्येर देनमुख्य पश्चिम तातान्द्रेथ वश्रास्त है के के स्वान है नहीर नहीर नहीर नहें प्रते हैं राव है या अर व रुषायिराष्ट्रराष्ट्रा स्वायम्रिरादेगासुसायादे स्रार्थाह्र परियु स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र वर्ते र.टे.च श्रेश्राच ह्रेश्रश्चाताताच हे ब ब श्रुचा है. रू.केट.वा.कें.चतु.वेट.हेवाच हे. न्युं अदे वर न्युं पहुना यर छे न यशने हिर यदे छे र इन या वा न सुआ र्खेन क्रियाम्बुर्याये देशायायम् । देशाया देशाया विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्य त्राचनर्ता श्रुवाक्किवाचश्चिश्रधातकाक्षेत्रकाश्चिराश्चे वद्गान्याचनर्तात् ।र्ट. म्.जामारीश क्षेट्राचाद्र क्षेत्रेत्र कियाश्री ह्या जुद्र ह्या चर्ट्र वी संदूर हर द्रन्गु होना वेद सेन हैय। नगर पद इंडेर हग्न गु होना वेद सेन हैय सेय स्वा म्। । रट्रा.ज.चर्रमा र्वेच महामाह्य द्वे.क्.चर्ह्य महामा र्वेच माह्य प्राप्त हिंच माह्य ह न्दर्भेदी ह्रेर मेद्र वर्षायम् पर्वा मन्द्र मन्द्र मन्द्र मन्द्र पर्वा प्रमान रट.जैश्चे प्रे.हे.ह.तकट.वी.ट.केंवाचेट.र्जं राष्ट्र.कुट.विष्ट्र.विद्य.स्वी.चेंवेश. गुः हु देव वर पु निवा ये प्राप्त प्राप्त वा प्राप्त हु र रखा निवा ये प्राप्त या प्राप्त सर चतुःसर्टशक्षत्रात्रां भाराष्ट्री वद्युं कर्ष्याष्ट्री वर्ष्य पुर्वा वाया स्माह्य देश द्रवाकात्रमुक्तान् निर्मात्र मित्र कि इ.क्रीर जन्म द्रवाक्षेत्र क्रिक क्रिक मित्र वा जिर्मा यार की के प्वतु कर रहे या । इं प्ये के स्रेर क्व प्वतु । वेश या परा देव प्वते वा पर। देव में के के के के कि वा पर प्राणक पर है। बर ब के ब में के के के के के र्श्वा प्याप्त्राप्त्रम् वित्युः स्ट्राह्म विवा विदेश्वा विवाय विवाय विवाय विवाय विवाय विवाय विवाय विवाय विवाय

वेबानबिध्वात्तुः वेदा व्यान्यार तथर विद्यात्त्रीर हिंदा हिंदा हिंदा हिंदा हैं से स्वापार प्राप्त प्रमान प्रमान दे। दे प्या हे प्रमाय का विष्ठ में प्राचित के वा के प्राचित के प्र हिरावर् । दिसाववर्षाया वेषारवाह्य वेषाग्रह्मायवे हिरा दगराया राष्ट्र चवः सर्दश्चन्यायः वयः युदः ययः चन्दः छेदः। देवे द्व्यायः साम्रास्त्रः वर्षेस्यः य र्रे.इ.ड्रेट.त्.केंब.केंद्रेंट्रेट.केंट्र.केंद्र.के षान्ने मिर्देश्यायदी विषाय दर्ग कुर्धु अव विषय यहा क्षेर मवि यह वा लाह्मरायम्यकाने। देवान्यस्यायदेश्वेत ह्रास्ट्रियमा देवान्यस्युर् विग'यर्झें अ'यर वाशुरका है। हिर विविध्य द्विष्ट विश्व विश्व विश्व सु हैं है प्यक्ष तर.वी जुबाचबीरबातवु.हुर। ट्रे.क्षर.वर्श्चिशबातबाचेट्र.वबाविट्र.तर.क्ष ठवर् प्यम् रायवे क्षेत्रको अरेव पहेर यथा हमा कुरिया निमा पर वर्गेरा प्रमार्था हेवासे विषय भीशा है। रेट हुवा जुर क्षेत्र श्रम्भा क्षेट्र वार वाववानि दे बकार्यदेव। क्विटकार्यद्र रचार्य पर्ट्याय सहद रावे। सिट्य पर्वात्वर्श्यात्वरत्तिरत्तिरते विश्वावश्रदश्यत्त्रिरा वहिशात्त्री विवाश विष्रः ह्मेर्यामः क्रिन्त्रा वाना श्रवास्यवा ग्रीवानावा वान्यः यान वन् ग्रामः व पश्चाम्ब्राम्याने नेत्र मुंद्र येवाशको मात्रुट वहेंद्र मी पर्वेद परि कुट हरा स्था हिट गर. हीर. स. ततु. चयबा अकूचे त्राच ततु. हीर ही द्रश्र. च हें श्र. ता वा वा दें या. बै.कूर्यश्रक्ष्याक्ष्याक्ष्या श्रेशकातकात्तर्रत्यात्वीर त्यकावका विष्यानेकाल्या

बु.पर्ने.पष्ट,स्या । श्रिट.यार.र्ज्याया.ग्री.पर्प्रप्रात्म्या विषाचारीटश.तपु.हीरा सुराक्तात्री क्षेट्राचर क्षत्वाया वक्ष्यात्र साम्या क्ष्रेट्राचे स्वर्या वकुर्गीःस्विरस्राधायवेयङ्गर्यर्थेयद्वनयस्य कुर्न्यस्य स्थानस्य विवेर वर्षायाप्ति वर्षाणेषापञ्चा वर्षा देशा स्ट्रामा सक्षेत्र प्रवेषा देशा देशा वरसा वासाधिनाईर यदेगम्बवाद्वेर सकेर यासकेंद्र यदे विदेन रसर ये दर्म सेना प्रविदे प्रद्रपासायारी वीप्रवि हेर हिंग सकेंद्र प्रदे वि देवा द्रवा पी वि वे हसस्य उर् गुःसर्विद्राधेवा वेद्यास्त्रस्त्राचा इत्तर्था द्वीत्रर्द्रा यद्यद्याया वर्षेराया पश्चिषश्रापदे द्रमायर प्राराय प्राप्त प्राप्त दे हैं सार् प्राय की में दे विषय के स्वाप्त का में स्वाप्त के मा याधिवाते। देविदायमा क्षेत्रसानेमात्रयाद्यहरमाधिवासस्य। वित्रसानम्य मेर्मा विषय पर्या । पहिषा सु सेर्मा वरासर प्रवा विषय सुरुषा पर्या हिरा व्यक्षत्त्र ह्वाबान्त्र्यम् भूववास्त्रिं रावत्ववास्त्र । व्यविवायवा विष्मुवायवे धुरानु इत्विर विष्य इत्ये विष्य इत्ये विष्य देन विष्य देन विष्य देन विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य श्रदेष नेश्व संस्था में स्वापित हो र प्राप्त विषय विषय विषय हो । या प्राप्त स्वाप्त स् र्वेद्रपदेद्रमुद्रम्यदेक्ष्यवेद्रम्यक्ष्यम् विद्याम् देव्याम् प्रमानिद्रास्याम् स्थाप्ता वर्दराष्ट्री स्थाप्ता मान्या द्राह्य । हिट.योठ.क्ष.क्षेत्र.क्षियाच्चय.क्ष.च्यायाः व्रह्मेश्चरातातानध्यान् वर्षाह्रयाच्चरा डिन्याधेन है। येत्रम्ब्यायम् मेन केन यहन निर्देश हैं। । पहन यह लाग्र्रास्याक्षार्श्वी वेषामग्रम्यायवे भ्रेता मन्यामान्य शक्याहे स्तर भेर या के श्रीर यो वे के मेन मार त्या हो या ने या ने त्या ने त्या ने या ने त्या ने या ने वायमानीयानी,वार्टमाना,वानीयानीयानी,पटावार्टमानी,यार तर्तु,युर्तानु क्रियान्य.

पवि खुवार् दिराव स्था हो द्या ध्येत है। कुरा ह्या श्रा हा दिरा ह्या श्रा हा दिया । नग्नामु खेन परे हिराहे। युराहेन यहा इन् के में हिर हर के खेना नि वर्षन यां वे अपनिष्ठा दि दिना हिंद्या के अपनिष्ठ वा वि देना र्द्राच त्रकारण द्रिष्ठा वर्ष्ठा वर्ष्ठा वर्ष्ठा वर्षेत्र दे। देवा शर्वा वी द्रिराच त्रकार दा वि ध्रेम विश्वेरावक्षायवद्दी दर्यादुवाविद्दरव्वश्रीहेवर्मवश्रव्याद्ववावी इदि इवादर्दे र द्याद्रा पर्वापित्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्त उव मु सेमब उव दिन वाबवार हुन यान्य । इ मब वे दिन वाबवार में माया पक्षवायाध्यवादि मित्र राज्यवाद्या स्राम्य स्राम स् अपन्दर्यक्षायामी द्वर्या प्रतिष्ठा राष्ट्रिया स्थापित स्थापित स्थापित । दर्ये दी जुरितर्शिकाराया रूपे.ब्रि.इंश.प्र्यात्विश्वात्वी वृषात्रायक्षेत्री ट्रे.का.द्रये. म्रकुद्रावश्वमान्याविद्यान्यदे क्यान्यत् द्वान्यत् विक्रम् विक्रम् त्र में दे त्रत्य में बार के विष्य प्रति । विषय प्रति । विषय प्रति । विषय प्रति । बिट इसमा मा स्थाप के प्राप्य पहुन्। वदे व्य मे न से प्राप्य पहुन्। वदे व्य मे न से प्राप्य पहुन्। वि.क्षी रवर.मुबाल.सूर्याचिर.बी.लीज.वा.सूर्याका.श्रर.टे.वर्ट्या.बेबा.बीच.वर्ष. प्रमातान्त्रवात्त्रात्रे स्राप्ट्रायद्विरा श्रिमान्येव पर्वेट्रिमान्ये मान्या प्रमण्यर हैव या के सामित्र हैं र प्रमण्य हैं। यह है र प्रमण्य पर है दे व का दे हैं व का दे हैं का व ने नमुद्रानी प्रस्थापार्टा यो ने नहिंदा में प्रस्थापानिका सुर्येद्। हेव के सि वबार हे.वो च हेर. दुश्रामा स्वार नेवामा श्रेशकार नेवामा है. जैशामा बेर. वहेंगान्तुःहूरात्रञ्चराप्टे करातूरी देशायाहरात्रञ्चराक्ष्यात्र्यो विरावाहरात्र्येत.

पश्चरात्राचेरात्रहेर्रात्र कें शक्षरात्र हो। लर् किंदि हैरा होर होर होर हो । वर्गे.तर्.वश्वरात्रात्रथं.तथार् स्रिम्वह्र्यंतर् हिम विषयः लट्रह्रह् वश्वरात्रक्षा ठवा हिन्थाईरावस्यावेशावईन्यविक्यास्यार्वेशायहारी हेहेवास्रन्दिनाहा वेषायाश्चित्यायायह्वायमा हिन्गुराद्धराष्ट्रवाषान्द्वेराश्चित्यरार्ध्वेरायदे पञ्चर्यायाध्येत्रायरा दे द्वारा प्रदेश स्थित हिरारी । पास्काया दे रहा दहा पास्का प्रदेश क्रुंशशत्र विवाशत्र तथा चिर् श्रेश्य क्रिं है दे स्थर क्षेत्र विवाश स्था स्था वर्ष श्रेर.रे.वह्रथ.त.ज.चेशर.तयु.बै.ड्रेर.र्श.ह्येच.बुश.तर.चेशेरश.त.रेर.। ४८. र्र्णे कुद्रे हुत्यार स्वापिका वस्त्र असंस्था सुनिया वे व्याद्रियाया विषायित्रित्र दे। दे स्र क्षेत्र क्षेत विगापर्सेश्वरातानार्येशतान्त्री श्रेंगाङ्ग्यास्यानिशानिशास्य स्रेरान्य स्र इन् अनुषायायमुषायानेवि र्वेनाषायमेन द्वार क्रिंट निव इस्अन्ति वर्वे वायवे विवश्यक्रिन मृत्युर पाणेव पर्व द्वेर। नविषाय देर प्रत्न वा मुर्गा प्रति । या क्षेत्रागवि इस्म ५५ वर्षे वाय इस्म ५५ वर्षे वायवे न स्मिर पक्ष पर्वे । ५६ र्ये दे । दिराव त्रवा श्री वा क्षेरा मेदा स्थान इ.रार्रे.त्म्तावेशानायाराच्या विया विरावह्यार्ट्यावेराम् क्रियावेशाक्षरायावात्र सर्रायम्वापार्विकार्यतेष्ठित्र। रटार्यामुवाक्षे र्र्याखेटावमा ख्वामाग्रीदे विन्शी ने पद्येता । इया वर्षे रासतुत्य वर्षा वा वर्षा वी । क्षुत्य विन्ति विन्ति विवास ने । वेशन्त्रस्य प्रदेश वर्षेवास्वाय प्रदेश द्रो द्रोर द्रा सुवास वनाया

त.वीर.श.इट.तूतु,ववैट.वर्बे व्यक्षाश्रवाय.क्षेत्र। हूर.वश्वश्वश्वेश। वर.ग्रीश. विन् गुर्भाक्षेट विदेश्वर अर्दे ने कुर्त् मूर्र ने शाय शाय विष्य ताय है ने पद है र नावन यह देर नहरा की केट नाव कर रहित वर्षेय देश है। केट नाव कर रहित ट्रे.इ.सर्ट्रायाववास्त्रकाराग्री इ.च.लवात्राया इ.सर्ट्रायाववास्त्रकारा तथा त्रम्या नावा पवित्वित । क्षेट्रविष्ट्रसर्द्रायार्वियायर सेसस्दित सहर हुना ने दिन नस्य वकर प्रामी में प्रति क्षेत्र दर्भे मुद्रा क्षेत्र में क्षेत्र मादे स्थान दे स्थान में यदे में मा साधिव विता इत्यर्त मानव क्याय में किर मी बार मु साथ सर्त पा युगुक्त्रुन्द्रायित्यवे क्षेत्राते दिराक्षेत्रायमा देःववत्त्वक्षेत्रायमा । द्वमा स्यान्त्राम्यान्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् सक्नानान्द्राणुयाक्तियावसाहितावाराद्राप्ताराद्र्यमाह्नामायाह्नामायराद्रम्मा याक्षेट्वरक्षेत्वहरवर्षेर्वेषा देशक्षेट्वर्षा देशक्षेट्वरेष्ठ ने वा हिर पवि देर प्रति हो न निवादि हिरा पविषय वे उट देश गु भे प्रवि पाय वे कुं पर्वे क्वानेबार्वे बाजा दे लटा हैंदि पहेंबा जबार ही मधें अपूर्ण के जो मस्यामस्यायस्य वर्ष्ट्रायर मस्ट्राय स्था इट देव के स्थाय के माने स्था स्था श्रामाश्रुश्राध्यश्राम् इत्यावित्र ह्या क्षेत्र वित्र ह्या वित्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्व चिर्ष्रमश्रम्भम् देश्यान्तिमा अप्याम्यम् स्थानिमा क्रियान्त विना थे दे न सुमा ही 'वेंदे स विंद ही दव्य अदि तह दु हु पा दे के लिया ही वेंद्र वर्षे द यवै देश देव व्यव है। देर मेट व्यवा अवे केंब विर पहर वाववा विद वी.

लेशर्टा खें ने के स्था ही र विषय के र वार्य वार्य । के र ह ने स वर्ष वार्य । वर्षे न त्तृ अवर वर्षा है। वर्षा अवर । विवास वृत्ति के विश्व देश विश्व देश विश्व में अ'ने हिम'वे रखा | अहि प्रदे स्ट्रं ने खेर प्रस् वह पाहिया । कुवा पेदे पार्च पार्हर ग्रमान्यान्या वेषाम्बर्धाः प्रदेश्वर देपवित्र प्रमान्याः विषाणानेषाः अपनाम्बर वश्रम् द्रायात्रेव द्रायात्र हिन् वहेव। अमेव प्रते मेव मुक् मार प्रते ह्रा स्वाम्यान्त्रान्त्र्यायान्त्रित्रपुष्पाष्पान्त्रम्युद्धान्त्रीरसान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् येव हो दे दे दे प्यक्षा ये मे स्थाने हर प्रमान है ना में मानी कुर है सर्के मा येव कें। विषाप्ता अविकेशप्रियाम्यम् वर्षा । अम्बियामा भाषापिक्षाप्य विषाप्त्र र्खेग हेर र दे हिर सेवाया विषेत्र प्रेस गुरु दे हो । समेर यदे र पुरा द नवश्यायकेरमा वेशनासुरमायवे सुरा देश देव मु दूं भी न पत्र स्थापर। र्वृंध्येवाध्येने दृष्युं सावश्रस्य वश्य पुराया विद्युं क्षेत्रा विद्युं क्षेत्रा विद्युं न्युअर्थित्रयानानिवर्तुत्राष्ट्रयानायुअस्त्रीत्यार्देवर्ता द्वरानायुअर्थित्रेरानावे इप्योवित्र मु द्वाराये वत्र द्वार प्यावी द्वारी मा स्वर मात्र प्यावी देश देश देश प्राय है। देन्द्रिन्यमा नन्द्रमुर्भवाश्वर्रस्व कुरा । पन्द क्रियामर पदेन्त्रम् नवमा विभाष्युं वे हेट वर्गेदे कुटा विमेव रादे यह दे द्वारा नवमा वि मे अदे श्रेम कुर धेव। नियय पर कुर मे विषय या ने न मा महिन वर्ष्य क्षेर्याया विवाधारी सर्वेद्र दुवियहिंद्। देशमासुरसायवे सेरा दे सरमासुरस त्ताति से दूर की हो हिंह निशेष की लागे हुं रेटा निषेष की दे हो नह निश्च लागेश वा विदेश्वस्थान्त्रस्य निवासिकार्या विष्या विष्या

जवाना वेन्नावेन्नात्तु जन्दी क्षेट्रचादु क्ष्यरी र जूजन न मुन्तु न न न न त्ता क्रि. त्र के विष्य के विषय चम्रे.बेंब.तब.विचा ईट.वेंद्र.श्ररेट.ह्वंब.तर.व्र्व.ब.इ.शर्टेट.वेंबंब.क्श्रा ग्रीट.मूजानश्रामियातपु.क्वेपा श्रीटाबादा ३.शर्टे हिवाशातप्र.मूजाशहेश.मूचा.पे.लट. न्युःसायमयःविनावसाकुरःकुःमसार्हेनाःसेरःग्रीःकुरःविसाममर् छरःग्रवःहेनान्ये ववः बुदः इस्रयः वर्षेवः यर दे द्याद्दा ग्राह्रवः वी दस्य देवा वर्षेवा यर दे द मवुक्तिरामे। देखेरायमा नामरामासक्तारीयानातामा । विमानवुद्धित्वे हिर्पदेव। किर्म्यसम्भविष्ट्रमान्यान्यान् । रयानुष्यम् भीसम्भविष्यम मुमा विवास ग्री सर्पेन पर्वा पे ही। गिन मी नर नम सम है वा सेरा विवास में गर्रिक्निम्बद्धसम्ब्री विमेच रहारे प्रविद्याप्य मेन्। विसम्बर्धसम्बर्धः ब्रेमा वार्षेत्रातावाविश्वा क्षेटावामाश्चर्याच्याताव्यस्थ्यात्राव्यसाश्चित्रहाहास्य श्चिम्पाद्वा श्वाक्रियास्त्रास्यास्यास्यस्यस्थ्रस्थ्रस्थ्रस्यः वै। दे.क्षरःक्षरःवारःश्चःमेनाषःयःचर्त्त्रियषःयःवःवहेवःवषःसक्वं सःव्वयःचकुरः वर्चरायात्रक्षाते विवासिरावा श्रम्भात्रे ह्या स्वास्त्राची । रहा । निर्मान्त्रप्त्रप्त्रा । मण्यान्यीयप्रित्रकुप्यानुम्या । कुन्येयपन् हेसानुम्या श्रामट.बैट.ज.रच.पे.बेबाया विट.लट.सुश्रय.ज.बेबाय.तर.वर्केरा व्याचारीट्य. निरा गुवक्रेवागुग्रादेश्यमगुरा नेवादुव्यद्यययस्य यथा । द्विवमः गुःह्यनायक्षेत्रयाम् ।देखायम्बे व्यायक्षाव्याव्याम् । यळव्याम्यम् वर्षः ह्र. विश्वासीरश्रतपुतिया विश्वातातावासीया ह्रयावाशानिश्रात्वाम्यात्

मृत्त्रश्चर्यात्रे तियोश्चरता ह्रायञ्चर्यात्रि द्वराहे हेरा हा सार्या होराया वर्षेत्र र्वेद्र वाम्ब्रम्य मार्ने मार्ने राम्ब्रमानु मार्मा काम्ब्रामान्य क्रिया मार्मे क्रिया मिर्मे ब्राय-१८-र्याय देव विना निक्वा निकिन हिंद दुन पक्रिय केट क्रम स्वा कर कर तर.क.क्षेत्रबाचवातचेटातक.क्ष्यबाहे.जैबाजातहेब.ततु.लूब.धवाक्ष्यबाहे हा हा यानिक्षायायाक्षेत्रावनाम्बिनामी द्वुरायाद्युत्रास्त्रीत् निक्तायाया क्षेत्रायाया क्षेत्रायाया स्वाप्ताया स्वाप पक्रि, रेश्कुर, क्रिंट, पर्रेथ, पक्षे, प्र. क. श्रथेश, रे.कें, य. पश्चेपश, तथा, तीश, ता. पर्डेथ, तप्. लूब. ध्य. तम्ना भारा वार्षेत्राता वार् त्रात्र त्रात्र में स्याता वारा त्रात्र प्रमूट । पत्र त.व.इ.४८.४४.वेट.कें.क्व.२८.वेट.मु.पि.ट्र्या.यशवाचर.श्रवूट.। कं.त.व.वेट. र्यु सर नुवाश्व स्था भेवाश्व प्याच द्वा प्रापर हें या दुवा प्याच हिर वादे हा सर्र ह्याबायर में वाबबाबेबाबाया नेवे की ह्याबाय निर्मेर वर्षेन पाये के हि । हे स् कुट यान स्वन्याया अवर स्वेत पर्व कर ग्राट निव्य प्रिंट दे। स्ट प्रह्मा मात्र्य वास्त्रामी रदाविद्याई हे वास्त्रामी रदाविद्यास रहे । वार्यराचे प्राप्तिक वार्यात्रा के वार्यात्रा के विक्षेत्र वार्यक की किंदा के वार्य के वार के वार्य के विषाग्री बरार् वह वा बुषा केरा केरा केरा निराम रहा में स्वी से हिराम सुरा विषा से व्यामित् क्षेत्र वि कुत्र पदिषाय क्षेत्र या प्रता कुत्र के स्वर्थ कुत्र कुत्र कुत्र वहुत प्रवेश के रेअम्बेब्ब्ब्रावरावस्यम्यान्दा म्दान्दान्दाक्षेत्राम्बेद्दायान्दा मुदाक्षेत्र्या निट्रार्म् सुर्म् सूर्यान्त्रियानिष्युं स्विषात्रात्रिष्यात्र श्राप्ति स्विष्या त्रत्री प्रियंत्री ह्रेत्रत्वकाश्चिकाव्हराह्रित्रत्यह्रित्तर्टा इत्यर्टेरत्व्यूवाव्या

शुक्वागुट कुट कु दिर नवसाय दि दिसायर हो दिसा कु दिसा कुट पर्वे दिद ग्रम्भायाहे देर्द्राद्र्याद्र्याहे सुर्द्रादर्भे बिर् असर म्रम्भायायव बिग नुष्युर्ययेष्ट्विराने। देख्राणरायुराक्षेत्रायका वदाणादेष्ट्राम्बुसाम्बन्धाः या । निर्वित प्रमुखायदे अळव के देते । श्रिर से देते पहें दे के दे या है। । इत क्वाक्षेत्रकार्यक्षेत्रावदिः धेवादी । नासुक्षायिदे दिन नहिना सुराया । वर्षे वाक्षेत्र क्रिंदित्याक्षेत्। क्रेषाम्बुत्षायवे धुरा दे सूर प्येष गुरा दू देवे प्येषाम्बर्धाः गुःह्रियाञ्चरागुराञ्चर प्रवास्य प्रवास्य विद्यापर गुरियो विद्य नावश्याया सेन्यते सेन्या क्रिंव सेन्यो नेश्या एक स्वर्त वर्षे व्यापाया वर्षा नास्त्रा मु द्राव मा प्राप्त विक्र में कि स्वाप्त के क्रेन्वस्यास्मिन्ययायायायम्नायराय्युराववाधिरान्। न्येरावायकारस्याविवा लय ततु क्षेत्र हो । वार्येश तत्वे। त्र्य हूर तश्च श्विश श्वेर देव श्वर विवास वार्य श वियान्युयाने र बुषाका देवान दुया विया हिमा है सुर के स्वयान विष्या स्वया निका तृष्वाती व्रुर्भवानी देरावत्वातीयामत्यार्थी वर्षा वात्यार्थवे सेवाग्राटा मिव वर्गे मुद्दे नियम पर्ने प्रमुद्दे कि गुन्दे नि मुन्दे प्रमुद्दे नियम मिन्दे नियम मिन्द वत्रायमा वटान्नेरामवतव्यू क्रमार्द्धाता दि क्षेत्रत्वस्य व्यापवाव्यूरा मह्री डि.चव.रचिश्व.रे.चे.चर्चेचश्रा डि.श.ह्रेट.रेट.शक्ट्रश्राचव.व्री जि. मेब.क्रेब.तूत्.श्र.वैट.पबा गिब.हूंग.वश्व.ब.दर.उह्त्यब.तर.वेरी क्रब.पश्रेरब. यवे द्विरा गृतुम सेवे से दे प्या द्वर सेव की स हिर य पित है। वय पुर प्या

यश क्रिंट्सन्तर्भव क्रिंच्या व्याप्त क्ष्म स्थान क्षम स्थान क्ष्म स्थान स्थान क्ष्म स्थान

क ।।वाश्वरायाश्वरायाचेव मुनायाई हेवे किरारे वहेव वाप श्वरायाया सा म्रामानी दे वित्र दे दे देवा मार्ची सामये कु माम्या में माम्या क्षेत्र मार्च वित्र मान्य मान्य विद्या मान्य वि वश्वाबिर्शतपुर्वेव। श्रेश्रवाभी:४८.वधुर्ध्रुवशतपुरव्यक्षाविरे.त४.२४.व. बेर्गी कुर्णे रायर पक्ष्य या कुर्गी रेव बर्ग पास्य राय प्रेम राय वस्त्राया दे दि वित्र दु अ मेश यदे हेश दक्षेण शर्द मेश यदे यह ये व स्तर नर्त् । रट. तृ.थे। ह्र-पञ्चराका पञ्चतरा केट जूपरा पर्वा के व्हेर सर राजिया वर्षेव यर वर्देन यस सेस्र ग्री दे विन्द हिन हैं न स दे वि यर सर्दे हिन स नहिसाना वर्षायम् दे। दे हैर यह बाय वर्षा देवा में भी स्वार्थ स्वर्थ प्रमाय प्रविवास स्टर मु अभवाता मू मू र हु वा बा पुना । देश दूर । इस हूर सह व सुर व्यव गुर । सुर क्वाने रामा के स्वान र्बूद्रम्बुअभ्मे सुवावश्याप्रा । विक्षानुवर्षे विद्येत्र्र्त्र्त्र्यु । विश्वासेद्र्यत् र्येदे स्वा द नवस्य । मर्या प्राप्त र माया प्राप्त से स्वस्य प्राप्त विद्या । पर्त र भी प्राप्त से स्वस्य स्वस्य । वायमार्मेवावम्या वेमानमुद्रमायवे भ्रेराद्रा इस्मेद्रामु कुर्म्ममायमा गुद्रा

श्च तिमाश्चर्य दे निर्ता मुश्यमा मिन्द्र निर्दे हिन्द्र हिन्द्र निर्मा निर्माण वि.य.म्। अथवार्वप्रमुशाश्यवार्गःक्ष्यक्षेट्रम्यवाराश्चातवर्तमःवया यता. ने हेन्सा व देव के देद नाम य द ए हुद यर केद परे हिर वे वा हुद यर येद दी स्रेया की किया है दाया है जा स्थानी साह विश्वास के विश्वास की किया है न्त्रियायात्वे। ह्रेन्याचायायात्राच्यायायात्वे प्राचित्राच्यायात्वा ह्रा र्थित् दे। क्षेत्रकाते च क्षत् पु व देन प्ता प्ता विवक्ष क्षत् या प्रता ने प्या प्रता किता इयानेशनाद्रिक्तित्वदेरळेराववदे स्वागुद्रविष्वविरावद्यायम् गुःइन्यानेन्याने। श्रेस्यागुःगादाहिन्यदेन्यवस्यान्यान् भ्रेष्वस्यान्यान्यान्या सु'ल्वा मा गुर'देवे के माने र वा वसूर पा के र जिर । देव द सायर सक्व साधसमा कर्र्रा म्यामा दिवादे हिर्प्यमा माया क्षेत्र प्रमा क्षेत्र मुक्ष मुक्ष के तुष्य परि श्रेयशागुः केशाने दारे श्रेयशागुः देव द्यायवे मावशास्य द्या दुर्शित यहुशासु युदा दुर्शास पर्सेचरातपु.हिर् वर्षेत्रात्त्री हिर्तिदेश.वर्षा वर्षेत्रात.वासूवराष्ट्रा वर्त्तेर केंब्र रेवेर कुर वायालुगायाया वर्त्त्रवायाग्वित सुर में केंद्र र दर यह या याक्षेत्रित्रीयम्भवायावस्यस्यत्रिस्यादा रदानीस्रस्यारीयदाद्वायाद्दाक्षया क्षेर् मेश्रायर श्रेष्ठ श्र मेटा गुंब हैं च गुं पदेव पा सर्हे ट पर श्रेष्ट गूर रें वेश ग्रम्भा वदेव देव देव हैं दिन के दिन के दिन स्थान मार्थ के के दिन वह्नान्मियायर पश्च यासाधिवाते। कुं शेर्यमासासवाकन मी वसायायहेव वसा र्हेट हैन अर्दे अंगर् हें प्राया पेंन परे हिमा ने बाद इस के का की पने हिंदान है म शेर्णी वसावायह्मार्वेषायरपद्द्रम्याये महा सञ्चाताया दे द्वेरादे क्ष

कु.च्याची शिर्ट्र-पर्वेशतश्चे,शरशःक्रेश्वेरी विश्वेतातःचे,प्रवेरशःश्चरः यथा हि. श्रेर अरश कुश नर वर्षेय या । नर ने रश्य यदे परे पश हिंदा । श्रेप वर्रम् के मिन्य प्राप्त के मिन्य र्नेरक्रेर्णीर्णे नेबर्रिनेब ह्वेप हिंद्याया नेबर् पुरुष्ट वर्षे सक्र पेरिदे। हिर ईर्. धेर् हे वसायते. वसायता ग्रीमा वेश होता होराय बुधाय के करा। ग्रीमा स्वर्धा वश्वराग्री हिंत्रा व शाया छे छिट वी इव शा इव वी ही वशा वहिंवा या वाट विवा । इव श्चिमची परे हिंद र छेर छेर की जो सेया नेया ने वा महिंद रेग मायद वे कुर सुर परि में ना मा पर्शर्वस्थराश्ची द्वेष्यराश्चिमा वेदाय विष्या वात्रा व्यवस्था व्यवस्था विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय १८। रराविवायम्दायाद्या बूरावदे खे नेषा क्रेक्षयाम् पर्वे । १८ में वानिश्वा बैट.च.मश्याम् श्रट.च. क्या मेट.च.मश्या श्रुट.शक्य. हेट. वनद्रायदे ।दर्भा वास्य भ्रेत्र हेन यादर हुत्र स्ट वि स्ट के स्याम्य प्राप्त । म् अर्म् मुक् अर्थाः अप्येष् पर्दे अर्म मे इस मार्थमित्र वार्या न्रामे विष्या वार्या न्रामे विष्या वा मेश्रास्या वयश वयश मेश्रावदेशया वश्रास्ता श्रेश्राश धरा द्रश्रा नेमानस्मान्ता नावनाद्या गुनायहना स्प्राम्या स्प्रमान्यस्य स् बैर.च.वार्थेश.त्र.कृषा.२४। विर.ज.पंतारच। चचरा। चचरा पंतारचेश.पंतावारीश. मु अर मेश वर्रेन मायवे मु अळम थेर दे। वस दु मा सु मिर प्रसम सु सु र प्रवे क्रा द्रमान्त्रेव पर् हिंदा पर्देश क्री वट वश हिंदा ने वा के पर्दा पर्दे ने बा के प र्टा चरे हिंदक हैं समायदे के सक्षेत्र में सम्बद्ध की मारे हिंद चर्म महायदे हिंदा दे मार्थिया क्रमान्त्र क्रिन्यासेसमा जर्। इसानेमानस्यानीसान्त्रेमानावर्कः

सक्षत्रे प्रिन्ते विद्रान्ति द्रात्रे स्थार्थितः इस विश्वान्त्र् संग्वे स्थान्त्र मु अपर पहल पारे प्रवेश मुंदि गुर गुर गुर के अध्यय अर गु अपर हैन लूट्याचीयावित्राची श्रट्चाया तर्चायात्र के अक्ष्य लूट्टी वार्येट विद्य केट. कर्र् मुद्रायते सूर्वि विवि विवि दियर द्रा दे या पहेव विश्व प्राचि है । व.२२.२.मू.चय्रमातातीयात्रतात्रमात्रात्रा वर्तिर.श्रर्मात्रमात्रात्रम्य. यवे के। दे निवस्य के इत्यादिक द्वा विद्वायाय हिंदाया निवस्य में विवास विवास ब्रूट्याधेन ब्रिटा दे वार्या संकेद्या वृद्ध्या दे रार्ध्या के रार्ध्या के स्वीत की स्वीत स बैर वर्त वर क्रिया चीर पश हे स्र पहेर पर है या है या श्रम क्रिया है तथ ले इर वर्दे किया वित्र अवावाया अवि अवावाया अवि अर्थे के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के दे.क्षेत्रावर्ह्द्रातवुक्तित्रा द्राच्येबर्ट्स्ट्रियकाकुर्ट्स्युविषाकुर्ट्स्युविषाकुर्ट्स् मुक्षायाक्षायाक्षायाक्षायात्त्र्याच्यात्त्र्याच्यात्त्र्यायात्र्याच्याच्या चुर्य दिलर वर्षश्ची श्रूर दे देवल विष्ट्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट ब्रूट्याम्ब्रुसायायम्बर्धायानुवर्षेट्यासाय्येव है। सर ध्रुव नेवायर ब्रूट्सकेट् च्चायास्त्रायाश्चरादे सःरावनगर्यायायास्त्रेदायवे स्त्रीमा विदेशायात्री सरावायास्या र.५.४४ क्.म.१५५ । विर.न.४४ त.च.चे४.२. बैट.सक्रर.व्याचिश्व.के.श्रट.वीश. वर्षेत्रशायवे कु सक्षेत्र विद्रोति देशायविद्र केत्र प्रवासाया प्रमास सम्बर्धे अत्रिक्षितान्त्रियास्य सेटारान्टा केर्युर्जेकावियानस्य संय तथासेटायक्रा न्ययान्य अकेत्यान्य विश्वास्यान्य देशे विष्युवास्य मास्या प्राप्त देशे

स्र पर्हेर्पवे धुरा ग्रुअर्थे रे त्र का के शास्त्र विर पर देश प्र विष के पर विश्वाद्रा क्षेत्रकाक्ष्रकार्युट्याद्रवायाव्यक्ष्याद्रा कवाक्षाय्ववाकवाकाराः यायर अनासुक्ष की क्षेट की सायरेना सायये कु अक्षव र्योर है। देशायाये वे नुपान हैंग'यर्वेब'यरे'द्वेट'र्ट्रायरुष'यश'हेंद्र'य'र्ट्। इंट'य'यवेवेब'यरे'द्वेट'र्ट्रायरुष' पश्केंद्रपाद्दा अकेद्रपायिव पर्या कुद्रप्द पर्या कुद्रपाद्दा दे प्रविव र् बैर्या मेश्रम् के वर्ष स्पर्या प्राप्त कर्म के स्था देव विर्यं में स्था श्रमान्त्रा यहरायुवाक्षायायराष्ट्ररावश्रमान्द्रा देविव र वर् नशकुर वर्ता के वर्ता वर सर वह्ना यश दे सर वहित यव किरा ने प्रवित्र नुः चूर प्राण्यस्य के स्वर्था किन्य देश प्रवित्र के निर्मा प्राप्त स्वर्था प्राप्त स्वर्था स्वर्भ विषायान्या त्राचा के या दे पाके साय देशाया वेषायान्या पद्धा हैं है। दे महिशायनुश्रामा सुक्षानी की नाम पर्देन सामये कु अक्षत र्थेन ने किन की शाम किन त्तु क्रि.वीश्री श्रिय होरी द्रश्रातार्टा तृतु रेट्टा तृत्र श्रेष्ट्र होत्र श्रेष्ट्र होत्र श्रेष्ट्र होता होता र्वेषायशायव्रधानुःवाकुवैःक्षेरावेषायहग्रधायाःचेषायवेःधेरा देःक्रेषाच्या हिनः वार्यसम्बिन्नपर्विन्नपविन्नपविन्नप्रसम्भागम् स्वार्थः स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स्वार्थस्य स १८। वह्यासुवावरायानासुया५८। यळवार्याहेवार्यासुयानासुयानीः श्रर्भेशवर्षेषशयवे के अक्षेत्र में ती तीवा बैर केश श्रक्ष में पर पर पर के क्ट्र- १८ । वयम नेम हिर्म मायदे क्वित्र माय प्रमाण माय है । विज् रे। श्रेट वर्दे द्वा मुक् स्ट्रिंग येक पर प्यत् प्राची वर्ष द्वा के वर्ष वर्ष इत्। अत्रेषायावेषायदेश्वराद्युवार्वेरापराद्युरापदेख्रिराते। देषासुअसरा ध्रेन नेन यर वन् यये ध्रेर ने न क्रिन केर दे। यर ध्रेन नेन यर देन हर यर

व विवा हैं व प्रवेद देश श्रेशश श्रेशश विदः श्रे देव पा विश्व व श्रेश कर देव प वश्यविद्यायास्त्रेन्यवे स्त्रेमा विदेशयात्री युवशयस्त्रिम्याविस्त्रार्थः वट्रिंग्नर्द्वेव ।रट्कुंगुक्रेन्व्याय्वेव यदे कुट्ट्रिंग्रस्य विस्थायाय चिराब्रा क्रिंब नवसान्यत्र ना वा सक्ष र्श्वा क्रिंच हित पा क्षेत्र क्रिंट सर न्यार वास्त्राचित सूर पायकर मी। ने वास मान्य पाये पारे सा सूर र मास पायमाना स मदियिद्गी मेबामदे युवाबावयुर्वि सूरावाद रायेदे अळव हेर्द्रा देवासुरा म्यार प्रत्यार विवा । प्रत्यु इत्य प्रविव प्रवि सुद द्वा पर्व सामा स्थाप । प्रति स्थाप प्रति । बेटा क्रेंब्रान्ब्यान्ययर्द्रनायां के वेद्रानी शाम्यायां स्वति हेंद्रायदाद्याराय्या त्तु हैं ट.च.वक्रर.मी टे.जश.चेषचे ततु.चेषेश हैं ट.पचश.त.वचचश.ततु.लूट. ग्री मेश्राय दे जीवश्राव विद्या श्री द्वारा राज्य के दे विद्या स्त्री से ति स्त्री से ति स्त्री से ति याम्बुसर्यान्तर्द्रत्नद्विम । रद्कुं सकेद्रयाप्तिव पर्वे कुट्रद्रप्यक्षयाधिस तालकार्नेटाबुटा हुंबाववश्चालवार्चालाह्यराजी श्चेवाल सेवालियाता किर्मेश क्रूट्रश्रद्धवात्वर्धातकर्त्ती देत्वश्चविष्यत्त्रविश्वःश्रद्धर्भाष्यायवविष्यः यवै चि नी मारा दे खुन का व तुर नी ब्रह्म व के र विव मी अक्ष के दे दे चि के विव के क्ष.चेत्र.क्ष्र्राचामाश्रम्भ्याच्याच्यात्म.वात्रम्भःयाः श्रम्भःयाः वात्रम्भःयाः क.८२.८८.। वर्षा.थ.श्रंशं श्रंशं श्रंशं राष्ट्रं राष्ट्रं राष्ट्रं राष्ट्रं राष्ट्रं राष्ट्रं राष्ट्रं ब्रेटा देव हूँ व र हे बारा हो वा प्रकर है। विशेषा यही ब्रेट पर र दावे व में हुन न सुन के साम है जिस्ता है कि रहा न से कि साम है कि रहा न से कि साम है कि साम कि साम है क बैरमानुयम्द्रायराष्ट्र। ।कन्याम्याद्दावर्द्दावराम्नानुवाद्दाविकानुविकानुविकान्या १८। जिर्वादर्भितिरार्वेरावर्गात्रा अर्घात्रवास्त्रम् वस्त्रा ।वि

५८ इस हैं मायहे माया प्राप्त । विहे माया प्राप्त सामित विहास । से ५ ५६ बेर्ययम्भार्य विवानु बेर्यर देव या बिर्य प्रेक्ष दर्भे अहर ५८। क्रेंर्प्रक्रियम्यराम्द्रा विवानु क्रेंर्यवे न्निप्रं विवायः र्येन्द्रियायदेवप्तवी । श्रीस्रिरिक्नेयान्द्रिक्तेया । क्षेट्रिन्द्रिक्नेया मुख्या र्नेगमन्द्राचमम्यायाक्षेत्रत्रा । ध्रमार्देगार्डमान्ने । उत्तर्मानम् । वत्र प्रतिम नेप्यरक्षम् अन्यानेपर पुर देश्येन दि इस्यायक्ष की नेवायके विद्या स्व ५६। विद्रिंद्द्रम्बयावसम्बद्धायवे सेस्रस्ड्रके वर्षेट्रक्रम्ब मेसमानियान्ता में नावे भाषा में सेसमा मुद्दा महिमान्दा ये द्वी वेदावा वा भूग्यवे श्रेमण्ट्रा श्रेर्यवे प्यवाया वेद यवे श्रेमण्या व के व ने स्कृत ग्रुसर्उनुष्यप्रदर्। वर्देर्णेव वेव केर वहेव वर्देर् के सेस्य हुर दरा है। इत्विश्वर्ता क्रियापदे ह्वापत्र हिंद्यावस्य स्थापदाया दे वायर के विदेर क्ट्रम्बुअन्द्रा देवार्चेन्द्रवाचेद्रम्बान्यस्याक्ष्यसम्बद्धान्यदेश्वयसम्बद्धान्त्रम् देवा श्चार्यास्त्रां स्वाधित स्वाधि त्तर्ता र्रेट्यक्वर्ट्यव्यव्द्रियी हिट्दा र्श्ववश्य विष्य यद्रा द्वायद्राष्ट्रद्रद्राद्रा देवास्यायद्वायद्रायद्रा वस्त्रस्य र्वे चर् द्रियंदर्प्यार्टा स्वार्च्यायावन कु स्व क्रियायाय द्विवायवे क्रेम्स स् क्रमम्मुर्विद्याये भ्रित्रा मकेद्रायये प्रतायक्षेत्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याचित्र न्दानेब न्दाने प्रतिव निवा । निवाय प्रायम स्थानिव मुन्तवा । स्टब न्दानेव

तु अगु प दर्ग दि अळ र दे प्वविव के दिया दर्ग छि अ दर दे प्वविव प्व हु द्या ५८। वि.वे.र. ने विषय वहिषय या ५८। विहेत ५८ वहित ५८ ८ किया ५८। वि. ५८.८चून.२८.कून्य.२८.वी ।श्र.२८.केव.केव.केव.केव.केव.वे.२८.। १५.०वेब.केव. द्ववाश्चित्रायरात्रा विवानुः इव द्ववाश्चित्रान्टा देवाता विद्यापर श्चेवान्टा वे त्वाता हिना । निवाद र केवा वार्य यदेव यदि । वियदेव यद र दे यवेव रेका । वे नर के वेत क्वेत पर्मा क्षियर हरे प्रवेत रवव के रहा हि के के र रह के रह गर्ग । श्रे शुक् य र र गु कु कि । । सक् व कि र पिने पकु गर पिक पा । मिन पु हैंद यदे न देन है। वेश न शुर्श यदे हैंदा दे दन में देव यद मावत दुर्येद दे। किन्यसम्प्रते सम्हित्यवे प्यवादिन। बेब्रम् वे हिन्यवे प्यवाया प्यदे किन्य यन्ता न्ववायक्षेत्र्याचीरक्ताक्षेत्रक्षाक्ष्यान्ववायक्षेत्रवितक्तान्व्या १८। रटशायाने देव वीयात्रशायने यदा श्रम्भा वीटारेटा भगीयाने अस्मातालटा यर क्वेर पर्व क्षेत्रक मुर्द् र दर्ग दे स्वरूप के स्र के र की र के विषय के का १८ हैनाबायान्ता विद्नान्त्येन्त्रविषायान्तेन्त्रस्य हेन्वर्न्निक्षस्य ¡८। वहवयविश्वेष्यव्यूरविश्वधयञ्ज्यम् क्षित्यप्ता व**र्डेव**यवे द्वीप गम्बिकायतिः हैनाय ५८। ८ कुवा५८। छायं बे छाया हैनाबाय र छे ५ वर्दे ५ छै। स्मान्ता नर्मेनायाने मानव केरायर्मेनायर्ने नता हैन्याने मानव की नस्त हिंससायरें निक्री सेससायुरादरा पर्डेन यादरा झन उपाने स्ट्रास्ट्रिया सेन नर देवाबायबाद्धीरवोष्ट्यार्श्विर वर्देर दे। वद्यायार कुर वद्येर के वासुकार्येर। देवाबा भवे के अर पर दश्या दश्या वार्टित पर्दे दिन दी के वार्य दे कि दिन दिन वार्टित

नशक्के वर्देर्न्त्। वे वन्नशक्षे विक्वि वहिव की शेशश्राम् ना निव वे देवे वाश वार्डवायर्देराग्री नेषायाद्दा डिवानवायाद्दा द्वेव याद्दा क्षेयदेव यात्रे गलक मुसर्गे वर्दे दिन दिन देन हैं। के वर्दे व या ही वर्दे देन ये वे स्थाप दिन । देशयां वे प्याप्त व्यापत्त वे शया प्राप्त वे प्राप्त वे व या वे प्यापति प्राप्त वे प्राप वर्देर् यवे नेषयाद्रा है वयं वे वर्देन यानिहर वर्देर यवे नेषयद्रा नुवा यात्रे वे वे वे व्याप्त दे दे ग्री ने माया दर्ग द्यव दे ते द्या वस कुवा वर्दे दे ग्री ने मा यन्ता रेक् सेन्यवे सेवहें स्यम् सेन्वे प्यवह्वा वर्ने श्री मेशयन्ता श्चित्रेशयम् श्चार्यम् ग्चार्यम् । विद्यायम् । विद्यायम् । विद्यायम् । विद्यायम् । १८। श्रे.श्वरत्त्रेश्रम् तक्षात्त्रिक्षत्तर्भात्रात्ता वी.वी.वे.श्राटरत्त्र नेशत्तात्ता में १ १५ में विकास माने में विकास माने में मिल में में मिल में में मिल मिल में मिल मिल में मिल विद्याया क्रम्यायर अवे न्नद्रियाद्या विहेदार्यायद्राय विवायद्या श्रेष्ट्र युर्द द्रिया द्रा विषेद्र प्रविद्य हे किया क्षेत्र प्रविद्य है विन्नामिनिवायराधिनाने। युवाविनिविधाविनियरास्वायास्म मीनिन्ना पहर्राट्याप्रसाम्येशसाम्ये श्रेससान्त्री श्रेससान्त्री श्रेमसान्त्री स्थान विराश्चाक्षावर्द्द्रायवात्रेयसाव्दा श्चित्याच्दार्भ्यायवार्श्चाद्दा वार्वाद्दा वे क्ष्यामन्त्रायाचेन्यवे द्वा विद्वा स्टान्न्र न्यावे वा व्याक्षेत्र त्रा विमाधरावर्दिरायात्रीकाववरार्दे विमाधायायारमामाञ्चेवात्रमाञ्चेतात्रमाञ्चेया याश्चीद्रायदेखिर। देशाव क्षेप्यदेक्षिक्षा क्षायदे हे शासु र त्यविव थ्राबा,भे.जो हुत्रा,तपु.क्.र=तपुर्व, क्षेत्रा,हुत्रा,तपु.हुं बा,बी.कैंट.व.क्शबा,हुताता. लुब्धे श्रेप्तुःकुःमेश्रामाञ्चाद्रश्यायशास्यायाश्चात्वा व्रथामद्राकुर्याश्चरूत्रा

वशास्त्र वर्ते प्रवे के रा देशक हैं ना पाळवाया न सुराये सुराया न सुराये हैं रा प्रवे से प्रवे से प्रवे से प्रव न्या म्या विष्या विषय विषय विषय विषय विषय चार्रियासकूषे तथा सैट चतु सक्षेत्र होते । शकूषे स्वेतालट हुन् चेत्र च तत्.स्रेंच्यात्रक्र्यात्रात्रात्र्यंत्रे निरं विश्वानिराव निरं प्रमुद्रं ्रिं च र र परि क्षेत्र व वा वर्षेत्र पा येव परि क्षेत्र है। क्षेत्र प्रवास व व्यापर वेशन्य सूर्याय पर्वा वा वर्दे क्षिम् राज्य वर्दे किम् राज्य वर्दे किम् राज्य वर्षे किम् य.रेट.त्रूर.क्ष्वाब.त्र.त्र.त्र.क्याब.त्र्य.क्ष्याब.त्र्र.रट.त्युच.क्ष्या.त्राक.हंब.सी.रेत्य.त्र. नेत् । जेशन्त्रा वाशनामुद्धानशामिता प्रत्विषामिताम् सार्वात्विषामिता तर वासिट सात्र में टाउट अकूब हो टार्टी दित्वा जीवा साथी पट तब ब ही है वा त.व.चंशक्र.क्ट.तर.श.चंशेश.बैंट.तथा ट्रे.ध्रश्र.भुंट.तप्र.बैंट.च.केंट.व्र.त्र्ये. यञ्ज वाया वर्षाय निवाके कुरायर यावा बुराये राय देववा विवा वा बुराया ततु.ह्येर वर्द्रे.व्याश्राम् वर्त्राम् सूर्यात्या वर्ष्यात्या वर्ष्या वर्ष्यात्या वर्षात्या वर्ष्यात्या वर्ष्यात्या वर्ष्यात्या वर्ष्यात्या वर्ष्यात्या वर्षात्या वर्या वर्षात्या वर्या वर्षात्या वर्या वर्या वर्षात्या वर्या बैर.च.चेश्रीश.तृ.क्र्या.व्यो विर.वी.चपूर.तय.वेर.ची.चालू.च.चयाक्रेर.टे.चर.श. क्रेब्रिंग्नब्रुअर्येद्रदे। हिंद्रिंग्रुब्रायम् हेब्रायलम्यायायायहेब्र्ब्ब्रास्ट्रिंद्रिम्या क्रवायान्युअर्थेने याद्भुतानी नार्थे यासुरातु न्याया अत्रात्म अर्थेन प्रात्म सुक्रार्थेन प्राये द्विता विश्वाहनाश्राक्ष्रित्र इस्यादना व्यक्षाद्रमेन प्याध्यक्षेत्र विश्वाहन विश्वाहन विश्वाहन विश्वाहन विश्वाहन विश्व क्ष्रताचित्रम् । ब्रेट्राचास्याक्षेत्राक्षेत्राक्षात्रम् अक्ट्रस्यायाया प्रताचित्राच्याया र्नुगामी हेर हिंग ग्री प्रवस्था पुर्दा पर्वे पर्वे अकेर पर्दा श्रीमा श्रीस स्ट प्रवे प्रवस्था चेर.वर्ह्य.तव् कें.शक्त्र.वट.लुब.खं.वा जीवश.क्त्व.वी.पट.तखंब.वर्य.क्र्य.

क्षा हिर्.जीवाश.कृत्वा.वी.कैर.च.वाश्वेश.वाषु.वचश.वी.लाष.लारा ही.चवा.पे.होर. वृत्यी वर्षात्र वर्षात्र वर्षाये के अक्षेत्र हो वित्रे देव वर्षा स्वादित गुःपर्वेद्रायदे कुर ने मर्थे पास्त नेद पु वद यादे खुन्य हैं न ने हेर हैं पा गु पर्वेद यदे कुर मिर्पे प मिन मुन्द्र प देव वा है स वि य य में दे स्मर प्रत् मार्थ परि हिरा देश नावव निर्धाणितः मेशायर मुर्वा दिशाव न्यूट पार्टा रट पविव मु हु मुं स्वार्ट विसास्यामान्त्रायायमायायाकेसाउद्या न्वीसायाधिनाने। मानि यसामहिसामावे अंचर्यासी, प्रदायिष अंश्रया हियात्र राज्या हियात्र सेचरा विश्वात्य साहियात्र. र्शक्षाप्तरम्वन्त्रिक्ताम् इस्यान्त्रस्य मेन्ना विस्ताये र्स्यान्त्रम् विस्तायम् ग्रयायकरावेटा वसामी वर्रामायावसाम् स्वी सर्वामायायसाम् स्रामान्त वास्तानात्र्ये पर्वास्त्रिम् नस्यापत्री त्नान्वे में मान्याप्यास्यास्त्रिम्। विदे इ.भरेट. हुवाशत्र मूज्यशा इ.चनु.कैंट.चधु.श्र.चवाशताता ईर्ट.वेशततु शक्राश. वसाम्रमार्चे के में में मारायदेव या भव है। देश संया है हे पत्रमा वसा क्वायम्र प्रथा विश्वरायान्त्रियारायम् विष्याय केराया विष्याय स्थाय वर्त्रायाक्षेत्रद्वात्ते के वाहिकावमा वटानी के वाहिया हो राजा रह्या का तर्वे हे राव हिका १८। द्रवायह्रव १८ हे बाजवियानी सुर देश मी क्वायमें र स्थाप में वाद नस्यायदे क्रिन्न नस्यायस्य वह्नायद्रा ननस्यायद्रा व्राप्तद्रा तत्रस्यात्रेरित्वीश्रास्यायर्षेत्रसळ्त्रात्रः स्थियायर पुर्वा लेशाय्यास्य स्थाये स्थित ध्वित्रक्तिक के के विदेश सेसमा द्विव साम राष्ट्रवा पद्वेव पाया देश पर पाया कु द्वारा साम स यर हैं र र में भ है। ये में भ हैं हे 'गुव 'यश प हु भ वश हैं हे 'द र प इ 'यर 'द क तर.हैंर.व.थे। श्रथतर ८.श्रथश.जश.वेर.व.२०.व.व.ववरश.शे.वेर.वत्। श्रथः

र्टाश्रेश्वरात्वर्षित्वर्वात्वर्षात्रम् श्रियः वि वर्षेत्वर्षेत्रे वि वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः वर्ते वर्येत्रः वर्येत्रः वर् ग्री. चित्र श्री में प्रत्ये विश्व दर्श ह्या श्री में श्री श्री स्वाय प्रत्य में श्री स्वाय प्रत्य स्वाय प्रत्य विश्वायत्रे हे हे निया प्रशासक्षाय हे निया के प्राप्त में श्वाय ने श्वाय ने श्वाय ने श्वाय ने श्वाय ने श्वाय ने पर अर्टेंद्र पर के दुर्श के । इ न दर वेद्व यर द्वा पर हेंद्र के दुर्श पर देश दी मु:ह्रेचश्राताश्चेतात्वेयाक्चायार्थात्रराह्र्यायाह्यायक्चार्यात्वेत्राय्ये चवुक्तिर्द्धा द्रसास्यकाग्रहा श्रुस्माद्री सम्माद्रा समाद्रा सम्माद्रा सम्माद्रा सम्माद्रा सम्माद्रा समाद्रा समाद्र समाद्रा समाद्रा समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समाद्र समा श्रक्तिंतर तत्त्वाचा जि.पेश वर्षेश की दिवादी विषय पर दर् वर्ष सक्त्रे यर वशुरा डेब मुब्दब यवे हिरा विकारी हर निव नुवार व की निव रे १८। तिश्रार्वात्रामी अपदासी तदा की कुर्वे रे. सूर वे रेश कुर्या वाषा थे. क्रिंग है। देर्ग मुंबे क्रिंचे वस हगस ग्री पर द्वार प्रवे खुनस र वुर खुनस हैंग नु पदेव पवे क्षेत्र पवि वा पदेत्र वे पक्षेत्र यह स्वाप पविव पु क्षेत्र प्रत्ये अवग र्वे की हिंदाय महाराष्ट्र माय विकास मिर्टिं के प्रति के द्वार के दिन की कि प्रति की कि कि प्रति की पर्रेश.जश रू.इ.८८.तर्थ.क्षेत्रश्रत्र.विधेश.त.जश्र ही.मू.वेश.चश्रयश्रे इ. पर्वाचेद्धसः हित्यम प्रति से सम्मान्य प्रति । क्रम्म प्रवास प्रति । क्रम्म प्रवास प्रति । क्रम्बानायर अद्भुश्च क्रियायम् विश्वाम्बर्धर शामद्भुर मावव यार क्षेत्रका र्वेष् की अवसावर्दर कुर र्रा चिर सेस्सा खुरा की हिंद ही र व साव हुसा परे खुना सा श्रे पहेंग क्षे पया है पहें मान प्रति क्षेत्र का में का में का प्रति के स्वाप्त के स्वाप र्वेषायानारावेन ।देःस्रमावाकुरान्यायम्यम् माववाकुरान्याकुरान्या

र्वेद्रास्त्रम् विष्यायाक्ष्रित्यायाक्ष्रित्यायाक्षेत्राचेद्रव्याक्षेत्राचेद्रव्याक्षेत्राचेद्रव्याक्षेत्राचे वैद्वायम् रद्यो स्वाकुर्द्य स्वाप्तेय रेया रेया रेया यहेव यवसा विवाय रेया मुक्षदेव,रश्रात्तव,तर्व,तातातर्वाष्ट्री, विकामश्रीरश्रात्तव, क्रिया वृत्व, श्रुष्रश्राया, त्रव शहर हिंग. उर्रथ ता जबा के जा हूं बाबी रेंबा केंच हैं जबा के रेट शिष्ट शतर हैं र यायाक्रिमामसाने वा क्रीक्रिक्ती वादाक्रिकाचासक्रिकामस्त्रीकाच्याक्रिकाच्याक्र वचेवायवुर्स्र्वाङ्कवायङ्क्षिश्वायवुर्स्विश्वास्त्रेर् ग्रीःह्ये यावायहेव वधास्रस्य देवेव स्ववर बियातर्व बेंबातव हिराहे। देश संत्या यट विया के हिंब है हिंदी गिये कृतामुण्यत्येत् शुरावा विवर्षिया स्थाविया खेटावया ग्राह्म । इता वर्षेत्र कृतिया गु.तवीव.तर.वर्वेरा ध्रावासीटश.ततु.हीरा वि.ध.रा श्रेवश.वर्दर.श्रेशश. र्वेद्रायदेव्यये क्षेत्रायका कु वक्षेद्रायम विश्वहर्षाय रहा विश्वहरण या विश्वह तुत्रतथाक्याप्रयातप्रवी विषातथार्टरातुत्र्र्ध्यथाप्रयात्रार्ट्वयश्चिराप्रयातथा वशक्तित्रस्य प्रमान्त्रम् वार्षित्रात्मिक्षात्मवात्त्राच्या शात्मवात्ते। वर्द्रम् श्रेश्रम् र्वेब अवर वृत्रा वर्डेब पर्व क्षेत्र र् 'प्रेब 'व क्षेत्र के क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व क्षेत्र तत्रिम् पश्चित्रस्यापन्तर्द्ध्याची वार्षेत्रस्य में प्राप्तेत्रस्य में प्राप्ते स्थान शु-कुर-१नु-अर-१नुग्रथ-ग्रन्थ हो अन्तर्भा शुअ-कु-हेग्य या पदेन या परि ग्राटा हेर्चे ह्यमान्त्रमानुर्मामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान्यामान बुट.श्रुमा इंगम.श्रुमाग्री,इवा.वर्ते, प्रामम्बाम्पूरी बेट.वर्देवा.वा.मध्यात्र. त्रेयाक्षेत्राच्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याच्याक्ष्याच्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याच्याच्याक्ष्याच्या रेयायान्वरापदे सुना कु इससारियाया विवाद दे दे इससा कु सक्व हित प्येव। निर्दे क्रेर.है.श.ज.गर्थ.कथे। र्ट.कथे.श सट.मू.कथे.श रु.टेशका.कथे.श.पर्धर.

यदा लहा हुत से वाका के जार है जा जार है जो का की का लूट हूं। नि सं है बद्धी केव विश्वाच नेव वश्र हिंदाय ग्रह्म । ये मेश दे ग्रह्म स्व हिंश क्षे पदे पाकेन येवे स्वर्भेता स्टापाम्य स्वर्भ की त्राम् स्टार्मा द्रारा वाबवानायुः क्रिट्यायुर्वृद्धायदा देशाह्यः क्रुट्यादे व्यादावावा वहा हिंद् केट यहेवः इत्यागुः प्याप्तु द्वारित है विश्वात्त्र हिंदा प्राप्त हो। इत्य वर्षा नान्त्र वायवायवे द्र्नेषायापेद दे। दे नासुमानी देनेर मुरायवे पो नेषानीषासम्म ग्री दे कि व के द में नाया वया पर्से सामर प्राप्त के द त्ये के द त्ये प्राप्त प्राप्त मुसा यास्य कर्र् क्रिंट्याम्बुसर् पद्स्याम्बार् पक्षाम्य विक्रास्य विक्रास्य विक्रास्य विक्रास्य विक्रास्य विक्रास्य चार्याक्षेत्र.ह्या.पे.पर्देश.यश.पर्देथ.ततु.ह्येत्री कि.त.थ्री स्था.ये.क्ष्या.वथ्री द्वेत. याम्बुर्याय्वरामु रिवेर क्रेन् स्वायाया मेबायाया क्रेन् रहा नेबायाया पित्र हत्याया मुक्राक्षामुन्यायार्ये नि क्रिन्क्यायानेका व सूरानाम्ब्रुयायका रहानिव निक्न दुवै हैनाय ही दे वस वहना है दरा दे वस हैन से र मानव समय ही देश जयान्यवायात्रव्याः हैवानह्याः है स्वायाः हीतः द्वीयाः वातः वित्रवा विद्वाराः वायाः मुःहर्प्य क्रिन ख्या नेबावबाव क्रिन्व। द्ये देव मुःदेन पाबवादेव क्रियः स्वितः देवावा वर्षः के. मेर् विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र मेर् विश्वास्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर के विश्वस्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर के विश्वस्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर के विश्वस्त्र मेर्प के विश्वस्त्र मेर के विश्वस्त है। विश्वन्य सुदे देवाय पर्दे कु दिया देवा कु विश्वन विश्व पर्दे विश्वन विश्व पर्दे हिरा श्रिमाया अद्भेत्रवा इ.देव स्वाउद मीम इस प्रमा । सर्मा विवायते समुनिमायम् देवे द्वीत्यास् विस्ता विस्तानस्य में स्तानम् स्तानम् स्तानम् स्तानम् स्तानम् स्तानम् स्तानम् स्तानम् खें अर्दे द्वेष क्रियान्वाद प्रतामके। प्रिंद्यान्वाद न्द्रयामके। ग्रु देन करबाय के वार्ष हो। । रवाय द्याया निवाय विकास के विकास के रे से अविव वदेवी।

अ ।। परिश्रायायदेव यापिश्राणी हिंग्या देया वापिश्रा वदेव यापिश्रा से स्तिः ह्रिन्य रेस द्रान्ता पदेव पिष्य द्रिय द्रिय स्त्रिय हिन्य रेस स्ति। विद्रान्य पिष्य गुबर्ट्ग् श्रु अवेर्ट्ग्बर् रेया दर्। दिवर् या वेदर ग्रायवि के विषय रेया स्था । १८ र्ये वा विषा श्रु व्युषा श्री वा द्रम्म या दर्म या दे दर विषा वर्ष वा दर्भ वर्ष र्रायानिका व्रवायार्ग्रहे पर्याविन निषाहे स्राया पर्याप्ता यम्द्रायदे देशयद् ।द्रायं वि विद्रायह्न ह्या विषयं में विषयं में विषयं वि विवास अ.वि. कुरान्त्र त्वात्र क्षात्र र्यप्रमा परेव महिषा बुर पर्वा मी हैन मारे साथ स्थाप विमार् में मारे हिमा दे द्वाचुवे क्विंच अदेश क्विं जैश की यादेश का ता के वा ता है र है दि र है वि वि वि जा ति र दे। मार्थाया में वर नाबर प्रवेश में दिर हिंद में मु त्या में विद हिंद में मु त्या में दि डिसास्यामाग्रीसाम्ब्री गुरासितायो निसासिताया विसास्यामाग्रीसाम्या यन्तर्वत्रस्मु युर्गानु मार्गायदे प्राये प्रति दे र दे र वह र या वित्र प्रति स्थापि । ततुःरुश्रामान्ध्रभावक्षमान्ते। जीवाक्षात्रात्रार्ट्यवेतात्रात्राच्यात्राच्यात्रात्राच्यात्राच्यात्रा इ.वासेश.ज.शूर्वास.तस.पीट.शक्र्य.पुटे.ज.क्रेव.तर.शूस.त.दश.ज्यास.पे। टे.चस. व.जीशक्षात्र.तप्रचेष.ता.जा.केंद्र.याजीयशाश्चर.ही जीशक्ष.व.संजात्व.स्व.ता.वश्यवाता. द्रमाण्ये तत्र हिरार्टी । त्या इसायर द्वेष पत्र सवर हिषाया पर तह्याया था श्रुणश्रातवु द्रश्राचीश हे हे प्रश्चश्राय द्रशासूरश स्री नेशत है। दे जलर हेव देश यास्त्रिन्द्री स्रिक्स्मान्त्रे स्वताकाक्षास्त्र स्वाप्त्रे स्वत्र स्वाप्त्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्

तपु.श्वर विच.त.लट.प्रट.वपुष.वी.वैट.व.२श.लूटश.बी.प्रा.त.१श.टे.वर.तथा देर.लट.क्ष्य.त.वश्वश्व.दर.ग्री.शक्त्य.टर.र्डंथ.त्यु.संतु.संतु.क्ष्ट्र.प्र.क्षेट्र.त्य.श्रु.वर्ति. है। श्रमश्रे केंट प्रक्रालय तपुर्दि रही दिवाश परदेश वे गीय हूं पात पहेय. व्यामव्यायाक्षेत्रप्रक्षाय्य्य राष्ट्री दिप्ययावायो मेयास्यामी इति दुर्भेत्या श्चित्र-द्रिव क्री विवा इत्वया वया है वया या राय विद्या पर त्य वा विवा व या पर वा विद्या पर विद्या विद्या पर व हिरा जेट.र्ट्रेब.ब्री चंबाचे.क्र्या.क्यी जा.चंबा.क्या.मी.क्री.व्यंवा.स. स्तु वितात्वस्त्रं वितार्विताते। पश्चेर देश वितात्व वितात्वी पर देश वितात्वी इंट वेब देर नामवार पहेंबा पर राज्या पर नाम में के अधार है दे में प्रमान है । प्रमान के प्रमान है । प्रमान के प वन्द्रवायवद्वायक्ष्यम् म्याद्वेद्वाच्याद्वायम् वयाच्यायम् वया यानार विन विश्वेर देशक्षा शेशवार विवासी प्राप्त के विवास शिव्य में यास्त्रीर्भविः देवासायवे स्वापदिसान् देन वामी स्वयसासुगान हिन सुरस्य सुरा यहेब पर्व किरारे वहेंब वा माब्स या हेर पर की वर्ग रावे हिरा यहेर रेस ब्र जिबार्च्य की न्य न के से सिक्त के देर न कर है। दे न न की से न का की से व से सिक्त में में वश्रार कुवायवन द्रार्टा देर्गने मुक्त मिविव व्यापार वर्ष र व्यापार वर्ष रवायमन्यायार्थस्यस्यान्तिन्याः स्वेतः सुराद्देशः सुर्धारायाः सेतायवे सुरा दनाद्वेतः 到、当口が、好、人に、お、当、知味な、多く、口、みく、くり、美ス、口事が、別が、多に、それか、口が、子に、 2.विश्वश्र है.तेग.क.क.वे.वेर.ह्रेच.त.क्ष.लुष.तव.ह्रेप श्रिश्र राव्यक्षेप श्रिश्र राव्यक्षे सुम्मद्भ भुग्रळव हिन्या सेन्द्री मेव दुर्भय देश सम्मार्थ स्वाप्य

र्हेन दु दि द्वर दु प्य दि । दू पुरा की प्रेस की दे द्वर प्रेस प्र म्ब्रियानायह्न स्थान्त्र मुक्षा । यहेव मुक्षा अव कर या मुक्षायेव । इवाद्द्रियान्द्रभवाग्री,शरूष्यंबीयानी,लेवाश्वालयाना बाटवामिवाक्ष्यकाग्रीवाहूरे. रेट्म्ने.चर्जाने.ज.चे.ज.चर्चरेता वि.म.चर्चर.प्रम.त.जम.त्र्रमाता सर.त्रेथ. इचा.ततु.श.चर्देत्.श्रंत्रश्चारतितः क्षेत्रश्चाचीश.यीट.पट.जश.वीश.श्रंट्य.श्रंश.री.वीर. श्रानुषायाक्षे । विन किषापति एव वि क्षु विषा क्षेत्र प्रमान्यातकवायाधन है। । क्षित पर्देश,ताथा केंद्र, प्रे.च. थेरे. पथा की श. श. विच. ता शरश. केंश वशा २२. की श. वर्षरात वि.श.वर्षेट्रतदुःद्रश्रातालश्रद्धश्राता ।श्र.वर्षेद्रदेवट्रतीयाक्षश्र गुवर खुवासाधिक पारे र मार्विर दुं कुर पर चुदी वेश पश्रम्भ परे हिरा दि लट.म.श्रु.श्रवे.रच.वृ.वे.वंश.पेश.देव्श.पे। चर्चा.मुंब.क्चवर्श.वर्श भ्रि.वर्श. श्चि.म.कं.चेतु.क्ट्र्या । बार बा.के बा.त.गीय श्चि.त.वी । वर्षे ने लर देश वे. से बा.त.शवा परवा में ब पक्ष प्राच में प्राचन हो । इस में ब कुर र र में ब प्राची । ये र भी । रद्यविष्यावुष्ट्या ।रद्याये येषदेशस्यस्य । श्रुःसदेर्ययः स्ट्रि गुरायबा विश्वयान्यमानुक्षेत्रयार्वे विषयिष्यर्वासर्वे विषयान्या श्रवे नगव से दुर्श से सिंह सुरा दु नर से सुरा देश में दिश महित से दे हैं रा दे.वर्यवाश्चित्रत्याश्चरात्रेर्याश्चरत्वाश्चित्रत्त्वाश्चरत्वाश्ययत्वाश्चरत्वाश्चरत्वाश्ययत्वाश्ययत्वाश्चरत्वाश्चरत्वाश्चरत्वाश्ययत्वा द्वी.श.वाश्रीश.शब.कर.री शटश.केश.ह्य.ततु.हिर.री.ह्या.यश्रा.ह्या.वाश्रीश.वाश्रीश. कुर्वान्यम् मुक्षायर्दिक् क्षेत्रपुराया कित्व किष्मिक्ष पुराये के मुत्राया शरशाक्रिशाक्षित्र-दे.वर्ह्या-ततु.हित्र-दे। द्रश्राक्त.तथा चर्चा-तानिश्चीशाचश्चनश. यवै देश । निर्नेष हेर्पर अ शुराया । अर्रे हे हुर र्रे हैं नाया । दे थे

रवान्द्रअद्वार्ष्य । विद्यावाद्वर वक्ष्य द्रश्चित्व । विद्वार्थ क्ष गुन्यन्गिकित्। किंविदित्र्रित्र्वाक्ष्यक्षाक्षाक्षाक्षाक्षाक्ष्यक्षाक्ष्यक्षाक्ष्यक्षाक्ष्यक्षाक्ष्यक्षाक्ष्यक विसामस्राह्म प्रियायायाम्हिसाक्षुः युसाग्री अतः मिनामिनिहिः सूरायहितः या दि.ज.चर्रेष.थ्र.क्री.जेश.श्रेच.क्षेत.चर्चर तत्रा ८८.त्रुश श्रमश.क्ष. श्रमा वारटाचरका बी.लूट ताव.चेष.में ताव.चेष.में ताव.चेष.में वीका.मी.बीच.वाच.लाय. हे। ब्रैन्स्रियश्वरुद्धस्यवायक्वेत्वर्त्द्र्यवाय्य्येवर्त्त्वर्त्त्रायस्य र्वटर्नुक्षेत्रव्या । रट्कुं वसक्रक्ष्यं हिंद्यर्द्ध्याप्ति वामवाक्री कुट्रसेस्रक्षावर्षा वरर्देर क्रेश हे विवर वर विवर वा दि है न ववश्यवश्यवश्यव देव र पाय श्चि अद् श्चिर न्य वया वळ्ट कु पा धेव हो रेश ल व्या वर्षे गुव रह द्वार शेर याक्षे । रूटान्वरानु वे प्युटा अध्येषा । दे भी कु वे दे दे प्रम्थया । दे दे प्रम्थया वश्वश्चर् हूर पर्या विश्वश्चरम् मुश्चे मुश्चरम् इश्वा विप्र पर्य पक्चर प्रश पश्चरमा विस्मान्ति । स्थानिक विस्मान्ति । स्थानिक प्राप्ति स्थानिक स्थान ब्राबेयबारुब्रामु विकामव्याम्ब्रायम् दे दिरायरुषाया व्यवारुद्दरम् विवा नु सं पर्व कुर से समा ग्री इस प्रस्था द्वा निव नु सं पर्व कुर से समा प्रमा प्रमा निव नु वर्गे.च.च बर.ट्य. ब्रै.कूर्यश्र.शं.वर्गे.च र.च शेटश.ह। हि.ह.हेर.च.वाश श्रे.टर. मान्यान्ता । श्रीन्यायम् स्वर्थाः है। दि श्रीन्यदेव की या यन्त्रम्या विस्रम्भित्ते क्रिय्या विस्ट्रा युर हेर्व यस गुरा वर् नेमन्द्र दर्व नेमन्त्रेत्। मिस्रमन्द्र वहनामायदे वहमा दिस्सम बैट.जशर्चेट.ठ.ड्री विट.जशःश्वर लट.जबवातालुरी शिर्ट्रवाशतालुशश्चरा ने दी विवित्र पर्व कु अर्क्ट नवस सूत्र गुरा दि दे देव के विनासित्य । हि

र्टा हे हिट सट में रेटा किसस दे सर लट वर्मे पर वर्मे में विश्वास्टर पर हिरा दिश्व अंश्रय कर वश्य कर ही की तिरा में विश्व में विश्व में विश्व में लूर्री मुश्रमान्व्यः इश्रमाना र वायाना वायमा स्थाना नत् । विष्या वार्षेवा. अदे 'युष' महिष' से दि 'य' महिष्म । स्याम सुमा अदे 'युष' दे 'दे दे ' सुमाम नि स्पेष 'यदे ' हिरा श्रमा रव की पवमा श्रमाया पर्य प्रमान के श्रमा रव श्री पर्क हिर पर्य के पर्टर वेब हे दे दो दोर ब कु व कं य य विब कि य व य है र । । महुन सरे वु स है दे वे कें पर्देर वेब के छे देने । बिस्रक ठव दर देवे ग्रुन व्यक्ष ग्रिक देवर व कु व ग्नेर'च'चित्र'र्ग्न्रश्र'यावेश्यये द्वेर। । यु'च'ग्रुग्रिये खुश्र'रे ते द्व'दि द्वेर' स्वेजदानमा मिनायहेन दिन । दि या यह स्र मामा महिमा ये दिन दिन दिन दिन । नुष्यायाचेत्राया । वातुवास्यदे मेर्यायादे त्याराष्ट्री संपित् मेर्याप्ताया रम्बानिकार्येर्प्यायकारीकातुः स्यायायकारीकार्वे । दिवाकामाराज्ञमायकिमायारमावा त्राम्बर्धाः श्रेपद्यात्रये तेद्यात्रयात्रयात् । सि.प.मि.वेत्यायु त्येद्यात्रयात्रेद्यात् । ग्रद्भुत्वाद्भाष्ट्रायरक्षायम् राष्ट्री । रग्यायये युषादे स्वादे युषासे सम्बन्धा र्ये देव देव व्यव या नाट दिन । नादि वा रना बाय वे व्यव से सका गी मुन्य मे देव के। स्यानानुना स्वीतास्य स्वास्य स्वास्य स्वीता स्वास्य स् श्रमात्रीमान्नान्तेन्यदेन्। । न्यांनित्रमान्यानानान्यत्यं स्वान्यदे स्वान्यदे स्वान्यदे स्वान्यदे स्वान्यदे स्व है। विके सेसस्दिर्यम् दे दिर्देश्यस्ति विकासिर्यम् स्थानि यवे द्वेरा दिश्वन महुना अवे नार जना हैना गुर यहना दर्मिश है। देवे खुश दर देव श्रेश्रश्न विश्व विश्व विश्व श्रेष्ट्र श्रेष्ट्र स्था विश्व हिंद्र श्रेष्ट्र स्था विश्व हिंद्र स्था हिंद

स्यवे क्रूट श्रेमशक्रिव्यक्त स्थाय दे वट ज्ञवा वी वादव्यक वावि स्थार्थ प्रेम प्रे वाशवार्ह्मेव वशा विट विव मिन क्षेत्र वर्देवाश पवि विवे विदे विहेट से संस्था विशेषा विवर्शेर्गुर्ग । रन्यायदे युन्या गुर्दे दे दे दे दे दे दे ते विवय पर्वे विवय से विवय र नेत्। विश्वामिन्द्रमातुःह्नेम । यद्विशातातायद्विश या यतास्थायद्विशामी यविषः वश्हे द्वर वर्ष्ट्र प्रचित्र प्रचित्र प्रचित्र प्रचित्र वित्र प्रचित्र प्रचार प्रच प्रचार प्र याम्बर्धि । प्राप्ति विवायक्कियादिन वासवामी कुर सेससाउँ सायसायर द्राष्ट्रायम् अवश् वेशवाद्यात्रा । भी देशका देशका प्रभावाद्ये शुःसवे नुरास्त या विवादी विवादी वा विवादी वि मुकानाबीकात्त्रः स्वरालद्धी विवायत्त्रेरातात्त्रात्वेकात्ये । श्रिकाद्येवात्वेका ट्रे.क.चर्चरी क्रिश्च विद्यात्तव क्रिया ट्रि.क्ट.चवु क्रि.क्यात्त्र क्षा स्रमा छत्र. वस्रवन्तुं मातुना सर्वे 'युक्ष'गुर्-रर्मा ब्रु 'युक्ष'न्र प्यत्र प्रस्त सुस्रन् स्राम्न बिटा क्रिट्र पर्दर मसलक्ष्य ग्राट्र न्ट्र क्रुक्त सेमल ख्यामी समाय बुवार संविद् वालेबा दिखेरावसा दिवसावदी द्वरावम् वागुवा श्चिराहा सुरावदीरावन् रे। श्रिशाक्षानुविकित्यदेव नवस्य । विस्यान्तर दे दे दर पर सर्वेता । विस्या गर्यस्थायत् हिरा हिन्दस्य वया गर्यस्य क्वाने ने हेन वया रदाने स्थाय लट्रवाराह्र क्षेत्र प्रविद लूट्या यो प्रया विद्या चित्र स्त्रित प्रविद स्त्र हि । इस्रायायायात्र्राचा वानेश्वरात्रात्रात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् स्वायते स्वायत् स्वायत् प्रायत् । श्रिया प्रायत् स्वायाया स्वायाया स्वायाया स्वायाया स्वायाया स्वायाया स्वायाया यकुषाक्षाम्भाक्षाम् स्टायक्ष्यायद्देश्व। । यद्याक्षाक्षात्रस्याम् व्यवन्ति । मी.सी.लब.बू.बुमानासेटमा विट्यु.ट्ये.यो प्राचि.क्या.क्या मिं.श्रु.सी.वाट.

व्यश् श्रुवःयवे निविवानु प्रिये दे। । रद्वी श्रेश्रश्यायदः द्वा यदि स्वा विविवार्ये द्रश स् नेयायवे सेस्या देवेद की सूर पान्यस्या की प्याप्या विसार् या की सक्य र्गार्ट्य्यं पर्वाकुट्येय्यं स्थान्या व्याप्या व्याप्याय व्याप्या व्याप्याय व्याप्या व्याप्या व्याप्या ग्रेशःग्रीशःसक्त्रं पार्ने प्रस्तु प्राये प्रदेश्वर विस्तर मित्रस्तर मित्रस् श्रेर्यालेश्रायाद्रा उभाक्षेत्रश्रायुराय्राराम्यायाद्रा उभाक्ष्यशागुराहेगा वशःश्ची वीशःश्चितःताविट्टे हि हि सर पर्वर तावाला नेशः स्थावेशः पर्वर श्चीशः श्रेयश्वित्रयानित्वश्चु युश्यी श्चुवनित्वर्द्याय में वश्ची वर्षित्यया दे विन प्या हिन यदे पुरा केन प्रमा के कार्य है। प्रमा विन प्या के कार्य केन त्र.लट.जैब.रेश्चवश.बी.शरे.ट्री विश.जैट.वी.क्र्च.जब.चर्बरश.ची हि.सेर. व अभागायनव विवाद्यामी शासिवार प्राचिषाया ता सूर्वा शामा भक्ष्य विश्व सा स्ट्रिंटर र्वेश्रायतु स्रेते स्विश्रायर प्रमेर रिश्वेश्रायतु स्वाय स्वर्थ स्वराद्धे यो एत हेंग्रायाक्षेत्रयम्भीत् केषायम् क्षेत्रयम् हे ।दे यश्वाद् दे द्वर्षात् केष्या शुक्रेत् यवै खेव दे कि ब हे र परे खिन दे अप दे अप दे ति कि पर का है है . मुत्र-देत्र क्रेंब प्रमानमदार् नेया विमानसद्या मुत्र मा मेरा मेरा समानस प्रिथंशाम्भव्यत्त्रात्रात्त्रं स्वत्त्रं स्वत्याव्याता स्वत्या स्वत्या विष्यता न्डिन्दिन्देव पुरान्द्र प्रमेष्य प्रमानिक मान्य के मान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य प्रमान्य विरायशाग्रारा विश्वाश्रेयशामिशाहेव महेव मध्ये मध्या महिना विमा व दिना विश्वा ग्रिट.र्क्न्य.त्रम्बर्धरश्रततुःक्विम। रिश्व.थ.रश्रवश्रततुःक्षेत्रः व्र.क्ष्म.श्रव्य.मी.र्ह्न्य. द्वास्यम्ब्रे नेमानुन्यी पुरः रेगमा सन्यामा प्राप्त स्थानिमान्या । सक्यामान्य त्रतः क्षेत्र श्रुम्द्र श्रुम् नु मु निवास मन् निवास विवास व

हिन्यायादे हिन्यमा । नदार्थे हे या सेन्सायदे स्थाया बुन्सायादा पहुन त्तुःमुश्रायात्वाववश्यत्रःश्चित्रायात्त्रम्भश्यात्त्रम्भश्यात्त्रम्भश्यात्त्रभ्यात्त्रभावश्यात्रन्त्रभ्यात्त्रभ वसास्युन्ता वार्वासायक्ष्यास्युन्तिसान्येरावहेन्द्रिन्द्रमायरास्यसागुन्। चध्ये.की.हेत्.भी.ह्वाशानर.वर्वेरात.प्रशानर.शावर्वेरार्ट्य दिवशाय.टशायत. उर्देर.की.कैंट.की.इस.सी.उर्देशक्षा दे हे अलग्नर नव हुवाश तर उर्वेर तव. क्रिंट्र के अ क्रिंट्र व्यक्ति दे कर पर दे के लिया है। दिन ने के लिया है अ के मान सर पर पर ने ने न हूट.क्रै.श.स.चेर.प्रमुशशतार्टर.। डेंद्र.भें.क्रै.श.स.चेर.पर्सुशशताता.क्रै.जेश.ग्रे. र्ट्रेय.श.क्ट.प्रशा ट्रेश्च.ट्रश.क्य.पर्ट्रेट.क्य.तूत्र.क्ट्रीय.पर्ट्रेश.सी.पर्टेटश. वश्र श्रु 'युष्य ग्री 'हेर 'येव 'द्रा । इव 'डेव 'हेर 'मेव 'हिर 'याय वर 'यर हिर् विषा श्री द्व कु के ब नारे ब त्या नि हे ब या वा ने हिन वा नि व व या नि वै द्विपराद्राविद्वाद्राच्याय सूर्य उसा वसास्राव दरास्र सामित दर्शन क्षेत्रदेव द्यायवे यदेव यद्दायर देवायर द्वाव यवे दि स्थिति ग्री सूर पाद्रश्चानी बैटायाविश्वाम् वैटावायम्बायम् वारानी रातार । विश्वास्तर वीरावश लट.च.झी ट्रेश.च.चें.द्रिश.इ.श.तर.चेश.त.च.कुटश.त.लुच.बूर्र १ट्रे.चेश.चेश. रवर्टा विवस्त्री सूर वानिहें सर्दे ने राद्र पठस्ते ने सुर्देवसावते. ल्ब. १ वे विश्व ता में माने प्रति दे विश्व त्रिव प्राप्त त्रिव विष्य वसमार दुःवर्द्दाय देर वस्य पर विश्व मास्त्रा वदेव देव देव देव है। विदेव त्र व क्षात्र व कार्याव पर्व क्षात्र व कार्य व र मुका क्षेत्र कार्य कार्

या न्या न्या विकास का स्थान विकास का स्थान विकास के निर्माण का स्थान विकास के विकास का स्थान का स्था का स्थान का स्था हैनशर्गवर्गवर्विहाँ दिस्रिकेर्गुः श्रेश्वराद्वेत्रः सहरः हुनानि सूर पान्स्स मु इस नेस ने न दि तर्र केंट ने मायहर माय ले ने । इंट पाय सुराय केंट ने मा विवायास्व दुर्गुरायाद्या विविवायवात्तुरादे व्यटा हुवार्श्वीराया है। विदाया वासुरा मु दश्य नेशर्ट्य देश प्रशासिक प्रति विष्य मित्र मु स्याप्त स्था विषय र्वेद्रास्त्रम् म्व्याची दुर्शेस्रस्र रंग्रायस्य स्वरंद्र र्वे क्षेत्रस्य रेग्रायस्य क्ट.ट्र.र्ज्य.तपु.र्वे.त्रा.पर्वेट.व.ल्य.प्रे हैं द्रा.च.वाश्या.तुपु.वेट.श्रमश्र.ट्र.प्रेर. श्रेर्'र्'वर्षातार्,वर्षाप्रेर्'र्'त् के शक्रव क्रिया श्रेश्या रिवर् क्रिया रवार्या वर्षा र्ट्सियश्मेशवर्ष्यायात्रिशायीः स्त्रियायी राष्ट्रियायी निवायात्रा । देवायां विवाया क्रिट.तूर् . इर . क्.त.र ८ . पश्या में जैश क्री . वीश क्षेत्र ताव ही र विश रावा विश्व त्रु। श्रु जैस्त्रवीयात्वात्र्र्यस्य र्ह्म्य स्राधियात्ये सामान्ये राज्या र्वेषाते। विवे यायर पर दे वर्षियायायश्रीत्वीशायुषादार वर्षा है याया है या ततु.क्षेत्र। विश्वास्त्रयोशायक्षेट्राच्यशायालटायक्ष्यान्टर। मूटायहेगान्टर। ह्रेत्रः प्रमाण्याया । भ्रिमान्यायमा । भ्रिमान्यायम् । । ५८.त्रमित्रमान्यायम् । वर्तेन्द्रमण्यान् स्रुप्तक्रम् द्विन्यक्षात्र्वा द्विष्यमः स्वेतः स्रुप्तक्रम्द्रिन्यावर्यानः त्तु हिर् दिश्व रेश्याया मुश्रायते हिं त्युश्य केश किरायर पर्क हिर्र स्वायाधवाने। कुवाहिरायमा नुबाग्रीहिरायमा नवबाग्रीहिरायमा मिनेवे विर्यम् विर्वानिवर्यम् र्विष्याग्रीवर्यम् सर्वर्ख्याग्रीवर्यम् र्प्ट-इर-वर्षेत्वविष्टिर-तरा लिकाकाक्र शाहीर-तव्यिदिनरारा विदेश तव्यिति तत्र। सूर्य थ्ये कि कि तत्रा रिन्न अकूर तत्र कि र तत्र। अक्रय के अंतर तर

गुःविर्यम् । देशक्रवाची विर्यम् सुब्रक्रिंगुःविर्यम् इस्यार्ट्यं स्थापेवः यदे द्वेर | ५८ में नुव है। । बेसब ५ देव समर द्वा नी ५ यदे दें ५ मा बया मी दुर मुश्रमान्त्रातमार्वेरावात्रम् । वर्षमानावीवाङ्गे । मुश्रमार्ववरम् म्नामी युनास र्वेन में हेर विय ५८ ५५ ५५ अहम ५ मुयाय थिया थिया विश्वा यायुवाक्षे । इयायम् रायदेवितायके राया हु हुवाद्युया गुष्टिया येवे वदादर मुंदिया के देन्य यायर व्हराय के यदे क्षेत्र देरा हवा हुन यहुका गु वदे दे यहित या गर लुक खे.चे । विश्व सूर्य श.मी. ही. दस्य त.मी. तथा सूर्य तथा । श्रुश्च र नुष्य मी. ही. मुश्रमान्त्रिमान्नी निर्वास्त्र तीमानमा मुश्रमान्त्र मुश्रमान्त्र निर्वास निर् यायक्षार्व्याक्षासु देवकायुक्षा गुः द्वे देवायका वित्यात् पुरित्या देवाये सी जैस्र-रवस्तरातुःक्रे.वर्वर्रे.वेर्वर्थः वैत्रक्रियः कर्त्रत्रे तार्र्यः वर्षे वर्वावर्षः त.क.श्रुर.व.ष्रुर.ततु.हो ४.८८। श्रु.वीश.वचीय.ततु.रेश.लुश.वे.श्रे.वीश.चीय.ततु. रुषासाधिव दर्गियायवे श्रेमा दियाव वकदायाय द्वानी गुराय श्रिमा दर्भव केंद्र क्रियाश्चाप्यवर्दिरावश्याचीवर्दिवायाविवानु निधुन्वश्वास्याची हेवासुव प्राट्या मुद्रा । नालक यार नाले नाडिना वार्ट्सिंग हे ही खूर दर कर खूर विनाय परा । ही र ने पहिषा क्री त्वाया है। विवि पश्चिषा या हिषा हे प्रमा में ही हि ए व ए हिषा विवाय लटा ब्रियमियर्ट् के स्टावर स्टायहेका गायवर पर्व केरा ब्रियापक केवा म् निर्धाना वीता है। किराश्रम्भा श्रमा विष्या वीता तार र वा निर्धा का ता हो । तार र देन-दग्र-चें के दावे नवद के सञ्च खुरा के के कि मान कर ने दार न सुर स

तत्.हेर । दिवातावीय है। सेवशत्रर विवायशेश हैवादिवातालेश वर्श शे. स्रित्यव द्वेरा पर्वेत्रा विष्टे हैं। दि देर हैं जिस शह्य प्रवेश हैं साम्रेश र् अयम् रायव द्विरा पक्र पाया मही सुदि दि । वेर क्वी शवह माहे व की प्रथा ग्रम्भार्थन्याञ्चर्यम् भेर्यं प्रदेश्वर । । न्युयायुवाक्षे । न्यरावेशायुवाकरावेरा गमयानी दर्भ में प्रेर में प्राप्त हैं प्रमाणी भावनी प्राप्त निष्ठ में प्रमाणि में प्राप्त निष्ठ में प्रमाण में वसा विन्वास्त्रितायाः क्रिसावसाववृत्ति । ह्रिन्वी विस्त्रावे प्वामा ग्रीसा वर्चर वर्षा चेश्रविष्टश्रात्तर द्वेरा वर्ष्ट्रविष्ट्रवारा चिवा ही विष्य की शक्ष वर्षेत्रा पक्षेत्र व्यास्तित्यहूर्त्रपष्ट्रेश शरशःकेश्वायश्चरत्यस्यस्त्रेयः ह्या क्र.ट्र.वा वस्ति वर्षे वर्षे प्रवादि देव वर्षे देव देव वर्षे के प्रवास वर्षे रद्यवेवा विश्वयन्यवःकेवः ये वर्षे द्रायविष्या विवयन्तरं विष्ट्रा वास्विमा । स्रायदावा स्रान्डिन दिन निमानिक प्रहेश । स्रिन प्रान्डिन प्रमादिन प्राप्त वम् व रच अक्रम हैंब पर वर्षेरा वेश वर्ष वर्ष रात्र हैरा ववब लट दे अहूब. र् अ.वेश.योटा श्रे.तंश.यी.अक्ष्य.धेर.ज्याश.तप्र.पंश.चेट.श्रूश.त.द्रश्र.त.ता.तट. पश्चिर रेस स्र म्यास सहर द्वित यद स्वत खेत खेर दे। हे सूर रुपरे पक्ति येदे हैरारे वहेंब वाक्ष्यायर श्रेषाय दश्ची बागुरा वाबाद रार्टे एवं बावा नाव बायर वर्चेर.धे.हैर.श्र.क्वा.त.लट.ब्रूच.तर.वर्चेर.ह्य विश्व.वर्धेटश.तव.हेरा विदे. ब्रिश्रामाचीयाङ्गी श्रीश्राक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य श्रियाक्य र्ट.क्.चेर्याचेवाकानक्ष्यंत्री विकाक्षित्राक्ष्याकार्त्राचक्ष्याचिकात्रीकात्राक्ष्याचर चीबीटकातपु.क्रीप्रा चर्वे.चीबीकाताचीच.ह्री प्रश्नाक्ति.वास्रा चरेचा.वेथ.चश्चच.क्रश.

र्यमायर मेर् दे दे वार्षायदेर हे सेससर्ट सेसस्य यास देनाया वाल्यास्य र वैर्देर्गम्भयायदे । यर मेवायाय व सुर मेशायर प्रवेत हेर दे। । मर मे से यस ग्वन्द्राप्त्र्र्रावि । दिःश्रेद्राप्त्रः विष्यः यः श्रेष्यः ये श्रेष्ट्राप्त्रे । श्रेद्राप्ते । वसर्देन् न्यायायायायहाङ्गा ने वे से से स्टानेस देना परि खुस न्दर ता स्टानेस स <u> २८.चेल.पयु.रूषे १२श.तयु.पर्वेश.तर्वा.श्रम्थ.तर्वेश.वेश.वेश.वेश.</u> यायदिकार्युकार्गीद्रीयायिर यामान्यायये दे प्रविन मानेमाकायये स्विमाका स्वासामाका यर मुलेटा दियवेद देरायाम् नायर मुखादा अवाय प्रवर्धेद दिशामुन मृत्तरायक्षराये । व्रिमायार्ट्यायक्षायार्ट्या व्रिमायाक्षरायाक्ष्म ता.श्रेर.तर.धेष.पे.श्रेर.तर.वर्र्य.रर.ब्रा.चे चेचेच श्रात्रासी.वर्ड्, वर.वर्चेर.र्ट्र.खेश. गमुम्बायवे क्षेत्र। वदे दम्बासा विव पुः क्षेत्राये गुः क्षेत्र पार्के प्रवे प्रयो प्रवे प्रयो प्रवे प्रयो प्रवे चित्रमार्गेट्रचित्रकात्तरः हिर्मे त्रुवे वित्रक्षे वित्रम् मे विर्मे क्षेत्रम् नम्पिन्छेषा निकिन्यमा छिवे द्विम्पुन मेम्पिन विन विन वर्षा छैवे द्विम जैंश.ग्री.प्रियो.त.सूर.प्रे.श्रा.जश.री.श्रेश.दी.इ.यश्रेश.ततु.येथश.श्रश । जिंजा.सूर्येश. मलन नमानु र्येट क्या वर्दे द यवे र्ये का त्र मान का सामा की की ट से पट व्यय वर्दे र र्देट्याद्या द्विरक्वेरक्वेरक्वायम् नेपान्ट्रिक्यान्यम् वित्याम् वर्षेत्र। दे.चबुष.रं.चबुर.ज्या.नवंश.चबुर.श.ज्या.नवं.चष्या.सेवंश.रं वां.कु.हा. 55.तर.शक्षात्रशाद्ये. प्रे.श.शक्षा वेश.वेशेटशे वर्टर. हे.व.चेषे.शह्रे.त. ल्य. में . च्युरे . प्रचीया तीय . इट . चयु . की . टिंट . की . प्राया मी . प्रीया सामी . वे . या सामी . न्वर्र्षेत्रित्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्रेत्र्येत्र्युत्र्रत्यास्य स्थारायुष्यः स्थायायह्नायवे कुर्ता भ्र

वस्त्रच्यात्रम् कुरव्यस्त्रम् स्त्रम् द्र्यास्य व्यूट्यते कुर्द्रा । क्रियस द्रायते पर्वः लैकार्सर क्षमायरेष प्रदेश मिरित्यर लूरे खरे क्षमार्थमालेष ततु क्षेत्र। ट्रेव. वन हुन यावा हुन वहारा शुन्दा वा वा विद्या वा विद्य वा विद्या वा वि स्वासाना विसानावार्षसात्तान्त्रत्रात्त्रमान्त्रत्यात्रमा हिंदाक्रवान्तानात् विगानिहर्ने विग्या । किर्ने नेप्राया किरा के व्याप्त किरा कि व्याप्त किरा कि व्याप्त । वान्ने नियानीवयात्रेरात्रा विष्टे हियात्रका क्षात्र विष्टे त्या विर्मे पर्वे क्षेत्रसक्ष्यक्षेत्रमानिक्ष्यक्षित्रम् क्षेत्रमा । सायम् वास्यास्य क्षेत्रमा विद्या त्या श्चेष प्रवादित्वश्वश्वश्वश्वात्त्र । भ्रिः वर्दे र श्चेर वि श्वर त्या वर्ष र वर्ष र वर्ष वन्यानुः द्वेत्यर मुराव द्वेर विदेशिता विदेश हेत पक्ष प्रामान्त्र पुरावर्षेर वर्चेत्र। हि.क्षेत्र.क्षेत्रक्ष्यक्षेत्र.चर्चेत्रक्षात्व.क्षेत्रत्यः वि ।हे.ल.क्षे.त.भट.प्र म्रोर्गुर्ग विस्वयंद्वयम् द्वैर्ग्यस्य वायर्ग्यस्र देरा विवयंपरे मु लेबान्यायास्त्रपालेबा दिसायादे केत्यकेत् विवासत्यव संस्था विनयानु वर्देर् यवे क्याहेन द्राय छवा दि प्रवाक्तियान क्या व्याह स्वाहेश विदेव दर प्रवह न यान्नागुरायेन् अयोवा विषामास्रम्या निवाने हिन के हिरानित निवाने निवान यर विदेर विद्या तिष्ट कर त्रा के क्रिया है। विदेश क्रिया कर विदेश के क्रिया वियान्या बूट यकेट ग्री नेयाया गृहेया में हिट केन हेर विवाह पर्वापाद । । दे लट के कूर्य प्रचिश्व बिश्व वशा । रेगी वार्ष्य राष्ट्र त्ये विश्व वार्ष्य राष्ट्र प्रचार प्रच प्रचार तर्त्वचर्त्रा डिट्रिय्युट्रय्र्यायदेव क्रिय्यक्ष क्रियाये हिर् हे. क्रिन्यवे कु अळव चेन्ने । विषेत्री क्रिन्यी क्रिन्या विष्य की प्रविक्र प्रविक्र विष्य

र्द्र न्यायवादेव द्वित् स्रेस्य वया संचव व्याय स्वावत् या स्वावत् या स्वावत् व्याय स्वावत् स्यावत् स्वावत् स्यावत् स्वावत् स्वावत् स्वावत् स्वावत् स्वावत् स्वत्यत् स्वत्यत् स यवे वसा ग्री व वेवाया सा ही व या है सा व या पित पित पित ही या कि वाका यव राय ही । वस्यान् यर् प्रमासुर्खेट वर् कु सळव र्ये दे। । यर के विश्व में कु न वर्षे वा परे गा.श्चे.मा.सं.चेर.मक्ट्रका.ततु.हिरा वेबातत्। विशेशता.वा.विशेश विशेट.रट. म्रायम्बर्गान्यम् वक्षेपान्यम् वक्षेपान्यम् न्यान्यम् विष्यम् र्रायक्षेयार्रा क्षेयसर्रायक्षेयर्वे ।र्रायेनेक्षेत्रस्य क्षेयस्ति ।यरायने वामिन्द्रिन् गुर्दिन् मामवा हेन दु वर्गे दर्गिया है। मनिवे वेद्र सा सुवा पनिवे के सा सुद्रा पश्चिर देशायवे विरश् श्चिषा देव केश शुं हें द पूर्व प्रिश्य पवे हिरा देश द पविर गुःदिर्देवत्वास्त्र्रायाकुर्द्वत्याकुर्द्वत्यास्याचेत्रायाद्वर्षेत्रायाः न्दर्यायार्वेद्राम्बयामी देवा सेद्राष्ट्री सामाहिद्रामी विद्रामा देवा से ब्र.चेबा.बी.क्रे.च.तकर.क्रट.क्रंट.च.चध्रु.क्र्यंचश्र.बीश.एश.वेश.चतु.क्रेंप। टे.क्रं. नुवि इव पर्दे र य देश महिन गी वेन माय श्रीन ख्या पेन दे। महिन वेन य पर बुँग्रुर्चान्द्रयान्द्रयान्त्रयान्त्र्यान्त्र्व्यायाञ्चनायान्त्रेह्न्यान्त्रवे न्द्रद्यान्त्रयान्त्रेह्न्यान्य यवे द्वित्र । दि वर् प्रवे र्दे पार्व क्षेत्र प्राच वो वा बा वा ब्रुस र्थे द पर दे बे वा द वे बा है। महिन्यम् नामान दिन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन्यम् वर्षेन् गन्नायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्त्रायान्त्रायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्द्रायान्द्राय त्तु विषया विश्व में श्राम् क्षा प्रति विषया विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व प्रति विश्व विश्व विश्व

वहेंब या नहिषायका दर में या नहिंद गुर्वेद नक्षय दुर हैं वक्ष गुरु वहेंब या वस्त्रम्यक्षम्वव क्रेन्म्स्या विदेश्याम् वे देव्यम् मी व्यूट्यम्य स्वर् क्रे व्यय रूर.पक्रट.की.तपु.पंग्रे.च। भ्री.च.चक्री.थथा.पक्रट.चक्री.चपु.पंग्रे.च। पंग्रे.च.अश गुन्दे पद्च पहुन हर्षे । १८ में है। के प्रदेर से समादिव में हिन समादिव समा ब्रुट्रिय मेर् क्रुम्यम् म्या मेर्प्य मार अवादे प्रमादिम एक एक प्रमाय मेर् वर्त्ते र पाने स वक्के प्रवे के दिर प्रमुख न दिन प्रमाण महत्र पहिना की मार्ग प्रमाण दिन च्यायसायक्के पार्वे वासवायसामी वेद्रामासवा दु पश्चिराहे। देवे कुर सेससा उसा वश्रक्षुं अवे नुरुष्टि विट देश रवश्रायवे सुव नुरुष्ठ व श्रवह र व व व व व व कु'न'ये में में में वियायुर'ये वा विषया में के मी विषया विषया में विषया विषया में विषया विषया विषया में विषया म्राम्यान्त्रीत्माम्यान्त्रे । विमययान्ति स्वाप्तान्त्रावयायः देवाया ।दे बबाई, वर्तेवा सैवाबा क्या वित्ता मूच ततु है बातव विश्वा विवीय कु. रहा. श्रेर्परे हिन्य हिन्या दिवय क्षेप्त्र मानवर् निवा विषेत्र पर मेर् के हिया त्त्रमञ्जूषा । प्यत्त्व के के का प्रत्य प्रमुख्य । विकाम सुरक्ष प्रते विकाम स्थाप यावी । निमन्ति विकासियाचियाचे निम्मित्ति विकासिक विकास यमिष्र पुरायाया या वर्षे स्वर्था वर्षे स्वर्था वर्षे स्वर्था वर्षे द्रिया वर्षे वर्ष सुरान्वेद्राया । त्वान्वेद्राया इससासुर्येत्। विष्ठेवा स्रेससान्वेद्राया क्रिया विद्राया क्रिया विद्राया क्रिया व्यापकर कुपार्ये प्यर पर्टि पार्व के के प्रधान है। हिम्य रेका प्रधा हि हर बक्रावित्रावक्राक्षायात्रायराद्रावक्राक्षायात्रिवार्श्वेत्रायक्ष्राया मीमायन्यानु ताते दि ए द्वार पार्ति वा वा मिनाय वा मिनाय के दि व मा

वक्रमाकुपाकी । नवरार्वेवावयान्याकेषान्यार्वेयायावसुरावाक्यावेषानुयाणी। वशक्रम्यान्त्रियम्यान्दा वर्त्त्रियम्यावायान्। विक्रेत्रम्यायम् कर्राद्रा शेश्रश्नाद्वेत्र मुंदिन्याया सर्वेताया सुन कर् मुंदिन्या देश विवाया सिन्दि दे। वदे दन मुसामकूर्याचेष्य.मी.जमासमाराजवटानेमात्रर नेत्रा विमानमिटमात्र हिरा चर्षेत्र,त्रं पर्वे व वे से चर्षेत्र, की चर्षेत्र, व के त्राचार पर्वे प्राचे पर्वे प्राचे पर्वे परवे परवे परवे पर्वे पर् स्रि.ट्री इ.व.र्.तथा । पर.ट्र.क्रा.चश्रा.चेश.वेश.वे.ड्री वश्यविद्यातास्त्रा । वांवे. जयानी वक्क प्रते श्रीर निया प्रतिवाद्या स्था स्थित प्रसे प्राप्त महीस दर्श । विति जयानी । वर देव श्री में विषा वह वा बार विषय में विषय में विषय में में विषय में में पविःश्रीरःवीषायन्ववाषायःश्च्याः भुविः पश्चेषाः इत्राष्ट्राः विः प्रवासः स्वार्षः विः प्रवासः स्वार्षः विः विः व वश्यम् न्यवेषातु अर्थे द्वियायायायास्कृत्यी देशास्वे देन सुवाषा राधेवावे वः यर येरिन्दे। क्षेत्रकार्वेदायदेदायवारमार्वेदानी रेरिनामुकार्केर्रारा क्षित्रका वाश्याचिषायावाराचिरायवार्यवारायाचे रदा देवा हेटारी प्रमाया है। सावार्या पर्सेष्रतम्भःरुष्रात्तर्भः मेंद्रेदेत्त्रवे क्रि.वर्दर्भः वक्षरः में वर्षः वायाः त्रवाया । दे त्रेरः शः वंशः ब स्रायतः हुँ द स्वास सं त्ये प्रति वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा स्वा वर्षा मुसामान माने । त्रुव.सूट.रे.उद्यात्त.सूट.उद्या.म्.इवा.युंड्र.प्रथ्यासूचा.पे.वेश.यश्क्रा.रेंगे. नु चे न या भे अपने विश्वास्त विश्वास व म्रामान्या विकास मिन्न कि स्वास मिन्न मिन् वर्षेत्रप्रची । हिन्द्रेये स्थाये नेषाययानु वर्गुरा । यथा सुराम्हिन यो वर्षेत्रा हेन मूट्रियंत्रात्त्रात्वात्वात्वा विद्यानश्रुद्धार्यये द्विरा द्विष्या वे वेद्यान्या यान्ड्र्य। श्रुप्तराविष्ट्रे विष्यास्त्रिया विष्ट्रा विष्या । ह्या पुर्वे प्रविष्या विषया विषया

क विश्वभाग्ने देव देव देव विश्व के हिवा का देवा वा विश्व वि देवा विश्व वि देवा विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व वि मुन्नित्रम् स्वाम्यान्याये देव प्रमन्याद्रा क्रि स्वाम्याये स्वापना वासीरकात्तवुर्त्रेयत्वरेत्त्र्य ।रेट्त्राजावास्त्रा व्याप्त्राप्त्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा व्याप्तान्यक्षायाद्वा दे व्यार्वेद्राम्बयाक्ची मृत्यस्यावम्यम् याद्वा ।देशः यादे वासामान्य में सहर दिट स्वार्थी । इट में दी । हिंद पहुं साय सारे साय पति त्तुंर्ट्रें में कुंद्र्यम् वर्ष्यम् वे। क्रेंट वेर अट्व सुअर् क्रेंच मारायर्टा वेव ब्रिय ब्रेंट पाया श्रु खुका क्रेंव रु प्वें न्नेषायायाधेवाने। १९वास्टान्यापर्ड्याययार्द्धेट हिन्यस्व सुयानु हैनाया नेटा द्वा ह्वेच हिंद साया क्षेत्र पर्व हिरा विश्व ह्वेच र वहाया हिंद च ला दे हिंद द व के दिवा न ताश्रात्त्रेय.हे। निर्म्तिय ह्मेयात्त्र विरायस्य साम्राजी साम्येयाया सर्मा श्रेतः विश्वर्ते क्रुविश्वविश्वर्ते तत्रेयारे विश्वश्वर्ति सारात्यात्र प्रदेश क्रियः रविश यार्श्वरात्रवास्त्रम् देशावार्त्रसायायविष्यवार्त्व मी विरामाया में वार् ब्रिट्याया बुकाया अद्या उत्तर्य द्वा द्वा प्राया ब्रियाया विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार विकार मास्यायदे श्रु खुरादे होना यानावन की मार्य से मास्य की पर्य ने स्वर्थ की दें दिन गर दिन दिवर्ष श्रुप्ता यादेश श्रुपित्र श्री प्रिया श्री देन श्री विकास दिवर के दिशा अत्र अस्ति दिन दिन क्षेर्-रु-छेर-बुक्ष-पर्व-छेर। रूट-पेर्-रे-रामवा विर-छेब-मेग्-परा कामकुर-पा वृत्यं बा.पीट.केंताता क्षेत्रवा, पीवा प्रथेता विचा तवा तवा तवा हिंदा है। तवा ते व्यवा पी कुचा वा

न्यून्य तातान श्रेता ट्रम्या श्रेतिक हूट वश्यश्यश्यता विचा छ्य श्रेता देता श्रेट्य प्रथा इ.ध्यास.वर्ष्ट्रस.त.वीय. है। रिस.त.वार्यस.ततु.हैं.तीस.तूर् वासवा.रे.वर्वेव.ततु. ८८.ह.च्.च.च.च.च.व.शर्था.डे.चच.शर.ची.श्रंशश्चींचेत्र.वश्च्या.भीव.धेत्र.जव छेर. यानार विन । श्रुपितेषामी देनाया ५५६ के अत्रामावन केना हो या दु । स्राम्य विषा मुनास्राम्यान्त्राम्यान्त्रात्त्राच्यान्त्रम् । मुन्यावदेराद्दान्याया मुनित्रम्यान्त्रम्यवे श्वित्रम्यादे श्वित्रम्य दिन्द्वर्या स्ति दे दि श्वित्रम्य म्य बर्थाक्याजयायीर क्रेयात्र प्रदेश वेश ही बर योबर प्रवृत्यक्र प्रकृर प्रकृति हे. सक्त केर देर विराद्य दिया द्या दिया केर मार्थ के मार्थ के मार्थ सकता के स्वाप के स यानु यते हिर नु । विश्व न्द हु वश्व इस में वा निर्मासिन से वा विश्व से निर्माण के विश्व से निर्माण के विश्व से निर्माण के वा विश्व से निर वरेवश्रयाधिव यदे श्वेरा विवेशया वामाश्रमा श्वेष्वर मे अर्देव यर श्वर क्विय न्त्रियायम्द्राया दे अर्देव दु केदायवे व्यवस्थायस्य निवानिक निवास करा मै इस मार्थ के दे हिंदिर पर विश्व तार्य परि । दे राज्य विश्व तार्थ । र्देशकी.त्रेर्वेश्वरादी विद्या अ.स्रेर्वेर्की.श्वराविष्या प्रवासी स्टब्सी.रेश सु'सर्व,रे.वेशतव,र्क्ताक,वशक्षित,शर्व,वेर.रेटा वर.ती.वर अक्टर. ह्या नासुस्य वद्यायवे द्यासुस्य देव दु नुष्य यवे व्येन क वस वद नी सरेव नुद दु वहेन याधिवाते। देशावायमा सक्वार्श्वासूरायदेकाक्षेत्रमध्यायात्रेसदेखेरादेते बैर.व.भक्ररे.व.लुबे। ।शक्रभभ.धु.बैर.व.ह्य.त.४८.बी.४८.वखेब.क्रभग.ग्रीश. यव निर्मा क्षेत्र यर पर्मे । सक्षव क्षेत्र हेत् पर संयो व सक्ष्य क्षेत्र पर हिना र र

प्रविष: इस्र मान्याचा । दे वि चु मान्य क्षेत्र इयायर्ट्टिर प्रति प्रया । अक्समाग्री सहय है प्रहेग से व स्तु हिन से व से व युषान्द्रान्द्रायद्रमायद्रा १द्देश्वेद्राक्षामान्यः सद् देनायद्रमाने देने केद्रायद्र र्वा.भवत.में.वचरी । श्रुव.रेत्र्य.भक्त्व.बु.मव.मुव.वव.वब.श्रुव.श.वा.बु.हु.म्व. विट.क्वापक्षा विट.वी.चरे.च.कूंग.चवा.श्रम् क्याचिट.क्वा.सेर.कुवा.र्या.व्या. मृत्तर तर्वेर विश्वविर्धात्त्र हिर्व विश्वति हैं विश्वतिश्व प्राप्त प्र वर्तः देव की रूट् निषय केट जात ही टार्ट ही र टी विर की जी हिंद ही देश क्षेट्रावितायर विर्वामध्यानु देवा क्षेष्रावहेत्र केट्र हुन् पवे द्वाव केंद्र न्द्र । । यटः हुँट.पर्देट.योधव.क्षत्रश्र.पूट्.योशका.टे.हिंट.तपु.ह्रा.शे.४८.यो.जेश.योट.ह्रर.हेर. र्देर् नामयार् नाविना पर्द नमस्यान हर नहिमा क्रिंस की रेस पानिवार गर्मा शब्द्यास्य क्रियाये क्रिया स्थाप्य विष्य स्थाप्य क्रियायक्ष्या । द्रियाय्यः वह्रवायते देशाया प्राम्य विवाहेशा सुमानिया यदी विशाम सुप्राय ये हिमा प्रमाना ने निष्या स्थापा वास्त्र त्युवा सामा स्थाय हे साया निय त्यु साया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स्थाया स् ग्रम्। विमेशायुन्यायाद्वस्यसास्रस्यम् द्वादास्त्रस्य विकायते विकायते विकायते विकायते विकायते विकायते विकायते व ट्या.में मूर्यात्रा.मेंब.में.जुर्यात्रा विश्वास्त्रा में मुंद्रा खुर्यादे हुं जुर्याया महामा विश्वास्त्रा विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र वि निसेत्र। स्रायाक्ष्य व्यायाक्ष्य भी जीवारना जूर निसेत्रा र स्मूर् र में र सुर र र र र र र र र र र र र र र र र है। अिंद्र्राह्रास्त्रास्ता निर्मार्ट्राह्रास्त्रान्त्रा नस्यानु क्षियायात्री भुगस्य म्ह्रम्याग्री न्याकेना सेयसान्यवानस्यान्यः देः क्रम्याग्री मिवामार द्रमारा त्रिवर दे क्राम्य हैं निर्मित्र मुस्य त्री सिविर मिवामा गुः भे मे ब से अव र द्या व बु अ र दा । भे मे र मे बु अ मी हो मे मे वे दे कर र प्र अ हार म्ब्रिंग पानि भुग्न शुर विनाय ग्री किर दे रहे के अअश र पत म्ब्रिंग क्या जि र पते हिर है। इ.कैंट.जबा ।बटब.कैब.ट्यीज.उर्वर.ट्येब.चर्थ.तरा घटवे.मु.जैब. जार् मार्ट्यविष । क्षेट्रायर जार्मे ख्रायश्यश्या । विषया जार्षश्चार प्रश त.चर्लुशा चंब.८८.। शरश.केंब.८०वि.व.व्रूर.८वंब.वर्ष.तरा हि.ह.श्र.वर्लेट. रपः द्वार्ष्य द्विरापर धाने द्वार्ष्य वा विस्वरादेश विषा खेर कुर पर प्रविष बर्बाक्यर्गीवार्व्यर्वेद्वर्वेद्वाविद्यात्रविद्यात्रविद्यात्र्वेद्वा वर थि ने खुः नषस्य है। वेस नसुर स प्रेट हिरा देन न हु न दे स्याप नसुस प्रेट श्च.तेश.तथा । श्वथंश. ईथ.ग्री. ट्रेग. श्चि. दंश. पश्चि. श्व. पश्च. पश्च. पश्च. हेशम्त्रसरम्बेत्। विरूप्तस्यि वर्षे विषयम् विषयाम् विषयाम् विष्या यविद्वानी वह निम्मा अहिन दे ने दिया में ने निष्य के मान्य प्राप्त मान्य मान्य प्राप्त मान्य मान्य प्राप्त मान्य ता विष्युक्तिया कित्र प्राप्त केत्र प्राप्त हिंद हिंद अद्व स्या मुन्ति स्वाम प्राप्त हिंग मा अद्व गुः अर्घर वा वा अर्ग मुक्त चर्चे बार्बा स्त्रुव न्द्रा चर्च बाराय न्द्रिया चारे व न्या स्त्रुव न् न्यायद्यार्था |देयाव देयापायवे पर्य देव की विद्यायादरा हिंद की हिंदी ग्राम्य बेट.वर्टेब.सूब.श्रूप.श्रूप.तयु.रेश.लुब.ब.सू.प्रटश.लुब.तश.विच। व्रूटे.बाशवा.ता. मिन्द्र द्वारा मिन्द्र गम्यामहिषायि दि। दराये दराके महिषाया गाहिषाया वा क्षेत्राया क्षेत्राया के माहिषाया वा क्षेत्राया क्षेत्राया हित रेगमणी में वयान छे व ही देव नहा । इस देव नहा । अहर हमाने वेद माया नश्रमार्येन दे। निश्रमायते। दिन में तिन नश्रयाक्रमाठना हिन यासक्रमा में

त्र विवत्तक्षेत्र कृतिविवाचीश्वत्यास्य स्त्र स्त्र वर विट क्वायवे क्या हि या स्वाया त्तु विट क्वा में अस्त में अदा क्ष्मा से लूट त्तु हो र दे विद्युत त्रि नामय में ग्रम्भायाः हैन्यवे व्यायाकेर पर्हेर हेर हेर ख्यायर व्यार दे। विव पहिमायर नास्त्रायदे। खे.स.ट्र.सटस.के. १ १ १ १ १ १ विश्व सूर्य स.म् अ.कूट्र. यहूर. ताल्लाचारत्र हिरा विश्वभागत्री विश्वभागत्र सेव होनायदे सावर्षेत्र होन् या हा सा यादे दियायाम्बुयायवे ह्या व्यवाद्या ह्या बाय्यावायह्याय र वर्दे द्या श्री वहा दे द्रयायाम्ब्रायदेश्वर्ष्यदेश्वरः । १००० । १००० विकारी स्वायाप्री स्वायाप्री स्वायाप्री स्वायाप्री स्वायाप्री स्व क्रियाचीट्राचेच निवद्वे मुक्यासादेश याट्राप्ट्रेन्य संवर्गीत्रह्में स्थान मिन यश्रवश्चित्रयाचेत्रभ्यत् भ्रिम् । दिश्व दर्दि भ्री दिद वश्यव भी मेराय दश्य दर्वा र्विशक्षा दिखासाल्यासायर वर्षेट कुष्यर से सुसायवे हिरा दिर खया। सर बुव ह्रेगायतः र वदः ही दूर हेन अर्देव सुरानु हैं न सप्ते नेस र प स्था ही स हर याम्बुं मी महिबा सूर सं से द्वाप्य देन की किया में किया में कर में किया में कर है। स्परा । अर्गेर्ट्र देव केव स्वाया हिन प्या । द्वर प्यात्र अपन स्वाप्त हिरा । इर क्वारवस्य पुनिकारी विद्या प्राप्त विद्या विद्या विद्या स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय मिशकान्त्र्रे स्वाकानीका विद्यान्य शान्य अत्यान्त्र । विद्यक्षित यविकान्त्रियः श्र.वर्केर । शवद.लक्ष.पश्चेताताक्ष्रक्षक्ष.बी.लटा । विचेकाग्री.श्रे.ल.प्टेट.वह्रव.वीया । ब्रैट.च.इश.तर.श.रेग.हिरा । चिट.छ्च.वचश.चे.ह्य.श्र.वर्चेरा ब्रैट.च.चशेश. र्यानमान्त्री । इसमान्द्र-सिक्तिन्त्रेन्द्रिम् सिक्तिन्त्रेन्त्रा । क्षाम् सुर्यायदे सुरा । मान्य

श्रेनुषायर वया धर ध्रेन वेगाय र त्या की क्षेत्र यदे सक्ष द्ये सवर वुग दे बै'स'रेग'यग'कगभणी'स'यायहेब बसागुयायस'दे'ह्न'युवे'युस'दे'बे कुब सहवे देव मु दिन नम्बयमु नुसासु नमा वर्षे प्रमा महमस सुदे रेमस वर्षे निस सुरे हैं स मुैर्द्र्नाम्बयामु प्रद्रित्यदे अवाक्षर्गु राद्र्य अराद्र्य अराद्र्य अराद्र्य विष्य विष्य त्त्र्रम्याय्त्रं श्रुत्यायम्यव्यक्षायम् विवाद्यः विवाद्यः श्रुत्यः विवाद्यः श्रुत्यः विवाद्यः श्रुत्यः विवाद्य वसादेरायरावर्ष्ट्रियार्वेशयवे क्षेत्रात्ते क्षेत्र हो नश्च क्षेत्र व्या व्यव हेता हो वर्षेत्र विकार्य वर्षेत्र केव रेका दे कि व दे दे हैं ने अरेक अंगर है गया या या व दे स्थान रही। निया दे या हूर्यश्रात्र विरश्रात्र कुश् श्रीश्रात्त्र तार्टा द्रिय की पूर्य योश्रात्ते श्रीरशायत् क्रिट्र हो अधार्य अधार्य में अधि । विराधि विष्य में अधार्य में अधार में अधार्य में अधार्य में अधार्य में अधार्य में अधार्य में अधार श्रेष्ट्रियायरावह्रवायमा ।वर् हिंदा हुरावाद्दा हु अव हु सुवाया वे साव अदाया इचानवु क्षेट्रम् श्रवर विचानट्टा सिंगिर्धराग्री विष्रम्भा विष्राम्भा दे.ब्रिश्नालये.तत्र.वर्ध्ने क्रियावीशेटयात्तव्रह्मेर। दिश्व तत्रह्मेर ह्मेवातव्रह्मेर. ताहाश्रातात्वाश्रव मी हेव छव इवाबा वाया वाय हुवा खुवा यहा कुवा मुनि हैव मुन वाक्वानक्ष्यायतः क्षेत्रमान्तर्या राष्ट्रमा व्याप्ता क्षेत्रम् क्षेत्रमा व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व वयान्तरमध्यापानश्चरायरमध्रापानश्चर। न्तरावविषापारावश्चरहेर्दर बेट.च्रिश्रत्मकेट.वश्राश्रक्ष्यं च्रुच.ज.ठक्ट.के.च.ल्य.ब्री ट्रेट.क्र्य.लट.के.ज.संश. है। रियर मधुस्र परि देव में देर मास्य में मार्स्स पर्द स्मान सक्त छेर'रु'र्वरम्ब्रुअय'र्देश'र्वर'रु'श्चेष'छेर'र्र मेंव'छेर'ग्री'यवि'अह्रद'रु'छ्य'

ने पश्चर परे क्विंब शर्दे व क्विंदि वा शवा पश्चेता दवर देश क्विंद परे क्विंप हिरा र्द्राम्बर्यादे व्यवाद्वाप्यदे श्रुप्ताचे स्वर्मायायाद्वर प्रवे पार्चा व ग्रम्भायानम्बर्धिः स्वराम्भूराति। हेवादे याचि रद्यात्री स्वराप्ते सुदायद्वा सर्व,रे.वेर.त.लुब.धे। व्रि. पर्देश.जबा दुश.त.उर्दु.धेर.ग्रीश.पट्ट्रश.र्वं तर्श. र्मवानुगुः द्वारायादे प्रविद्यानेवाषाया द्वाराष्ठ्र गुर्वा से वीयानी क्षारा सुवापर गुरायमा अिमार्थे पर्दे हिरादे पर्दे व यमापने दमाही । इर क्रिया गुरि दिर वामनुन्यान्या न्याधेर्णीर्वास्यर्त्यामवामायर्त्तर् प्राहर्रो हुंसाल चुवै दिर दे वहें वश्व प्रवेदश्वशा वर्षे प्र अस वा हें के पर अहं द पा थे के हैं। देवसायस्थाराने द्यायदेके साह श्रेद्र प्रवस्थाय देश्वेद्र द्वासदे विकसाम स्थ विरावक्रियाधेक्की वेशन्ता देशायाविश्वायाध्यागुत्। हि.सन्नु के. र्रवायावश्यात्। विक्षांचित्रार्, त्वेष्यविष्या विर्मुष्यायर विरक्षित वर् वर्षट्यमा । हिन्द्र पाक्रिक प्रमासदस्य क्रिक हिन्द्र प्रमास्य प्रम बे र इ व दे र कु त मुक्ष नु । वि मार्थ हि र पहें व थ नु म व । दि के कु या पाय र र्रेहि। हिथाकी मटानु मटाने व पत्विषा कियान वे ख्राया के मियान हो। वार्वित्राचित्राचित्राचित्राची विश्वताचित्राचित्राचित्राचित्राचित्रा ब्रेश्नचर होता के हिंदा है। विकास विदे र साहर अक्टिय सुराय विदे विकास वि बेरेर्यमस्मेन रिंद्रन्यस्यायायाधाम्बर्धास्य स्था । रयाद्यायाच्यास्य क्रि.वर.वर्चरा र्र.क्र.रव.रचव.र्र.हुव.श्री विश्वी.रवर.र्वेग.ह्य.तर.वर्चरा हिर्देशसे है। कियानदु स्था किया है सेर देशने विश्व स्था विश्व स्था विश्व स्था विश्व स्था विश्व स्था विश्व स्था विश्व

न्त्रेर। दे.क्ष.वेषु.श्रम्थातत्त्वयाश्च.दे.ब्रे.वस्थातात्यम्थात्रात्यम्थात्यात्रात्यम्थाः वेश। ।शरशःकेशःतः २८। त्रमः हेव ह्याःततुः मरः वशःकेशः शरशः केशः ततुः शरशः वस्त्रम्भाष्येत्राते ।देवद्वेक्याष्य्रभादे स्टायमार्द्रम्भाष्ट्रम्भायानुग्रम्भाष्येतः मुःररावश्वाताः र्वाशावशामुशः र्ह्नेष्यायन्त्रनायान्द्रशाधिषायते स्वीतः । दिःषराद्रवरः नासुरायायान्दर्यानिहसार्ह्यनुत्वे क्षेत्रिक्षायान्दर्य ह्निसार्यस्यायान्द्रेत्रस्या र्देव द्रायमें के दर्मे अपादा । दियाय द्वी अपादिका वापा क्षु अर्थे के द्वार विकास यायदे इस्रबाह्य स्निप्दायदेव देश निर्धाय प्रति हो । विदेश याही देश या प्रति यवैर्देन मुर्देन महावाके हारहा यह वाना दुन मिन हर दहा पदे पद वाना लेब है। विद्-दि अप्यमा । रूट द्वट रेब केब द्वावाय ले। विश्वट य दहेब याधिव यर पन्ना विश्ववादी वर्षीया पर्व हैं हेर विश्वरा विश्व वा होर वहें व वर्तेर.वर.वर्तेरा विश्वासीरश.तवु.हिरा विश्वाता विर्टेट.वश.क्श.रेवा. ग्वाम् प्राचार रेवे र वी र वी र केर केर पर्टे र ज्या झेव ही वा परे पा के । ज्ञाल र वश्याप्य हिंदा सेंद्र संस्ट केंद्र विवास । अद् किया हिंद्र वा सेवाय हु सा सवि से वर् दे के अस्म सम्म म सम्म निविद्या । विविद्या । विविद्या । विविद्या । बूद्यास्त्र सुस्रात्। विहेत्र मुद्देन स्त्रे से स्त्रे से स्तर्भ

क्षेत्रहे क्षेत्र त्वचीश | त्रश्च त्वचूर्य त्वचूर्य त्वचूर्य त्वचूर्य त्वचूर्य विषय विषय त्वच्य त्य त्वच्य त्वच्य त्यच्य त्यच्य त्यच्य त्यच्य त्यच्य त्यच्य त्यच्य

त्र.रेट.र्जूच.त्रव.शक्शश.इ.क्षेत्र.वाचेश वित्र.त्रव.रूच.वाट.वाचश वर.तत्र. वर्ग्य न्यु कु अळव जार वन्या में वाय में जार वन्या वेश देश य प्रेव परे क्षेत्र है। क्वेंद्र पहुषायमा पर्केम इव पद्याहे द्वर व देव द्वर परे पदेव परे व ब्रामाने। दर्मार्यासेद्रायरास्य व्यास्टायरायस्त्रीत। वद्रास्त्रात् स्वामा त्रश्चश्चर्श्वेर्ट्रिट्रवृत्वट्वियायवाश्चा श्चर्त्वायर स्ट्रिय पर्वे यट्वियायवाशा हर यंदेर्न्द्रविनायनमा इदिष्ट्विर्व म्याप्तरायम् म्याप्तरायम् प्राम्य मार्थ हिरा ग्रियायाये। हे हे सूच द्वा मुक्त स्वा स्रेया स्वयं स्व क्रवार्याचेवाबार्श्वाचेवाबार्श्व दिन वाबचाचबार्वर प्रदेश प्रया पे प्रविव वामेवाबार्यर श्रव द्वा व्यव वि द्वेर प्रदेश प्राप्त श्रव क्या की त्यव त्या विषय व्यव वि व्यव वि मव्रहेशस्य वाद्यात्राम् वित्र द्वाराम् प्राचित्र वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम केषाक्षत्रयम्यान्ययात्वा देवायव्यव्यव्यव्यवावी दिप्पाविषायये यवा निश्च निर्मायि वा दर्भिये वा विष्य दर्भिय वा विष्य दर्भिय चिन्ने। म्रामेन्ग्रीकृत्रम्मम्यायम्यम्यन्त्रन्ता वर्षान्त्रमान्ता विद्रान्त्रिमः १८। वर्षासुभारता वर्षाविरावन्यार्थेन्यार्थायार्गात्रा ।१३ वर्षेत्र मुन्यात्वावायात्रेन् प्रते क्वामीयावायात्रीन प्राप्ते प्रति क्रिम् हो । प्रम्याविषा ५८। मञ्जातायमा सराधेव होवायासरायद्वायदिवार्गाव प्रतिरागी मदा होटार् मूब्र.मूर्यान्त्रेर.तक्षेर्तराच्ट्र.त्रेश्व.ग्रे.तचरी जेट.हूर्य.वार्था शटश.क्रिश.क्षेत्र. गर पहेन्या । श्रामु र दे वे पर्यु मार्थिया । वेशर् न मी देवा नामवा श्राप्त न मुक्त यर यन्त्र य उद्याया गरिना शासी से विके स्थायहर सामहर या देव कु सक्त में श

श्रामनुष्यामान्त्रमा हुन्यस्थायम्यायायमा मम्हेन्यस्रेर्द्रम्यूर्यक्षा वर्केर् यक्तिं अर्केन र्वटर् है। रिवय्देट हैं रविष्ठु नहिस्हे। रिवर् रविष य.पर्वे.वाश्रेश.तत् विश्व.र्ष्ट्रचेश.ग्री.ह्वेर.तश.यवु.त्.र्.र्.ज.चश्रेश.वंशेश.र्र्ड.पर्वे. महिशा शपकु महिशा देवे हिट दु देव मी वेद माश्या मायकु माश्रुय पर मे दि पर यमद्री रट.लीवाबाबु.हीर.बातरी.वाबीशारी.हीर.ततु.कु.हूच का है.लागीर.वर्षर. यास्त्रावस्त्रामार्श्विमायवे सार्ग् । मकुपायामकुपाखं सार्मा देवे हिरायर मु वस्तर व देव पर कर सेर पर वस्तर सुस वस के समित व से मिर्टर मा अवस्य द्राया द्राया द्राया क्षा क्षा विष्य विष्य द्राया द्राया विष्य नासुरसायाक्षरा द्याक्षराद्रराचे साम्बर्धा नेवाक्षरा देवाक्षरातु गुन मु रेदि द्वार्थ महिला महिला मुका दु महिला दि हि हो दि प्या प्रकार । दिन द पश्चर रे रे श रे दे विषापुर्य दिया पर्य परिवादिया दिया विषय मार्थ सहि वर्ष्यवे सावर्ष्यवे दर्षे रावराविद्यायायर हर क्षेत्र देशसा की हेट देशसा ब्रिंट्राचर्ष्य्यायक्रियवित्रायवेट्रायश्चरियश्चित्राध्याये स्वर्धित्रा दिश्वत्यव्यवाशः यायम्ब्रम्भुकार्याचे स्वापित्राप्त्र विष्याप्त्र विषयाप्तर स्वास्त्र गुरा मञ्जेत्रस्य अवर क्षेत्र प्रथापकुर पार्ट रेर्ने खुवार्टा श्रेश्रशादवेत श्रापकु पार्ट रेर्ने खुवा मिन्निया है। विकाय का देहे ने वा पार्टी या प्रेडिं देश या प्राप्त का षाचकुर्यार्वियाक्षेत्रे खेराहेनाषा रेआयार्वियायारे खेरापुर प्रितारिया नेषाना नेषा श्रुमायर द्वित् श्रीत्रामाम्या द्वित्य स्थार्त्व यार हेर्ग साव सामा देवित । देश वार्यरकारायुःक्षेत्र। दिवादावश्चिदःद्रयास्त्रवत्रःक्षेत्रःववायाःवाच्यदःदिदःस्त न्मा म्यान्वेद्रायान्या । श्रिस्यान्वेद्रान्म् युस्याविद्यासाम् सुर्थाः र्ग्रेवाक्षर्राद्राद्वाक्ष्रियाववेक्ष्यक्षरावित्रो शावक्रावयावित्रवाक्ष्रिया य मिया पास्त्र प्रभेत देश सहर ख़ित प्रशास्त्र पर्दे प्रमायवे प्रवित्र खेवे स्रार्थे प र्पन्न ब्रायन्ता राष्ट्रम् स्वायर केंब्र हेंब्र पर्य प्वापये प्यापे से विद्यापा हिर रवार्वव की स्रवश्रास्व वा वी के वा केट वार्विट वार्विव या रहा । विकृषर युवारव तर.वर्वेर.वर्य.वया.क्यश.वीश.वडट.तूर.वर्बेर.वेश.चंटा र्प्ट.इर.कुर.तूर्. र्वर वश्चर ह्वा या वर्ष वर्ष क्षेत्रकार विवास हिना वी क्षेत्र क्षेत्रका स्र वश्चर क्षेत्रका ववि चेत्र पवे मुरा रेस या वा सामा क्षा साव सु पवे पवे पवे वा मूर्य पवे पवे मुरा हिंदा है र चतु.की.शक्त्रे त्यर.तूर.डी चसूर.वश्वरा.ग्री.क्ट्येश.ह्येश.तश.हेच.ता.झेट.ज.वेश. या अद्यु उत् पुराय दर्गा या मानवाया मान्य पुरा की प्रमेषाय दे पर्दे प्र शक्रमानगर्ने क्षेत्र वित्रात्म वित्रात्म वित्रा दे प्राप्त वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र ब्रान्स्यार्क्ष्यार्क्ष्यार्थः द्वारायाः विद्यार्थेशायात्रद्यात्रात्र्यात्रात्र्यः विद्यत् विद्यत् नामायाः र् तर्मात्रायद्वात्रम् के व्याप्त्रम् स्वार्थः विवार्थः विवार्यः विवार्थः विवार्यः व यवे देव मु वेद नामवास्त्र राज्या सार्ट ये राज्या निवास विकास में स्वार्य निवास विकास विकास विकास विकास विकास व क्रियायस दे त्यायाद मुदे द्वायावना हो द्वायाय दे । विदेश यादी देश यान सुमा त्तु श्री तंशतभ्र रूथ में तूर् नेशवाश्रम्थरे श्री नेर्ध्यत्र रूचे त्रायर त्रिन् तर त्र याधिवाते। दिव अवशासाक्षेत्रेत्रेत्याह्व सुर्थातु हिन्यायव नेषार्यात नियार्या लब्यवे के र है। किंदि पर्देश जन्ना हि. हुर दे र त वा में शास र वा त है हुर र् द्राम्याम्याम्याम्याम् । देश्येर् पार् श्रेर् द्राम्याम्याम्याम्याम्या क्रिक्रम्मा देशकाष्ट्राध्य प्रमायक्ष्य प्रमायका विषयास्य प्रमायके

यायवे यदे देव में वेद नामवायमा आहेवा है। दिव स्माम मायवित्र प्रवेद दिमा नामेव स्व सुक्ष क्षेत्र क्षेत्र विकार्स्ट देन अर्देव सुक्ष नु हेन का यव नेका रवा येन यव हिर है। देश्वर प्यमा इस्रायर नेमाया महासाइसायर द्वायवे नेमारवा में सर्दे वा पु धुन यवै र्टे र्वे दे त्या दे से सम्माया से दे रेट हु। या से दाय वि त्या वि दे दे हु। या स वर्षायवे प्रमाण्यम् कि । वा त्रवा मारे वा यर प्राव वा वा प्राप्त की वा वश्रक्षायर मूर्वाया वेशवर्षिटशतव हैया दिशव शर्ट र्व्याश मुह्न छन् मु अहूर जन्न त्र भ त्र वर्ष क्रिया प्रत्य क्रिया श्रावश्यायश्चेत्र,श्चेत्रं मुक्षाय्विर,प्ययेश्वाय्वे,स्रायात्रवार्स्ट्रेट,वुषाक्षात्रवुषानु । र्येन्ने। वेनायकेकुटनीअर्वेट वार्अन्तिकृति केन्यरेन अर्थन्ति सुर्यानु हैनायय अर्द्ध्य गुर्प्येर्वरपर क्षेन् के क्ष्म ने किर्तर स्त्रिया विषय स्त्रिया विषय स्त्रिया विषय स्त्रिया विषय स्त्रिया विषय रेअयापविष्यवेदिव में वेदि वाश्ववावश्वरायादश्वराद्यमा पुः श्चित्र यवे शुर वह वा वी सुर क्राम्भवाति । ब्रिन्यक्षायमार्श्वरायावीयार्गामुनामुन्यायमार्थरायमार्गाम् क्रा रि.चधुर्माम्याः स्ट्रं हूट व्यायायाया वि.वर्तितार त्वीर तर तम्रा क्रियाम्बर्धरम् पर्वः द्वित्र । दिः स्तरः द्विषः याः वार्षिः वः ते। देः स्नायवाद्वरः यतः वया । विदः नामवार्त्रातमान्यासमान्त्रासमान्त्रासमान्त्रसम्बद्धाः विष्यासम्बद्धाः विष्यासम्बद्धाः विष्यासम्बद्धाः विष्यासम याबुदायहुनार्वेवायाध्येदायवे ध्रिम् देषद्वे बुदायहुनायादेवागुदाश्चरायदार्श्वेदा ध्रेर्वा के पार्ड पार्ड मान्त्र मान्य प्राप्त प्राप्त स्थान ताताश्चिरावदाक्षेत्र श्रेश्वामी यदे क्षेत्र मूद्रान्ता प्रेश हूर हुर अरू ते श्रम् ने श्रम दे में श यन्ता हिन्यायञ्चरत्रह्मान्याञ्चरत्रह्मानीम् द्वित्रं वित्रायत्येव हो देशाञ्च

वाया । गीव हून रूट देव रवा भी । विया र में श्रीय में या विया वे भी । गार र लट्रयायट्रेश्रक्त्रया विट्रायट्यायर देयम्दर्श विश्वयास्य स्वरेष्ट्र यथ्ने पान्ने विषया मुद्दाय हुन प्रते कुर्गु कुन क्षेत्र स्राये प्रते प्रते प्रते । याधिव हो देवे स्वाचित्र मारी देवा पार्व पार्व देवा में दिन नाम वा पाया है सिन हिना ५८.त्र. ११४ व्रीय में १६४ वर्षेत्र वर ११८४ वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वह्नायदेखर्यायेष्वे है। ब्रिंद्यह्रबायबा । निर्देशदर्यायवा । निर्देशदर्यायवा क्षेर्वे हें हे वकर के वेर्त्य वेष मधीर शायव है र दे से प्रें से शाय है र पर्या यादे प्यत् वाया वाववर खेंच की देवा है। देवा खे वाया । बुद वहुवा हिद वह्रव यानवश्ववश्व । श्वर प्रविव निर यवर श्वर वश्वप्रां विश्व महार श्वर हिर ट्रे.सं.वेंद्रुश्चर्युं सेंट्रियं तर्देवा नद्रश्चर्य की अंश सेंट्र शामिट ही में वर्षेत. र्वायास्त्राच्याम्याम् व्यापार्ता विवित्रावतः क्रिसार्द्रवार्त्र्येवापार्ता चै.व.चैश्रत्रद्रं क्वाद्रव्रूर्त्रत्रक्ष्यं त्रूर्ट्य विदेष त्राचिश्राची क्वाद्रव्यावाष्ट्रवात्राचिश्रा सूर्याकात्राक्षीटकातपुरक्षित्र। विश्वकातपुर्ध्वत्रात्रात्राच्चीतात्वकात्रात्रास्त्रास्त्राच्यातपुरसिर्धाः या बुदाय हुनाया दे हे बाइ बाया थे बाही । दिये कुदा ग्री खुन बाही ने विया अकेदा बूट्यासुस्राचे देश द्रवायव प्रवेष्ट्रिय हो। कुट्ये सावस् हिस द्रवाय विवा क्रान्त्रियसमा दिन्दर्वर्वर क्रियर ही। हिस्स सुर्वर वालेस वर्वर दे। र्रे सूर बैट त. टे. जब भी जेश के के ति हैं ये हैं के ता बेट ति वी कू का करी र्विन्दिर्दे वहें के त्या विक्ता विकार के त्या यदेव महिबाद के रामेर भी कथा वर्के रामेश रामारे स्रायम वामार स्याप हैं रामवे कि रामेर है। दे हैं द वर्षा वर्ष दर नेष र र हैं अय वह व पर्या दिस में वर्ष कर र

वर्तेत्र, रचेशा विश्वश्च केत्र चेर. केश रचेशा निर्मा के श्वा विश्वश्व केश विश्व के श्वा विश्वश्व के श्वा विश्व के श्व विश्व के श्वा विश्व के श्व विश्व के श्वा विश्व के श्व विश्व के श्वा विश्व के श्वा विश्व के श्व विश्व के श्वा विश्व के श्व विश्व के श्वा विश्व के श्व विश

क । वार्षेत्रात्त्रम् तात्विश्वातात्त्वायात्त्रेत्राची व्यव्याः हुँ दित्यावा वार्षेत्रा । हुँ दि याश्चिति समानानान्ता झामेराणे श्चिर्या हे खना तृ यसरायर्थे तरार्थे देवाना रुपापी देव पर्श हिन पाद्रसाय नहास पहेंद्र है। नसद या वास्त्रस्य पाट्य स्वाधिय मु हिर्म के के बर्म या वर्षा या वर्षा र दाय है वर्षा के वर्षा वर्ष क्ष्मायर श्रेषायायायर्दि कम्बार्गी हुँदाया इस्रवाय ह्रवायये हिरा हि सायाकम्बा चयानी हुँद्राया के सूब्रायव कु अळव र्येद्रादे। मदा चना दे पदे पाळे के र्येव र्ये प्रेश क्रेट्रयायार्श्वस्त्रिट्रहेन्द्रनेषर्यान्द्रवेन ।क्रम्यान्यानीद्रम्याद्रम्यायान्ह्रेन यश्यदे केव की ले में शती के अश्यायर हो द्याव हिरा देर हवा दे पद वे ले मेशक्रियावानुपदेवदेवदर्गिया दिवाइदारेश्रयशक्रयाम् विदार्गिया देवा ध्विन वर नी परेंद्र पेंब पार्येर का श्वेंद्र दर्भिका पर्य श्वेरा दि स्र र गुका पार्याचे वर री देखायवद्यरवया कुष्ट्राची वहेद्राधिव वाश्चर्यस्य वहेद्राक्ष्यसम्बद्धाः यश्रन्तामुख्यूरायराम्बुर्बायवे क्षेत्रावे व क्षेत्राके के निया कर्केना वहा नुना पर्न केर क्षेत्र पापनिव र पर्ने किना सामा पार नार जना देना वाय सम्स के सामी क्रिय्व्यूर्याद्रा क्रिय्वेर क्रिय्वे खुर्बिर व्यायव्याय स्राप्ट्रिय क्ष्या ग्रीका कर्या क्षानिक्षामुद्दारम् विश्वद्यायवे द्विराहे। विद्वाय देव व्यद्दारम् व्यद्वाय विद्वाय विद

वश्यान्त नर्नेशः हिन्दे स्वकर्ति वर्षे रात्र विश्वास्य वर्षे विषानाष्ट्रसम्बद्धिमा देन्द्रम्नानाष्ट्रसम्बद्धानायसम्बद्धान्यस्य प्रमानाना न्द्रिशास्त्रिः गुरान्द्रिम् अनायाद्रियाशासुः चनाराद्रसाया स्वि गुराद्रिवः र्केट्स न्व न्द्र सक्द्र सन्द न् प्द्र न प्ये हिरा दे प्राप्य से द प्यापि स्प्रा वशाने देश प्रतिवश्यास्य देश होता वित्र देश के विश्व वर्ष के वर्य के वर्ष के वर वरे हिंद द्वेर सेद की प्या देर हैं व सेंद्र मान देर के व से प्या के देश श्चित्रवाद्रम् व्यवस्य प्रमाय द्वित्त वित्त द्वित वित्त स्वत्त वित्त स्वत्त वित्त स्वत्त वित्त स्वत्त र्मण्डवरेवे केरा वर्रे द्राने शहर या हैवा के बुषायर हवा की दरायें हर र ब्राह्मरायायरामुब्रायवे कुरादर्विषायराम्या वर्देदाळण्या वर्देदाळण्या वर्देदाळण्या वर्देदा क्रम्बर्मेबर्पदेश्वरा मानवरणदःचयादेशपदेवरद्वरत्रद्वरत्रद्वरत्रे बर्'क्'वन्रबानु'वर्देर्'कवाबाबर्'प्रबानियाये हिरा विवर पर वर्देर्'कवाबा वसाम्चेर केम यदे वर्देर क्या मारे वर्देर क्या मारा सक्त हैर या प्रेम मारा प्रमा मारा लुब्र-ब्र-व्हेर्क्षवाबावीय निराक्ति मी क्राया निराक्त मी क्रायम् रावस्य में यन्दर्यवाया धेवावादेर्वेवार्वेद्यामानव न्दर्यहेवाह्नद्यार्वे यन्याय मान्या दे पर्देद क्याबा धेव यदे हिर ले वा क्रिक के देन दे दे से प्रति के प्रति वा दे दे कन्यन्तर्वहें इत्रादन्यायन्ये से स्वायन्य स्वायन्त्रीस्य स्वाने अन्तर्भाति स्वायन्त्री स्वायन्त्री स्वायन्त्री क्रि.यर्रेथ.वह्रथ.त्र.त्र.विश्र.तर्.स्रुथ.वर्ष.वंच्य.वर्ट्ट.क्याश.त्र.तर्.वेट.तर.त्रथ. यवःक्षेत्रक्षे । दिग्रम् वःमिटायमःक्षेत्रायवःश्वेतःयमःमिटा वदःयमः क्षेत्रःयानितः वितःयतः यवे श्वेर। देश क क न शया वसा हे द ग्री वर्दे द क न श दे वर्दे द क न श सक व हे द

त.लुब्.प्रीट.वचश.श्रोषश.तश.इब.श.इब्.वीश.वर.त.रट.त्व्रूर.चतु.कीर.वर्वीर. य विक्ति नियम् व ले नियमित के नियमित के मिल । श्रुर्प्यतः इस्रान् वे प्रत्यास्त्र के द्वा श्रुर्प्याया श्रुर्याय के वर्षे पर्या दि प्रत्ये वे गाव नुः श्चित्या अर्केनात्ता स्नामा ग्रीः श्चित्या अर्केनात्ता स्तामा स्वामा ग्नेग्रायदे हुँ र्यं र्टा रेग्यं यह वात्राया प्राप्त वात्राय रेग्यं रेग्यं रेग्यं रेग्यं रात्रेश यास्यसः हुनियाम्बुयामी श्रीतामी स्यामात्रायी वात्रावरु दुनायायसः निवा नैक्रिया के देव में कि ता प्रतान के ता कि ता में के ता कि मुप्तवे कु अळव र्येन ने। वर्नेन येव कु निमा रेगा अवे वर्नेन येव वा रूट प्रवेव नेषायवे क्षेत्रवर्षा क्षेत्रयम दे द्वर पहेर यवे हिरा क्षेत्रय में विवास क्षेत्र के विवास के व वा क्रियानरुषा क्रियासेना मेव दुर्श्वियासेन श्री क्रिन्य निरम्भस्य प्रिना वि क्षे महिसायामसुसार् से प्रकेर गुर हें सासेर या कुसाय वेर पहुसामसुसार् र्येर हेन मु क्षेत्रकार हे ना विश्वेर रेसप्य क्षेत्रपर हिन्यर स्माप्य क्षेत्रपानिका विना ने महिकारे रे वापार हैं का वरुका हैं का केन मिका हैं का केन मासुका नु विना नुषाणु क्विषान् छे वा क्विं उत्तु छेन यान्यत्नुषान्या वाम क्विंस नुषाणु रुक्तिः धुरूर्द्रक्ति वेद केन्या विद्युद्ध की क्षेत्र विद्युद्ध वि पश्चित्रस्याम्बाद्यक्रास्त्रम् वित्रस्यायुवापञ्चितास्त्रित्रात् वेस्रवाद्येव प्रवाद्येव प्रवाद्येव । १८। श्रु खुष प्रथाय प्रथाय विषय १८। र्से वायते सुरायते सुराय स्मित्य से सिरायते सुरायते सुरायत वह्नार्चिव क्षेत्र क्षेत्र प्रवेर क्षेत्र या इससा सुर्ग्यत् द्रि । सक्ष केत् केत् के प्रसा कुर्तर वर् वचन कथा में श्राम्या श्राम्या वित्र वा वित्र वा वा वित्र वा वा वित्र वा वा विव्य विव्य विव्य विव्य विव्य विव्य यान्द्राचरुषायदे र्बेट्याने र्बेषायरुषा ग्री र्बेट्यायदे सक्षेत्र देन नदा यथा का न वर्वित्वम् क्रम्मि स्वाम् स्वाम् स्वाम् वित्व वित्व वित्व वित्व स्वाम् स्वाम स्वाम् स्वाम स्वाम् स्वाम कर् हिर्बाने ते के दर हैं अबायर वह्नाय दरा नहिर्णे वेर् नाबय केर व ब्रिट्ट्र श्चेयावबायदे हिंद्र द्वेर श्चेयाये येवाळेगा ह्वेयाद्व व हिंद्र यादे ना बुका यवे सक्र के न प्येन के विकास या वा कि का । क्रिन सान में निक्ष क्ष वा करें वा निमा निवानुः र्ह्युका स्रोत् ग्री र्ह्ह्युत् या स्रुत्त स्त्रुवा वर्षे वा विता र्या विता र्या विता वर्षा स्तु र्षेयमानी विद्यास्य प्रस्वाच देवा वर्णी देवा नुः स्टायदा द्या वर दुः रेवा सी विवास कथा वर्ह्यातार्टा झेटार् केथर्टा अक्ट्र इस झेक्यूबरात्र रविश्वासी रववावर्था त्तु क्रिक्त की देशिय विष्ट ज्येश तर होश हिंश पर शर्र हिंश शरे केश त. य. झ.रट.रट.ची.चोषश.सी.झ.कूचाश.तार्थंद्राचेटच.बीश.र्थं.क्.चार्धश.रथा.ग्रीश.वाल्याश. पर्टा हैंबाश्रेर वहिर वर्षेत्र पर्देश र हिंगेबा यहिर हिर रेट वर्ष वर्षेत्र पर्देश यायान्त्रमाया । इतियायस्य निष्यायस्य । विषयायस्य । विषयायस्य । विषयायस्य । त्तृ बैंच त.त.तृ केंब त. हेर वंबिशा शक्र हुर रट कंब तृ कियार वी रटा हिंबा. श्रेन्'यन्नेर'यात्रर'न्र्युष्णकु'सन्दा व्रिकासेन्'यह्रकायायात्रर'न्र्युष्णकु गुरेन । रटाने झारे र्टारेव प्रवा र्टा करा में शासेन सर्वेश रटा प्रवा प्रस गर्दिवे गान्व न्दा गाव्य द्वार्थ देवार्थ स्वि मुदे गान्य वार्वि ने। वसूद विष्र देश प्रश्न के विषय विषय के वासके में ने प्रश्नित के वासके वा क्रियाम्बर्मामा द्वारा मा स्वार्थिया प्रकार द्वारा में स्वार्थ देवा स्वार्थ देवा स्वार्थ देवा स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ

श्रेन्यविद्यस्थायाञ्चर्भायाञ्चरमायोजनायो वर्नेन्य्येन्यस्य स्वान्त्रवे वर्नेन्य स्व.त.ज्रूपश्चिरे.ट्रे.चर्.क्रूप.त.ड्रे.चड्चा.पे.र्ज्ञा.च्या.च्रिंश.चक्था.ग्री.क्र.चर्व. र्ट्यहर्वायम्भूयम् हिर्यालयम् । विष्यात्र मुद्रायह्मायायास्यास्य हिर् य'यान्सुरार्'से पर्'रेशे पहर्'यर ह्या अस्ति प्राप्ति हेर् परुषाग्री हिंदितार्टा विश्वायत हिंदा महिंदा है । विद्यायत हिंदि । वह्रव मी हैं बायके पादर्श क्रायदा मानव से पाव के साम क्रायी दिवर मैसम्बर्धरस्यायाचेत्रायदेःहित्। महिसायादे। मेत्रानु हिंसा सेरामे हिंदायाहेरायदेः हिनासारियायादे। विदाक्तियाद्वायाद्वीसादी विविदार्थिसा सुरावित्युव किनाया १८ हु व केर मे १६ रे म युव गुर देव ५ के म वेर ना रह देव ५ ५ देश में देश व दु द्रमाणराष्ट्रातकराबेटा। अत्यायम्यान्त्रियाध्यान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान्त्रामान क्रम् स्थाया क्रम् वित्यार प्राप्त मेश गुर्श क्षेत्राय दशक्ष्रस्य प्राप्त स्थाय स्था गुन्नर हूँ ब दुन्न हो हिर्मा ब ब सुद्र प्रवे थे दुर्म हैं अथ प्रमाय प्रदूर्ण हैं ग म्बेर् ज्यान माञ्चन अवस्तिर की ज्रूर नामवा किर प्यान मुर्केर पर मेरेर प्यान मे हिरा शिकाता । अक्र ने त्यक्त में त्यावायत के दित्व वा । द्वा में न वर्षेट.वर्टेट.कुषु.वचन्न.र्षटा विह्येत.चतु.ह्वेष.वन्न.तेर.कर.क्षेष.वच्ये श्रि.चंडर.टर् .वर्गुव्.कें.वश्र.श्रे.वर्शेश.चश्रीय

महिश्मिक् व्यो । विर्म्पर्यं क्षेत्र विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्पर्यं विरम्परं विरम्परं

त.चंश्य.त्..कु.द्रचश.बैर.कुट.शक्ष.हंश.ग्री.रचा.बै्ट.क्षश्वताचेशेटश.त.त.तस्य. बन्ना वित्रमानु वर्षेत्र स्वरं सक्ष्य सा वा नुवामानु न दर देवा या प्यापा विवास यदःद्वाःविवायःवेद्। । रवःपुःवाष्ययःवःवेदःवहवःय। । दवदःध्वाःवेदःददःवर्देदः न्गुरावश्चरा डेशावन्दायाह्नरा न्वरासुग्रामी प्रेंबाह्नरावश्चर विवासात्रा वि रत्याष्ट्री बरावी स्वयं ग्रीयाद्वर मा कि अस्ति माराष्ट्र स्वयं पाया देश ग्री के यादिव मु दिन नामवासद्व नु मुमायवे स्नि किनान्द र्यम निमास्त्रीय गु निह्मानिव मेन कुटा । अरे. कुचा चारुषाता जायाचर विचा चा. जा. पृथा कुषा श्री रेटा। श्रीचा पार्व विचा वह्नानी देना शत्र है। अ अ क्षेत्र हिन पर्व हुन पर्व निन नि सुर कुर है। व अ अपव है। ब्रेट्नर सुद्रेयदेश वश्यायायाय प्रत्यायायायाया यह शासु शायश गुह के पर्या मु बिटा गिवासिक ले मेब स्पर्मा विद्या विद्या विद्या विद्या चविःद्रिः क्रिंट्नी । ब्रूट्यबार्बेर मी क्रिंचिंबा या। हिन्बा स्वा स्वा देवे विवादाना नार विदेव। 15्रमःक्वीःरेवःयदेःगर्देरःसुवःक्वीया । पश्चित्रयःकेः वितःयन्गः वितः वितः वितः सर्वेवः सर्वेव। 15x. श्चैमायह्रव प्रति वह्न श्चैमान्ता । स्टाम्बुट मार्थय प्रवेश स्व मार्थ । स्र वर्षात्रियात्रयम्ब्रुवमा दिख्यात्राम्बर्मादेवानुवान्यक्षात्र्यात्रम् ग्रथाक्षेत्रं वेग्न्यायन्त्र कु अक्टें व्या । इस क्षेत्रं पर्दे प्रते मुहेट्याय । वस्ते व व किट.मुच्यूद्र.रेचट.बी.किव.मू.रेट.वर्ट्र र.वटश विश्व.रेवा.वीट.बी.कि.मुवा.वारा.वीच. कुटा द्रे.श्रेन.प्रवाशायवार्.प्र.श्रीशायक्ष्यायशायह्या विक्रम.वेच.येवावार्वावायाय यम्द्रादेद्राद्रग्रद्भवा विवायक्षवायद्राक्ष्यायद्वेद्रायवे विष्या विदे थि र्वे पर्यात्वे प्राथा विश्व में हे के व्यवस्य में विश्व मुर्ग मुक्त स्वर्

अश्वितः विकार्त्र हित्र क्ष्याः मर इस्य प्रत्य प्रत्य विवाधः स्वा अश्वितः विकार विकास क्ष्याः स्वाप्त विवाधः स्वा

वसम्बर्धरस्य मुः द्वी द्वेत वसवा द्वेर दर्। दे वा देर द्वेष वसा पत्रे सेसस्य पत्रे र्ये के दाया प्रवास्त्र महिना हैं व दुर्ग दर्गे पर्येश महिकाय है। के का दुना मी दर र्ये मित्र अर्थि क्रिया येव वि युषा ग्री मिव्या सम्मा स्थापि मिव्या के या परिया म्नियात्रार्म् विषान्त्रभाष्यभाषां योवावा म्नियायार्म् मिषान्त्रभाषां भाषां योवायात्रार्म् गवर्ययस्य स्वर्थः हेव या प्रवर्ति । प्रिम्बिव यदे प्रवर्शमान्व मी प्रम्य हेव परे.प.जा र्र. इ. श्रंश्वर्यः रेत्व. श्रुंजा.पीट.पश्चां श्रंजा.श्वर्यात्रः रेट. त्रूर.पश्चरणा सम्बर्धरान्द्रम् अन्ति । सर्गे क्रांस्के क्रांस्के क्रांस्के सम्बर्ध क्रांस्के क्रांस्के सम्बर्ध क्रांस्के क्रांस्के वर्षः वर्षः रेत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः अक्षः रदः युग्यायः यत्वग विदेवे हे से सुदः बर क्रिथ. टे.क्र्म जियाता श्रध्या त्याच्या हिया क्रिया क्रिया राष्ट्रिया श्रव्या गुन्नवसम्बन्धान्नवस्य निक्यायायद्वा हिंव यम्ति स्वर्णात्व यस्यास्य स्वर्णा म्रीमार्झेर् रम्बर्धराद्र रदाव माधुबर्सेट मी पुदास्त्र पण्डी सेसमा महिमार एक रिवीया तर पर्य राष्ट्र विशव मार्चे मार्चे मार्चे मार्चे मार्चे विश्वास पर्य मार्चे मार क्षेत्र क्षेत्र प्रति मार्च प्रति प्रति प्रति प्रति । विष् व्याम्यायम्यायम्यायवि विषयायदिषा समास्याम् विषयि हो प्रदे प्रमायदे वर्ष्याद्वार्त्यार्त्त्रार्विश्वरावन्त्रात्यरायुक्षायीक्रत्वी स्वयःक्षेत्रकावायाक्षेत्रर। न्युका संस्थान है है दर्भ वालवा संस्था वालव दि है किर सा वालव दिसर ही वालव. र्यार.म्। रविश्र.कृत्व झुंश.स.काट्याताश्चर्यात्राह्र.क्शावकर.चर्ना विप्र. युव्याचेव्रसूचा निस्त्वा क्या देता देता निस्ती अपर सूर्या र्मिय विश्वा र्नुःसदे कर र्नु मुमान कार्ये राम प्रमासी विकि र्यो प्रवित्ते है। हे पा ह्युवा परे विष्रे भी इत्तर्य रे प्वतिया विद्वार्भर में के व्युवार्भ में के स्याप करा

वि.म्री ब.रे.ह्रियाशातार्था हिर्तिःक्ट्रश्चीत्रियःज्यास्वर्धात्म विर्ध्या र्यार.त्रु.क्र.क्राची.ब्रिश.त्रुप.स्थात.कथा वि.द्वी.पे.स्वीयातार्टा विश्वेयातात्र्या ब्रैंट्रि. ग्री. त्रिंट्र. जू। इ. पट्टा पर्वे. टैंगा ता वि. ट्रेगा ट्रा इ. प्रांत वे. परिंग की. क्रायक्षा । विष्कुवर्र्ष्ट्विष्ययार्त्रा ही र्चे यदे केव की विष्रं वे सवद्वर्श च्रिमाया विद्वार्गराया क्षाण्या निर्देव क्षाण्या निर्देव क्षाया निर्देव क्षाया विद्वा क्षाया क्षाण्या निर्देव क्षाया विद्वा क्षाया क्षाण्या क्राण्या क्षाण्या क्षाण्य है। विरावी बुरारे विषय नेया बुरारे वे कुवार प्रविष्य दि । हेर वया दे भी वा विग चे अव विग व अप भन् उड् चे विश य महिरा मी श अर्के व व श हिर ग्राप्ताम् वार्षाया प्राप्ता विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया लर हैं तर्द ऋ र्वाद्र की दिवश शें हैं हुद बर दी। अ तर्द बार ब किर होर तनवाश. द्रभाग्नी क्षेट्री वर्षेत्राम् स्वित्त्र्ये लासी स्वित्त्रम् लासी स्वित्त्रम् वार्नुष्पेवार्ह्न्यां अव्यित्रायहन्य स्ट्रिंट स्ट्रिय ग्रीक्षेत्रकार पाद्याहाय वहनार प्रमेन र्द्धेन्यम्पन्ता क्वेन्द्रिक्ष्यविर्क्ति न्त्रुक्षिणु क्वित्रात्ता के विनात्तार ये अर्थे ह्यू र दुः स्वाया केवा है। यह गायर विकारीय र विकारी हुं है वार्के कुर वी अर्द यमान्यासायविष्टन्यावि न्तुःसवे क्रान्य विष्यायान्वन् केवी । नै विषयानी सर्वे र ञ्च केरा द्वेष चेष वे कु द दिर पठराय पत्र विष्ट है। चिर रोग्य पर रो है पु पर विषय प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रा बिटा निवानुः स्रार्था या श्रेयया हेवाव हुटाय नुष्या मान्या नियाया हेवा त्रम् वासरक्षित्वास्य विश्वास्य दिवान्तर् देवान्तर् स्यास्य विश्वास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य यद्रा हिर्वाययम्बर्कर्गीयोगेमसुस्यायमुक्रे दिस्स्यत्स्स्ययः रेद्रा गर्डे त्राक्षानिराजाम्मभायह्याताल्येयास्य । हि.संरावस्थियात्रामभामभाग्नात्रात्रा उट्टेम.तपु.धमम.चर्या क्रिट.म्ममन.उट्य.त.याक्र्य.तपु.याचर.ग्रीमा विषय. नेर कुर वर्ष हे देव दवद वीष वुद सेस्र प्रतुस्र ववष यस वदे व विद्यार ठव हो। देवे के हें ह ने ने ही हो न इस न न न हिंद हो हो हो है। वा न न न चर्-ह्रिट्याशवाचवः श्रमा विश्वाया विश्वाया हिट देवा हिट विश्वायः वर्षा विषायक्ष्यक्षे अवावर्ष्ट्रमः ह्रेष्यः है। वर्षे वे नातृषा सेवे प्रस्ते स्वावर्षे म्यून स्वावरे वयमासु में दे या वदे या युका गवर में गका के हिर दि वद विदा कुट दिया पुका झें बया है पया है। बर रें हिपया ने बया रहा। हिर की पहिरादर अववापया रें मिट्यु इ.योर्थ अ.से.श्रय ग्रीय शूट येथा इ.योर्थ स.में.श.तेय त्यय ता संर हिर ग्रीय यर तर्रात्रा हो हे सेर विर्यात्रा सक्सार हे बर्ग कि यहिना है स्था कर्रियास्त्रविष्ट्रास्त्रामीयास्त्रायास्त्राम्या सक्ष्यासाम्बर्गास्त्रास्त्रा श्रीन्त्री हिट क्रिट वावयाने रायववा ने वया देवा ही वाविया वया क्रिट वह सार्ग वाहिया. लासिराम्। यत्रवया धरामध्यापः हिरामध्यापः हिरामी राम्नामा राम्नामा स्थान गन्दान्याद्दान्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्र्यात्त्रात्त्र्यात्त्र्यात्त्रात्त्र्यात्त्रा सर्व बट.रे.लर.चर् हि.ज.ज.स्ट.तर.प्रमा है वर्षे वेश ह्व तर श्रीत्मम म् ।रे.क्षेत्र.प्रमुभगत्रभ.प्रेट.क्षेट.वियशत्रत्रट्रा येथशत्रर्थः व्रभत्रप्र. द्रभामका वर्षित्राष्ट्रा विरात्तर १५४ की अधिका विराज्ञ भारतिय विष्ठा प्रवृक्ष ग्रीका र्वे.श्वे.यर्वे.यर्वे श्वास्त्राच्याने परे परे विश्वेषायाना क्रेंट्वेर्ट्रेट्रेट्रे विश्वेषायाना सु'येत सुंयायक्षत तथा दे यहते पुराया येत दे या विरायर मितृस सेंदे मादस्य याकेर। विकारिक्षिताते। केसकाते त्यद्वान्यकारमानी विकत्तु स्त्रात्या

मुक्का वेश हे अर पा वा पूर्र परि क्या की शासनी र रे पवे दशारात् विवास वास्ता म्रिमानार्यम् म्यान्त्राच्या स्वायात्रम् व द्वायात्रम् व विभागम् व र्रिट्र के विश्वेशता में जैशा की विश्वास्त्र है। कि जया द्रा मी में जा करा है। यात्री श्रायक्षात्रुटा हैनिषान्टा वर्नुवायि हैनिषाण्चिषान्वेषायाया हटा र्येते स्त्री महिन् ग्री रेंन् मार्थय येग्राय मार्थ से स्वाय सिन् मार्थय ने देन मार्थय ने देन प्राय्य स त्तु द्वैत्। श्वालक्षा श्वी तीका विटायर क्षेत्र देवितातका है। वारका वेका ता प्रविव दे विषार्गः क्रिंब पर्या । दव पार्षा में शास्त्र करा विषाया है। विषाय है। विषाय है स अर्.रं.रंब.तथा बर.रं.यर्बा.त.ब्रू.ब्री.बर्ट्य में.व्रेर.तथ.शक्रुवा वर्षात. याख्रुः १८। व्रट पार्नु की वार्ट सासी स्राप्त हें हिते प्रतिसाध्या हिर वादे ही. निवासायातात्रासासुरायान्तरात्र्यस्य प्रस्ता स्रेससार्धितायान्यस्यान्त्री स्रेरायान्यस्यान्ते येग्रस्यर मु पत्रे द्रस्य विग में कें। विर विप ग्री सवरे द्रिय विर विप ग्री विद । इर.र्ज.त.र्दु.क्री नीयश.र्ज्जा.ब्र.हर.ह्य.श्रीश.त.रट.रेश.शथश.री किर.व्री. सिट. त्रुं केट ता जाया जूबाया सी ही त्रुं जा नेया ही सी र त्रुं हैं ये ही । ही क्र.संट.च. में श्राद्या वेश.त.चे। ट्र.संट. में जिश. चीत.तत्त्र.चाट. चवा. ट्रेशा चा चेवाश. म्न तार्श्यम्। तार् मेर प्राचार भर विशय २८ किर अधिया विवा मिन्न तर् तार मेर ग्रीयाक्यायन्याह्री ।ग्राराष्ट्रराध्ययाच्यायदे प्रदेश हिरायुर्वे से से प्राप्त प्रदेश पर्या तिता क्रैंट परे प्रमायवर प्रवि मुर्गिया सी प्रमा सी जो प्रवि देव है। विट र्भे त्राम्याद्रमानेश्वात्रात्रात्रा वर्ष्ट्रम् श्रुमार्यमानेश्वात्रात्रमान्त्रमानेश्वात्रमानेश्वात्रमानेश्वात्रमानेश्वात्रमान्त्रमानेश्वात्रमानेश्यात्रमानेश्वात्यमानेश्वात्रमानेश्वात्रमानेश्वात्रमानेश्वात्रमा र्व श्रुम्भित्र्वाष्ट्रम्याष्ट्रम्यायम् वार्यायवाष्ट्रम्याद्रम् देवाय्वयाष्ट्रम्

यंत्री ने स्पूर्वे यने हिंद वी क्षा शुंद ने हैं स्य हुंद या पति व नु। के वा मु यहेंन श्रुष्ययदे द्वार् देव अव अक्षेत्र विषय्वी । श्रुष्य याची प्राप्त देव स्वाप्त स्वर देवा वयश्यी कर्ता वर्षा भुर्ति व्याप्ति वर्षा भुर्ति व्याप्ति वर्षा के स्थापति वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष न्ना **श्वयायतः भु**लेषायानेषाश्चयायासेषाषाणीषायानुवान्ते वेतानेनासान्याया या अर. तर्में जैशकी बरिशका वर्ष मा वर्ष हर्में वर्ष से दिर्दे हिर तरा वर्ष विवर यार्यमान्यसार्वञ्चा विषाहेषास्यायार्येन्यवे स्वार्थसार्येन्यवे साम्यायार्येन्यवे साम्यायार्येन्याय्ये भ विश्वास्त्री विश्वास्त्री विश्वास्त्री कि मार्थिक कि विश्वास्त्री ग्राम्ये प्रति देव प्रमुक्षा । प्रमुक्ति नेषाद्र प्रमुद्धि किषाया विषाया परिषा ने किन यार निर्माय विषय विषय है किन विषय है वि द्रायाक्ष विषायसायक्षवाही द्रवायक्षिकावाविद्राशीकाक्ष्रियायवावायाम् विवा पर्वः नुषान्त्र। क्रिः वाक्षः विष्यः सुरः सुरः स्वरुक्षः पर्वः विषवः या वत्र प्रवा । विषेतः ग्रीवित्रवाषायादेवाविवायवित्रुद्धायी हित्येद्वारा मित्रवेद्वारा मित्रवित्र हिवायायवे स्वापाय स्वापायी स्वापायी यहो पर्व देन त्रीन त्या वहो स्वं व तरे हैं व के पर्व रेंदि वामाय वामाय रेंदि वामाय पर्व रा विश्वास के के विश्वास देशक्षक्षत्रमार्थियदेत्वर्द्धार्यम् वर्षात्री वर्ष्ट्यमार्वेष्वर्थायदेन श्रीरायरावरादिवान्यश्रायाचेर। विशारिः हुन्वशा श्रियमः लेब यथा वर्त्रेटशक्षया विशह्यस्यायार्व्ययम्यात्रियास्य स्वात्र्र्या क विष्यु पर्यु निषया की या देश मार है। यहिन की विष्यु पर्यु निषया यह विर हिन स्मार

यवेद्वा । विदेद्द्वा अक्ष्ययायर वेद्वा विद्यार विदेश अक्ष्ययाय द्वा वसरावायहराया निर्मास्य केंद्रा हिंदी हेरायावरेश निर्मास्य प्राप्त विष्ट्रा विष्ट्रा विष्ट्रा विष्ट्रा विष्ट्रा महिन्गी र्दन्याययामि सुमामि सेट उन ने हिन्। मनस्य हमान्द व्यव स्था केंश श्चर विर विषयमा अस्त्रमा नेर विर प्रति विषय कि र विषय कि र विषय कि । केन्द्रम्मा विषया स्'विवा'येद्र'इया'यर्चेर'८८। विट्रायर'क्षेट विदे हे च विषाय सेवायांगी सविषा ग्रिन्'र्'र्ज्यान्यर'ह्रर'प्रविव'र्र्ध्यायान्यान्न्र'यथा ह्यां कुंग्रे व्यय्तेरहें प्रांचित्री प्र ने क्षाक्रमामायामायान्यायाः सुत्रेते रेति मार्यायकर प्रभा नेते के हिंदि होन र्रायशेर्वेशक्ष्रायवेरवेष यापहर है। वेर्षाययान्य पर्राहर हैरिन हैर क्षयाद्रायम् वर्षात्रम् वर्षे विता अवअवाववादे वर्षायरम् वर्षायर वर्षायर वर्षाय या के अप्रार्ये द्या शुर्रित हिर प्रश्चे प्रति त्येव प्राप्त द्वा प्रश्चेत् । पर्ने केव प्रा चेथा.ग्री.क्रॅट.ता.तीजा.टी.विद्यातपु.धश्यश्रक्तीट.क्र्या.ग्रीश.ह.यधुष.वर्ह्ट.श्रु.बेश.त.वु.क्री. युषानी क्षेत्रकासुमन्द्राय न्द्राया दियद्रायदे त्रुस्र यो विद्राय विद्राय द्रिन्न्ययान्ययाम् अर्थः विराटे ह्यून्या निर्दर्शी स्त्रिन् श्री स्त्रिन् म्या नेया विस्रमा के से ने ने में निया स्था के इता विद्याहे सर या या में न्या स्था में या मे में या में य यग्र-५ प्रवेद्यप्रयो । वित्यवर्षि पर्वः ग्रम् या । वित्यवर्षः प्रवे । वित्यवर्षः प्रवे न्यार विर रुषा वेश यात्री परे पर्योद क्षे त्या रहा पर्योद क्षे या श्रम हो पर्या र गायरा विक्रावरावर्षाववानगराष्ट्राधेन के निकारा ने यावने वर्षेवे के स्त्री श्चेष अस्त्रम् भ्रम किया दिया दियम दियते श्चेष्ट सम्मार्म पर्टा

वनद्वासा वक्षित्वर स्वाम्यस्य दे द्वार वित्र स्वाप्त स्वित् । स्वापि स्वाप्त स्वापत स्य मा वियान व मियान व मियान में लियान म निर्मात्मात्री क्रा.प्रेमाञ्चे प्रमायम् मायम् मायम् मायाया प्रमाया प्रमाय प्रमाय प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाया प्रमाय प् वर्ट्या स्थितकर नगाना न शास्त्री न के ना प्रति स्थापर्वे स्थापरे स्थापर्वे स्थापर्वे स्थापर्वे स्थापरे स चतु.येरश्वरात्रधेशकासी.जुधातवु.कु। इंस.कु.धू.वक्रेर.तु.रु.हु.क्षेत्र.सुयोबातवु. लामे वार्श्वयान्य विवया ग्रीयावर्गामा वा इसायर मेया प्रतिया स्वाया प्रविया विवाय यथा श्चि.वार्द्धवात्त्वी.श्च.वार्द्धवात्त्रति.ता.वे.वा.वार्ष्ट्रव.प्रे। वार्ष्ट्र-वाद्य.क्च्याद्धे-ताथात्वर्था. यादी । रिवान्तर् खेट हे से र पर्टेर यादे र प्यस् मुख्याय परे या विषय अविष ग्री विराधराश्चर जेवाया धर विराधर राष्ट्र । रिवासिय विराधिय विराधिय विराधिय । ब्रिट.र्टेश.रट.जथ.ब्रैट.क्री.र्टेश.क्री.विर.तर.रटा विक.क्षेत्रश्चावविजायर.प्रेश. ताय। विर्वासिक्षणयासायस्वितित्रम्यात्रेत्वित्रम्यात्रेत्वित्रम्यात्रेत्वित्रम्याः येव दे या विषाहे अर पर वर्षे पर या निषाहे अर या वार्च देव स्वर क्रियासर्गे र रे. तब्रेट्यात्त्री के यैवाताय र रे. तुत्र विरास स्था विष्टर हूं तथा ही. यम्द्रिन्द्वादी म्रायम्भवमासुपवन्पद्रिन्द्रिन्यापहेन्द्रम्भानेमानुसाया वर्षेत्रत्रत्रत्रात्राच्या विक्वाचताक्षेत्ववुक्षे । लूट्यासी वर्षेत्ववुट्य त्रुःलट.पश्र्टं.वश्रभ्.मी.है्याम.मी.यथटा.ज.कयमाध्येय.स्रटं.तर.वी प्रम.कैट. ग्री.क्षर.त. प्रमाना नर्भवाया तर्हू शया रटा वक्क ता ता निया ने वर्षे ता क्षेत्रा ते वर्षे ता क्षेत्र ते वर्षे भातक्र्यायत्वित्तर्भेभातववा दिव्यश्चित्वित्रेत्वित्रस्याय्वेत्रास्याय्वेत्रास्याय्वेत्रास्याय्वे यत्रत्रम्भायाम्बर्गात्रम् । श्चिम् स्या । श्चिम् स्याद्राम् म्याया श्चिम् स्यायाः

क्रम्यान्त्रात्वा क्ष्म्यादे द्रार्ट् नुहार्ट् क्रम्युरेयाया व्यवकाया विकाया विकाया विकाया विकाया विकाया विकाया य.रेटा वर्गु.जीयश.रेटा र्रेट.जीयश.रेटा भ्रि.येथश.रथ.त.शह्र्ट.थ.र्र्ड्रट. क्षेर्र्, विद्यान्त्रा विद्यास्त्रस्य स्ट्वेर् प्राप्ते क्षेर्य स्ट्वेर् प्राप्ते स्वयः स् तास्रमात्रम्भास्तु निर्वाचर निर्वेषातमा दे त्यद्व त्रम्भा तेम दे त्या । श्रीर पर मुर्ने, भाषे सार्य हुए। रि.जंशारी विष्टे हुं सार्याची वर हुं हुं जैसा ग्रीट जंशारी यद्वेयायायाद्वेद्यावया श्रियमात्रेव्यम्यात्रेष्ट्या वेयाहेस्यरायाचेद्राये क्ष्वाचीरासन्द्रा भ । वार्षसाम् विष्यान्त्री भ । वार्षसाम् विष्यान्त्रसम् ने स्र मानुसर्से प्रसामी मानु र मिर ५ ८ । ह्यु पुरा हो मा या मानव मी पर्से ५ वसरा ग्री:क्रिवामासवदायमार्यदेर्द्रम्बुवर्दा दिर्वामयाः श्रीवर्याविमाग्री वादेन रेवदे वसन्दर्ग वरार्देन्दरवर्षेचावसम्बीष्यम्वावन्दर्ग क्रि.वसवरार्द्रन्दर्ग क्रि. जैयाजानूच्यावाद्वियात्त्राच्यायासी.मेयात्रर.चे.ड्री विषयासी.चेरयात्या हु.इ. वकरक्रेन रेवि के वसर शुरू दुर्भायर हो न दिया न रेकें के दुर्भा दुर्गा वी वा दस्स त्तु विषट् विवास्त्र प्रमा हे हे वे स्वामान द्रमा प्रमान प्रवेश के विषय वर विश्वास तर् है। विग्वित यह वाल्वास वावास सारवे हिंद वास देत के वा व सक्ष्यमित्राचर्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्राम्यान्त्रात्त्राम्यान्त्रात्त्रा ईत्याग्री निर्मेष त्रम ब्रैम पार्द्याग्राट कैवायदाय हेवाय र मेवाय केवाय विद्या न्यवस्ययम् रहेवा नवेदी। ॥

क्री विष्ठीयर तथे ततु यो श्रम्म हो श्रम तुष्र में श्री हिए तुष्य हो .

्था । परे पारु पारु अर्थों अर्थों के प्रेटिन प्रवासित । अर्थे के अर्थ परे श्रुव । अर्थे के अर्थ परे । अर्थे के अर्थे । अर्थे | अर्थे के अर्थे | अर्थ मुस्यन्त्रा वार्षेत्रा । द्मेस्य वर्षा स्वापित्र स्वय म्याप्य वर्षा वर्षा वर्षा । द्वेत्र स्वयः वर् देश्वरमवरहें ब्यरमाया हैया । के सहमार वुमसा हमा वकर यर हे विवे की । अक्षन द्ये कुन द्वन हिन् सुपन्य दुर दु। अस्न सुम हिन न म के प्रेन शक्यकात्रा । र.मु.बुट.रे.ज्मु.बुवायवीट.घर.वी । ४८.जेश.इ.क्शव.हुर. कुट.मू.ट्य.क्यमा । श्चैय.क्.उट.चतु.धश्रमा.बैट.तक्रर.च.सूर्यमा ।स.पश्रम. क्रि.व.इश.तत्रं से बरारी र क्या शिरा श्रेचा श्रातह बाबा वाबी र बा सुवा तुर् र र तवा शरी पि.क्रे.याइश.च्रेट.क्रे.बेट.च्याताक्वा । 2.च.क्र.तेव्.थश्याक्वेट.वक्ष्याया । क्. विश्वराष्ट्रात्वाच्यायत्रेह्नवाश्चर्यः ह्या विवाक्ष्यः श्वेश्वराव्याः अह्रिन् द्ववाद्रिन् प्रवा श्रेरा १ट्ट्रेर.स्ट्रि.स्ट्रेर.स्ट्रेस.स्ट्रेस.स्ट्रिस.स्ट्रिस.स्ट्रेस र्बेट.तक्षर.त.शूर्याथा शि.विश्वश्चिट.ज.इश्वराद्य.स्याथ.विंट.क्री क्रियास्त्री.केट. झरमासुरस्मिनियर्दि द्यमासेदा । युस्के नेमस्से वर्षे र विर द्विष्य वर्षे का शर.श्र.क्ष.येवु.थेश्रश.क्षेट्.तक्षर.य.श्र्येश विचेट.विश्वश.क्षश.मुश.हाश.तवु.स्येश. इटका । निकेशन विवास सामा महिन देना दिन निमा मेना । ने के हिन हाना मार्चन इर क्ष्मेश क्रिक् हो डि.मर्चे मक्ष्म प्रति च निर्म क्षेत्र महि । निर्म क्षेत्र मार्च व श्रद्भावश्राम् वर्षात्राम् । विदे त्वर्षाम् वर्षाम् वरत्रम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वरत्रम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वरत्रम् वर कुबार्-रे.ये.वीकाती.श्री.प्रकृट, हूबाका विवा कुथ.प्रवाक कथ.सं.सं.यं.य.वीका विरा विवासहवानि मुंद्रिन वासुर देसका सरका है। वित्र को हैंवा पर्व ग्रुट स्वा वर्षिय पर्वे स्त्र स्त्र स्त्र में स्त्र में स्त्र में स्त्र में स्त्र स

चित्र निर्मे कुर्ने स्वेर प्रकेर में विष्ण मुंद्र प्रमें कुर्य प्रकेर में विष्ण मुंद्र स्व कुर्य मुंद्र प्रकेर मुंद्र म

Accession No....

h akshita Labrary